शिक्षा का अधिकार

सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें

शिक्षण संग्रह

(Compendium)

शिक्षक हस्तपुस्तिका

समग्र शिक्षा उ.प्र.

शिक्षक हस्तपुस्तिकाएं : संक्षिप्त परिचय एवं उपयोगार्थ सुझाव

प्राथमिक शिक्षा को व्यक्तित्व निर्माण की आधारशिला माना गया है। इसके लिए हम सभी अपने विद्यालयों में विभिन्न क्रियाकलापों के माध्यम से सतत् प्रयत्नशील रहते हैं। विद्यालयीय वातावरण एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को और अधिक प्रासंगिक एवं व्यावहारिक रूप देने की दृष्टि से तीन हस्तपुस्तिकाएँ 'आधारशिला', 'ध्यानाकर्षण', एवं 'शिक्षण संग्रह' विकसित की गई हैं जो एक–दूसरे की पूरक हैं। इन हस्तपुस्तिकाओं की मुख्य विशेषताएँ निम्नवत् हैं –

आधारशिला – इस हस्तपुस्तिका में कक्षा 1 व 2 के बच्चों में भाषा एवं गणित की गहरी एवं बुनियादी समझ विकसित करने के लिए जरूरी जानकारियों एवं रोचक गतिविधियों का समावेश किया गया है।

ध्यानाकर्षण – शिक्षण अधिगम प्रक्रियाओं में बहुत से बच्चों का अधिगम स्तर कक्षानुरूप नहीं होता है। इन बच्चों की पहचान कर विशेष शिक्षण तकनीकियों द्वारा मूलभूत दक्षताओं का विकास करना आवश्यक है। इस हस्तपुस्तिका में शिक्षकों की मदद करने के लिए विभिन्न प्रभावी शिक्षण तकनीकियों को स्पष्ट किया गया है।

शिक्षण संग्रह – शिक्षकों की आवश्यकताओं एवं व्यावसायिक विकास को दृष्टिगत रखते हुए इस हस्तपुस्तिका में आवश्यक जानकारियों, उपयोगी सूचनाओं एवं विभिन्न शैक्षिक संदर्भों का समावेश किया गया है।

इन हस्तपुस्तिकाओं के प्रभावी उपयोग हेतु आवश्यक होगा–

1. हस्तपुस्तिकाओं का आद्योपान्त अध्ययन तथा विद्यालयीय परिस्थितियों के अनुरूप सामग्री को चयनित करना। आवश्यकतानुसार उपयोगी सामग्री व तरीकों का उपयोग करना।
2. ऐसे स्थलों को चिह्नित करना जो आपकी समझ में कठिन हैं अथवा अस्पष्ट हैं। प्रशिक्षण / पर्यवेक्षण के दौरान ऐसे स्थलों को स्पष्ट कर कक्षा में लागू करना।
3. अपने ज्ञान तथा अनुभव से हस्तपुस्तिकाओं को और अधिक समृद्ध करते रहना।

शिक्षा का अधिकार

सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें

शिक्षण संग्रह

(Compendium)

शिक्षक हस्तपुस्तिका

2019-20

संरक्षण : **श्रीमती रेणुका कुमार,** आई.ए.एस.
अपर मुख्य सचिव, (बेसिक शिक्षा)
उ.प्र. शासन, लखनऊ

निर्देशन :– **श्रीमती मनीषा त्रिघाटिया,** आई.ए.एस.
सचिव (बेसिक शिक्षा)
उ. प्र. शासन, लखनऊ

संकल्पना : **श्री विजय किरन आनन्द,** आई.ए.एस.
महानिदेशक स्कूल शिक्षा एवं
राज्य परियोजना निदेशक, समग्र शिक्षा, उ.प्र.

परामर्श : **डॉ0 सरिता तिवारी**
अपर परियोजना निदेशक, समग्र शिक्षा, उत्तर प्रदेश
श्री दिनेश बाबू शर्मा
वरिष्ठ सलाहकार, समग्र शिक्षा, उत्तर प्रदेश

समन्वयन : **श्री आनन्द पाण्डेय,** प्रभारी, गुणवत्ता प्रकोष्ठ, समग्र शिक्षा
श्रीमती शिखा शुक्ला, विशेषज्ञ, गुणवत्ता प्रकोष्ठ, समग्र शिक्षा
श्री पी.एम. अन्सारी, राज्य सलाहकार, गुणवत्ता प्रकोष्ठ, समग्र शिक्षा

सम्पादन : **श्री सुरेश कुमार सोनी,** पूर्व वरिष्ठ विशेषज्ञ (गुणवत्ता)
श्री पी.एम. अन्सारी, राज्य सलाहकार, गुणवत्ता प्रकोष्ठ, समग्र शिक्षा
डॉ. अवनीश कुमार यादव, उप प्रधानाचार्य, रा.इ.का. बरेली
श्री जय प्रकाश ओझा, डायट, गोरखपुर
डॉ. महेन्द्र कुमार द्विवेदी, राज्य सलाहकार, यूनीसेफ, उ.प्र.

लेखन मण्डल : सर्वश्री सुरेश कुमार सोनी, डॉ. अवनीश कुमार यादव, जय प्रकाश ओझा, डॉ. महेन्द्र कुमार द्विवेदी, मुकेश भार्गव, लक्ष्मी निगम, डॉ. श्रवण कुमार गुप्ता, डॉ. सपना शर्मा, डॉ. लक्ष्मी शुक्ला, रघुनाथ पाण्डेय, अशोक कुमार, माधुरी तिवारी, अभय कुमार पाठक, बच्चाराम वर्मा, शेखर राय, नम्रता वर्मा, सदाशिव तिवारी, राफिया निकहत, मनोज कुमार, सत्यजीत द्विवेदी, डॉ0 उमाकान्त वर्मा, डॉ. सर्वेष्ट मिश्रा, डॉ. अम्बिकेश त्रिपाठी

तकनीकी सहयोग : श्री इमरान खान
श्री नरेन्द्र वर्मा
सुश्री दीपिका शुक्ला

चित्रांकन : श्री रविकान्त श्रीवास्तव
सुश्री वन्दना गुप्ता

योगी आदित्यनाथ

मुख्य मंत्री
उत्तर प्रदेश

लोक भवन,
लखनऊ – 226001

संदेश

शिक्षा हमारे देश व समाज का भविष्योन्मुखी निवेश है। निःशुल्क एव अनिवार्य बाल शिक्षा अधिकार अधिनियम–2009 (RTE Act 2009) के अंतर्गत 6 से 14 आयु वर्ग के सभी बच्चों को गुणवत्तायुक्त प्रारंभिक शिक्षा उपलब्ध कराना हमारी संवैधानिक प्रतिबद्धता है। इसी क्रम में पाठ्यक्रमानुसार निर्धारित दक्षताओं के अनुरूप सभी बच्चों के ''शिक्षण अधिगम परिणाम'' (लर्निंग आउटकम्स) के लक्ष्य की प्राप्ति हेतु उत्तर प्रदेश समग्र शिक्षा अभियान द्वारा 'ध्यानाकर्षण', 'आधारशिला' एवं 'शिक्षण संग्रह' (कम्पेन्डियम) हस्तपुस्तिकाओं का विकास किया गया है।

इन हस्तपुस्तिकाओं में प्रारम्भिक कक्षाओं में भाषा, गणित, विज्ञान तथा अन्य विषयों को रुचिकर, आनंदमय एवं जीवंत बनाने के उद्‌देश्य से शैक्षिक तकनीकियों का विवरण विस्तार से दिया गया है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि शिक्षक इन हस्तपुस्तिकाओं के माध्यम से अपने विद्यालय को आकर्षक स्वरूप देने तथा दैनिक कक्षा शिक्षण को प्रभावी एवं रुचिकर बनाने में सफल होंगे।

(योगी आदित्यनाथ)

दूरभाष : 0522-2236181/2239296 फैक्स – 0522-2239234 ईमेल – cmup@nic.in

डॉ. सतीश चन्द्र द्विवेदी
राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
बेसिक शिक्षा, उ0प्र0 सरकार

संदेश

निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा अधिकार अधिनियम–2009 (RTE Act 2009) के अंतर्गत 6 से 14 आयु वर्ग के सभी बच्चों के शत प्रतिशत नामांकन, उपस्थिति एवं ठहराव के साथ साथ गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की व्यवस्था करना हमारी नैतिक एवं संवैधानिक प्रतिबद्धता है। इस हेतु प्रदेश में प्रचलित पाठ्यक्रम एवं पाठ्यपुस्तकों में निर्धारित लर्निंग आउटकम (शिक्षण अधिगम परिणाम) की सम्प्राप्ति का लक्ष्य प्राप्त करने के सतत प्रयास किये जा रहे हैं। इसी श्रृंखला में राज्य परियोजना कार्यालय, समग्र शिक्षा अभियान उ0 प्र0 लखनऊ के ''राज्य गुणवत्ता समूह'' द्वारा 'ध्यानाकर्षण' (रेमीडियल टीचिंग), 'आधारशिला' (फाउण्डेशन लर्निंग) एवं 'शिक्षण संग्रह' (कम्पेन्डियम) नामक हस्तपुस्तिकाएं विकसित की गयी हैं। शिक्षकों की अपेक्षानुसार इन हस्तपुस्तिकाओं को अत्यन्त सरल भाषा में लिखा गया है जिसके द्वारा शिक्षक कक्षा शिक्षण को अत्यन्त रोचक एवं जीवंत बना सकते हैं। हस्तपुस्तिकाओं में वर्णित शिक्षण तकनीकियों का प्रयोग कर शिक्षक उन सभी बच्चों की सहायता कर सकते हैं जिन्हें सीखने में मदद की आवश्यकता है।

मुझे आशा एवं पूर्ण विश्वास है कि शिक्षक इन हस्तपुस्तिकाओं का प्रयोग करके अपने विद्यालय को अत्यन्त आकर्षक एवं सीखने में उपयोगी बनाकर दैनिक कक्षा–शिक्षण कार्य को रुचिकर एवं आनंददायी बना सकेंगे।

डॉ0 सतीश चन्द्र द्विवेदी
राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)

रेणुका कुमार आई.ए.एस.
अपर मुख्य सचिव (बेसिक शिक्षा)
उ. प्र. शासन, लखनऊ

संदेश

मानव जीवन में प्रारम्भिक शिक्षा का व्यक्तित्व निर्माण में अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। जिस प्रकार बीज में विशाल वृक्ष के रूप में विकसित होने की संभावनायें छिपी रहती हैं उसी प्रकार बच्चों में अनेक अन्तर्निहित क्षमताएं होती हैं, जिनको शिक्षक कक्षा शिक्षण के माध्यम से निखारते हैं।

प्रारम्भिक कक्षाओं में शिक्षण को प्रभावी, रुचिकर एवं जीवन्त बनाने के उद्देश्य से राज्य परियोजना कार्यालय, सर्वशिक्षा अभियान, उ0प्र0 द्वारा तीन शिक्षक हस्तपुस्तिकाएं – 'ध्यानाकर्षण', 'आधारशिला' एवं 'शिक्षण संग्रह' विकसित की गई हैं। इन हस्तपुस्तिकाओं में ऐसी शिक्षण तकनीकियों का उल्लेख किया गया है जिनके माध्यम से पूर्व नियोजित ढ़ंग से शिक्षक उन बच्चों को सीखने में मदद कर सकेंगे जो अपनी कक्षा के अनुरूप सीखने में पीछे रह जाते हैं। इसके साथ–साथ शिक्षक अपने विद्यालयों को आकर्षक और स्वयं सीखने का माध्यम भी बना सकेंगे। मुझे आशा है कि शिक्षकगण अपने दैनिक कक्षा शिक्षण में इन हस्त पुस्तिकाओं में वर्णित तकनीकों का उपयोग करके उन बच्चों को सीखने में मदद करेंगे जिन्हें उनकी सहायता की विशेष आवश्यकता है।

रेणुका कुमार
अपर मुख्य सचिव

मनीषा त्रिघाटिया आई.ए.एस.
सचिव (बेसिक शिक्षा)
उ. प्र. शासन, लखनऊ

संदेश

बालकेन्द्रित कक्षा शिक्षण, बच्चों के सर्वांगीण विकास का एक सशक्त माध्यम माना गया है जिसके द्वारा बच्चे कक्षा के अन्दर एवं कक्षा के बाहर, आनन्दपूर्वक सहज भाव से सीखते हैं। वस्तुतः प्रारम्भिक कक्षाओं में कक्षा शिक्षण को रुचिकर, आनन्ददायी, जीवन्त एवं प्रभावी बनाना एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। इसे मूर्त रूप प्रदान करने की दिशा में राज्य परियोजना कार्यालय, समग्र शिक्षा अभियान उ.प्र. लखनऊ के द्वारा सतत प्रयास किये जा रहे हैं।

प्रारम्भिक स्तर पर शिक्षकों की आवश्यकताओं एवं उनके शिक्षण कार्य में आने वाली कठिनाईयों एवं समस्याओं को दृष्टिगत रखकर शिक्षकों के उपयोगार्थ तीन हस्त पुस्तकाओं का विकास किया गया है जिनका उपयोग कर शिक्षक अपने दैनिक कक्षा शिक्षण को रोचक एवं बालकेन्द्रित बना सकते हैं।

- 'ध्यानाकर्षण' (Remedial Teaching)
- 'आधारशिला' (Foundation Learning)
- 'शिक्षण संग्रह' (Compendium)

मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि शिक्षणगण इन हस्तपुस्तिकाओं का उपयोग करेंगे और अपने दैनिक कक्षा शिक्षण अभ्यास को रुचिकर एवं बाल उपयोगी बना सकेंगे

मनीषा त्रिघाटिया
सचिव (बेसिक शिक्षा)

शिक्षा का अधिकार
सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें

प्राक्कथन

शैशवावस्था व्यक्तित्व के विकास की दृष्टि से एक निर्णायक अवस्था होती है। इस अवस्था में माता–पिता सहित अध्यापकों की अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका होती है। मनोवैज्ञानिक अध्ययनों के आधार पर प्रामाणिक रूप से ये कहा जाना उचित होगा कि ''प्रत्येक बच्चा सीख सकता है।'' विद्यालयों में शिक्षकों/ शिक्षिकाओं का स्नेहपूर्ण एवं संवेदनशील व्यवहार उनके आगामी जीवन की आधारशिला को सुनिश्चित करता है। परंपरागत कक्षा–शिक्षण में शिक्षकगण बच्चों की आयु, स्तर एवं पूर्व ज्ञान को ध्यान में रखकर रुचिपूर्ण, आनंददायी गतिविधियों को जोड़कर दैनिक कक्षा–शिक्षण को जीवनोपयोगी बना सकते हैं।

परंपरागत कक्षा–शिक्षण में सकारात्मक सुधार लाना प्रारम्भिक शिक्षा से सम्बद्ध प्रत्येक व्यक्ति के लिए एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। प्रारंभिक स्तर पर कक्षा शिक्षण रुचिकर एवं आनन्ददायी हो जिसके फलस्वरूप बच्चे अपनी कक्षा के अनुरूप निर्धारित दक्षताओं को भली भाँति सीख सकें, इस लक्ष्य को दृष्टिगत रखकर शिक्षकों के उपयोगार्थ तीन हस्तपुस्तिकाएं विकसित की गयी हैं –

- 'ध्यानाकर्षण'
- 'आधारशिला'
- 'शिक्षण संग्रह'

'ध्यानाकर्षण' हस्तपुस्तिका का विकास इस उद्देश्य से किया गया है कि शिक्षक उन बच्चों की सीखने में में विशेष मदद करें जिन्हें शिक्षकों की सहायता की अत्यन्त आवश्यकता है। इस हस्तपुस्तिका में बच्चों के चिन्हांकन, वर्गीकरण एवं विभिन्न शिक्षण तकनीकियों का उल्लेख किया गया है। इसके माध्यम से शिक्षक बच्चों को सीखने में सहयोग प्रदान कर सकेंगे।

'आधारशिला' हस्तपुस्तिका का विकास इस बात को ध्यान में रखते हुए किया गया है कि प्रारम्भिक स्तर पर कक्षा 1 व 2 में भाषा व गणित विषयों को किस प्रकार रोचक तरीकों व गतिविधियों से शिक्षण कराया जाए ताकि इन विषयों पर बच्चों की समझ का विकास करते हुए मजबूत आधारशिला रखी जा सके तथा भाषायी एवं गणितीय विकास के द्वारा उनके व्यक्तित्व एवं भावी जीवन को उन्नत बनाया जा सके।

'शिक्षण संग्रह' (कम्पोन्डियम) हस्तपुस्तिका में रुचिकर एवं प्रभावी कक्षा शिक्षण हेतु योजना निर्माण, सक्रिय पुस्तकालय, शिक्षक डायरी एवं आकर्षक विद्यालय भवन जो सीखने में सहायक सामग्री के रूप में कैसे विकसित किया जाये के बारे में विस्तारपूर्वक उल्लेख किया गया है।

हमें आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि शिक्षकगण अपने दैनिक कक्षा–शिक्षण को प्रभावी, रुचिकर एवं आनंदमय बनाने के उद्देश्य से इन हस्तपुस्तिकाओं का उपयोग करेंगे जिसके फलस्वरूप सभी बच्चे अपनी कक्षा के अनुरूप निर्धारित दक्षताओं को सीख सकेंगे।

इन हस्तपुस्तिकाओं के विकास में एस.सी.ई.आर.टी. उ.प्र., गुणवत्ता प्रकोष्ठ समग्र शिक्षा एवं संबद्ध ''राज्य गुणवत्ता समूह'' यूनिसेफ, इग्नस पहल तथा विभिन्न संस्थाओं के विशेषज्ञों का प्रमुख योगदान रहा है। हम उन सभी के प्रति आभार व्यक्त करते हैं।

गुणवत्ता प्रकोष्ठ
समग्र शिक्षा, उ0प्र0

अनुक्रमणिका

	विषय वस्तु	पेज सं0
भाग–1	शिक्षण संग्रह की अवधारणा, आवश्यकता	3–7
भाग–2	शिक्षण संग्रह की अंतर्वस्तुएं (Inclusions of Compendium) • प्रभावी शिक्षण कैसे • शिक्षण योजना– क्या, क्यों, कैसे • शिक्षण योजना के प्रमुख बिन्दु • शिक्षण–योजना का प्रारूप • शिक्षण योजना का आधार–लर्निंग आउटकम • लर्निंग आउटकम (अधिगम सम्बन्धी परिणाम) • अधिगम परिणाम तालिकाएँ (Learning Outcomes – Tables) • लर्निंग आउटकम प्राप्त करने के तरीके– – शिक्षण योजना – समय सारिणी – आईसीटी (सूचना एवं संचार तकनीक) का प्रयोग – विद्यालय भवन– सीखने के सहायक के रूप में (BALA) – विद्यालय भवन एवं परिवेश सीखने में सहायक – विद्यालय पुस्तकालय – प्रयोगशाला – शिक्षण अधिगम सामग्री व विज्ञान–गणित किट की उपलब्धता – बैठक व्यवस्था – शैक्षिक नवाचार – गतिविधि आधारित शिक्षण – विद्यालयीय क्रियाकलापों में परिवेशीय संसाधनों एवं सामुदायिक ज्ञान का उपयोग	8–67
भाग–3	व्यक्तित्व विकास की कार्ययोजना • प्रातःकालीन सभा • साँध्यकालीन सभा • सह शैक्षिक गतिविधियाँ • खेल गतिविधियाँ एवं प्रतियोगिताएँ • जीवन कौशल विकास • व्यक्तिगत स्वच्छता • व्यावसायिक परामर्श • बाल संसद	68–89

भाग–4	सीखने के लिए आकलन (Assessment for Learning) • आकलन क्यों किया जाना चाहिए? • आकलन बच्चों के किन पक्षों का किया जाना चाहिए? • आकलन कैसे किया जाना चाहिए? • आकलन से प्राप्त फीडबैक का उपयोग कैसे किया जाना चाहिए?	90–94
भाग–5	विद्यालय नेतृत्व (School Leadership) • संकल्पना • शैक्षिक नेतृत्व के गुण • शैक्षिक नेतृत्व के प्रकार • विद्यालय का विज़न • व्यावसायिक दक्षता का विकास • सामुदायिक सहभागिता • समावेशी शिक्षा • रिपोर्टिंग / डाक्युमेंटेशन	95–117
भाग–6	परिशिष्ट • शिक्षण योजनाएँ • शैक्षिक गतिविधियाँ • समय सारिणी • केस स्टडीज– – सामुदायिक सहयोग सम्बन्धी – कक्षा शिक्षण सम्बन्धी • राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 –संक्षिप्त परिचय • निःशुल्क और अनिवार्य बाल शिक्षा अधिकार अधिनियम–2009 संक्षिप्त परिचय • उपयोगी शैक्षिक वेबसाइट • प्रार्थनाएं, समूहगान संग्रह एवं प्रातःकालीन / साँध्यकालीन सत्र की रूपरेखा • प्रमुख महापुरुषों एवं दिवसों की जानकारी • शिक्षा संबंधी साहित्य की सूची • बेसिक शिक्षा विभाग की प्रशासनिक व्यवस्था • अन्य विभागों से सहयोग एवं समन्वयन • उपयोगी शब्दावलियाँ • महत्वपूर्ण सम्पर्क सूत्र	118–254

भाग – 1

शिक्षण संग्रह की अवधारणा एवं आवश्यकता

MasterJEEonline.com

शिक्षण संग्रह

शिक्षण संग्रह की अवधारणा एवं आवश्यकता – (Concept and Need)

यह सर्वविदित है कि प्राथमिक विद्यालय के वातावरण का प्रभाव बच्चों (विद्यार्थियों) के सम्पूर्ण जीवन पर पड़ता है। प्राथमिक कक्षाओं में शिक्षक/शिक्षिकाएँ अपने कार्य एवं आचरण के माध्यम से विद्यार्थियों में अनेक अच्छी आदतों जैसे– अनुशासित रहना, विद्यालय के नियमों का पालन करना, शिक्षकों का आदर–सम्मान करना, आपस में एक–दूसरे का सहयोग करना आदि को सहज रूप में अंतरित व विकसित करते रहते हैं। यही गुण कालांतर में बच्चों के व्यक्तित्व एवं सामाजिक जीवन में संस्कारों के रूप में परिलक्षित होते हैं।

बच्चों के व्यक्तित्व निर्माण में विद्यालय के शैक्षिक वातावरण की इस महत्त्वपूर्ण भूमिका के संन्दर्भ में अगर हम विचार करते हैं तो प्रमुख रूप से निम्नांकित अवयव उभर कर आते हैं–

- विद्यालय भवन का अत्यंत आकर्षक और साफ सुथरा होना।
- विद्यालय भवन की बाउण्ड्री वॉल का राष्ट्रीय प्रतीकों, रोचक खेलों, पशु–पक्षियों के रंगीन चित्रों से सुसज्जित होना।
- विद्यालय भवन की दीवारों, खम्भों, फर्श, बरामदों को महापुरुषों के चित्रों, आदर्श वाक्यों/सूक्तियों, वर्णमाला आदि से सुसज्जित होना।
- कक्षा–कक्षों में समय सारिणी, शैक्षिक चार्ट्स, मॉडल्स, लर्निंग आउटकम्स के चार्ट्स, रासायनिक सूत्र, गणित, विज्ञान के सूत्रों का भली प्रकार से प्रदर्शित होना।
- विद्यालय प्राँगण में पेड़–पौधे, वाटिका/फुलवारी, सुसज्जित सक्रिय पुस्तकालय, खेल का मैदान/खेल सामग्री आदि का होना।
- प्रार्थना स्थल पर प्रतिदिन योग/व्यायाम/पी.टी./सामान्य ज्ञान/प्रेरक प्रसंगों जैसी गतिविधियों का होना।
- कक्षाओं में शिक्षकों द्वारा शिक्षण योजना के अनुसार पूरी लगन के साथ शिक्षण किया जाना।
- कक्षाओं में बच्चों द्वारा सहज भाव से आनंदपूर्वक सीखने में संलग्न रहना।
- शिक्षकों द्वारा बच्चों के कार्यों का निरन्तर आकलन करते हुए सकारात्मक फीडबैक देना।

कुल मिलाकर स्कूल का ऐसा वातावरण कि जिसमें विद्यार्थियों को न केवल शिक्षकों के द्वारा बल्कि कक्षाओं के तथा विद्यालय परिसर के परिवेश से भी सीखने को मिले।

वस्तुतः शिक्षण संग्रह (Compendium) से आशय एक पुस्तिका के रूप में ऐसी सूचनाओं का संग्रह है जो आकर्षक स्कूल परिसर, शिक्षण कौशलों, शिक्षण योजनाओं, लर्निंग आउटकम्स, पुस्तकालय, प्रयोगशालाओं जैसे शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारकों से

सम्बन्धित हैं तथा जिनका उपयोग शिक्षक दैनिक कक्षा शिक्षण के नियोजन एवं क्रियान्वयन में कर सकते हैं।

Compendium is a set of different informations/ processes/ techniques regarding school building/Campus, teaching skills, teaching plans, learning outcomes, teacher diary, School library, laboratories etc. which are used by school teachers in their regular classroom teaching plan and practices.

आप शिक्षण संग्रह का उपयोग कैसे करेंगे ?

शिक्षण संग्रह का विकास शिक्षकों की आवश्यकताओं एवं उनके कार्य क्षेत्र में आने वाली समस्याओं को दृष्टिगत रखकर किया गया है जिसमें प्रारम्भिक शिक्षा से संबंधित विविध सूचनाओं एवं उपयोगी जानकारियों का संकलन है। शिक्षण संग्रह (Compendium) का उपयोग निम्नवत तरीकों से करते हुए हम अपने कार्य को सरल–सुगम व रोचक बना सकेंगे–

- शिक्षण संग्रह में उदाहरण स्वरूप दी गयी शिक्षण योजनाओं का उपयोग विषय की आवश्यकतानुरूप कक्षा शिक्षण में करें।
- संग्रह में शामिल भाषा, गणित, विज्ञान इत्यादि विषयों से संबंधित शैक्षिक क्रियाकलाप, रोचक शैक्षिक खेल एवं गतिविधियाँ दी गयी हैं, जिनका कक्षा शिक्षण में उपयोग करके शिक्षण को रोचक एवं प्रभावी बनाया जा सकेगा।
- संग्रह में कक्षावार, विषयवार, लर्निंग आउटकम्स और आकलन की विधियों का संदर्भ दिया गया है जिससे इनपर सुगमतापूर्वक कार्य किया जा सकता है।
- विद्यालय भवन एवं परिवेश को आकर्षक व सीखने में सहायक के रूप में किस प्रकार उपयोग किया जा सकता है, शिक्षण संग्रह से इसका संदर्भ लेकर आप अपने विद्यालय भवन एवं परिवेश को आकर्षक तथा बच्चों को सीखने का साधन उपलब्ध करा सकते हैं।
- संग्रह में स्कूल में की जा रही प्रातःकालीन और सांध्यकालीन सभाओं एवं अनेक सह शैक्षिक गतिविधियों एवं खेलकूद गतिविधियों का विवरण दिया गया है जिसके आधार पर इन सभाओं को रोचक व उपादेय बनाया जा सकेगा।
- इस शिक्षण–संग्रह में अनेक शैक्षिक नवाचारों (Innovation) का उल्लेख किया गया है जिनका उपयोग आप कक्षा शिक्षण को प्रभावी बनाने तथा विद्यालय के भौतिक परिवेश को संसाधन समृद्ध बनाने में कर सकते हैं।
- शिक्षण संग्रह में प्रधानाध्यापकों के लिए विद्यालय नेतृत्व संबंधी जानकारियां दी गयी है जिनका उपयोग कर प्रधानाध्यापक अपने विद्यालय विकास की योजना बनाकर अपने विद्यालयों में अपेक्षित शैक्षिक वातावरण का सृजन कर सकते हैं।
- संग्रह में उत्तर प्रदेश में कार्यरत कुछ शिक्षकों एवं प्रधानाध्यापकों के द्वारा सफलतापूर्वक किये

जा रहे अनुकरणीय कार्यों की "केस स्टडीज" दी गई हैं जिनको ध्यानपूर्वक पढ़कर हम अपने विद्यालय में गुणवत्तायुक्त शिक्षा एवं भौतिक संसाधनों की व्यवस्था सुनिश्चित कर सकते हैं।

- शिक्षण संग्रह में शिक्षकों की व्यावसायिक दक्षता विकास हेतु उपयोगी जानकारियाँ वेबसाइट, वेब लिंक, शैक्षिक साहित्य की सूची, हेल्पलाइन सम्पर्क सूत्र इत्यादि का विवरण दिया गया है जिनका सुगमता से उपयोग कर शिक्षक व्यावसायिक दक्षता का विकास कर सकेंगे।
- शिक्षण संग्रह में 'प्रभावी शिक्षण' को अंग्रेजी वर्णमाला A से Z तक मार्गदर्शक सूत्र के रूप में प्रस्तुत किया गया है जिसका उपयोग हम कक्षा शिक्षण में सफलतापूर्वक कर सकते हैं।

हम सभी यही चाहते हैं कि –

- सभी बच्चे सहज रूप से सीखें। उन्हें सीखने में आनन्द का अनुभव हो।
- पाठशाला में आकर्षक एवं संसाधन समृद्ध वातावरण हो जो बच्चों को सीखने और व्यक्तित्व निर्माण में सहायक हो।
- शिक्षकों के पास कक्षा शिक्षण सम्बन्धी ऐसी सभी जानकारियाँ एवं उपकरण उपलब्ध हों, जिनका उपयोग दैनिक शिक्षण कार्यों में कर सकें।
- शिक्षक, बच्चों व समुदाय के मध्य आपसी तालमेल हो।

यह सब संभव हो, इसी दृष्टिकोण से आवश्यक सूचनाओं/जानकारियों का संकलन कर **'शिक्षण संग्रह'** की संरचना की गई है।

MasterJEEonline.com

शिक्षण संग्रह की गतिविधियों की अनुश्रवण योजना

(Monitoring Mechanism of Compendium Activities)

आप भलीभांति अवगत हैं कि प्रदेश में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराने, विशेषकर कक्षा शिक्षण में सकारात्मक परिवर्तन लाने के उद्देश्य से अनेक प्रयास किये जा रहे हैं। इस श्रृंखला में 'आधारशिला' (Foundation Learning), "ध्यानाकर्षण" तथा शिक्षण संग्रह (Compendium) के रूप में उपयोगी हस्त पुस्तिकाओं का विकास किया गया है। इन हस्तपुस्तिकाओं में कक्षा शिक्षण, शिक्षण योजनाएँ, लर्निंग आउटकम, बच्चों की सम्प्राप्ति के सतत आकलन की विधियों, शैक्षिक नवाचारों, कक्षा शिक्षण में उपयोगी गतिविधियों आदि का विस्तृत विवरण दिया गया है। विद्यालयों में इनका यथोचित उपयोग सुनिश्चित किये जाने के उद्देश्य से नियमित अनुश्रवण किये जाने की योजना विकसित की गयी है।

- प्रत्येक स्कूल में अनिवार्य रूप से कक्षावार, विषयवार निर्धारित लर्निंग आउटकम के सापेक्ष उपलब्धि का आकलन करने हेतु कक्षा की दीवारों पर पोस्टर लगाए जायेंगे जिनका समय–समय पर खण्ड शिक्षा अधिकारी द्वारा अवलोकन एवं अनुश्रवण किया जायेगा।
- ब्लाक स्तर पर ARP (Academic Resource Persons) द्वारा प्रेरणा एप के माध्यम से पूर्णकालिक अनुश्रवण किया जायेगा।
- जिला स्तर पर गठित 'टास्कफोर्स' द्वारा शैक्षिक गतिविधियों का नियमित अनुश्रवण किया जायेगा।
- प्रदेश स्तर पर विद्यार्थियों की शैक्षिक सम्प्राप्ति की प्रगति का अवलोकन करने के उद्देश्य से 'लर्निंग आउटकम' के उपलब्धि स्तर ज्ञात करने हेतु परीक्षाएं' आयोजित की जायेगी उनके आधार पर शैक्षिक उपलब्धियों का अनुश्रवण किया जायेगा।
- खण्ड शिक्षा अधिकारी अपने क्षेत्र में नियमित रूप से निर्धारित लक्ष्य के अनुरूप सहयोगात्मक पर्यवेक्षण (Supportive Supervision) करेंगे।
- खण्ड शिक्षा अधिकारियों द्वारा अपने क्षेत्र में शिक्षकों एवं प्रधानाध्यापकों के समूह बनाकर (मोबाइल फोन पर) शैक्षिक नवाचारों, शिक्षण संग्रह की गतिविधियों का अनुश्रवण किया जाएगा।
- सभी स्कूलों के प्रधानाध्यापक माह के प्रत्येक सोमवार को शिक्षकों की बैठक करेंगे और बच्चों की शैक्षिक प्रगति (सम्प्राप्ति स्तर) में सुधार का आंतरिक मूल्यांकन करेंगे। स्कूल के प्रधानाध्यापक अभिभावकों/स्कूल प्रबन्धन समिति के सदस्यों की मासिक बैठक करेंगे और उनके स्कूल आने पर लर्निंग आउटकम की स्थिति से अवगत करायेंगे।

भाग – 2

शिक्षण संग्रह की अंर्तवस्तुएं

☞ प्रभावी शिक्षण कैसे

☞ शिक्षण योजना- क्या, क्यों, कैसे

☞ शिक्षण योजना के प्रमुख बिन्दु

☞ शिक्षण-योजना का प्रारूप

☞ शिक्षण योजना का आधार-लर्निंग आउटकम

☞ लर्निंग आउटकम (अधिगम सम्बन्धी परिणाम)

☞ अधिगम परिणाम तालिकाएं

☞ लर्निंग आउटकम प्राप्त करने के तरीके-

शिक्षण संग्रह की अन्तर्वस्तुएं (Inclusions of Compendium)

शिक्षण संग्रह की अंतर्वस्तुएं (Inclusions of Compendium) – शिक्षण योजनायें/शिक्षक डायरी, समय सारणी, लर्निंग आउटकम्स की सूची, उपयोगी टी.एल.एम., नवाचार, प्रार्थना स्थल पर आयोजित की जाने वाली गतिविधियाँ – व्यायाम, योग, सामान्य ज्ञान, प्रेरक प्रसंगों आदि के माध्यम से शिक्षक कक्षा शिक्षण को रोचक एवं प्रभावी बनाने के साथ विद्यालय में उपलब्ध संसाधनों का अधिकाधिक उपयोग करके विद्यालय के शैक्षिक वातावरण को सीखने–सिखाने के अनुकूल बना सकते हैं।

प्रभावी शिक्षण कैसे ? (How to Teach Effectively)

(प्रो0 एन0 के0 जंगीरा की पुस्तक 'प्रभावी शिक्षक' से साभार उद्‌धृत)

बच्चों की शैक्षिक संप्राप्ति का सीधा संबंध कक्षा शिक्षण की प्रभाविता से होता है। बच्चों के व्यक्तित्व के समुचित विकास में संज्ञानात्मक विकास (ज्ञान, समझ, सीखने की स्पष्टता), भावनात्मक विकास (भाव, रुचियाँ, आदतें) तथा क्रियात्मक विकास (रचनात्मकता, सृजनात्मक एवं कौशल) का होना आवश्यक है जिसके लिए प्रभावी कड़ी शिक्षण है।

प्रभावी शिक्षण की संकल्पना, सीखने की प्रक्रिया से संबंधित होती है। प्रभावी शिक्षण के तरीकों को अंग्रेजी वर्णमाला के 26 अक्षरों (A to Z) द्वारा प्रस्तुत किया गया है। प्रभावी शिक्षण के यह 26 तरीके एक दूसरे से क्रमबद्धता के रूप में **"प्रभावी शिक्षण की सीढ़ी"** (Ladder of Effective Teaching) पर प्रदर्शित किए गए हैं । इन तरीकों को आप आवश्यकतानुसार अपनी कक्षा शिक्षण प्रक्रिया के दौरान अपनाएँगे तो निश्चित ही शिक्षण प्रभावी होगा।

प्रभावी शिक्षण की सीढ़ी (Ladder of Effective Teaching)

बच्चों के सीखने की प्रक्रिया को सहज, सरल एवं बाल केंद्रित बनाते हुए स्थायी अधिगम हेतु अंग्रेजी के 26 अक्षरों को प्रभावी शिक्षण की सीढ़ी की तरह निम्नवत प्रयोग किया गया है–

प्रभावी शिक्षण के तरीके (Means of Effective Teaching)

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराने में प्रभावी शिक्षण एक प्रमुख तत्व है। बच्चों को सही मायने में अधिगम की संप्राप्ति तभी होती है जब शिक्षक द्वारा प्रभावी शिक्षण किया जाता है। शिक्षण को प्रभावी कैसे बनाएंगे, इसके लिए शिक्षण–संग्रह (Compendium) में निम्नवत् तरीकों को सम्मिलित किया गया है–

प्रभावी शिक्षण की सीढ़ी
(Ladder of Effective Teaching)

गुणवत्तायुक्त शिक्षा उपलब्ध कराने में प्रभावी शिक्षण एक प्रमुख तत्व है। प्रभावी शिक्षण बच्चों के सीखने की प्रक्रिया को सहज, सरल एवं बालकेन्द्रित बनाते हुए स्थायी अधिगम हेतु कारगर होता है। अंग्रेजी के 26 अक्षरों को **"प्रभावी शिक्षण की सीढ़ी"** की तरह प्रयोग किया गया है।

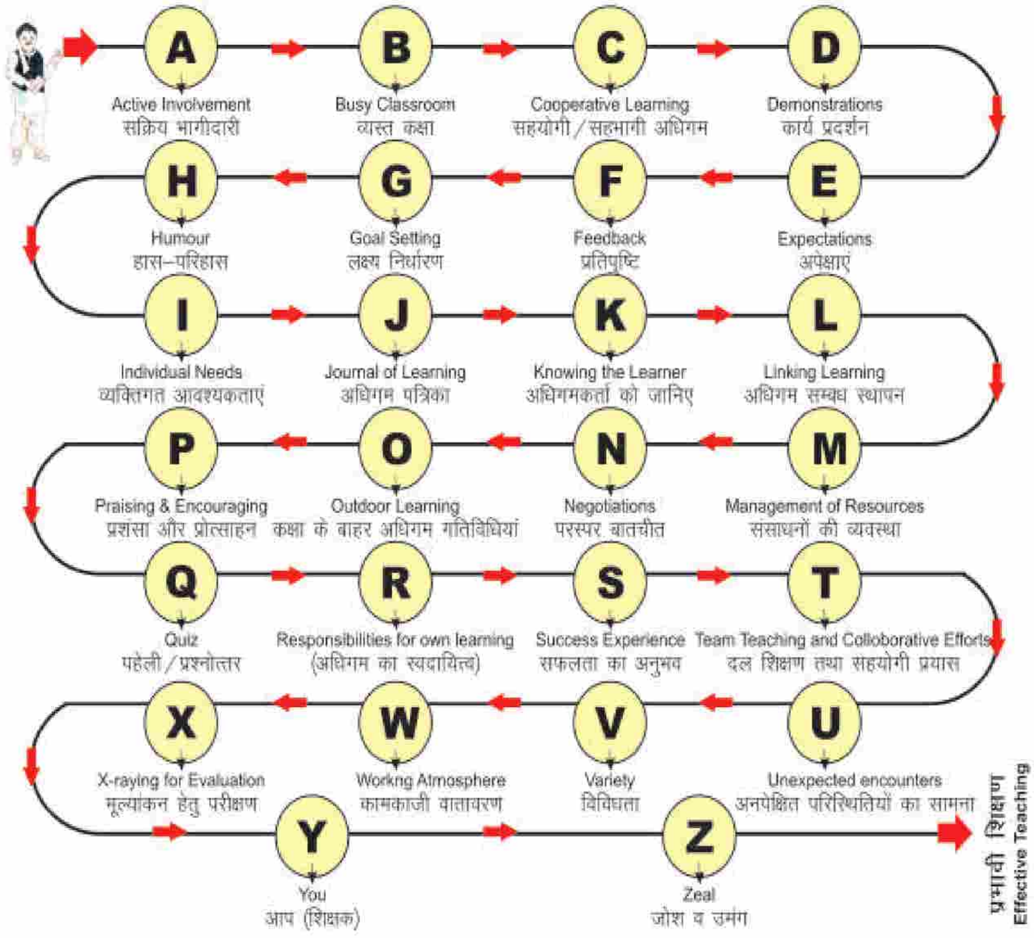

A ACTIVE INVOLMENT (सक्रिय भागीदारी)

सीखने–सिखाने की प्रक्रिया में बच्चों की सक्रिय भागीदारी हेतु आवश्यक माहौल तैयार करने में यह मार्गदर्शक सूत्र अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इसके लिए–

शिक्षक करें (Teacher Do's)

- सीखने–सिखाने की प्रक्रिया में बच्चों को भी शामिल कीजिए।
- कक्षा में सभी को सीखने का अवसर उपलब्ध कराएं। ऐसे क्रियाकलापों का चयन कीजिए जिनमें सभी बच्चे सक्रिय होकर सीखें। गतिविधियों के चयन में बच्चों के मन की बात को भी सुनिए।
- बच्चों को छोटे–बड़े समूह में अपने विचारों, अनुभवों को कहने का अवसर दीजिए।
- बच्चों को प्रतिदिन की अधिगम डायरी लिखने के लिए प्रोत्साहित कीजिए।
- बच्चों में विषयवार लर्निंग आउटकम की समझ विकसित करने के लिए स्रोत तथा अधिगम सामग्री भी उपलब्ध कराइए।

B BUSY CLASSROOM (व्यस्त कक्षा)

प्रभावी कक्षा में सभी बच्चे विषयगत रचनात्मक क्रियाकलापों में व्यस्त रहते हैं।

शिक्षक करें (Teacher Do's)

- सीखने के लक्ष्य (लर्निंग आउटकम) की रूपरेखा अच्छी तरह तैयार कीजिए और सीखने की प्रक्रिया तथा गतिविधियों को स्पष्ट करने वाले निर्देशों को भी स्पष्ट रूप से समझ लीजिए ।
- बच्चों की भूमिका को भी स्पष्ट कीजिए कि वह कक्षा में किस प्रकार के क्रियाकलाप करेंगे अथवा कराएँगे।
- कक्षा में विभिन्न रचनात्मक गतिविधियों द्वारा प्रोत्साहन एवं कामकाजी वातावरण बनाए रखिए।
- लर्निंग आउटकम के क्रियान्वयन के समय बच्चों की पाठ्यपुस्तक, कार्यपुस्तिका (वर्क बुक), वर्कशीट जैसे सीखने के स्रोतों या साधनों की व्यवस्था पूर्व में ही कर लीजिए।

C COOPERATIVE LEARNING (सहभागी/सहयोगी अधिगम)

सहभागी अधिगम में बच्चे अपनी कक्षा में साथ–साथ पढ़ते हैं और समूहों में कार्य करके सीखते हैं । इस तरीके से बच्चे अधिक से अधिक सीखने में सफलता प्राप्त करते हैं । इसके लिए शिक्षक ऐसे क्रियाकलापों का चयन करते हैं जो सभी को समूह में मिलकर करने होते हैं जैसे– प्रोजेक्ट कार्य, विषयवार छोटे समूह की गतिविधियाँ।

MasterJEEonline.com

शिक्षक करें (Teacher Do's)

- कक्षा में 3–4 छोटे समूह बनाइए।
- प्रत्येक समूह के लिए लर्निंग आउटकम से संबंधित प्रोजेक्ट कार्य गतिविधि का चयन कीजिए।
- बच्चों को सहयोगी अधिगम में किए जाने वाले कार्यों के बारे में समझाइए, जैसे– सभी लोग अपने समूहों में मिलजुल कर एक दूसरे का सहयोग करते हुए कार्य करेंगे।
- समूह के प्रत्येक सदस्य की जवाबदेही तय कर दीजिए।
- सीखने के स्रोतों और विचारों में हिस्सा/भागीदारी लेने के लिए सभी छात्रों और प्रत्येक समूह को प्रोत्साहित कीजिए।

D DEMONSTRATION (कार्य प्रदर्शन)

यहां पर कार्य प्रदर्शन का तात्पर्य, कक्षा में शिक्षक एवं बच्चे द्वारा किसी प्रयोग या उदाहरण को प्रत्यक्ष रूप से करने से है। यह व्यावहारिक कार्य की संकल्पना पर आधारित है जिसे मॉडलिंग अर्थात प्रतिरूपण (Simulation) भी कहते हैं। प्रभावी शिक्षण के लिए प्रदर्शन व प्रतिरूपण की जरूरत होती है।

शिक्षक करें (Teacher Do's)

- विषय के ऐसे लर्निंग आउटकम का चयन कीजिए जिसमें मॉडल के प्रदर्शन की आवश्यकता हो, जैसे– विज्ञान व पर्यावरणीय अध्ययन विषय।
- बच्चों को स्पष्ट निर्देश देते हुए प्रदर्शन के लिए तैयार कीजिए।
- बच्चों में विचार शक्ति को प्रोत्साहन देने और उनका ध्यान, उत्साह बराबर बनाए रखने के लिए उनसे प्रश्न पूछिए ताकि वे प्रदर्शन के परिणामों का अनुमान लगा सकें।

E EXPECTATIONS (अपेक्षाएं)

शिक्षक को अपने बच्चों की सफलता के संबंध में स्वयं से भी अपेक्षाएं रखनी चाहिए उनका शिक्षण ऐसा हो जिसमें सभी बच्चे सीखने की प्रक्रिया में शामिल होते हुए सीखें।

शिक्षक करें (Teacher Do's)

- कक्षा शिक्षण के प्रति आत्मविश्वास बनायें।
- बच्चों को बातचीत, गतिविधियों एवं अपने सकारात्मक हाव–भाव से सफलता के प्रति आशान्वित रखिए।
- बच्चों को व्यक्तिगत एवं सामूहिक रूप से अधिगम निर्णय लेने के लिए प्रोत्साहित कीजिए।

F FEEDBACK (प्रतिपुष्टि)

फीडबैक ऐसी जानकारी है जिससे हमारी (शिक्षक/बच्चों दोनों की) किसी वस्तु में तत्समय तक की समझ का पता चलता है। इसके साथ ही यह भी ज्ञात होता है कि जिस लर्निंग आउटकम के उद्देश्य को हम प्राप्त करना चाहते हैं उसकी सम्प्राप्ति किस सीमा तक हुई है और उसकी कमियों को पूरा करने के लिए क्या किया जा सकता है।

शिक्षक करें (Teacher Do's)

- बच्चों को तुरंत फीडबैक दीजिए। किन्तु ध्यान रहे बच्चों पर इसका नकारात्मक प्रभाव न पड़े।
- बच्चों को उनकी प्रगति के अनुरूप व्यक्तिगत या सामूहिक रूप से फीडबैक दीजिए।
- कब और कहाँ व कैसे फीडबैक देना है, इसका चयन आप स्वयं कीजिए ।
- औपचारिक व अनौपचारिक दोनों तरीकों से बच्चों को फीडबैक दीजिए– क्विज के माध्यम से औपचारिक एवं मुस्कुराहट, थपथपाहट जैसे प्रोत्साहनों से अनौपचारिक फीडबैक दीजिए।

G GOAL SETTING (लक्ष्य निर्धारण)

लक्ष्य निर्धारण विषय की रूपरेखा होती है, जो प्रभावी शिक्षण का प्रथम चरण है ।

शिक्षक करें (Teacher Do's)

- निर्धारित किए जाने वाले लक्ष्यों और कार्यों के बारे में बिल्कुल स्पष्ट रहिए।
- कक्षा में बच्चों की विशिष्ट जरूरतों पर विचार अवश्य कीजिए और उसके अनुरूप शिक्षण योजना बनाएँ।
- लक्ष्य के निर्धारण व क्रियान्वयन में बच्चों की कक्षा, रुचियों, अनुभवों व उनकी आयु को ध्यान में रखिए।
- बच्चों की विषयवार जरूरतों को पूरा करने के लिए लक्ष्यों की समयबद्ध समीक्षा कीजिए।

H HUMOUR (हास-परिहास)

प्रभावी शिक्षण के लिए कक्षा में हास–परिहास यानी खुशी का माहौल होना बहुत ही जरूरी होता है। यह तनाव दूर करता है और कक्षा का वातावरण आनन्ददायी व पढ़ने लायक बनाता है

शिक्षक करें (Teacher Do's)

- कक्षा शिक्षण के समय बीच–बीच में रुचिकर माहौल बनाने और हास– परिहास के लिए चुटकुले, मुहावरों, हास्य कविता जैसे क्रियाकलापों को भी यथा समय प्रयोग करना चाहिए।

- अपनी कक्षा में हास–परिहास के प्रभावों को शिक्षक डायरी में प्रतिदिन लिखिए।

I INDIVIDUAL NEEDS (व्यक्तिगत आवश्यकताएँ)

प्रत्येक बच्चे का व्यक्तित्व अलग–अलग होता है। सभी की योग्यताएं एवं जरूरतें भी अलग–अलग होती हैं, इसीलिए प्रभावी शिक्षण के दौरान सभी बच्चों की व्यक्तिगत योग्यताओं, आवश्यकताओं को पहचानना और उनके अनुरूप शिक्षण कार्य करना जरूरी होता है।

शिक्षक करें (Teacher Do's)

- कक्षा में सभी बच्चों की व्यक्तिगत जरूरतों के प्रति संवेदनशील रहिए।
- बच्चों के व्यवहार का अवलोकन, बच्चों के आपस में मिलने–जुलने की प्रक्रिया, उनकी रुचियों और सामर्थ्य तथा उनके सीखने की इच्छा को जानिए और उसका अभिलेखीकरण भी कीजिए।
- लर्निंग आउटकम को सीखने में आने वाली कठिनाइयों का आकलन कीजिए।
- बच्चों के अभिभावकों से भी उनकी व्यक्तिगत आवश्यकताओं को जानिए और निर्देशन भी दीजिए।
- बच्चों को आपसी बातचीत और एक दूसरे की सहायता लेने व देने के लिए प्रोत्साहित कीजिए।

J JOURNAL OF LEARNING (अधिगम पत्रिका)

प्रभावी शिक्षण के लिए बच्चों को प्रतिदिन उनके सीखने के लर्निंग आउटकम्स को अधिगम पत्रिका में लिखने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

शिक्षक करें (Teacher Do's)

- बच्चों को प्रतिदिन लिखने के लिए प्रोत्साहित कीजिए।
- बच्चों को एक फ्रेमवर्क दीजिए, जैसे–

दिनांक	विषय	पाठ संख्या व नाम	लर्निंग आउटकम	लर्निंग आउटकम की प्रगति	
				समझ में आया	सहयोग की जरूरत

- बच्चों को उनकी निजी शैलियों में लिखने को प्रोत्साहन दीजिए।
- बच्चों को अधिगम–पत्रिका पर आपसी विचार–विमर्श का मौका दीजिए।

K KNOWING THE LEARNER (अधिगमकर्ता को जानिए)

प्रभावी शिक्षण के लिए अधिगमकर्ता (बच्चों) के पूर्व अनुभव, वर्तमान लर्निंग आउटकम, पर उसकी स्थिति, अभिवृत्तियों एवं रुचियों को जानना और समझना जरूरी है। शिक्षण योजना के लिए "अधिगमकर्ता को जानना" एक प्रमुख बिन्दु है क्योंकि सीखने–सिखाने की प्रक्रिया का क्रियान्वयन इसी पर निर्भर होता है।

शिक्षक करें (Teacher Do's)

- बच्चों के स्वभाव व जरूरतों के बारे में जानकारी एकत्रित कीजिए।
- कक्षा शिक्षण के समय बच्चों के पूर्व ज्ञान का उपयोग कीजिए।
- बच्चों के वर्तमान ज्ञान और नए कार्यों में संबंध जोड़िए।
- शिक्षण योजना बनाते समय, पढ़ाते समय और मूल्यांकन करते समय यह मार्गदर्शक सूत्र उपयोगी होगा।

L LINKING LEARNING (अधिगम संबंध-स्थापन)

सीखने की प्रक्रिया, सीखने की विषय–वस्तुओं के परस्पर संबंध स्थापना पर निर्भर करती है। यह हमेशा सरल रेखीय नहीं होती, बल्कि इसमें अधिगम कार्यों की कई श्रृंखलाएँ शामिल होती हैं।

शिक्षक करें (Teacher Do's)

- शिक्षण योजना बनाते समय **"सीखने के क्रमों"** (Sequences of Learning) को ध्यान में रखिए।
- कक्षा शिक्षण करते समय अधिगम गतिविधियों पर लर्निंग आउटकम्स के उद्देश्यों और उनके सीखने–सिखाने की प्रक्रिया के क्रमानुसार तकनीकों एवं तरीकों में आपसी तालमेल, समायोजन, सादृश्यीकरण, अपने शिक्षण का मूल्यांकन व फीडबैक, सोच–विचार और बच्चों की अधिगम पत्रिका (बच्चों की डायरी) को लिखवाना जैसे कार्यों के बीच में संबंध स्थापित करें ताकि आपका शिक्षण प्रभावी हो।
- सीखने के क्रियाकलापों को जोड़ने हेतु अंतः पाठों (Intra Lesson) का प्रावधान कीजिए।

M MANAGEMENT OF RESOURCES (संसाधनों की व्यवस्था)

प्रभावी शिक्षण के लिए सबसे महत्वपूर्ण मानवीय संसाधन हैं। कक्षा शिक्षण के दौरान बच्चों को सीखने के संसाधन के रूप में प्रयोग किया जाए तो शिक्षण कार्य प्रभावी व सफल होगा। प्रभावी शिक्षण के लिए समय प्रबंधन एवं बच्चों को शिक्षण संसाधन के रूप में उपयोग किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त स्थानीय उपलब्ध संसाधनों का यथावश्यक उपयोग कक्षा शिक्षण में प्रभावी हो सकता है।

शिक्षक करें (Teacher Do's)

- समय को कक्षा संसाधन के रूप में प्रयोग कीजिए।
- बच्चों का शिक्षण अधिगम के साधन के रूप में उपयोग कीजिए।
- कक्षा में बच्चों की बैठक व्यवस्था को लर्निंग आउटकम के आधार पर तय कीजिए जैसे तत्वों के नाम व उनके प्रतीकों को सिखाना है तो बच्चों को उनके अनुक्रमांक के अनुसार 1 यानि H, 2 यानि He,3 यानि Li...30 अनुक्रमांक तक की संख्या वाले बच्चों तक करें।
- कक्षा में बच्चों को समूह में विभाजित करके उनकी सहायता के लिए सभी समूहों तक जाइए।

N NEGOTIATION (परस्पर बातचीत)

बातचीत एक तरीका है जिसके माध्यम से शिक्षक व बच्चे आपसी विचारों का आदान–प्रदान करते हैं। बातचीत के दौरान बच्चों के अनुभवों से शिक्षण कार्य की शुरुआत करने से आपका कक्षा शिक्षण प्रभावी होगा।

शिक्षक करें (Teacher Do's)

- बातचीत हमेशा लर्निंग आउटकम से संबंधित हो (चित्रों के माध्यम से, कहानी, कविता का उपयोग करके)।
- बच्चों को प्रोत्साहित कीजिए कि वे बिना किसी संकोच, डर, भय व तनाव के विचार–विमर्श के लिए विषय–वस्तु लेकर आएँ।
- बच्चों से संदर्भ आधारित बातचीत अवश्य कीजिए।

O OUTDOAR LEARNING (कक्षा के बाहर की अधिगम गतिविधियां)

अधिगम के लिए बच्चों को कक्षा के बाहर ले जाकर भी गतिविधियाँ कराई जाएँ जिससे कि वे पर्यावरण में मौजूद वास्तविक जीवन की परिस्थितियों में क्रियाशील रहते हुए स्थाई रूप से सीख सकें।

शिक्षक करें (Teacher Do's)

- ऐसे अधिगम कार्यों की सूची बनाएँ जिनमें कक्षा के बाहर की गतिविधियों की जरूरत पड़ती है।
- कक्षा के बाहर की गतिविधियों के लिए समय का चयन कीजिए और संबंधित व्यक्तियों से सम्पर्क करके शैक्षिक यात्रा हेतु कार्यक्रम बनाइए।
- बच्चों को इस शैक्षिक यात्रा के उद्देश्यों के बारे में बताइए तथा उनसे आपको क्या अपेक्षाएँ हैं, किस सहायता की जरूरत है, यह भी बताइए।
- बच्चों के अभिभावकों को सूचना दीजिए और उनकी सहमति भी प्राप्त कीजिए।
- बच्चों की भागीदारी को प्रोत्साहित कीजिए।

P PRAISING AND ENCOURAGING (प्रशंसा और प्रोत्साहन)

कक्षा में प्रशंसा और प्रोत्साहन बच्चों के व्यवहार को पुष्ट करने के लिए एक प्रभावकारी उपाय है। उदाहरण के रूप में मुस्कुराना, थपथपाना, शाबाशी देना ऐसे तरीके हैं जिनमें बोलने की भी जरूरत नहीं पड़ती है।

शिक्षक करें (Teacher Do's)

- बच्चों के वास्तविक प्रयत्न और उनकी उपलब्धियों को पहचानने के लिए तत्पर रहें।
- बच्चों के प्रयत्नों और उपलब्धि की गुणवत्ता को ध्यान में रखकर प्रशंसा और प्रोत्साहन के लिए उपयुक्त शब्द या कार्य का चयन कीजिए।
- बच्चों के कार्य प्रदर्शन के तुरंत बाद प्रशंसा और प्रोत्साहन दीजिए।
- लर्निंग आउटकम्स की संप्राप्ति में कमजोर बच्चों को प्रोत्साहन दीजिए।
- प्रशंसा तत्काल की जानी चाहिए, विलंब से नहीं।

Q QUIZ (प्रश्नोत्तरी/पहेली)

प्रश्नोत्तरी पहेली 'प्रश्नों का वह समूह' है, जो बच्चों के अधिगम की प्रगति का आकलन करने में सहायक होता है। यह मौखिक एवं लिखित दोनों रूपों में हो सकता है।

शिक्षक करें (Teacher Do's)

- प्रश्नोत्तरी का उद्देश्य निश्चित हो तथा इसका स्वरूप भी तय कर लीजिए जैसे कि यह खेल के रूप में होगा या प्रतियोगिता के रूप में होगा।

- प्रश्नोत्तरी का माध्यम मौखिक या लिखित हो, इसे आप तय कर लीजिए।
- बच्चों को स्वयं त्रुटि सुधारने और प्रश्नोत्तरी में अंक हासिल करने के लिए प्रोत्साहित कीजिए।
- योजना के मुताबिक प्रश्नोत्तरी को संगठित कीजिए।

R RESPONSIBILITY FOR OWN LEARNING (अधिगम का स्वदायित्व)

"स्वयं की धारणा" और "व्यक्तिगत नियंत्रण" अधिगम के स्व दायित्व बोध क्षमता पर आधारित होते हैं। जो बच्चे अपनी पढ़ाई–लिखाई की जिम्मेदारी स्वयं उठाते हैं, वे सीखने में ज्यादा सफल होते हैं। विशेष आवश्यकता वाले बच्चों (CWSN) के लिए स्व–अधिगम (self learning) हेतु शिक्षक के स्व–दायित्व उपयोगी होते हैं।

शिक्षक करें (Teacher Do's)

- बच्चों को यह समझने के लिए प्रोत्साहित कीजिए कि उनकी सफलता मुख्यतः उन्हीं के अपने प्रयत्नों का परिणाम है।
- बच्चों में अधिगम की जिम्मेदारी का विकास करने के लिए सक्रिय अधिगम प्रणाली का अनुसरण कीजिए।
- बच्चों में उनके स्वसम्मान व स्वधारणा को बढ़ाने के लिए स्वतंत्र अधिगम के माध्यम से सफलता के अनुभव उपलब्ध कराइए।
- बच्चों को अधिगम की उन प्रणालियों को पहचानने में सहायता कीजिए जो उन्हें सफलता की ओर ले जा सकती है।
- कक्षा में बच्चों के अंदर सीखने के लिये स्व दायित्व के बोध का विकास कराइए।

S SUCCESS EXPERIENCE (सफलता का अनुभव)

"सफलता ही सफलता को जन्म देती है।" सफलता सीखने वाले के पूर्व ज्ञान, काम पूरा करने के लिए उपलब्ध समय और बच्चों की समस्याओं का समाधान करने की क्षमता पर आधारित होती है। जब बच्चे विश्वास के साथ सीखने के लिए आगे बढ़ते हैं तो उनकी सफलता की सम्भावनायें प्रबल हो जाती हैं।

शिक्षक करें (Teacher Do's)

- शिक्षण में सफलता के अनुभव की योजना बनाइए।
- सीखने के कार्यों का विभाजन छोटे–छोटे कार्यों में कीजिए। ये कार्य आसान एवं चुनौतीपूर्ण हों।

- बच्चों को इस प्रकार की सहायता दीजिए कि वे अपनी समस्या का समाधान स्वयं करते हुए सफलता का अनुभव करें।
- बच्चों की सफलता प्राप्ति पर उनके साथ खुशियाँ मनाइए।
- बच्चों को हमेशा प्रोत्साहित कीजिए, जिससे वह सफल हो सकें।

T TEAM TEACHING AND COLLABORATIVE EFFORTS

(दल शिक्षण तथा सहयोगी प्रयास)

विषय से संबंधित दल शिक्षण के लिए सहयोगी प्रयास की जरूरत होती है। यह सभी शिक्षकों एवं बच्चों के लिए उपयोगी तथा लाभप्रद है। सहयोगी अधिगम हेतु दल शिक्षण के साथ ही साथ सभी शिक्षकों, अभिभावकों एवं समुदाय के अन्य सदस्यों का सहयोग जरूरी है। विद्यालय स्तर पर वार्षिक कार्यक्रमों एवं शैक्षिक भ्रमण में सहयोगी प्रयास किये जाने चाहिये।

शिक्षक करें (Teacher Do's)

- कक्षा शिक्षण में अपने विद्यालय के सहयोगी शिक्षकों से भी कक्षा शिक्षण हेतु सहयोग लेने के लिए बातचीत कीजिए, जिससे वह आपकी टीम टीचिंग का हिस्सा बन सकें।
- स्थानीय व्यक्तियों/अभिभावकों एवं अन्य सहयोगियों को योजना बनाने के स्तर से लेकर सभी स्तरों में शामिल कीजिए।
- शिक्षण, शैक्षिक प्रयोगों एवं नवाचारों में एक दूसरे को सहयोग तथा समर्थन प्रदान कीजिए।

U UNEXPECTED ENCOUNTERS (अनपेक्षित परिस्थितियों का सामना)

कभी–कभी कक्षा शिक्षण के दौरान अनपेक्षित परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है। इस प्रकार की परिस्थितियों में शिक्षक का उन तरीकों को जानना, समझना एवं उनका कक्षा में प्रयोग करना बहुत ही जरूरी है जिनसे ऐसी परिस्थितियों से निपटा जा सके और कक्षा शिक्षण प्रभावित न हो।

शिक्षक करें (Teacher Do's)

- कक्षा में अनपेक्षित परिस्थितियों को एक चुनौती के रूप में स्वीकार करते हुए समाधान कीजिए। ऐसी परिस्थितियों में बिना किसी पूर्वाग्रह या गुस्से का अनुभव किए अपनी प्रतिक्रिया दीजिए, चाहे वह आपके विद्यालय में कुछ व्यक्तियों या समूह द्वारा ही क्यों न उत्पन्न की गई हो।

- शिक्षण के दौरान अपने द्वारा की गई किसी गलती को स्वीकार करने से हिचकिचाइये नहीं। बच्चों को किसी और सुविधाजनक दिन उस बिन्दु पर आगे बातचीत करने के लिए कहिए।
- अनपेक्षित प्रसंगों को कभी भी विवाद का विषय मत बनाइए। इन्हें अपनी दैनिक डायरी में नोट कीजिए और समाधान भी कीजिए।

V VARIETY (विविधता)

प्रभावी कक्षा शिक्षण के लिए "अधिगम अनुभवों की विविधता" एक अनिवार्य शर्त है। बच्चों का ध्यान आकृष्ट करने और उनकी व्यक्तिगत जरूरतों को पूरा करने तथा किसी भी विषय–वस्तु को सीखने व समझने के लिए अधिगम में अधिक से अधिक विविधतापूर्ण अनुभवों को शामिल किया जाएगा तभी शिक्षण प्रभावी होगा।

शिक्षक करें (Teacher Do's)

- जब कक्षा में बच्चे थक जाते हो और आपकी बातों को ध्यानपूर्वक नहीं सुन रहे हों तो इस स्थिति में अपने व्यवहार, मुद्राओं, गतिविधियों में परिवर्तन करते हुए नवाचार, दृश्य श्रव्य सामग्री आदि का यथावश्यक उपयोग कीजिए।
- शिक्षण में विविधताओं को निम्नांकित प्रकार से अपनी योजना में शामिल करें–
    - उद्देश्यों के विभिन्न स्तरों को शामिल करें।
    - अधिगम अनुभवों की विविधता, व्यक्तिगत विभिन्नताओं का ध्यान, जोड़े में, छोटे समूहों में तथा बड़े समूहों में कार्य का अवसर दें।
    - कक्षा के अंदर एवं बाहर के संदर्भों में विविधता रखें।
- बच्चों को सीखने में आ रही समस्या के समाधान का अवसर दें।

W WORKING ATMOSPHERE (अनुकूल कार्य परिस्थितियाँ)

अनुकूल कामकाजी वातावरण प्रभावी शिक्षण के लिए एक आवश्यक घटक है। इसके दो प्रमुख अंग है– एक कक्षा का वातावरण जो बच्चों को सीखने में व्यस्त रखता है और उन्हें कठोर परिश्रम के लिए प्रोत्साहित करता है तथा दूसरा बच्चों के विचारों और संसाधनों की भागीदारी को प्रोत्साहन जो कामकाजी व रचनात्मक परिस्थितियों का निर्माण करता है।

शिक्षक करें (Teacher Do's)

- कक्षा में विश्वास आधारित वातावरण बनाइए।
- कक्षा में कामकाजी व्यवहार प्रदर्शित कीजिए।
- रचनात्मक गतिविधियों को बिना किसी व्यवधान के जारी रहने दीजिए।
- विद्यालय में आवश्यक सामग्री की तत्काल उपलब्धता को सुनिश्चित करते हुए कक्षा की दैनिक गतिविधियों की योजना बनाइए।
- कक्षा में कामकाजी वातावरण की प्रभावकारिता पर नजर रखिए कि उसमें कहाँ और किस सुधार की जरूरत है?
- कक्षा में अनुशासनात्मक हस्तक्षेप को कम से कम रखिए। इसके स्थान पर सहयोगी माहौल की स्थापना कीजिए।

X X-RAYING FOR EVALUATION (मूल्यॉंकन हेतु परीक्षण)

एक शिक्षक को एक्स–रे टेक्नीशियन की तरह बच्चों की अधिगम प्रक्रिया व उनकी उपलब्धियों का निरन्तर आकलन करना जरूरी होता है। यह सतत् एवं व्यापक हो तो बच्चों की प्रगति का तत्काल पता चल जाएगा कि कक्षा का प्रत्येक बच्चा सीखने के किस स्तर पर है। इसके लिए आपको मूल्यॉंकन हेतु परिजनों की सहायता लेनी होगी।

शिक्षक करें (Teacher Do's)

- अपनी कक्षा में आकलन की रूपरेखा बनाइये जिसका स्वरूप बच्चों की प्रगति के आकलन हेतु दैनिक, साप्ताहिक, मासिक, त्रैमासिक, छमाही एवं वार्षिक मूल्यॉंकन हेतु होगा।
- शिक्षण प्रक्रिया के आकलन में तकनीकों का प्रयोग जैसे अवलोकन, बच्चों से बातचीत, स्व मूल्यांकन, पहेली, लिखित परीक्षा बहुत ही ज्यादा उपयोगी होते हैं। इनका प्रयोग अवश्य करें।
- आकलन व मूल्यांकन करने, स्वयं अपनी योजना बनाने और उसे लागू करने तथा प्रगति दर्ज करने में बच्चों को शामिल कीजिए।

Y YOU (आप अर्थात शिक्षक)

अपनी कक्षा में आप प्रभावी शिक्षण की कुँजी है। आप ही सीखने–सिखाने की प्रक्रिया का आधार हैं क्योंकि आप ही बच्चों से सीधे जुड़े होते हैं और उनकी प्रत्येक गतिविधियों का अवलोकन, आकलन व मूल्यॉंकन करते हैं। आपकी क्रियाशीलता एवं चिन्तन से प्रभावी शिक्षण सम्भव है।

शिक्षक करें (Teacher Do's)

- सभी बच्चों को प्रोत्साहित करते हुए सक्रिय बनाइए।
- बच्चों को भी अपनी शिक्षण योजना का हिस्सा बनाइए।
- कक्षा में सभी बच्चों के लिए एक सहयोगी की भूमिका में अपने कार्यों का क्रियान्वयन कीजिए।
- बच्चों में सृजनात्मकता के विकास हेतु विभिन्न प्रकार की शैक्षिक गतिविधियों एवं नवाचार माध्यमों का प्रयोग कीजिए।
- बच्चों को हमेशा बातचीत करने, प्रश्न पूछने, एक दूसरे के विचारों का सम्मान करने, स्व अधिगम एवं स्व मूल्याँकन का अवसर दीजिए।

Z ZEAL (जोश और उमंग)

प्रभावी शिक्षण के लिए शिक्षक द्वारा कक्षा में सभी क्रियाकलापों को जोश और उमंग से करना नितांत जरूरी है। जोशीले शिक्षक को अपनी कक्षा में एक ही समय में एक से अधिक कार्य करने की अपनी योग्यता पर विश्वास होना चाहिए कि वे अपने प्रभावी शिक्षण द्वारा सभी बच्चों को विषयवार लर्निंग आउटकम्स की संप्राप्ति करा लेंगे।

शिक्षक करें (Teacher Do's)

- शिक्षण के लिए सदैव तैयार रहिए। कभी भी कक्षा में हिचकिचाहट के साथ प्रवेश मत कीजिए।
- किसी भी व्यक्तिगत समस्या/बहस का बोझ कभी भी अपनी कक्षा में मत ले जाइए।
- कक्षा में सदैव मुस्कुराते हुए प्रवेश कीजिए।
- हमेशा बच्चों की जरूरतों के प्रति संवेदनशीलता का भाव और सफलता के आशीर्वाद के साथ कक्षा में प्रवेश कीजिए।
- सीखने के प्रति सभी बच्चों को प्रोत्साहित कीजिए तथा बच्चों की सफलता और उपलब्धि पर खुशियां मनाइए।
- कक्षा में हास–परिहास का विवेकपूर्ण उपयोग कीजिए।
- शिक्षण में सफलता के प्रति विश्वास रखिए और बच्चों के उत्साह को निरंतर बनाए रखिए।

उपसंहार

वास्तव में कक्षा में शिक्षण उसी प्रकार से होता है जैसा शिक्षक सोचते हैं, बनाते हैं और करते हैं। कक्षा में शिक्षक बच्चों के साथ वही क्रियाएँ करते हैं जैसा कि उन्होंने चिंतन किया है। प्रभावी शिक्षण गुणवत्तायुक्त शिक्षा की संप्राप्ति का आवश्यक परिणाम है, जिसे सभी शिक्षक किसी भी कक्षा और विषय के लर्निंग आउटकम की संप्राप्ति के लिए प्रयोग करते हैं।

कक्षा शिक्षण के दौरान **"मैं कल से नहीं आज से ही अपने शिक्षण कार्य को बाल केंद्रित बनाऊंगा"** इस कथन को आत्मसात कीजिए और अपने शिक्षण को प्रभावी बनाने में इन सभी तरीकों को आवश्यकतानुसार उपयोग कीजिए।

आप अन्य तरीकों से भी कक्षा शिक्षण को प्रभावी बनाने के लिए प्रयत्नशील हो सकते हैं। प्रभावी शिक्षण के लिए आशावादी सोच के साथ सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हुए बच्चों के सहयोगी बनकर शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का क्रियान्वयन कीजिए। ऐसा करने से हम सभी अवश्य सफल होंगे।

शिक्षण योजना – क्या, क्यों, कैसे ?

कुछ शिक्षक शिक्षण–योजना बनाकर शिक्षण कार्य करते हैं, जबकि कुछ शिक्षक बिना किसी योजना के ही। ऐसी स्थिति में कक्षा अवलोकन के दौरान कुछ इस तरह के दृश्य देखे जाते हैं–

दृश्य 1 :–(शिक्षक बिना किसी तैयारी / योजना के कक्षा में जाते है।) शिक्षक बच्चों से–

शिक्षकों की क्रिया	बच्चों की प्रतिक्रिया
• क्या हो रहा है? किताब खोलो। • अरे! ये वाली नहीं, गिनतारा की। • हाँ, क्या पढ़ोगे इसमें... • अच्छा, पाठ–3 खोलो... • अच्छा, सुनो सब लोग पाठ–3 नहीं, पाठ–6 खोलो। • इसका तीसरा सवाल लगाओ....	• कुछ ने खोली, कुछ ने नहीं, कुछ को मिल ही नहीं रही है। • बच्चे कुछ परेशान से हैं, लेकिन नाटकीय ढंग से चुप हैं। • फुसफुसाहट जारी है.... • बच्चों में बेचैनी झलक रही है। • कुछ ने किया, कुछ ने नहीं, कुछ तीसरा सवाल खोज ही नही पाए। • समय बीत गया। कक्षा से वापसी... पता नहीं, कुछ सीखा या नहीं।

सोचें और बतायें –

- इस कक्षा में बच्चों ने क्या सीखा? कितना सीखा? कैसे सीखा? कुछ सीखा भी या नहीं?? आपको क्या लगता है?..

दृश्य 2 :– *(शिक्षक तैयारी/योजना के साथ कक्षा में जाते हैं)*

शिक्षकों की क्रिया	बच्चों की प्रतिक्रिया
• शिक्षक को पता है कि क्या करना है। • किस शिक्षण सामग्री के साथ कक्षा में जाना है। • विषयवस्तु के किस अंश पर कितना समय देना है। • शिक्षक ने पहले ही सोच रखा है कि पाठ के अंत में सीखने का आकलन कैसे करेंगे। • शिक्षण की प्रकियाएं चरणवार चल रही हैं। • आकलन शिक्षण के साथ–साथ जारी है। • कमजोर बच्चों को काम में सहायता दी जा रही है। • सतत आकलन से सीखने के परिणाम प्राप्त हो रहे हैं। • बच्चों को गृह कार्य दिया एवं जांचा जा रहा है।	• बच्चों को जानकारी हो गई है कि उन्हें आज क्या सीखना है। • बच्चे जिज्ञासापूर्वक खोजबीन कर रहे हैं। • योजनानुसार सीखना–सिखाना हो रहा है। • बच्चे समूह में कार्य कर रहे हैं। • सभी की सक्रिय प्रतिभागिता हो रही है। • कक्षा में रोचकता है। • बोर्ड, वर्कबुक, पाठ्यपुस्तक, कॉपी पर कार्य हो रहा है। • आवश्यकतानुसार समूह/जोड़े में कार्य किया जा रहा है। • बच्चों को देखकर लग रहा है कि उन्हें सीखने में आनंद आ रहा है। • सब कुछ व्यवस्थित ढंग से चल रहा है।

मनन कीजिए –

- उक्त कक्षा में बच्चों ने क्या सीखा? कितना सीखा? कैसे सीखा? क्या इसमें किसी बदलाव की आवश्यकता है?

- उक्त दोनों दृश्यों को देखने पर आप क्या महसूस करते है?

....

....

- किस स्थिति में कक्षा का शैक्षिक वातावरण बेहतर होगा?

....

....

निश्चित रूप से शिक्षण–योजना के साथ कार्य करने पर निम्नांकित बातें होती हैं–

- सीखने–सिखाने की प्रक्रिया योजनाबद्ध / चरणबद्ध ढंग से चलती है।
- सीखने–सिखाने का कार्य आसान और सही तरीके से होता है।
- कक्षा का माहौल रुचिकर होता है। बच्चों का मन लगता है। बच्चे उत्साहित होते हैं।
- बच्चे निर्धारित लर्निंग आउटकम हासिल कर पाते हैं।
- उचित गतिविधियों / क्रियाकलापों के चयन व प्रयोग में आसानी होती है।
- शिक्षण सामग्री की उपलब्धता रहती है।
- भिन्न–भिन्न स्तर के बच्चों के पास कार्य करने के मौके होते हैं।
- सीखना–सिखाना क्रमबद्ध ढंग से होता है।
- सतत आकलन की प्रक्रिया चलती रहती है और बच्चों को सही समय पर मदद मिलती है जिससे बच्चों का सीखना तेजी से होता है।
- शिक्षण योजना में यथावश्यक बदलाव की जानकारी हो जाती है।

सोचिए कितना अच्छा होगा –

जब आप शिक्षण–योजना के साथ सीखने–सिखाने का कार्य करेंगे–

- तब पूरे विद्यालय का माहौल सीखने–सिखाने के अनुकूल होगा।
- सभी को कार्य करने की संतुष्टि होगी।
- बच्चे बेहतर अधिगम स्तर पर होंगे।
- सीखने–सिखाने का वातावरण आनन्ददायक होगा।

शिक्षण योजना क्या

- शिक्षण योजना सीखने–सिखाने की प्रक्रिया में, मार्गदर्शक का काम करती है, इसमें शिक्षण अवधि में किये जा रहे क्रियाकलापों/गतिविधियों, आकलन, फीडबैक, पुर्नबलन एवं आगे की योजना का क्रमबद्ध एवं संक्षिप्त विवरण होता है।

शिक्षण योजना के प्रमुख बिन्दु

हम सब यह मानते हैं कि बेहतर कक्षा शिक्षण के लिए 'शिक्षण–योजना' होना आवश्यक है। शिक्षण–योजना से बच्चे व्यवस्थित और क्रमबद्ध तरीके से सीखते हैं। साथ ही शिक्षक के रूप में हमारा काम भी व्यवस्थित एवं आसान हो जाता है। शिक्षण–योजना बनाने में कुछ खास बिन्दुओं एवं चरणों पर ध्यान देना आवश्यक होता है। एक बेहतर **'शिक्षण–योजना'** बनाने के लिए निम्नांकित बिन्दु हमारे लिए मददगार होते हैं–

- **चयनित लर्निंग आउटकमः** सर्वप्रथम उस लर्निंग आउटकम का चयन करें जिस पर आपको बच्चों के साथ कार्य करना है। लर्निंग आउटकम चयन के लिए आवश्यक है कि आपको उस विषय में बच्चे के वर्तमान अधिगम स्तर तथा उक्त लर्निंग आउटकम से सम्बन्धित पूर्व ज्ञान की सम्यक जानकारी हो।
- **लर्निंग आउटकम के आधार पर उपयुक्त गतिविधियों व सामग्री का चयन करना :** अब आप चयनित लर्निंग आउटकम की प्राप्ति के लिए उपयुक्त शिक्षण–अधिगम सामग्रियों एवं गतिविधियों के बारे में चिंतन करें तथा उन्हें लिखें। फिर गतिविधि के अनुसार आवश्यक सामग्री की व्यवस्था भी करें ताकि आप प्रभावी तरीके से शिक्षण कर सकें।
- **शिक्षण योजना के विभिन्न चरणों एवं उन पर दिये जाने वाले समय का निर्धारणः** योजना बनाते समय इसके विभिन्न चरणों जैसे– प्रस्तावना, गतिविधियाँ (समूह कार्य, जोड़ी में कार्य, लेखन कार्य, प्रयोग, व्यक्तिगत कार्य आदि), बच्चों के सीख का आकलन करने के तरीके, कक्षा कार्य, गृह कार्य आदि को लिखें तथा इसके लिए आवश्यक समय निर्धारित करें।
- **शिक्षण योजना में सभी स्तर के बच्चों की सहभागिता को सुनिश्चित करना :** योजना बनाते समय कक्षा के उन बच्चों का भी ध्यान रखें जिनका अधिगम स्तर कक्षानुरूप नहीं है। साथ ही दिव्यांग बच्चों तथा कम बोलने या प्रतिभाग न करने वाले बच्चों को भी ध्यान में रखें। इसके साथ–साथ उन बच्चों के लिए भी कार्ययोजना में स्थान हो जिनकी सीखने की गति अपेक्षाकृत अधिक है।

- **बच्चों की प्रगति का सतत आकलन तथा आवश्यकतानुसार शिक्षण योजना में परिवर्तन करना** : योजना के किन अंशों पर बच्चों को अधिक सहायता की आवश्यकता हो सकती है, इस बात पर सदैव ध्यान रखें। इसके लिए बच्चों की प्रगति का सतत आकलन करते रहें तथा आवश्यकतानुसार सभी बच्चों को केन्द्र में रखते हुए योजना में परिवर्तन करें।
- **शिक्षण की रोचकता** : शिक्षण योजना में गतिविधियों का चयन करते समय इस बात का अनिवार्य रूप से ध्यान रखें कि गतिविधियाँ बच्चों के स्तर एवं रुचि के अनुसार तथा आनन्ददायी हों। यदि शिक्षण में रोचकता है तो बच्चे स्वतः ही इस प्रक्रिया में रुचि लेते हुए प्रतिभाग करते हैं।

क्या आप उपरोक्त बिन्दुओं से सहमत हैं?

यदि हाँ, तो आइए! अपने व बच्चों के लिए एक बेहतर शिक्षण–योजना का निर्माण करें, जिससे लर्निंग आउटकम को प्राप्त किया जा सके। निश्चित रूप से आपके इस प्रयास से विद्यालय की स्थिति बेहतर होगी, कक्षा का माहौल बाल मैत्रिक होगा तथा बच्चे रुचिपूर्वक सीखेंगे।

अच्छे शिक्षक की पहचान, करे योजना का निर्माण

शिक्षक डायरी

हम प्रतिदिन बच्चों के साथ जो कार्य करते हैं उसे व्यवस्थित ढंग से दर्ज करने और आगे के काम को नियोजित करने में शिक्षक डायरी अत्यन्त महत्वपूर्ण है। शिक्षकों द्वारा डायरी में बच्चों, शिक्षण अधिगम प्रक्रिया, शिक्षण के तरीकों के विषय में प्राप्त फीडबैक तथा अपनी कक्षा–कक्ष की रणनीतियों की समीक्षा करके भविष्य के लिए परिवर्धित शिक्षण योजना तैयार करने के लिए जरूरी बिन्दुओं को नियमित रूप से अंकित किया जाना आवश्यक है।

शिक्षक डायरी की आवश्यकता क्यों?

शिक्षक डायरी शिक्षकों के लिए एक स्वमार्गदर्शिका होती है। शिक्षक अपनी डायरी में अपने कार्य के सम्बन्ध में स्वयं योजना बनाते हैं। अपने–अपने विषयों से सम्बन्धित पाठ्यक्रम में अन्तर्निहित लर्निंग आउटकम्स को अपनी सुविधा एवं लक्ष्य के अनुसार विभाजित करते हैं और उनके अनुसार गतिविधियां निर्धारित कर शिक्षण करते हैं। शिक्षक डायरी में यथासम्भव गतिविधियों को प्रतिदिन

शिक्षण योजनाओं के रूप में लिखा जाना जरूरी है, ताकि हम व्यवस्थित रूप से आगे बढ़ें और हमारे अन्य साथी भी इससे लाभ उठा सकें।

शिक्षक डायरी का स्वरूप

शिक्षक डायरी में मुख्यतः पाँच भाग होंगे–

1. **मुखपृष्ठ** जिसमें सम्बन्धित शिक्षक की सामान्य जानकारी होगी।
2. **विस्तृत विवरण सहित शिक्षण योजना का प्रारूप,** जिसमें शिक्षण योजना को बनाने संबंधी विभिन्न अंशों का विवरण दिया गया है।
3. शिक्षण योजना का रिक्त प्रारूप जिसमें शिक्षक अपनी योजना बनाएंगे। इसकी 100 प्रतियाँ डायरी में होंगी।
4. **शिक्षक द्वारा किए गए शिक्षण कार्यों का संक्षिप्त साप्ताहिक विवरण** जिसमें शिक्षक प्रतिदिन वादन के अनुसार कक्षा, विषय एवं पढ़ाए गए पाठ्यांशों का संक्षिप्त विवरण अंकित करेंगे। इसकी 50 प्रतियाँ डायरी में होंगी।
5. **10 रिक्त पन्ने,** जिसमें शिक्षक आवश्यकतानुसार विभिन्न शैक्षिक सूचनाओं को अंकित करेंगे।

शिक्षक डायरी के अनुरक्षण हेतु दिशा निर्देश

1. मुख्य पृष्ठ – डायरी के मुख्यपृष्ठ की समस्त प्रविष्टियों को शिक्षक अंकित करें।
2. प्राथमिक/उच्च प्राथमिक कक्षाओं की समय–सारिणी का अनुसरण करें।
3. सप्ताह में किये गए शिक्षण कार्य का विवरण प्रतिदिन साप्ताहिक प्रपत्र में अंकित करें।

डायरी में संलग्न शिक्षण योजनाओं के रिक्त प्रपत्रों में शिक्षण योजना बनायें, तद्नुसार कक्षा शिक्षण करें।

शिक्षक डायरी

शैक्षिक सत्र .... (मुख पृष्ठ)

शिक्षक/शिक्षिका का विवरण

शिक्षक/शिक्षिका का नाम ....

विद्यालय का नाम..

विकास खण्ड का नाम.. जनपद ....

मोबाईल नं0 .... ईमेल आई0डी0 ....

शिक्षण योजना का विस्तृत प्रारूप

दिनांक	कक्षा	विषय	समय

- चयनित लर्निंग आउटकम (Learning Outcome)

  ....

- **प्रकरण/पाठ/इकाई का नाम** *(जिसका उक्त लर्निंग आउटकम पर कार्य करने के लिए चयन किया है)*

  ....

- **आवश्यक संसाधन** *(शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में प्रयुक्त होने वाली सामग्रियों/टी.एल.एम. का विवरण)*

  ....

शिक्षण–अधिगम प्रक्रियाएं/गतिविधियां

....

क्र.	चरण	समय	आकलन के तरीके
1.	**शिक्षण के प्रारंभ में**—यहाँ उन बिन्दुओं को लिखें जिनपर चयनित लर्निंग आउटकम से संबंधित बच्चों के पूर्व ज्ञान को जानने के लिए बातचीत या गतिविधि करेंगे। साथ ही बच्चों के पूर्व ज्ञान को आधार बनाते हुए चयनित लर्निंग आउटकम पर रोचक ढंग से प्रस्तावना प्रस्तुत करेंगे।	05 मि	• बच्चों से पूर्व ज्ञान पर आधारित बातचीत/ कुछ रोचक गतिविधियों/ प्रश्नोत्तर/कक्षा कार्य द्वारा। • विगत कार्यदिवस के कार्यों का रीकैप प्रत्यास्मरण करके।
2.	**शिक्षण के दौरान** – यहाँ उन गतिविधियों/प्रयोगों/प्रसंगों/कक्षा कार्यों आदि के बारे में लिखें जिन पर बच्चों के साथ कार्य करेंगे। इसमें इस बात को भी लिखना है कि बच्चों को कब एकल/ जोड़ी में/ समूह में अभ्यास कार्य का अवसर देंगे। यहाँ आप उन मुख्य प्रश्नों को भी लिखें जो आप बच्चों से करेंगे। उन कठिनाइयों के बारे में भी लिखें जो शिक्षण के दौरान आ सकती हैं। इस चरण में सामान्यतः 20–25 मिनट लगाना उचित होगा। इस समयावधि को आप अपनी नियोजित गतिविधियों/अभ्यास कार्य आदि के आधार पर पुनः विभाजित कर सकते हैं। **उदाहरण के लिए, हिन्दी की एक कक्षा में–**	20–25 मिनट	• बच्चों के अभ्यास कार्यों के अवलोकन द्वारा। • प्रश्नोत्तर द्वारा। • गतिविधियों में बच्चों की प्रतिभागिता को देखकर। • बच्चों की कॉपियों को देखकर।

क्र.	चरण	समय	आकलन के तरीके
	शिक्षक द्वारा पाठ का आदर्श वाचन करना— 5 मिनट बच्चों द्वारा पाठ का सस्वर वाचन करना— 5 मिनट शिक्षक द्वारा पाठ की व्याख्या करना व उसके लिए गतिविधि करवाना— 15 मिनट		
3.	**शिक्षण की समाप्ति पर – आकलन एवं समेकन** 10 मिनट यहाँ उन बिन्दुओं को लिखा जायेगा जिनके द्वारा उपरोक्त शिक्षण प्रक्रिया के उपरान्त शिक्षक पाठ्य वस्तु के प्रमुख बिन्दुओं को प्रस्तुत करते हुए आज के शिक्षण कार्य को समेकित करेंगे। 3 मिनट यहां यह सुनिश्चित करेंगे कि बच्चे ने चयनित लर्निंग आउटकम को किस सीमा तक प्राप्त कर लिया है। इसमें आकलन के लिए कुछ सटीक प्रश्न भी होंगे। 4 मिनट इसके उपरान्त बच्चों को दिए जाने वाले पुर्नबलन व फीडबैक को अंकित करेंगे। 3 मिनट		• प्रश्नोत्तर द्वारा। • अवलोकन द्वारा

- प्रदत्त गृह कार्य (असाइनमेन्ट)
- **यहां पर बच्चों को दिए जाने वाले गृहकार्यों को अंकित किया जायेगा।**

  1. ....

  2. ....

- **शिक्षण योजना पर शिक्षक का स्वआकलन** (शिक्षक पूरी शिक्षण अधिगम प्रक्रिया पर अपने अनुभव व बच्चों के सीखने के तरीकों पर टिप्पणी लिखेंगे।)

  ....

निर्देश :–अध्यापक प्रतिदिन कक्षा शिक्षण से पूर्व अपनी डायरी में इस प्रारूप के अनुसार शिक्षण योजना विकसित करेंगे, तद्नुसार दैनिक कक्षा शिक्षण कार्य करेंगे।

शिक्षण योजना का 2रिक्त प्रारूप

दिनांक	कक्षा	विषय	समय

- लर्निंग आउटकम **(Learning Outcome)** ....

  प्रकरण/पाठ/इकाई का नाम ....

  आवश्यक संसाधन..

शिक्षण–अधिगम प्रक्रियाएं/गतिविधियां

क्र.	दिनांक	अनुमानित समय	आकलन के तरीके
1.	शिक्षण के प्रारंभ में	5 मिनट	
2.	शिक्षण के दौरान	20–25 मिनट	
3.	शिक्षण की समाप्ति पर – आकलन एवं समेकन	10 मिनट	

- **प्रदत्त गृह कार्य (असाइनमेन्ट)**

  1. ....

  2. ....

- **शिक्षण योजना पर शिक्षक का स्वआकलन** (शिक्षक पूरी शिक्षण अधिगम प्रक्रिया पर अपने अनुभव व बच्चों के सीखने के तरीकों पर टिप्पणी लिखेंगे।)

  ....

नोटः शिक्षक डायरी में इस प्रारूप के 100 पृष्ठ लगेंगे।

शिक्षक द्वारा सप्ताह में किए गए शिक्षण कार्य का विवरण

दिन / दिनांक	प्रथम वादन	द्वितीय वादन	तृतीय वादन	चतुर्थ वादन	पंचम वादन	षष्ठम् वादन	सप्तम् वादन	अष्ठम् वादन
सोमवार दि0............								
मंगलवार दि0............								
बुधवार दि0............								
गुरूवार दि0............								
शुक्रवार दि0............								
शनिवार दि0............								

प्रति हस्ताक्षरित

प्रधानाध्यापक के हस्ताक्षर

नोट :– इस प्रपत्र के 50 पृष्ठ शिक्षक डायरी में संलग्न होंगे।

ध्यान दें :

1. अध्यापक प्रतिदिन प्रत्येक वादन में संबंधित कक्षा, विषय व पढ़ाये गये पाठ्यांश का संक्षिप्त विवरण लिखें।

(अपना पन्ना)

शिक्षक डायरी में 10 रिक्त पन्ने होंगे जिनपर शिक्षक अपनी आवश्यकतानुसार टिप्पणियाँ अंकित करेंगे।

शिक्षण योजना का आधार–लर्निंग आउटकम

शिक्षण योजना इस उद्देश्य को ध्यान में रखकर बनाई जाती है कि छात्र सम्पूर्ण शिक्षण अवधि में विषय के लर्निंग आउटकम्स (अधिगम सम्बन्धी परिणाम) से जुड़े रहें तथा कक्षा–शिक्षण की समाप्ति पर वास्तव में वह सीख लें जो अधिगम सम्बन्धी परिणाम में निहित था।

लर्निंग आउटकम– निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम (RTE)-2009 में बच्चों के गुणवत्तापूर्ण सीखने पर बल दिया गया है। लर्निंग आउटकम बच्चे के गुणवत्तापूर्ण ढंग से सीखने की प्रगति के सूचक के रूप में कार्य करते हैं।

प्रारंभिक स्तर पर कक्षा 1 से 8 तक हिन्दी, गणित, विज्ञान, सामाजिक विषय, अंग्रेजी जैसे प्रमुख विषयों के "सीखने संबंधी परिणामों" को राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (NCERT), नई दिल्ली द्वारा विकसित किया गया है। इनका मुख्य उद्देश्य विद्यालयों में सीखने की गुणवत्ता को बढ़ाना व शिक्षकों को इस योग्य बनाना है कि शिक्षक बिना देर किए सभी बच्चों के लिए सीखने के परिणामों को अधिक उपयुक्त रूप से अपनी शिक्षण योजना के माध्यम से सुनिश्चित करें एवं सुधारात्मक कदम उठायें।

लर्निंग आउटकम को प्रमुख रूप से **'सीखने का प्रतिफल', सीखने संबंधी परिणाम'** या **शिक्षण अधिगम परिणाम** के नामों से भी जाना जाता है। लर्निंग आउटकम्स प्रक्रिया आधारित जाँच बिन्दु (Check point) है जिन्हें शिक्षक अपनी शिक्षण योजना की प्रक्रिया में गुणात्मक या मात्रात्मक रूप से आकलित कर सकते हैं। लर्निंग आउटकम बच्चों के सम्पूर्ण विकास के लिए अपेक्षित प्रगति का आकलन करने में मदद करते हैं।

लर्निंग आउटकम एवं शिक्षण योजना में संबंध

लर्निंग आउटकम बच्चों के सीखने की प्रगति का संकेतक (Indicator) है। लर्निंग आउटकम की इस परिभाषा के अनुसार यह केवल शिक्षकों की शिक्षण योजना ही नहीं है बल्कि बच्चों तथा उनके अभिभावकों एवं माता–पिता को भी यह पता होना चाहिए कि शिक्षण योजना एवं लर्निंग आउटकम्स में एक अटूट संबंध है।

आप भलीभाँति अवगत हैं कि विद्यालयीय पाठ्यक्रम का निर्धारण एवं पाठ्यपुस्तकों/कार्यपुस्तिकाओं का निर्माण विभिन्न कक्षाओं के विद्यार्थियों के लिए निर्धारित दक्षताओं के विकास को ध्यान में रखकर किया गया है। शिक्षक इन पाठ्यपुस्तकों एवं कार्यपुस्तिकाओं तथा अन्य माध्यमों से कक्षा–शिक्षण की गतिविधियों को संचालित करते हैं। वास्तव में कक्षा शिक्षण के उपरान्त यह जानना सबसे महत्वपूर्ण यह है कि बच्चे उन दक्षताओं को प्राप्त कर रहे हैं अथवा नहीं।

लर्निंग आउटकम में भी इसी बात पर बल दिया गया है कि मात्र शिक्षक ही नहीं अपितु अभिभावक भी यह जानें कि उनका बच्चा जिस कक्षा में है, उस कक्षा के विभिन्न विषयों में उसे क्या–क्या ज्ञात होना चाहिए और क्या–क्या ज्ञान उसने अर्जित कर लिया है।

"लर्निंग आउटकम (अधिगम सम्बन्धी परिणाम) से आशय उन परिणामों (दक्षताओं) से है जो किसी कक्षा में अध्ययनरत विद्यार्थियों को उनके निर्धारित पाठ्यक्रम के अनुरूप अपेक्षित दक्षताओं के प्राप्त होने पर परिलक्षित होते हैं।"

यह एक **'परिणाम आधारित लक्ष्य है'** जो कि बच्चे की प्रगति का आकलन गुणात्मक तथा संख्यात्मक रूप से करने हेतु अवलोकन बिन्दु प्रदान करते हैं। लर्निंग आउटकम की अवधारणा को निम्नलिखित बिन्दुओं के आधार पर अधिक स्पष्टता से समझा जा सकता है–

- लर्निंग आउटकम बच्चों को प्राप्त दक्षता का मूल्यांकन करने और शिक्षकों को आगामी शिक्षण योजना निर्माण संबंधी दिशा प्रदान करने पर बल देते हैं।
- परिणाम आधारित लर्निंग आउटकम प्राप्त करने के लिए शिक्षक अपनी सोच, ज्ञान व अनुभव के आधार पर शिक्षण विधियों, नवाचारों एवं आई.सी.टी. का प्रयोग करने के लिए स्वतन्त्र हैं।
- यह बच्चों को जानने, समझने एवं पुस्तकीय ज्ञान का व्यवहार में उपयोग करने के लिए बच्चों में तर्क, चिन्तन एवं कल्पना शक्ति के विकास पर बल देते हैं।

आइए, लर्निंग आउटकम को कुछ उदाहरणों के माध्यम से समझते हैं। नीचे कक्षा 1 हिन्दी विषय के कुछ मूलभूत लर्निंग आउटकम दिए गए हैं–

- बच्चे परिवेशीय ध्वनियों, बोलियों, वाहन, घण्टी आदि की ध्वनियों को पहचानते हैं।
- बच्चे प्रथम एवं अंतिम ध्वनि वाले शब्दों को पहचानते हैं। (जैसे– पग, पर, पल) (जग, पग, हल, चल) आदि।
- बच्चे वर्ण/अक्षर की आकृति को पहचानते हैं।
- बच्चे वर्णों को जोड़कर अमात्रिक शब्द बनाते एवं पढ़ते हैं, जैसे– जल, हल, नल, चल मगर, डगर आदि।
- बच्चे वर्णों एवं अमात्रिक शब्दों को उनकी सही बनावट में लिखते हैं।

इसी प्रकार सभी विषयों के लर्निंग आउटकम निर्धारित किए गए हैं जो कक्षा/विषयवार पाठ्यक्रम में निर्धारित दक्षताओं के आधार पर हैं।

कक्षा 3 में पढ़ने वाले विद्यार्थियों को गणित की कक्षा में जोड़–घटाना पर आधारित इबारती प्रश्नों को हल करना सिखाया गया। इसी कक्षा का एक छात्र राहुल बाजार से सामान लाने के लिए

जाता है। यदि वह सामान लेकर बचे हुए रूपयों का हिसाब सही–सही रख रहा है, तो इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि राहुल जोड़–घटाव की संक्रिया का व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त कर चुका है और यह ज्ञान उसके दैनिक जीवन में **'सीखने के प्रतिफल'** के रूप में परिलक्षित हो रहा है। इस प्रकार लर्निंग आउटकम हमें स्पष्ट रूप से यह बताता है कि बच्चे ने कौन–कौन सी दक्षताएँ हासिल कर ली हैं।

इससे यह स्पष्ट है कि शिक्षण योजना बनाने के लिए यह तय करना होगा कि आप बच्चों में कौन सी दक्षताओं का विकास करना चाहते हैं। उसी अनुरूप आप पाठ व विषयवस्तु का चयन करेंगे। इसके लिए यह आवश्यक है कि आप अपेक्षित दक्षता से संबंधित लर्निंग आउटकम को जाने, उसका चयन करें तथा उसी के अनुरूप आप अपनी शिक्षण योजना बनाएं।

अधिगम परिणाम तालिका (Learning Outcomes – Table)

हम जानते हैं कि विद्यालयीय शिक्षा हेतु पाठ्यक्रम एवं पाठ्यपुस्तकों का निर्धारण एवं निर्माण विभिन्न कक्षाओं और विषयों के लिये निर्धारित दक्षताओं अथवा शिक्षण अधिगम परिणामों (Learning Outcomes) को ध्यान में रखकर किया जाता है। उत्तर प्रदेश में राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद द्वारा कक्षा 1–8 तक के सभी विषयों की निर्धारित दक्षताओं का विस्तृत दस्तावेज विकसित किया गया है। इन्हीं अपेक्षित दक्षताओं को दृष्टि में रखकर हम अपनी कक्षाओं में शिक्षण करते हैं। शिक्षण अधिगम परिणामों (Learning Outcomes) की संकल्पना सुस्पष्ट करने के उद्देश्य से यहां हिन्दी, अंग्रेजी, गणित व विज्ञान विषयों की अपेक्षित दक्षताओं का विवरण दिया गया है। साथ ही इन लर्निंग आउटकम के सापेक्ष बच्चों की वास्तविक स्थिति प्रदर्शित करने हेतु प्रावधान भी किया गया है। आपसे अपेक्षा है कि आप लर्निंग आउटकम की इन सारणियों का उपयोग बच्चों के सतत आकलन से प्राप्त नतीजों को दर्ज करने के लिए करेंगे।

आप से अपेक्षा

कक्षाओं में सभी विषयों के शिक्षक अधिगम सम्बन्धी परिणामों (Learning Outcomes) की तालिकाएं अवश्य प्रदर्शित करें तथा उन्हें ही लक्ष्य मान कर दैनिक कक्षा शिक्षण करेंगे।

नियमित आकलन से प्राप्त परिणामों के आधार पर निम्नांकित प्रकार की एक तालिका बनाएं, जिसमें कक्षा के सभी बच्चों द्वारा प्राप्त लर्निंग आउटकम के सापेक्ष सही का निशान लगायें व आकलन की तारीख अंकित करें। ध्यान रहें सही का निशान उसी बच्चे के सापेक्ष लगायें जिसने संबंधित लर्निंग आउटकम को पूर्ण रूपेण प्राप्त कर लिया हो। उदाहरण स्वरूप तालिका नीचे दी गई है।

कक्षा 1 : विद्यार्थीवार लर्निंग आउटकम तालिका

क्र.सं.	बच्चों के नाम	विषय– हिन्दी				विषय–गणित			
		बच्चे कक्षा में उपलब्ध चित्र/फ्लैश कार्ड/पोस्टर्स/चार्ट को देखकर बातचीत करते हैं।	बच्चे परिवेशीय भाषा के सामान्य शब्दों को पहचानते व समझते हैं।	बच्चे प्रथम एवं अंतिम ध्वनि वाले शब्दों को पहचानते हैं। (जैसे– पग, पर पल) (जग, पग/हल, चल) आदि।	बच्चे वर्णों एवं अमात्रिक शब्दों को उनके सही बनावट में लिखते हैं।	बच्चे 1 से 99 तक की संख्याओं को पहचानते, बोलते और लिखते हैं।	बच्चे छूटे हुए संख्याओं को भर लेते हैं। बच्चे बिना हासिल वाली दो अंकों की संख्याओं को जोड़ लेते हैं।	बच्चे शून्य की अवधारणा को समझ व बता सकते हैं।	बच्चे 1 से 9 तक की संख्याओं का प्रयोग करते हुए घटाने की क्रिया कर लेते हैं।
1	राजेश	√ मई'19	√ मई'19			√ मई 19	√ मई'19		
2	सरिता	√ मई'19				√ मई 19	√ मई'19	√ मई'19	√ मई'19
3	अशफाक	√ मई'19	√ मई'19			√ मई 19	√ मई'19		
4	मोहन					√ मई 19			
5	पूजा								
6	दीपा	√ मई'19	√ मई'19			√ मई 19	√ मई'19		

हस्ताक्षर व दिनांक
विषय अध्यापक

हस्ताक्षर व दिनांक
प्रधानाध्यापक

इस तालिका से स्पष्ट है कि किस विद्यार्थी ने किस लर्निंग आउटकम को कब प्राप्त कर लिया है तथा किस लर्निंग आउटकम पर शिक्षक को अभी और कार्य करने की आवश्यकता है। **विषयवार इस प्रकार की तालिकाएं प्रत्येक कक्षा–कक्ष में (उस कक्षा से संबंधित) पोस्टर के रूप में प्रदर्शित की जाएंगी, जिसे संबंधित विषय के अध्यापक नियमित रूप से अद्यतन करेंगे। प्रधानाध्यापक हर सप्ताह 10 बच्चों की प्रगति की जाँच कर सुनिश्चित करेंगे कि उक्त तालिका में बच्चों की प्रगति सही रूप से दर्ज की जा रही है।** तत्पश्चात् हस्ताक्षर कर इसे प्रमाणित भी करेंगे। इसी प्रकार सहयोगात्मक पर्यवेक्षणकर्ता भी इन तालिकाओं में दर्ज बच्चों की प्रगति की जाँच कर इसे प्रमाणित करेंगे।

इसी तालिका के आधार पर आप अपने कक्षा की एक समेकित संख्यात्मक तालिका बना सकते हैं जो यह दिखाएगी कि आपकी कक्षा में लर्निंग आउटकम वार बच्चों की संख्या कितनी है। यह तालिका आपको माहवार विषयवार विभिन्न लर्निंग आउटकम को प्राप्त कर चुके बच्चों की संख्याओं में प्रगति को भी दर्शाती है।

उदाहरणस्वरूप नीचे कक्षा 1 के हिन्दी एवं गणित विषय की तालिका दी गई है। **आप इसी प्रकार सभी कक्षा एवं विषयों के लर्निंग आउटकम आधारित सम्प्राप्ति तालिका बना सकते है।** पूर्व में वर्णित तरीके से इन तालिकाओं में दर्ज बच्चों की प्रगति भी प्रधानाध्यापक व पर्यवेक्षणकर्ता जाँचकर प्रमाणित करेंगे।

माहवार लर्निंग आउटकम सम्प्राप्ति संबंधी प्रगति विवरण

विद्यालय का नामः ....

कक्षाः ....

विद्यार्थियों की संख्याः ....

शिक्षा वर्ष : ....

क्र. सं.	विषयवार लर्निंग आउटकम	माह										
		अप्रैल	मई	जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्टूबर	नवम्बर	दिसम्बर	जनवरी	फरवरी	मार्च
हिन्दी (कक्षा 1)												
1	बच्चे कक्षा में उपलब्ध चित्र/फ्लैश कार्ड/पोस्टर्स/चार्ट को देखकर बातचीत करते हैं।	15/35	20/35	20/35	25/35	27/35						
2	बच्चे परिवेशीय भाषा के सामान्य शब्दों को पहचानते व समझते हैं।											
3	बच्चे प्रथम एवं अंतिम ध्वनि वाले शब्दों को पहचानते हैं। (जैसे– पग, पर, पल) (जग, पग/हल, चल) आदि।											
4	बच्चे वर्णों एवं अमात्रिक शब्दों को उनकी सही बनावट में लिखते हैं।											
गणित (कक्षा 1)												
1	बच्चे 1 से 99 तक की संख्याओं को पहचानते, बोलते और लिखते हैं।											
2	बच्चे छूटे हुए संख्याओं को भर लेते हैं। बच्चे बिना हासिल वाली दो अंकों की संख्याओं को जोड़ लेते हैं।											
3	बच्चे शून्य की अवधारणा को समझ व बता सकते हैं।											
4	बच्चे 1 से 9 तक की संख्याओं का प्रयोग करते हुए घटाने की क्रिया कर लेते हैं।											

हस्ताक्षर व दिनांक — विषय अध्यापक/कक्षा अध्यापक

हस्ताक्षर व दिनांक — प्रधानाध्यापक

इसके साथ ही विभिन्न विषयों एवं लर्निंग आउटकम पर प्रत्येक बच्चे की प्रगति दर्ज कर सकते हैं। इस प्रकार निम्नांकित तालिका ही प्रत्येक बच्चे की **प्रगति पत्र/प्रोफाइल** हो सकती है। इस तालिका में किसी भी लर्निंग आउटकम पर बच्चों की प्रगति की तीन स्थितियों को दर्ज कर सकते हैं–**पूर्ण रूप से, आंशिक रूप से अथवा नगण्य।** यह तालिका हमें यह बताती है कि विषयवार किन लर्निंग आउटकम पर कार्य करने की तुरंत आवश्यकता है ताकि संबंधित बच्चा वर्तमान कक्षा के पाठ्यक्रम से तादात्मय स्थापित कर सके।

कक्षावार/विषयवार लर्निंग आउटकम के लिए परिशिष्ट–1 का संदर्भ लें तथा ध्यानाकर्षण हस्तपुस्तिका के ***परिशिष्ट–2*** में संबंधित लर्निंग आउटकम का अधिगम आधारित प्रगति विवरण की भी आवश्य संज्ञान लें जिसका उदाहरण निम्नवत् है–

अधिगम परिणाम आधारित प्रगति विवरण (उदाहरण)

विद्यार्थी का नामः .... कक्षाः ....

विद्यालय का नामः .... शिक्षा सत्र : ....

विषय– भाषा (हिन्दी) कक्षा–1

क्र.सं.	प्रमुख अधिगम सम्बन्धी परिणाम (Selective Learning Outcomes)	अधिगम परिणाम प्राप्ति की स्थिति		
		पूर्ण रूप से	आंशिक रूप से	नगण्य
1.	बच्चे कक्षा में उपलब्ध चित्र/फ्लैश कार्ड/पोस्टर्स/चार्ट को देखकर बातचीत करते हैं।			
2.	बच्चे परिवेशीय ध्वनियाँ जैसे जंतुओं या पक्षियों की बोलियाँ, वाहन, घण्टी आदि को पहचानते हैं एवं उसमें अन्तर कर सकते हैं।			
3.	बच्चे परिवेशीय भाषा के सामान्य शब्दों को पहचानते व समझते हैं।			
4.	बच्चे प्रथम एवं अंतिम ध्वनि वाले शब्दों को पहचानते हैं। (जैसे– पग, पर, पल) (जग, पग/ हल, चल) आदि।			
6.	बच्चे वर्णों एवं अमात्रिक शब्दों को उनकी सही बनावट में लिखते हैं।			

विषय– गणित कक्षा–1

क्र.सं.	प्रमुख अधिगम सम्बन्धी परिणाम (Selective Learning Outcomes)	अधिगम परिणाम प्राप्ति की स्थिति		
		पूर्ण रूप से	आंशिक रूप से	नगण्य
1.	बच्चे 1 से 99 तक की संख्याओं को पहचानते, बोलते और लिखते हैं।			
2.	बच्चे छूटी हुई संख्याओं को भर लेते हैं। बच्चे बिना हासिल वाली दो अंकों की संख्याओं को जोड़ लेते हैं।			
3.	बच्चे शून्य की अवधारणा को समझ व बता सकते हैं।			
4.	बच्चे 1 से 9 तक की संख्याओं का प्रयोग करते हुए घटाने की क्रिया कर लेते हैं।			
5.	बच्चे विभिन्न आकृतियों को बनाते हैं व जानते हैं।			

Subject- English **Class-I**

क्र.सं.	प्रमुख अधिगम सम्बन्धी परिणाम (Selective Learning Outcomes)	अधिगम परिणाम प्राप्ति की स्थिति		
		पूर्ण रूप से	आंशिक रूप से	नगण्य
1.	Children are able to understand and respond to the given instructions.			
2.	Children recognise and know the names of objects like chair, table, door, tree, bag etc.			
3.	Children enjoy singing rhymes with actions.			
4.	Children are able to recognize the letters (A-Z).			
5.	Children are able to recognise phonetical sounds of letters.			
6.	Children identify different fruits, vegetables and animals and know their names in English.			

इसी प्रकार अन्य कक्षाओं के प्रत्येक बच्चे के लिए विषयवार उपरोक्त तालिकाएं (प्रगति पत्र/प्रोफाइल) बनाएँ।

लर्निंग आउटकम प्राप्त करने के तरीके

कक्षा शिक्षण का प्रमुख उद्देश्य बच्चों में विषयवार अपेक्षित लर्निंग आउटकम का विकास करना है। पूर्व में हमने लर्निंग आउटकम पर पर्याप्त चर्चा कर ली है। अब प्रश्न यह उठता है कि बच्चों द्वारा लर्निंग आउटकम की प्राप्ति कैसे की जा सकती है। इसके लिए शिक्षक होने के नाते हम क्या कर सकते हैं? आइए इस पर विचार करते हैं।

हम जानते हैं कि किसी भी कक्षा में विभिन्न अधिगम स्तर वाले बच्चे होते हैं। प्रभावी शिक्षण करने के लिए शिक्षण योजना का निर्माण अत्यंत महत्त्वपूर्ण एवं आवश्यक चरण है। शिक्षण योजना बनाते समय आपको अपनी कक्षा के सभी बच्चों के वर्तमान अधिगम स्तर तथा उनके सीखने के तरीकों को ध्यान में रखना पड़ेगा। इस प्रकार शिक्षण योजना बनाने के पश्चात आपको इसे प्रभावी तरीके से क्रियान्वित भी करना होगा। प्रभावी शिक्षण ही यह मार्ग प्रशस्त करता है कि बच्चों में संबंधित लर्निंग आउटकम की प्राप्ति हुई या नहीं।

इस भाग में हम उन अवयवों व तरीकों पर चर्चा करेंगे जो बच्चों में संज्ञानात्मक (विषयवार) एवं सहसंज्ञानात्मक पक्षों के लर्निंग आउटकम को प्राप्त करने में मदद करते हैं।

1. **शिक्षण योजनाः** बच्चों में लर्निंग आउटकम की प्राप्ति के लिए प्रभावी शिक्षण और प्रभावी शिक्षण के लिए शिक्षण योजना बनाना महत्त्वपूर्ण चरण है। जिन लर्निंग आउटकम पर कार्य करना है, उन पर आप अपनी शिक्षण योजना बना लें। शिक्षण योजना बनाते समय उन समस्त तरीकों को अवश्य ध्यान में रखें जो कक्षा शिक्षण को रोचक तथा उपयोगी बनाते हैं। ऐसे कई तरीकों का विवरण आगे दिया गया है। आप अन्य तरीकों का भी प्रयोग कर सकते हैं जिनसे बच्चों के अधिगम स्तर में वृद्धि हो। विषयवार शिक्षण योजनाओं के उदाहरण **परिशिष्ट–2** में देखें।

मौखिक एवं लिखित कार्यों का निर्धारण

हम सभी अपने–अपने विद्यालयों में जब परीक्षाओं का आयोजन करते हैं तो कक्षावार मौखिक एवं लिखित कार्यों का निम्नवत् निर्धारण स्पष्ट रूप से होता हैः–

कक्षा	मौखिक कार्य का प्रतिशत	लिखित कार्य का प्रतिशत
1	100%	—
2	70%	30%
3	50%	50%
4	30%	70%
5	30%	70%
6	—	100%
7	—	100%
8	—	100%

क्या आपने अपने कक्षा–शिक्षण के दौरान कभी इस बात पर ध्यान दिया कि हमें शिक्षण कार्य करते समय भी प्रतिवादन या प्रतिदिन इसी प्रकार बच्चों के लिखित और मौखिक कार्यों को कराने में भी अनुपात रखना आवश्यक है। शायद इसका जवाब हमें **'हां'** और **'नहीं'** दोनों में मिले, परन्तु यह एक विचारणीय मुद्दा अवश्य है। हम सभी इस बात से भी सहमत होंगे कि हमें बच्चों के अंदर बोलने, पढ़ने और लिखने की दक्षता के सम्यक् विकास के लिए प्रतिदिन हर वादन और विषय में पर्याप्त समय देकर अवसर प्रदान करने की आवश्यकता है, जिससे उनका सम्यक् विकास हो सके। कई बार हमने अपने घर एवं स्कूल में भी यह पाया होगा कि बच्चे जानते हुए भी किसी सवाल का जवाब सही प्रकार से नहीं दे पाते हैं। इसका कारण निश्चित रूप से यह होता है कि ऐसे बच्चों को उनके विद्यालयों में बोलने, पढ़ने एवं लिखने सम्बन्धी गतिविधियां उचित प्रकार से नहीं करायी जाती या फिर उन पर पर्याप्त समय नहीं दिया जाता है। ऐसी स्थिति में यह आवश्यक है कि हम कक्षावार यह निर्धारित कर लें कि प्रतिदिन/वादन बच्चों से कितना–कितना लिखित (लेखन कार्य) और बोलने व पढ़ने का कार्य कराया जायेगा? यदि इस पर सम्यक रूप से विचार करें तो हम सभी यह निश्चित कर पायेंगे कि कक्षावार बोलने, पढ़ने और लिखने पर प्रतिदिन अनुमानतः निम्नांकित रूप में समय का निर्धारण कर लेना चाहिए–

कक्षा	दक्षताएँ			विद्यालय समयावधि
	बोलना	पढ़ना	लिखना	
1	2 घण्टा	2 घण्टा	1 घण्टा	7 से 1 बजे = 6 घंटा ग्रीष्मकालीन
2	2 घण्टा	2 घण्टा	1 घण्टा	9 से 3 बजे = 6 घंटा शीतकालीन
3	1 घंटा 30 मिनट	1 घंटा 30 मिनट	2 घण्टा	30 मिनट मध्यावकाश
4	1 घंटा 30 मिनट	1 घंटा 30 मिनट	2 घण्टा	30 मिनट प्रार्थना सत्र
5	1 घण्टा	1 घण्टा	3 घण्टा	20 मिनट सांध्यकालीन सभा
6	1 घण्टा	1 घण्टा	3 घण्टा	कक्षा शिक्षण अवधि
7	1 घण्टा	1 घण्टा	3 घण्टा	4 घंटा 40 मिनट = 280 मिनट
8	1 घण्टा	1 घण्टा	3 घण्टा	35 मि0 x 8 वादन = 280 मिनट

अगर इसे वादन की दृष्टि से देखा जाय तो हम कह सकते हैं कि कक्षा एवं वादन वार हमें ऐसी गतिविधियां और क्रियाकलाप कराने की आवश्यकता है, जिसमें निम्नांकित समयावधि बोलने, पढ़ने और लिखने के लिए अनिवार्य रूप से मिल सके–

कक्षा	बोलना	पढ़ना	लिखना	विशेष यह समय कब दिया जा सकता है
1 एवं 2	15 मिनट	15 मिनट	5 मिनट	• कक्षा शिक्षण के दौरान • कक्षा कार्य के क्रम में • अभ्यास कार्य के दौरान • पुनरावृत्ति कार्य में
3 एवं 4	10 मिनट	10 मिनट	15 मिनट	
5 से 8	7 मिनट	8 मिनट	20 मिनट	

बच्चों को कक्षा एवं विद्यालय में बोलने, पढ़ने एवं लिखने के अवसर निम्नांकित तरीकों से प्रदान कर सकते हैं।

बोलना– कक्षा शिक्षण के दौरान प्रश्न पूछकर, बच्चों की जिज्ञासा को उभारकर, सवाल पूछने के लिए मौके देकर, चित्रों पर बातचीत कर, किसी संदर्भ/कहानी को सुनाने, अपनी बात कहने का अवसर देकर बोलने का मौका दे सकते हैं।

पढ़ना– बच्चों को पढ़ने का मौका चित्र पठन, चित्रकथा पठन, पुस्तकों/पत्र–पत्रिकाओं/समाचार पत्रों से कहानी, कविता, आदि पढ़ने में दिया जा सकता है। इसके साथ ही पुस्तकालय का सक्रिय उपयोग कर भी पढ़ने का मौका दिया जा सकता है।

लिखना– यह अवसर कक्षा एक व दो में सूक्ष्म मांसपेशियों के विकास सम्बन्धी गतिविधियों छोटी–बड़ी चीजों को चुनना, माला पिरोना, जमीन/बालू पर आड़ी–तिरछी रेखायें खींचना, आकृतियां बनाना आदि के माध्यम से दिया जा सकता है। इसी प्रकार कक्षा–कार्य, अभ्यास–कार्य एवं रचनात्मक व सृजनात्मक कार्य के माध्यम से भी बच्चों को लिखने के मौके दिये जा सकते हैं। पढ़ी गयी या स्मरण के माध्यम से कविता/कहानी लिखना, अपनी यात्रा का वृत्तान्त लिखना आदि भी इसके माध्यम हो सकते हैं।

इन सबके साथ प्रत्येक दिन कक्षा 3 से 5 तक के बच्चों से सुलेख एवं श्रुतलेख (इमला/सुनकर लिखना) भी कम से कम एक–एक पृष्ठ अवश्य लिखवाया जाय। इससे लेख सुन्दर होने के साथ ही सुनने तथा सुनकर समझते हुए लिखने की दक्षता का विकास होगा। इन सभी क्रियाकलापों को अपने दैनिक कार्य में शामिल किया जाना आवश्यक है।

आपसे अपेक्षा है–

- सभी शिक्षक साथी इसी पैटर्न पर शिक्षण योजना बनाकर अपनी कक्षाओं में सीखने–सिखाने की गतिविधि संचालित करेंगे।
- इन शिक्षण योजनाओं में सुझायी गयी गतिविधियों के अलावा अन्य गतिविधियों को भी आवश्यकता के अनुसार शामिल कर उपयोग करेंगे।
- अपनी योजना के आधार पर उपयुक्त सामग्री और गतिविधियों की तैयारी करेंगे जिससे कक्षा में एक बेहतर वातावरण बना पाने में समर्थ हो सकेंगे।

2. **समय सारिणीः** कक्षाओं को सुचारू रूप से संचालित किये जाने के उद्देश्य से समय सारिणी अत्यन्त आवश्यक है। समय–सारणी को प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों में उपलब्ध शिक्षकों को ध्यान में रखकर निर्मित किया गया है। प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक दोनों स्तरों पर 2, 3, 4, 5 अध्यापकों की उपलब्धता के अनुसार निर्मित समय–सारिणी सुलभ सन्दर्भ के लिए संलग्न की गई है। सुझावात्मक समयसारिणी के लिए **परिशिष्ट–4** देखें।
3. **आईसीटी (सूचना एवं संचार तकनीक) का प्रयोगः** वर्तमान परिवेश में सूचना एवं संचार तकनीक का दखल हमारे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में बढ़ा है इस स्थिति में शिक्षा के क्षेत्र में आईसीटी का प्रयोग कर हम शिक्षण प्रक्रिया को और अधिक प्रभावी, आसान एवं रोचक बना

सकते है। वर्तमान में हम मोबाइल, इंटरनेट, टेबलेट, लैपटाप, टीवी व रेडियो जैसे तकनीकों का प्रयोग कर न केवल अपने शिक्षण को बालकेन्द्रित बना सकते हैं बल्कि विद्यालय को सूचना प्रबंधन व सामुदायिक सहभागिता के क्षेत्र में अभूतपूर्व परिवर्तन का वाहक भी बना सकते हैं।

हम शिक्षण के साथ ही अपनी दूसरी जिम्मेदारियों को तनाव रहित होकर व समय की बचत के साथ पूर्ण करने के लिए आईसीटी का उपयोग कर सकते हैं। आईसीटी का शिक्षण में प्रयोग करने के लिए पहले हमें विषयवस्तु के सापेक्ष सामग्रियों की खोज/पहचान कर उनका प्रयोग करने की दक्षता विकसित करनी होगी।

विद्यालय में आईसीटी उपयोग के क्षेत्रः

- कक्षा शिक्षण
- व्यवहार परिवर्तन
- कौशल विकास
- विद्यालय प्रबन्धन
- सूचना प्रबन्धन
- व्यावसायिक दक्षता में वृद्धि करना
- शिक्षक प्रशिक्षण
- लर्निंग एसेसमेण्ट
- गतिविधियों के संचालन में

विद्यालय में प्रयुक्त होने वाले आईसीटी संसाधन

- मोबाइल फोन, टैबलेट, लैपटाप, रेडियो, प्रोजेक्टर, टीवी, स्मार्ट टीवी
- स्मार्ट बोर्ड

4. विद्यालय भवन– सीखने में सहायक (Building As a Learning Aid - BALA)

विद्यालय में आकर्षक भौतिक परिवेश व आवश्यक संसाधन समय की मांग है। पिछले कई वर्षों से शिक्षक यथाशक्ति अपने विद्यालय को सजाने–सँवारने की कोशिश करते आ रहे हैं, लेकिन कुछ न कुछ अधूरापन बना रहता है। हमारे विद्यालय शैक्षिक परिवेश से भरपूर, सुन्दर व साधन सम्पन्न कैसे बनें, आइए इसपर विचार करते हैं।

- **आकर्षक विद्यालय भवन** – जब हम आकर्षक विद्यालय भवन की संकल्पना करते हैं तो कुछ इस प्रकार का चित्र उभरकर आता है– कलात्मक ढ़ंग से रंगा–पुता सुन्दर एवं व्यवस्थित विद्यालय, विद्यालय का नाम आकर्षक ढ़ंग से लिखा हुआ, बाहरी दीवारों पर मनमोहक शैक्षिक चित्र व प्रेरक वाक्य, विद्यालय के खम्भों पर राष्ट्रीय प्रतीक, गणितीय चिह्न, अमात्रिक शब्द, अंग्रेजी के सरल शब्द, कक्षाओं की खिड़कियों पर गणितीय पैटर्न की संरचना, फर्श पर साँप–सीढी, कोण इत्यादि। दरवाजों पर विभिन्न आकृतियां (त्रिभुज, वर्ग, आयत, वृत्त, शंकु, बेलन आदि) कक्षा की अन्दरूनी दीवारों पर टंगे हुए शैक्षिक/चित्रात्मक फ्लैक्सी, ग्रीन व सूखे कचरे के डस्टबिन, सुसज्जित गेट व ऊँची बाउण्ड्रीवाल।
- फुलवारी/वाटिका, मैथमेटिकल गार्डन, किचन गार्डन, क्लीन परिसर–ग्रीन परिसर।
- बालक–बालिकाओं के लिए शुद्ध पेयजल की आपूर्ति, पृथक शौचालय व यूरीनल, वाश–बेसिन, झण्डारोहण हेतु चबूतरा, खम्भो पर शिक्षापरक रंगीन पेंटिंग, फर्श पर बनी रोचक शिक्षण सामग्री, सुसज्जित कार्यालय, विद्यालय तक पहुंचने हेतु सुव्यस्थित मार्ग।
- **मिड डे मील संबंधी**–मिड–डे मील मीनू व रसोईया के कर्त्तव्य, भोजन हेतु व्यवस्थित शेड, विद्यालय में रसोई गैस (धुआँ/कालिख मुक्त विद्यालय)।
- **कक्षा–कक्ष संबंधी**–प्रत्येक कक्षा–कक्ष में महापुरुषों, वैज्ञानिकों, राजनेताओं, समाज सुधारकों का चित्र सहित विवरण, प्रत्येक कक्षा–कक्ष में आवश्यकतानुसार पर्याप्त पंखे व रोशनी हेतु पर्याप्त LED बल्ब, प्रत्येक कक्षा–कक्ष के सामने आवश्यकतानुसार डस्टबिन, कक्षा कक्ष के फर्श एवं दीवार पर रंगीन टाइल्स द्वारा ज्यामितीय आकृतियां एवं रोचक खेल गतिविधियां जिनका उपयोग बच्चे स्वयं सीखने में कर सकें। प्रत्येक कक्ष में कक्षावार/विषयवार लर्निंग आउटकम पोस्टर, समय–सारणी तथा बच्चों द्वारा किये गये कार्यों का प्रदर्शन (डिस्प्ले)।
- खेल–सामग्री, विज्ञान प्रयोगशाला, विद्यालय पुस्तकालय, टेबलेट/कम्प्यूटर, साउण्ड सिस्टम, प्रोजेक्टर, ढोलक, हारमोनियम, बाँसुरी, ढपली, मंजीरा आदि वाद्य यंत्र।
- कृषि, बागवानी, सिलाई एवं कला–क्राफ्ट संबंधी कार्य ।

इन संसाधनों/सामग्री पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है क्योंकि इनका सीधा असर बच्चों के सीखने और विद्यालय के बाहरी स्वरूप को आकर्षक बनाने पर पड़ता है।

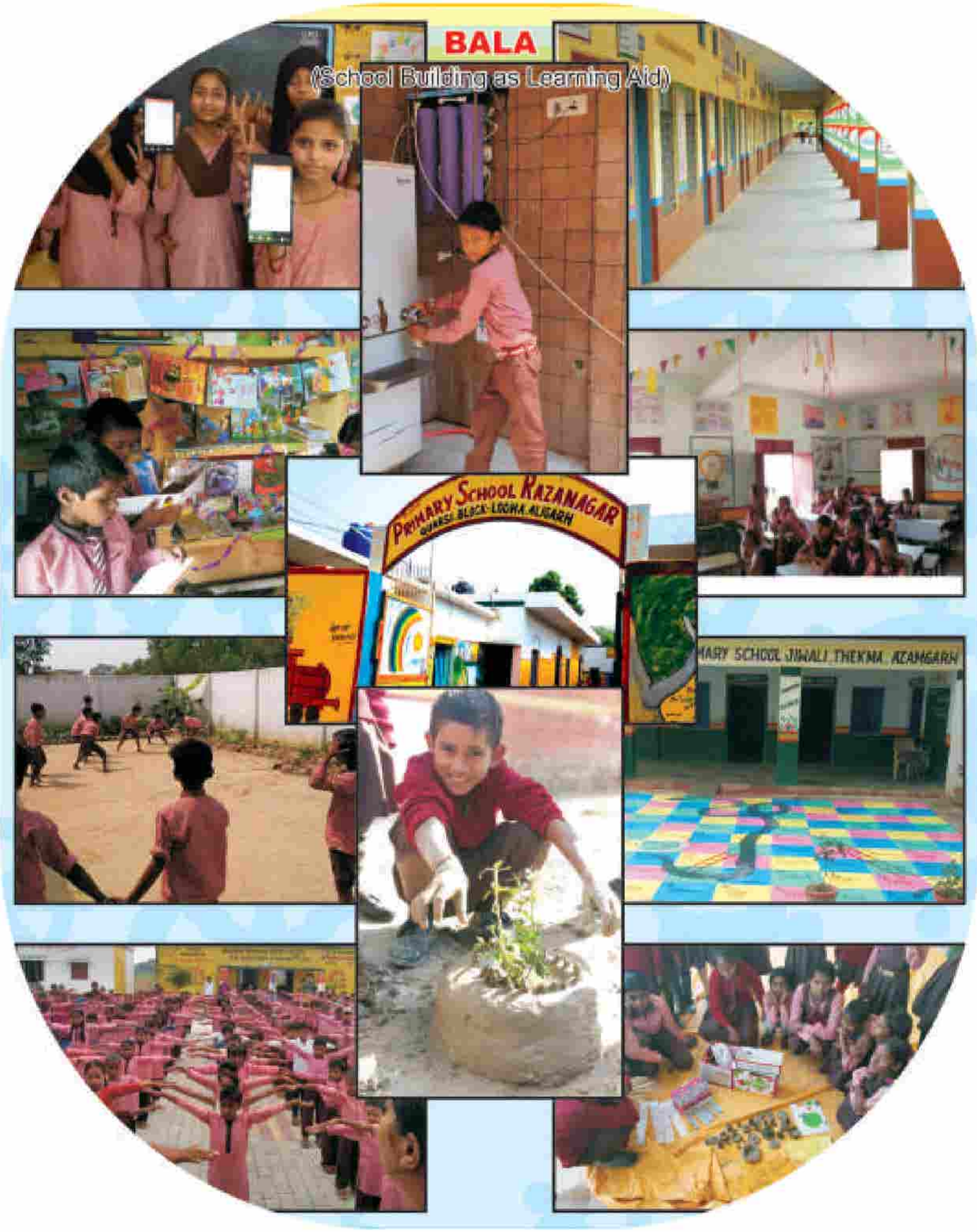
BALA
(School Building as Learning Aid)
PRIMARY SCHOOL RAZANAGAR
MARY SCHOOL JIWALI THEKMA AZAMGARH

1. विद्यालय का पुस्तकालय

पुस्तकालय, विद्यालय का एक आवश्यक अंग है, जो सीखने के लिये संसाधन तो मुहैया कराता ही है बल्कि इस विचार को सुदृढ़ करता है कि पढ़ना आनन्द व मनोरंजन के साथ–साथ अपने वर्तमान ज्ञान को और समृद्ध करने के लिये भी होता है।

विद्यालय पुस्तकालय विद्यालय से जुड़े सभी सदस्यों को विश्लेषणात्मक सोच वाला और जानकारियों को विभिन्न परिस्थितियों में प्रभावी ढ़ंग से उपयोग करने में सक्षम बनाता है।

विद्यालय को पुस्तकें ही समृद्ध बनाती हैं अतः विद्यालय पुस्तकालय हेतु पुस्तके खरीदते समय निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखना चाहियेः

- पुस्तकों के चयन में किसी समुदाय, धार्म, क्षेत्र, वर्ग, जाति, लिंग के प्रति लगाव या भेदभाव नहीं दिखना चाहिए।
- पुस्तकें विद्यार्थियों में वास्तविकताओं और अन्वेषण के प्रति सोच विकसित करने वाली तथा विविध प्रश्नों के माध्यम से वैज्ञानिक सोच को प्रात्साहित करने वाली हों।
- पुस्तक क्रय से पूर्व उपयोगकर्त्ताओं की जरूरत का आकलन करने के लिये उनसे चर्चा की जाए।
- आरम्भिक कक्षा की पुस्तकों (पाठ्य पुस्तकों) के साथ – साथ संदर्भ पुस्तकें और अनुपूरक पठन सामग्री (जो सीखने पर आधारित हों) भी विद्यार्थियों को मुहैया कराना जो उनकी पढ़ने की जिज्ञासा को पूरा करने के साथ सीखने में भी मदद कर सकें।
- प्रार्थना सभा में प्रेरक प्रसंग का चयन करने एवं पाठ्यपुस्तक में वर्णित विद्यार्थियों के सीखने के विभिन्न स्तरों की आवश्यकताओं के अनुरूप विषय वस्तु वाली पुस्तकों का चयन करना। जैसे– प्राथमिक कक्षा में पढ़ने वाले बच्चों के लिये पुस्तकों में चित्रों की अधिकता हो, लिखावट कम हो और चित्र बड़े हों तथा जैसे–जैसे कक्षा बढ़े, विषयवस्तु की सघनता बढ़ती

जाये।

- बच्चों को स्वयं से पढने के लिये और पढ़ने का कौशल बढ़ाने के लिये कक्षावार पुस्तकों की श्रृंखला (उदाहरण के लिये एन.सी.ई.आर.टी. की **'बरखा' श्रृंखला**) और **बच्चों की पत्रिकायें** उपलब्ध कराना ताकि पढ़ने को आनन्ददायक व रचनात्मक बनाया जा सके।
- पुस्तकालय की सूची में विविधतापूर्ण पुस्तकों का होना जैसे – कहानियाँ, लोकगीत, निबन्ध, संदर्भ सामग्री और जो विद्यार्थियों व शिक्षकों में विभिन्न साहित्य की आवश्यकता को पूरा करती हों। समाचार पत्रों और पत्रिकाओं की सदस्यता ले लेना उपयोगी होगा ताकि पुस्तकालय का उपयोग समुदाय के लोग भी कर सकें।
- आवश्यकता के अनुरूप स्थानीय जन–जातियों के इतिहास संबंधी पुस्तकें, जनजातियों से सम्बन्धित अनुपूरक सामग्री और जन–जातियों की भाषाओं के साहित्य की उपलब्धता।
- **''पढ़े भारत बढ़े भारत''** के आलोक में पुस्तकालय के संसाधनों का उपयोग, समझ के साथ पठन की विधि को सुगम बनाने के लिये भी किया जाए।
- पुस्तकालय को समय–समय पर पुस्तकों, पत्रिकाओं व अन्य पठन सामग्रियों के साथ–साथ ई–संसाधनों व दृश्य–श्रव्य सामग्रियों को जोड़ते हुये अद्यतन किया जाए।

पुस्तकालय का उपयोग

- पुस्तकालय के प्रभावी उपयोग हेतु एक शिक्षक को पुस्तकालय का प्रभारी बनाया जाये।
- छात्रों के मध्य भी तीन छात्रों की एक पुस्तकालय समिति बनायी जाये। जिसकी स्पष्ट जिम्मेदारियाँ निश्चित की जायें यथा–पुस्तक के क्रमाँक के अनुसार उसका स्थान

निर्धारित करना, पुस्तक की सुरक्षा का ध्यान रखना, पुस्तक/जमा सामग्री की स्पष्ट समझ विकसित कर शिक्षकों को भी पुस्तकालय प्रयोग के लिए प्रोत्साहित किया जाये।

- प्रत्येक कक्षा के बच्चों को हर सप्ताह पुस्तकालय जाने का अवसर मिले जिसमें वे पुस्तकों की छान–बीन करें और प्रत्येक सप्ताह कम से कम एक पुस्तक इश्यू करवायें।
- विद्यार्थियों में पढ़ने के प्रति रूचि और अनुशासन बनाने तथा व्यक्तिगत अध्ययन के लिए समय निर्धारित कर उसका पालन किया जाये।
- विद्यार्थियों को उनके खाली वादन में समूह में पढ़ने को प्रोत्साहित किया जाये।
- कक्षा में इस प्रकार की गतिविधियाँ की जायें जो बच्चों में समझ के साथ पढ़ने का कौशल विकसित करें।
- कम से कम सप्ताह में एक बार ऐसी गतिविधियाँ अवश्य करवायें, जैसे– बोलकर पढ़ना, समूह में पढ़ना, विद्यार्थियों द्वारा पुस्तक की समालोचना प्रस्तुत करना (जैसे, पोस्टर आदि पर) और कहानी सुनाने का सत्र। ये विद्यार्थियों को अपने पढ़ने के कौशल को सुदृढ़ करने में मदद करती हैं।
- कहानी सुनाना विद्यालय की एक नियमित गतिविधि है। इच्छुक विद्यार्थी अकेले या समूह में कहानी सुनाने के लिये आते है। बाल संसद में भी प्रत्येक कक्षा को कहानी सुनाने की जिम्मेदारी देते हैं जिसमें वे स्वयं कहानी सुनाते हैं या किसी अतिथि को आमंत्रित करते हैं।
- बच्चों को ऐसे अवसरों की तैयारी हेतु पुस्तकालय से जोड़ें।
- पुस्तकालय के अन्तर्गत एक दीवार को साप्ताहिक समाचार पत्र के लिये आवंटित किया जाये।
- पुस्तकालय के प्रयोग पर आधारित प्रतियोगिताएं आयोजित की जाएँ।
- पुस्तकालय के उपयोग को सुनिश्चित करने के लिये एक स्पष्ट दिशा निर्देश/ नियमावली बनाई जाए।
- पुस्तकालय के प्रभावी प्रबन्धन के लिये एक पुस्तकालय समिति का होना नितांत आवश्यक है जिसके सदस्यों के मध्य भूमिकाओं और जिम्मेदारियों की स्पष्टता हो।
- संसाधनों का रख रखाव, मरम्मत और जरूरत के अनुरूप उसमें परिवर्तन की आवश्यकताओं की पहचान करना पुस्तकालय को स्थापित करने की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कदम होगा।

2. प्रयोगशाला

प्राथमिक कक्षाओं में साइंस लैब में विज्ञान किट के अतिरिक्त आस–पास मौजूद वस्तुओं जैसे–गुब्बारे, रंगों के घोल, पाइप, बोतल, पंप, अनाजों के बीज, पारदर्शी ग्लास, फूल व पत्तियों का संकलन, लिटमस पेपर, चिमटा, मोमबत्ती, पुराने खोखे आदि का संकलन /संग्रह करके रखना उपयोगी होगा। इन वस्तुओं से बच्चों को छोटे–छोटे प्रयोग करने के अवसर दिये जाएं। इन चीजों को रखने के लिये परिवेश में उपलब्ध पुराने गत्ते, डिब्बे एवं बोतल आदि का उपयोग किया जा सकता है।

उच्च प्राथमिक स्तर पर निर्धारित प्रयोगों में महंगे उपकरणों की आवश्यकता होती है। यह उपकरण भौतिक/रासायनिक /जीव विज्ञान से संबंधित होते हैं। इनकी खरीद के लिये समय–समय पर धनराशि शासन से प्राप्त भी होती है। करके सीखना विज्ञान का प्रमुख लक्षण है। बिना प्रयोग के विज्ञान का क्या मतलब? इन प्रयोगों में प्रयोगशाला के उपकरण बेहद मददगार होते हैं। अतः इनका उपयोग जरूरी है। विद्यालय में विज्ञान क्लब की स्थापना करके क्लब के सदस्यों को प्रयोगशाला की देखरेख की जिम्मेदारी दी जानी चाहिए।

विज्ञान/गणित प्रयोगशाला विकसित एवं प्रयोग करने हेतु निर्देश

- उच्च प्राथमिक विद्यालय में एक अतिरिक्त कक्ष को गणित एवं विज्ञान प्रयोगशाला (Maths & Science Lab) के रूप में विकसित किया जाए। जिसमें किट की सामग्री को अच्छे तरीके से डिस्प्ले किया जाये। विज्ञान व गणित से सम्बन्धित चार्ट पेपर, पोस्टर, सामान्य ज्ञान, वैज्ञानिकों का नाम एवं उनके आविष्कार इत्यादि को दीवारों पर डिस्प्ले/पेन्टिंग कर प्रयोगशाला को सुसज्जित किया जाए।
- नोडल संस्थान——आई0आई0टी0 कानपुर एवं एम0एन0आर0टी0 प्रयागराज द्वारा शिक्षक सवंर्द्धन प्रशिक्षण एवं अन्य गतिविधियो/तकनीकी सहयोग हेतु जनपद स्तर पर शिक्षण संस्थानों का चयन कर उनसे सहयोग प्राप्त कर सकते हैं।
- विद्यालय की शैक्षिक गतिविधियों हेतु तैयार की गयी समय–सारिणी में विज्ञान/गणित के लिए सप्ताह में कम से कम एक–एक कालांश समाहित किया जाये।
- प्रयोग के दौरान बच्चों की जिज्ञासा को अवश्य स्पष्ट किया जाये जिससे पाठ्य–बिन्दु पर गहरी समझ बने और अवधारणा स्पष्ट हो सके।
- गणित एवं विज्ञान किट के उपकरणों को बच्चे भली भांति प्रयोग कर सकें एवं पूरी किट से परिचित हों यह अध्यापकों के माध्यम से सुनिश्चित किया जाये। अध्यापक की देखरेख में ही बच्चों द्वारा विज्ञान/गणित प्रयोगशाला का प्रयोग किया जाये।
- उच्च प्राथमिक विद्यालयों के छात्रों को स्थानीय/निकटवर्ती वैज्ञानिक, तकनीकी प्रतिष्ठानों, उद्यान, तारामण्डल एवं प्रशिक्षण केन्द्रों का भ्रमण कराया जाये। स्थानीय स्तर पर उपलब्ध वैज्ञानिकों को विद्यालय में आमंत्रित कर बच्चों से साक्षात्कार कराया जाए।

3. शिक्षण अधिगम सामग्री एवं विज्ञान–गणित किट की उपलब्धताः

बच्चों को करके सीखने के अवसर देना लर्निंग आउटकम की प्राप्ति में काफी मददगार होता है। इसके लिए हमें कुछ सहायक सामग्रियों या संसाधनों की आवश्यकता होती है। इन्हें हम शिक्षण अधिगम सामग्री या टी.एल.एम. भी कहते हैं। इन्हें कई बार किट के रूप में भी उपलब्ध कराया जाता है, विशेषकर विज्ञान व गणित विषयों में। इसके प्रयोग से शिक्षक को भी पढ़ाने में सुगमता होती है, और बच्चों का सीखना सुगम व स्थाई हो जाता है। शिक्षण अधिगम सामग्री के निर्माण के लिए शासन से हमे समय–समय पर धनराशि भी प्राप्त होती है।

प्रभावी शिक्षण के लिए आवश्यक है कि कक्षा में शिक्षण योजना के अनुसार आवश्यक शिक्षण अधिगम सामग्री (टी.एल.एम.) हो जिसका शिक्षण के दौरान शिक्षक व बच्चे उपयोग कर रहे हों। यह सभी सामग्री शिक्षण के पूर्व ही कक्षा में जुटा लेनी चाहिए। यदि किसी सामग्री का विकास किया जाना है, जैसे वर्कशीट, कार्ड, चार्ट आदि, तो उसे पूर्व में ही बना लें। इसी प्रकार यदि कोई शैक्षणिक खेल कराने की सोच रहे हैं, तो उसमें प्रयुक्त होने वाली सामग्रियों की व्यवस्था पहले से ही कर लें।

इन चीजों का उपयोग विषयों के शिक्षण के दौरान साथ–साथ अन्य कार्यक्रमो यथा–शैक्षिक प्रतियोगिताओं, सांस्कृतिक कार्यक्रमों आदि में भी कर सकते है। यहॉ यह ध्यान रखने की जरूरत है कि इनके निर्माण में बच्चों व शिक्षकों की सक्रिय सहभागिता हो तथा इनका कक्षा शिक्षण में अनिवार्य रूप से उपयोग हो।

4. बैठक व्यवस्थाः

''बैठक व्यवस्था'' विद्यालयीय क्रियाकलापों की सफलता के लिए आवश्यक तत्व/घटक है। विद्यालय में बाल सभा, कक्षा शिक्षण कार्य, मध्याह्न भोजन वितरण, एस.एम.सी. सदस्यों की बैठक, परीक्षा कार्य, सांस्कृतिक आयोजन तथा विभिन्न राष्ट्रीय पर्वों एवं महापुरुषों की जयंतियों आदि कार्यक्रमों के प्रभावी आयोजन, सुचारू बैठक व्यवस्था की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

उचित बैठक व्यवस्था– विद्यालय में सुचारू बैठक व्यवस्था बनाने का कार्य निम्नलिखित व्यक्तियों द्वारा किया जाना चाहिए–

- विद्यालय प्रमुख (प्रधानाध्यापक) – बच्चों के बैठने की व्यवस्था कक्षावार करें।

- कक्षाध्यापक – उपस्थिति के समय उपयुक्त बैठक व्यवस्था करें।
- शिक्षक – शिक्षक कक्षा–शिक्षण के समय विषय की प्रकृति व क्रियाकलापों के अनुसार व्यवस्था करें।
- कक्षा मानीटर/समूह मानीटर – कक्षा–शिक्षण के समय बैठक व्यवस्था बनाने में शिक्षक की मदद करें।
- एम.डी.एम. समिति – मध्याह्न भोजन वितरण के समय यह समिति बच्चों को विद्यालयों में उपलब्ध जगह के अनुसार बैठने में सहयोग करें।

विद्यालय में उपर्युक्त व्यक्तियों जैसे प्रधानाध्यापक, कक्षाध्यापक, शिक्षक, कक्षा मानीटर/समूह मानीटर, एम.डी.एम. समिति के अलावा अन्य समितियाँ जैसे बाल संसद, मीना मंच समिति भी विद्यालयीय गतिविधियों के सुचारू संचालन हेतु बैठक व्यवस्था निर्धारण में सहयोगी भूमिका का निर्वहन कर सकती हैं।

विद्यालय में बैठक व्यवस्था हेतु सुझाव–

कक्षा में बच्चों को इस तरह बैठायें कि आप की नज़र सभी बच्चों पर रहे। आप यह देख पायें कि आपकी कक्षा में प्रत्येक बच्चा क्या कर रहा है? इसके लिए नीचे कुछ सुझाव दिए गए हैं:

- बैठक व्यवस्था गतिविधि के अनुरूप होनी चाहिए।
- **अर्द्धचंद्राकार या गोले में बैठाना:** बच्चों को अर्द्धचंद्राकार या गोले में बैठाना उपयुक्त होता है, बशर्ते आपके पास इसके लिए पर्याप्त जगह हो। इस प्रकार की बैठक व्यवस्था तब ज्यादा कारगर होती है जब आप बच्चों के साथ बात कर रहे हों, उनकी बात सुन रहे हों, कहानियाँ सुना रहे हों, या किसी विषय पर व्यापक विचार विमर्श चल रहा हो।
- **छोटे समूह में बैठाना:** एक अन्य महत्त्वपूर्ण तरीका बच्चों को छोटे समूह मे बैठाना है। यह व्यवस्था बच्चों के बीच अंतःक्रिया को बढ़ावा देने के लिए काफी प्रभावी है। किसी अवधारणा पर बच्चों द्वारा आपस में विचार–विमर्श करने, किसी प्रश्न को हल करने, किसी समस्या का समाधान ढूढ़ने तथा सामूहिक प्रोजेक्ट वर्क आदि में यह बैठक व्यवस्था प्रभावी रहती है।
- शिक्षक इस बात का ध्यान रखे कि बैठक व्यवस्था ऐसी हो जिसमें किसी भी प्रकार का भेदभाव प्रदर्शित न हो रहा हो।
- समूह बनाते समय यह ध्यान रखें कि सभी समूहों में कम अधिगम स्तर वाले बच्चे भी हों। आप मिश्रित समूह बनाकर उन्हें बैठायें।

- यह भी ध्यान रखें कि स्तरवार समूह इस प्रकार से बैठें कि अन्य समूहों को उनके कार्यों या बातचीत से व्यवधान न हो।
- बैठक व्यवस्था ऐसी हो जिसमें बच्चे व शिक्षक के लिए ब्लैकबोर्ड व अन्य सामग्री पहुँचाना आसान हो।

बैठक व्यवस्था के समय शिक्षक अपनी कक्षा में निम्नांकित कार्यों को करेंगे–

- टाटपट्टी, दरी, चटाई या टेबल की व्यवस्था।
- यदि कक्षा में बच्चे दरी या टाटपट्टी पर जूता बाहर निकालकर बैठे हैं तो शिक्षक भी अपने जूतों को बाहर ही निकालकर बच्चों के साथ बैठेंगे और कक्षा शिक्षण की शुरूआत करेंगे।
- एम.डी.एम. वितरण के समय बच्चों को एम.डी.एम. शेड में अथवा विद्यालय में उपलब्ध स्थान के अनुरूप बैठक व्यवस्था करेंगे।
- जिन बच्चों को आँख से कम दिखाई देता हो अथवा जिन्हें कम सुनायी पड़ता हो, उनको कक्षा में पहली लाइन में बैठने की व्यवस्था करें।
- विद्यालय में परीक्षा के दौरान प्रधानाध्यापक बैठक व्यवस्था के लिए कक्षावार, अनुक्रमांकवार अलग–अलग कक्षों में क्रमशः 6, 7 व 8 के बच्चों को दूर–दूर बैठायें इसी प्रकार प्राथमिक विद्यालयों में भी परीक्षा के दौरान बैठक व्यवस्था की जाय।

लाभ

- उपयुक्त बैठक व्यवस्था से विद्यालय के सभी शैक्षिक व सहशैक्षिक क्रियाकलापों का क्रियान्वयन सुचारू रूप में होगा।
- बैठक व्यवस्था सुदृढ़ करके विद्यालय समय–सारिणी का सही क्रियान्वयन कराया जा सकेगा।

9. शैक्षिक नवाचार

शिक्षा में नवाचार एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें शिक्षक अपने विचारों में नया परिवर्तन लाते हुए विद्यालय एवं कक्षा–शिक्षण प्रक्रियाओं में कुछ ऐसे बदलाव करते हैं, जिनसे शिक्षकों को शिक्षण कार्य में तथा बच्चों को अपने सीखने में लाभ मिलता है। शैक्षिक नवाचारों की यह अनिवार्य शर्त होती है कि नवाचारों के प्रयोग से बच्चों को सीखने में सुगमता हो। विद्यालयों में किये जा रहे कुछ नवाचार इस प्रकार हैं–

सामुदायिक सहभागिता से विद्यालय विकास

- प्रदेश के अनेक विद्यालयों में जनसहयोग से विद्यालय विकास हेतु पर्याप्त धनराशि एकत्रित कर पूर्ण पारदर्शिता के साथ आईसीटी संसाधनों, साज–सज्जा, भौतिक सुविधाओं, भवन की साज–सज्जा, फर्नीचर जैसे कार्यों में खर्च की जा रही है।

व्यक्तित्व विकास नवाचार : प्रार्थना–पत्र द्वारा

- कुछ विद्यालय में प्रतिदिन 30–35 मिनट प्रार्थना सत्र में सप्ताह के 6 अलग–अलग दिवसों पर अलग प्रार्थनाएं, समूहगान, अध्यापक गतिविधि, छात्र/छात्राओं की गतिविधि, सामान्य ज्ञान, पीटी, योगासन, प्रश्नोत्तरी, विलोम व पर्यायवाची शब्दों की जानकारी, महापुरुषों व सदवाक्यों की जानकारी, विशेष दिवसों के बारे में जानकारी देना तथा प्रमुख समाचार पत्रों के महत्वपूर्ण समाचारो का वाचन और बच्चों को प्रेरक प्रसंगों, स्वच्छता व उनमें अच्छी आदतों के विकास हेतु जानकारी देना जैसे क्रियाकलापों को बच्चों के व्यक्तित्व निर्माण व उनकी आदतों में सुधार हेतु संचालित किया जाता है।

उपस्थिति बोर्ड व गतिविधि बोर्ड का प्रकाशन

- कतिपय विद्यालयों में एक विशेष गतिविधि बोर्ड का निर्माण कराया गया है। जिसमें प्रतिदिन शिक्षकों व कक्षावार छात्रों के कुल नामांकन व उपस्थिति की सूचना दर्ज की जाती है। इसके दूसरे भाग पर प्रतिदिन एक प्रेरणादायक सद्‌विचार, तिथि विशेष के दिवस की जानकारी, एक नया शब्दार्थ, आज का विशेष वाक्य आदि का लेखन किया जाता है।

समाचार बोर्ड का प्रकाशन

- अधिकांश विद्यालयों में एक समाचार बोर्ड का निर्माण किया जाता है जिस पर समाचार पत्रों में प्रतिदिन प्रकाशित राष्ट्रीय, राज्य स्तरीय व स्थानीय महत्वपूर्ण समाचारों को प्रदर्शित किया जाता है।

छात्र–छात्राओं में स्टार आफ द मंथ/ईयर का चयन

- छात्र–छात्राओं में अच्छा कार्य करने की प्रतिस्पर्धा जागृत करने हेतु स्वच्छता, नियमित उपस्थिति, सर्वाधिक मेधावी तथा सर्वाधिक अनुशासित बच्चों को 'स्टार आफ द मंथ/ईयर' के रूप में सम्मानित किया जाता है।

'स्टार आफ द ईयर' शिक्षक का सम्मान

- विद्यालयों में प्रतिवर्ष बच्चों से मिले फीडबैक के आधार पर सर्वोत्कृष्ट शिक्षण करने वाले शिक्षक को ''स्टार आफ द इयर'' शिक्षक के रूप में वार्षिकोत्सव के दौरान मुख्य अतिथि द्वारा सम्मानित किया जाता है।

बाल अखबार का प्रकाशन

- कतिपय विद्यालयों में बाल अखबार का प्रकाशन मासिक रूप से किया जाता है, जिसमें बच्चों द्वारा बनाए गए चित्र, कहानी, कविताओं व विद्यालय में समय–समय पर आयोजित कार्यक्रमों के समाचार प्रकाशित किए जाते हैं।

विद्यालय प्रोफाइल बोर्ड

- कुछ विद्यालयों में एक ऐसे बोर्ड का निर्माण किया गया है जिसमें विद्यालय में नामांकन, शिक्षक विवरण, विद्यालय में उपलब्ध सुविधाएं व जनसहयोग से दी जा रही सुविधाओं एवं पाठ्य सहगामी क्रियाओं तथा नवाचारों का विवरण दर्ज किया जाता है। इस बोर्ड को हम **"स्कूल एट ए ग्लांस''** भी कहते हैं

महत्वपूर्ण दिवसों, राष्ट्रीय कार्यक्रमों, महापुरुषों की जीवनी आदि का जीवन्त प्रसारण

- कुछ विद्यालयों में आयोजित होने वाले महापुरुषों के जीवन चरित्र, विभिन्न राष्ट्रीय कार्यक्रमों और दिवसों पर सम्बन्धित विषय क्षेत्र से जुड़ी जानकारियों व फिल्मों का जीवंत प्रसारण बच्चों को दिखाया जाता है जिससे बच्चे आसानी से उनके बारे में सीख पाते हैं।

अनुपस्थित बच्चों को बुलाने हेतु बुलावा टोली "अटेंडेंस स्क्वायड" का गठन

- कुछ विद्यालयों में नामांकित बच्चों की उपस्थिति नियमित रखने हेतु विद्यालय में एक बुलावा टोली का गठन किया जाता है। जिसे **''अटेंडेंस स्क्वायड''** का नाम दिया गया है। इस टीम में शामिल बच्चे प्रतिदिन प्रार्थना सभा के दौरान अनुपस्थित बच्चों के घर जाकर उन्हें स्कूल लाने का कार्य करते हैं।

शिक्षक बुलावा दल "टीचर्स स्क्वायड"

- कुछ विद्यालयों में प्रतिदिन अनुपस्थित बच्चों को बुलाने की जिम्मेदारी स्कूल की बुलावा टोली के अतिरिक्त संबंधित कक्षाध्यापक को दी जाती है। जिसमें उस कक्षा में पढ़ने वाले सभी बच्चों के परिजनों या उसके आसपास के व्यक्ति के मोबाइल नंबर की डायरी तैयार की जाती है। इसके सहारे संबंधित शिक्षक उस बच्चे के माता–पिता को फोन कर उसे स्कूल भेजने के लिए कहते हैं। जरूरत पड़ने पर शिक्षक बच्चों के घरों पर जाकर उनके परिजनों से सम्पर्क करते हैं।

टास्क आधारित शिक्षक इंचार्ज व्यवस्था

- कतिपय विद्यालयों में व्यवस्था को सुचारु रूप से संचालित करने के लिए स्कूल में कार्यरत शिक्षकों को एकेडमिक इंचार्ज एवं अटेंडेंस इंचार्ज, एमडीएम, इंचार्ज, स्वच्छता इंचार्ज, अनुशासन इंचार्ज तथा गतिविधि इंचार्ज की जिम्मेदारी दी गयी है। इसके अलावा सोमवार

से शनिवार तथा प्रत्येक दिवस का इंचार्ज अलग–अलग शिक्षकों को बनाया जाता है।

परमिशन कार्ड या आज्ञा पत्र की व्यवस्था

- अक्सर कक्षा–कक्ष से एक साथ कई बच्चे पानी पीने या शौचालय के बहाने एक साथ बाहर निकलने की समस्या से निपटने के लिए विद्यालय की प्रत्येक कक्षा में परमिशन कार्ड या आज्ञा पत्र की व्यवस्था की जाती है। प्रत्येक कक्षा में दो आज्ञापत्र कक्षा मॉनीटर के पास होते हैं जो एक समय में एक ही बच्चे को उस कार्ड को देकर बाहर जाने की अनुमति देता है।

बोलती दीवारें

- **''बोलती दीवारों''** थीम पर अपने स्कूल की बाहरी दीवारों से लेकर कक्षा–कक्षा की दीवारों को उनकी कक्षानुरूप पाठ्य सामग्री की पेंटिंग व लेखन कार्य कराया जा सकता है। जिससे प्रत्येक कक्षाकक्ष प्रिन्टरिच मैटैरियल से परिपूर्ण हो। बोलती दीवारें बच्चों को सदैव अनायास ही कुछ न कुछ सीखने में मदद करती हैं।

शिक्षक जन्म–दिन समारोह

- विद्यालय के शिक्षकों का जन्मदिन विद्यालय के बच्चों के साथ धूमधाम से मनाया जाता है। संबंधित शिक्षक द्वारा उस दिन सभी बच्चों के लिए केक, मिठाई और विशेष पकवान की व्यवस्था की जाती है। इससे विद्यालय का वातावरण अच्छा बनता है। शिक्षक एवं विद्यार्थी सम्बन्धों में सुधार आता है धीरे–धीरे प्रत्येक शिक्षक अपने घर परिवार की हर खुशी बच्चों के साथ मिलकर बाँटते हैं।

मन की बात पेटी

- कुछ विद्यालयों में एक पत्र पेटिका रखी जाती है। जिसमें बच्चे अपने शिक्षकों अथवा प्र0अ0 से अपने मन की बात बिना नाम लिखे लिखकर डालते हैं। प्र0अ0 / शिक्षकों द्वारा पत्र पेटिका खोली जाती है और बच्चों की इच्छानुसार व्यवस्थागत परिवर्तन किए जाते हैं।

ईमानदारी की पेटी

- कुछ विद्यालयों में एक ईमानदारी की पेटी नाम से एक बड़ा बाक्स रखा गया है जिसमें बच्चे किसी गुम सामग्री– पेन, पेंसिल, पुस्तक आदि पाने पर उसमें डाल देते हैं। अगले दिन जिस बच्चे की वह सामग्री होती है, पर्याप्त जाँच पड़ताल करने के बाद उसे लौटा दी जाती है।

मस्ती की पाठशाला, "फन–डे" का आयोजन

- कुछ विद्यालयों में प्रत्येक शनिवार को बच्चों के लिए मस्ती की पाठशाला के रूप में "फन डे" का आयोजन किया जाता है। जिसमें बच्चों को विभिन्न कौशलों का क्रियात्मक प्रशिक्षण, बाल

सभा का आयोजन, कला, संगीत, भाषण, नृत्य, सामान्य ज्ञान, निबंध, मोनो एक्टिंग सहित विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन, हेल्थ टिप्स, स्वच्छता गतिविधियों का आयोजन स्मार्ट क्लास के माध्यम से तथा शिक्षकों के विशेष प्रयास से किया जाता है। प्रत्येक माह के अंतिम शनिवार को उस माह में पड़ने वाले सभी बच्चों का जन्मदिवस मनाया जाता है।

संगीतमयी असेम्बली

- कुछ सुविधा सम्पन्न विद्यालयों में प्रतिदिन आयोजित प्रार्थना सभा में अलग–अलग प्रार्थनाएं, अभियान गीत, राष्ट्रगान संगीतमयी धुनों पर आयोजित की जाती हैं। इससे बच्चों में संगीत के प्रति रुचि बढ़ने के साथ वे उसमें पारंगत होते हैं और आसपास के समुदाय में विद्यालय की अच्छी छवि बनती है।

माईसेल्फ प्रस्तुतीकरण

- इस कार्यक्रम के अन्तर्गत प्रतिदिन असेंबली में माइक पर 05 बच्चे अपने बारे में हिन्दी व अंग्रेजी में अपना, पिता का, गांव, स्कूल, कक्षा आदि का नाम बोलकर सुनाते हैं।

मातृ सम्मान कार्यक्रम

- इस कार्यक्रम के अंतर्गत वर्ष भर 05 सर्वाधिक उपस्थिति वाले बच्चों की माताओं का सम्मान उन्हें कोई उपहार देकर किया जाता है।

ज्ञानदायिनी योजना

- इस कार्यक्रम के अंतर्गत वालण्टियर के रूप में विद्यालय में अपनी रुचि एवं योग्यता के अनुरूप कुछ नया सिखाने वाले समाज के सेवा निवृत्त व्यक्तियों, विद्यालय के प्रति लगाव रखने वाले लोगों जैसे कुम्हार, बढ़ई आदि कारीगरों द्वारा बच्चों को सिखाने का अवसर दिया जाता है।

आओ खुशियाँ बाँटें

- इस नवाचार के अंतर्गत यदि समाज का संभ्रान्त व्यक्ति अपने प्रियजन की खुशी के अवसर पर विद्यालय अथवा विद्यालय के बच्चे को कोई दान देना चाहता है या बच्चों के साथ मिलकर खुशियाँ बाँटना चाहता है तो उसे अवसर दिया जाता है।

समेकित शिक्षक डायरी

- कुछ विद्यालयों में सभी शिक्षकों के द्वारा किये जा रहे कार्यों का फालोअप तथा समीक्षा करने को ऐसी समेकित शिक्षक डायरी का निर्माण किया गया है जिसमें प्रतिदिन प्रत्येक शिक्षक

अपनी कक्षा में पढ़ाए गए विषय, पाठों का नाम, एवं पाठ योजना के अनुसार पढ़ाए गए प्रकरण का उल्लेख करके अपने हस्ताक्षर करते हैं। प्रति सप्ताह उक्त कार्यों की समीक्षा कर उसकी क्रास चेकिंग भी की जाती है। यह प्रयोग शिक्षकों को उनके कार्यों के प्रति ज्यादा सजग बनाने के साथ कक्षा में गुणवत्तापरक शिक्षा को बढ़ावा देता है।

साप्ताहिक शिक्षक कार्य आवंटन/बैठक पंजिका

- कुछ विद्यालयों में शिक्षकों के साप्ताहिक कार्य आवंटन तथा उसकी समीक्षा हेतु "साप्ताहिक शिक्षक कार्य आवंटन/बैठक पंजिका" का निर्माण किया जाता है। जिसमें प्रति सप्ताह शनिवार को सभी शिक्षकों की एक बैठक आयोजित की जाती है। बैठक में शैक्षिक गुणवत्ता उन्नयन, पाठ्यक्रम की स्थिति, पाठ्यसहगामी क्रियाओं के आयोजन तथा विद्यालय के बेहतर संचालन हेतु कार्ययोजना का निर्माण व उसे पूरा करने हेतु सबकी सहमति से जिम्मेदारियों का निर्धारण किया जाता है। इस दौरान सारी प्रक्रिया का अभिलेखीकरण भी किया जाता है। सभी शिक्षक अपनी सहमति देते हुए पंजिका पर हस्ताक्षर करते हैं। अगले सप्ताह होने वाली बैठक में पिछले सप्ताह हुए निर्णयों के अनुपालन की समीक्षा की जाती है साथ ही जरूरत के अनुसार नए लक्ष्य निर्धारित किए जाते हैं।

अभिमत डायरी

- कुछ विद्यालयों में एक अभिमत डायरी या विजिटर बुक बनाई जाती है जिसमें विद्यालय में आने वाले सरकारी, गैरसरकारी व्यक्तियों, जनप्रतिनिधियों व विशिष्ट अभिभावकों के अभिमत लिए जाते हैं। अतिथियों से प्राप्त अभिमत के अनुसार प्रधानाध्यापक अपने सभी शिक्षकों के साथ मिलकर विद्यालय व्यवस्था को और बेहतर करने की कोशिश करते हैं।

छात्र प्रोफाइल पंजिका

- विद्यालय में पढ़ने वाले सभी बच्चों की एक प्रोफाइल पंजिका का निर्माण किया जाता है जिसमें संबंधित छात्र के व्यक्तिगत विवरण से लेकर उसकी रुचियों, परीक्षा परिणामों आदि का विवरण दर्ज किया जाता है।

कान्सेप्ट मैपिंग (अवधारणा मानचित्रण)

कान्सेप्ट मैपिंग एक शक्तिशाली मूल्यांकन साधन है जिससे कोई भी शिक्षक अपने बच्चों की किसी विषयवस्तु में समझ को उजागर कर सकते हैं। वह यह जान सकते हैं कि विद्यार्थी इन अवधारणाओं (Concepts) से किस सीमा तक जुड़ा हुआ है। इसमें किसी भी विषय के पाठ्यक्रम बिन्दुओं (लर्निंग आउटकम्स) को शिक्षक द्वारा बच्चों के समक्ष ग्राफीय निरूपण के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है। विषयों के अधिगम सम्बन्धी परिणामों की सम्प्राप्ति हेतु कान्सेप्ट मैपिंग को

शिक्षण–अधिगम की कार्यनीति के रूप में प्रयोग किया जा सकता है। छोटी कक्षाओं हेतु 'सरल अवधारणा मानचित्र' तथा बड़ी कक्षाओं हेतु 'जटिल अवधारणा मानचित्रण' का प्रयोग किया जाता है। इस नवाचार को ए–4 साइज पेपर, श्यामपट्ट अथवा हरी पट्टी, कक्षा के फर्श, बच्चों की कापी पर स्केच पेन, पेंसिल, चाक से बनाया जा सकता है।

शिक्षक अपने विषय में इस नवाचार को अपनाकर कई और तरीकों से भी उपयोग कर सकते हैं। शिक्षण प्रक्रिया में छोटे समूह में कार्य व चर्चा के जरिए सीखने–सिखाने के दौरान लर्निंग आउटकम्स की समझ का विकास एवं उनके आकलन हेतु भी कर सकते हैं। कान्सेप्ट मैपिंग का उपयोग करने के पहले स्वयं बनाये तथा फिर अपने बच्चों को सिखाएं। यदि बच्चे इस कान्सेप्ट को समझकर स्वयं बनाना शुरू कर देते हैं तो लर्निंग आउटकम्स की समझ का विकास आसानी से हो सकता है। उदाहरण स्वरूप विज्ञान के ''पदार्थ'' सम्बन्धी अध्याय को निम्नांकित प्रकार से समझा जा सकता है–

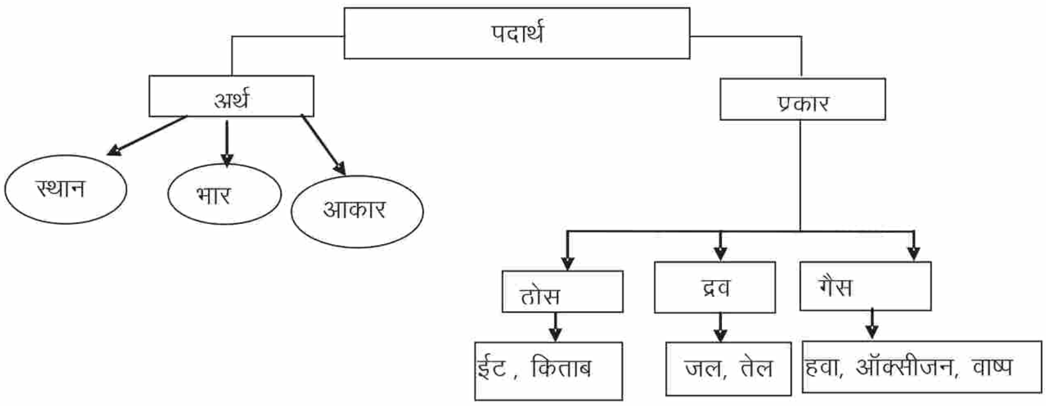

10. गतिविधि आधारित शिक्षण

आमतौर पर शिक्षक शिक्षण के समय बच्चों को समूहों में बाँटकर, शैक्षिक गतिविधियों / खेलों का आयोजन करते हैं। कक्षा की फर्श पर ग्रिडगेम, साँप–सीढ़ी, लूडो आदि खेलों को स्थाई तौर पर बनाकर बच्चों को खेल के माध्यम से सीखने का अवसर देते हैं। कुछ शिक्षक अपने द्वारा पढ़ायी गयी विषयवस्तु पुनर्बलन की दृष्टि से 'रोल–प्ले' के माध्यम से बोध कराते हैं। भाषा शिक्षक प्रायः बच्चों को हाव–भाव से कविता कहानी सुनाते हैं जो बच्चों के लिए रुचिकर होने के कारण आनन्दवर्द्धक सिद्ध होती है।

इस प्रकार गतिविधि से परिपूर्ण कक्षा में बच्चे उत्साहपूर्वक भाग लेते हैं। बच्चे एक दूसरे का सहयोग करते हुए एक दूसरे से भी सीखते हैं। बच्चों को रोचक गतिविधियों में बहुत आनन्द मिलता है तथा उनमें सृजनात्मकता (creativity) का विकास होता है।

इस प्रकार की कुछ शैक्षिक गतिविधियाँ **परिशिष्ट–2** में आपके संदर्भ के लिए दी गई है जिनका उपयोग करके आप शिक्षण को रोचक एवं ज्यादा प्रभावी बना सकते हैं।

11. परिवेशीय संसाधनों का उपयोग

हममें से अधिकांश लोग खुली आँखों से अपने आस–पास के परिवेश को नहीं देखते, अगर यह बात कही जाये तो संभव है कि आपको अजीब लगे। ऐसा भी हो सकता है कि आप में से ज्यादातर लोग इस बात को पूरी तरह नकार भी दें। अगर इस बात को पुनः इस रूप में कहा जाय कि हम में से अधिकांश को अपने परिवेश की सही–सही जानकारी नहीं है। तो भी आप संभवतः सहमत न हों।

यदि यह कहा जाय कि हम में से अधिकांश अपने कार्य और दायित्व के परिप्रेक्ष्य में परिवेशीय संसाधनों की जानकारी व उनके उपयोग द्वारा अपने काम को बेहतर बनाने के तरीको की सटीक जानकारी नहीं रखते, तो आप इस बात से कुछ हद तक सहमत होंगे।

दरअसल यहाँ बात हो रही है हमारे काम से जोड़कर परिवेश को जानने समझने की। हमारे परिवेश में चारों ओर ऐसे तमाम संदर्भ/संसाधन मौजूद होते हैं जो हमारे बहुत काम के होते है या सीधे–सीधे हमारे काम से जुड़े होते हैं फिर भी हम उनके बारे में जानकारी नहीं रखते हैं।

क्या आपको पता है ?

आपके विद्यालय के 50 मीटर की परिधि में मौजूद पेड़–पौधों के नाम।

- प्रमुख फसलों के नाम।
- प्रमुख सार्वजनिक स्थानों के नाम।
- प्रमुख जल स्रोतों के नाम।
- कामगारों के नाम।
- आपके घर के पूर्व दिशा में बने 5 घरों के गृहस्वामियों के नाम और उनका काम।
- विद्यालय के सामने से नियमित रूप से गुजरने वाले यातायात के साधनों के नाम।

यदि हाँ, तब शायद आप इन सवालों के भी उत्तर आसानी से दे पाएँगे–

(अ) आपके परिवेश में कौन–कौन से संसाधन मौजूद हैं?

(ब) इनमें कौन–कौन प्राकृतिक हैं, और कौन से मानव निर्मित?

(स) इनमें वे कौन–कौन आपके विद्यालय के संदर्भ स्रोत हो सकते हैं?

अब थोड़ा और गहराई से सोचें। अगर आपने लिखा कि आपके परिवेश में संदर्भ स्रोत के रूप में सामुदायिक पुस्तकालय मौजूद हैं तो सोचना यह है कि इसका लाभ स्कूल के बच्चों/शिक्षकों को किस प्रकार से दिलाया जा सकता है।

एक प्रधानाध्यापक अपने बच्चों को प्रार्थना सत्र में नियमित रूप से छोटी, रोचक व प्रेरक कहानियाँ सुनाते हैं। जब उनसे इस बारे में बात की गयी तो वह बोले कि ऐसा वह इसलिए कर पाते हैं क्योंकि वह जिस गाँव से आते हैं वहाँ पर एक सामुदायिक पुस्तकालय है जो समुदाय के सहयोग से चलता है। उनके तैनाती वाले स्थान से वह गांव दूर होने के कारण वहां वह अपने स्कूल के बच्चे तो नहीं ले जा सकते लेकिन स्वयं विद्यालय से छुट्टी के बाद नियमित रूप से पुस्तकालय जाकर बच्चों के लिए आवश्यक सामग्री जुटाते हैं और अगले दिन बच्चों के बीच में प्रस्तुत करते हैं। इस आदत की वजह से वह बच्चों के बीच अत्यन्त लोकप्रिय है। उनके प्रयास से अब तैनाती वाले गाँव में भी सामुदायिक पुस्तकालय संचालित होने जा रहा है।

विचार करें–क्या परिवेशीय संसाधनों के उपयोग हेतु ऐसा कोई प्रयास आपके स्तर से भी किया जा सकता है? यदि हाँ तो क्या ?

सामुदायिक ज्ञान का उपयोग

क्या हमने कभी यह जानने की कोशिश की है कि हमारे आस–पास सामुदायिक ज्ञान के स्रोत किस–किस रूप में मौजूद है? अगर हम विचार करना प्रारम्भ करें तो पाएंगे कि विभिन्न क्षेत्रों में पुरस्कृत व्यक्तित्व, खिलाड़ी, कलाकार, रचनाकार, नाट्यदल, कलाजत्था, पपेट्री शो से जुड़े लोग, चित्रकार,संगीतकार, वैज्ञानिक, इंजीनियर डाक्टर या ऐसे ही अन्य विभिन्न क्षेत्रों में खास दक्षता रखने वाले लोग जैसे– मिट्टी से बरतन बनाने वाले, कृषि कार्य करने वाले, सिलाई, हेयर कटिंग जैसे तमाम उद्यमों से जुड़े लोग भी हमारे सामुदायिक ज्ञान के सशक्त संसाधन होते हैं। ऐसे लोग अपने क्षेत्रों से सम्बन्धित बात बच्चों को बहुत आसानी से बता सकते हैं जिन्हें बताने/समझाने में अक्सर हम लोग कठिनाई का अनुभव करने लगते हैं।

हरिमोहन अपने संकुल में **'जुगाड़ी मास्साब'** के रूप में जाने जाते हैं। उनकी कक्षाएँ कमाल की होती हैं जो विद्यालय की चहारदीवारी के भीतर से ज्यादा बाहर चलती हैं। कभी पड़ोस के मिट्‌टी के बरतन बनाने वाले के यहां, कभी फसल बोते किसान के पास, कभी किसी डाकखाने में तो कभी किसी स्थानीय कलाकार का इन्टरव्यू लेते दिखाई देते बच्चों के रूप में।

एक दिन सब्जी बेचने वाले को भी उन्होंने कक्षा में बुलाया और उससे कक्षा संचालित कराई।

विचार करें––

- *हरिमोहन की कक्षा सही है या गलत?*
- *सब्जीवाले ने कक्षा में क्या किया होगा?*

सोचें और लिखें–

- आपके आस–पास परिवेशीय/सामुदायिक ज्ञान के कौन–कौन से स्रोत या संसाधन मौजूद हैं–

....

....

....

....

- कि इनका विद्यालय में किस प्रकार से रचनात्मक उपयोग किया जा सकता है?

....

....

....

....

समुदाय को विद्यालय से कैसे जोड़ें ––

यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण मुद्दा है जिससे हमारे बहुत से विद्यालयों को जूझना पड़ता है। लगातार सरकारी/विभागीय निर्देशों और एस0एम0सी0 के गठन के बावजूद हममें से अधिकांश शिक्षक अभी भी अपने विद्यालयों से समुदाय को अपेक्षानुरूप नहीं जोड़ पा रहे हैं।

इस मुद्दे की पड़ताल पर जाने से पूर्व सबसे पहले हम यह विचार करें कि हमने पिछले छह महीने में कब–कब और किस उद्देश्य से समुदाय के लोगों को स्कूल में बुलाया था या उनसे मुलाकात की थी।

हम पाएँगे कि यह मुलाकातें या निमंत्रण बहुत सीमित मात्रा में तथा औपचारिक ही ज्यादा थे। समुदाय के व्यक्तित्व किन्हीं राष्ट्रीय पर्वों या सभाओं में विद्यालय आए भी तो उनकी भूमिका कार्यक्रम में मूक दर्शक की तरह बैठे रहना भर ही रही। स्वाभाविक है कि खाली बैठे रहने (निरुद्देश्य) की भूमिका में स्वयं को पाकर समुदाय का व्यक्ति हमारे पास आखिर क्यों और कब तक आता जाता रहेगा ?

आज हम सभी का जीवन विभिन्न प्रकार की व्यस्तताओं से भरा है और समुदाय के हर व्यक्ति की कमोबेश यही स्थिति है। **समय नहीं मिल पाया** आज के दौर का ऐसा वाक्य है कि जिसे हर तीसरा व्यक्ति कहता मिल जाता है। स्वाभाविक भी है कि आजकल के व्यस्त समय में किसी भी व्यक्ति को निरुद्देश्य कहीं भी आना–जाना या बुलाया जाना सहज नहीं रहा है। व्यक्तिगत व्यस्तताओं के चलते महीनों हमारा और समुदाय का एक–दूसरे से संवाद स्थापित नहीं हो पाता। इस प्रकार की निरंतर संवादहीनता की स्थिति के चलते समुदाय हमसे और विद्यालय से कटता चला जाता है।

तब क्या हो कि समुदाय हमसे जुड़े? इसके लिये सबसे पहली और जरूरी बात होगी समुदाय के सदस्यों की विद्यालयीय क्रियाकलापों में नियमित और रचनात्मक उपस्थिति। यह उपस्थिति निरुद्देशीय न होकर सोद्देश्य पूर्ण होगी जिसमें आमंत्रित सदस्यों की विद्यालयीय गतिविधियों में रचनात्मक सहभागिता सुनिश्चित की जाएगी। जैसे–

प्रार्थना सत्र में, कक्षा शिक्षण में, राष्ट्रीय पर्वों पर, बाल मेलों में, प्रदर्शनी, प्रतियोगिताओं में, जयन्तियों में, स्थानीय त्योहारों में, शैक्षिक भ्रमण में, सह शैक्षिक गतिविधियों में, आई.सी.टी.के उपयोग में, शिल्प, कला, खेल, शारीरिक शिक्षा से संबंधित क्रियाकलापों में, संगीत, गायन,वादन, नृत्य के क्रियाकलापों में, स्थानीय पाठ्यक्रम निर्माण में, स्थानीय लोकगीत, लोक नृत्य, लोक कलाओं के संग्रह, संकलन, प्रदर्शन से जुड़े क्रियाकलापों में, स्थानीय उपचार (चिकित्सा पद्धति), इतिहास, भूगोल की जानकारी के क्षेत्रों में, स्थानीय साहित्य की जानकारी में, स्थानीय लाइब्रेरी, स्थानीय संग्रहालय

विकसित करने में, स्थानीय खेल का मैदान विकसित करने में, विद्यालयों के स्वरूप को सजाने संवारने में

उक्त बिन्दुओं के परिप्रेक्ष्य में हमें अपनी संस्था उपलब्ध भौतिक/मानवीय संसाधनों की उपलब्धता की समीक्षा करने के बाद विद्यालय की आवश्यकताओं का चिह्नांकन करना होगा। तदुपरान्त उन आवश्यकताओं का वर्गीकरण करते हुए सामुदायिक सहभागिता के प्रकार को स्पष्ट रूप से रेखांकित करते हुए समुदाय से संपर्क स्थापित करना होगा। इस प्रकार आवश्यकताओं के अनुसार संदर्भों/स्रोतों की मदद लेते हुए कार्य योजना विकसित कर हम अपने कार्य को और बेहतर बना सकते हैं तथा समुदाय से बेहतर जुड़ाव स्थापित कर सकते हैं।

सामुदायिक सहयोग की कार्य योजना

क्रम	आवश्यकता बिन्दु		सामुदायिक सहयोग का प्रकार व अवधि			
	भौतिक	मानवीय	भौतिक	अवधि	मानवीय	अवधि

इस कार्य योजना का सुनियोजित क्रियान्वयन न केवल आपके विद्यालय को आदर्श बनाने में मदद करेगा बल्कि आपको संबंधित क्षेत्र में लोकप्रिय भी बनाएगा।

भाग - 3

व्यक्तित्व विकास की कार्ययोजना

- ☞ प्रातःकालीन सभा
- ☞ सांध्यकालीन सभा
- ☞ सह शैक्षिक गतिविधियाँ
- ☞ खेल गतिविधियाँ एवं प्रतियोगिताएँ
- ☞ जीवन कौशल विकास
- ☞ व्यक्तिगत स्वच्छता
- ☞ व्यावसायिक परामर्श
- ☞ बाल संसद

MasterJEEonline.com

व्यक्तित्व विकास की कार्ययोजना

विद्यालयीय जीवन में बच्चे जहाँ एक ओर भाषा, गणित, विज्ञान तथा अन्य विषयों को पढ़कर अपनी विषयगत जानकारियाँ एवं समझ बढ़ाते हैं वहीं दूसरी ओर ऐसे विभिन्न क्रिया–कलापों से भी जुड़ते हैं जो उनके व्यक्तित्व में मानवीय मूल्यों तथा जीवन–कौशलों का विकास करते हैं। इन क्रिया–कलापों में प्रातःकालीन प्रार्थना सभाएं और सायंकालीन सभाओं के साथ सह शैक्षिक गतिविधियां, विभिन्न प्रकार के खेल एवं शारीरिक व मानसिक विकास से जुड़े क्रिया कलाप शामिल होते हैं।

तो आइये, ऐसे क्रिया–कलापों के बारे में जानकर उनको अपनी विद्यालयीय गतिविधियों में सम्मिलित करने के तौर–तरीकों पर विचार करें।

प्रार्थना सभा तथा उसकी कार्ययोजना

आइये, अपने स्कूल में संचालित हो रहे दिनों की संख्या लिखें। यह हो सकती है – 260, 240, 220, या कुछ कम–ज्यादा। अब प्रतिदिन प्रार्थना के लिए निर्धारित समय को लिखें। यह हो सकता है 30 मिनट, 20 मिनट, 15 मिनट या कुछ कम या ज्यादा। यदि कुल विद्यालय संचालन के न्यूनतम दिवस व प्रार्थना के लिए निर्धारित न्यूनतम समय की भी गणना की जाए तो यह समय निम्नवत् होगा –

220 दिन x 15 मिनट अर्थात् 3300 मिनट या 55 घण्टा अथवा 198000 सेकेंड।

आप इस बात से सहमत होंगे कि किसी भी व्यक्ति के जीवन में 3300 मिनट या 55 घंटा एक महत्वपूर्ण अवधि होती है। अब इस समयावधि के आउटकम पर गौर करें तो आप पायेंगे कि अधिकांश विद्यालयों में इस अति महत्वपूर्ण समय के आउटपुट के रूप में बच्चे को जो हासिल होता है वह है मात्र एक प्रार्थना, जिसे वह पूरे वर्ष बेमन से दोहराता रहता है।

विचार करें कि क्या इतने महत्वपूर्ण कार्य और स्कूल संचालित होने की शुरूआत के समय का उपयोग बरसों–बरस एक ही तरह की प्रार्थना से किया जाना उचित है?

सोचें, और लिखें ....

इस समय का बेहतर उपयोग किस प्रकार किया जा सकता है

....

....

....

सुनन्दा जनपद मुरादाबाद में शिक्षिका हैं। वह स्कूल में संचालित विभिन्न संज्ञान सहगामी क्रियाकलापों में बढ़चढ़कर अगुवाई करती हैं। उन्होंने प्रार्थना सत्र को इतना रोचक व उपयोगी बना दिया है कि अधिकांश दिनों में प्रार्थना से पूर्व ही बच्चों की शत–प्रतिशत उपस्थिति रहती है जो विद्यालय परिसर की साफ–सफाई से लेकर कक्षा कक्षों को व्यवस्थित करना, सामग्री जुटाना, पौधों को पानी देना, सूचना पट्ट पर सुविचार लिखना जैसे तमाम दैनिक क्रियाकलापों को सुनियोजित कर नियत समय पर कतारबद्ध होकर प्रार्थना के लिए खड़े हो जाते हैं।

विचार करें, सुनन्दा बच्चों के साथ ऐसा क्या करती होंगी कि बच्चे इतनी उत्सुकता से प्रार्थना सत्र में सम्मिलित होते हैं? अपने विचार यहाँ लिखें–

....

....

....

....

प्रार्थना सभा की सुविचारित योजना : दरअसल सुनन्दा के पास कोई जादुई छड़ी नहीं है बल्कि उन्होंने स्कूल में प्रार्थना के लिए नियत 30 मिनट का सुविचारित व सुनियोजित प्लान तैयार किया है जिसकी जानकारी वह अपने सभी साथी शिक्षकों और बच्चों को साझा करती हैं। इस प्लानिंग में वह दो प्रकार की जिम्मेदारियाँ और उनके अनुसार क्रियाकलापों का निर्धारण करती हैं –

अ. शिक्षक/शिक्षिकाओं की भूमिकाएं और क्रियाकलाप।

ब. बच्चों की भूमिकाएं और क्रियाकलाप (कक्षावार)

ये क्रियाकलाप कुछ इस प्रकार के होते हैं–

- प्रत्येक दिवस के लिए अलग–अलग प्रार्थनाएं जो हर माह बदल जाती हैं।
- प्रत्येक दिन संक्षिप्त प्रेरक प्रसंग (शिक्षक व बच्चों द्वारा)
- न्यूज अपडेट (शिक्षक/बच्चों द्वारा)
- स्वास्थ्य चर्चा – मौसम के अनुसार डूज एण्ड डॉन्ट्स (शिक्षकों द्वारा)
- शारीरिक सक्रियता के क्रियाकलाप (शिक्षक द्वारा)
- बातचीत (कम्युनिकेशन) की गतिविधियां (शिक्षकों द्वारा)
- सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी (शिक्षक/बच्चों द्वारा)

- स्फूर्तिदायक गतिविधियाँ (शिक्षकों द्वारा)
- सामान्य निर्देश (प्रधानाध्यापक द्वारा)
- सामान्य जागरूकता/जनरल अवेयरनैस (शिक्षक द्वारा)
- बच्चों के विशेष प्रयासों, जन्मदिन पर प्रोत्साहन देना, ताली बजाना (प्रधानाध्यापक/शिक्षक द्वारा)

इन क्रियाकलापों के अनुसार शिक्षकों एवं बच्चों की भूमिकाओं को इस प्रकार स्पष्टतः रेखांकित करते हुए साझा किया जाता है कि हर शिक्षक और बच्चे को पता होता है कि उन्हें किस दिन क्या करना है।

यह एक उदाहरण है जो इस बात को पुष्ट करता है कि अन्य विषयों यथा हिन्दी, अंग्रेजी, गणित, विज्ञान आदि के वादनों/सत्रों की ही तरह प्रार्थना सत्र भी है जिसके लिए बाकायदा प्लानिंग (योजना) की जरूरत है ताकि इस हेतु निर्धारित महत्वपूर्ण समय का सर्वोत्तम उपयोग हो सके और बच्चों के व्यक्तित्व में रचनात्मक परिवर्तन दिखाई देने लगें।

कैसे होगा यह सब?

जिस तरह अन्य विषयों की शिक्षा योजना बनाई जाती है उसी प्रकार प्रार्थना सत्र की भी साप्ताहिक/मासिक एवं वार्षिक योजना का निर्धारण आवश्यक है जिसके लिए जरूरी होगा–

- विभिन्न प्रार्थनाओं, समूहगान, देशगीतों, प्रकृति गीतों, फसलों, ऋतुओं, मौसमों के गीतों, लोकगीतों का संकलन करना।
- माहवार मौसम के अनुसार स्वास्थ्य जागरूकता के क्रियाकलापों/जानकारियों का संकलन।
- विभिन्न लघु कथाओं/प्रेरक प्रसंगों का संकलन।
- दिवसवार जयन्तियों, राष्ट्रीय पर्वों, त्यौहारों के बारे में महत्वपूर्ण जानकारियों का संकलन।
- संक्षिप्त एवं रोचक सामूहिक गतिविधियों का संकलन ।
- बाल गीतों/बाल कविताओं/सामान्य ज्ञान (बच्चों के स्तरानुसार) की जानकारियों का संकलन।
- संवाद (कम्युनिकेशन) के विषयों का चयन।
- शारीरिक सक्रियता की गतिविधियों (योग, पी.टी., व्यायाम) का चयन।
- बच्चों के प्रोत्साहन योग्य कार्यों का चयन।
- दैनिक अखबारों से प्रमुख खबरों का सार संकलन।

प्रात:कालीन सभा (प्रार्थना सत्र) का दैनिक स्वरूप

दिन	शारीरिक सक्रियता की गति (4 मि.)	प्रार्थना (3 मि.)	उद्‌घोष/प्रतिज्ञा (2 मि.)	प्रेरक प्रसंग (3 मि.)	समाचार वाचन (3 मि.)	सामान्य ज्ञान वाचन (2 मि.)	स्वास्थ्य व अन्य जागरूकता चर्चा (3 मि.)	संवाद/कम्युनिकेशन (5 मि.)	प्रोत्साहन की गति (5 मि)	आवश्यक निर्देश व सूचनाएं (2 मि.)	राष्ट्रगान (52 सै0)
सोमवार	" "	वह शक्ति हमें....	" "	स्थानीय/राष्ट्रीय स्तर के महापुरुषों, साहित्यकारों वैज्ञानिकों आदि से जुड़े प्रसंग तथा लघुकथाएं तथा त्योहार पर्व एवं जागरूकता विषयक जानकारियां	" "	" "	" "	" "	" "	" "	" "
मंगलवार	" "	हर देश में तू....	" "		" "	" "	" "	" "	" "	" "	" "
बुधवार	" "	तू ही राम है..	" "		" "	" "	" "	" "	" "	" "	" "
बृहस्पतिवार	" "	आये है। हम दूर–दूर से सबको	" "		" "	" "	" "	" "	" "	" "	" "
शुक्रवार	" "	देश हमें देता...	" "		" "	" "	" "	" "	" "	" "	" "
शनिवार	" "	सुबह सवेरे लेके.....	" "		" "	" "	" "	" "	" "	" "	" "

नोट :– दैनिक प्रार्थना, उद्‌घोष, प्रेरक प्रसंगों का विवरण परिशिष्ट–7 से लिया जा सकता है।

- प्रोत्साहन गतिविधि के अंतर्गत बच्चों के जन्मदिन, अच्छे कार्य आदि के संदर्भ में प्रोत्साहन दिया जायेगा।
- संवाद/कम्युनिकेशन के अन्तर्गत विभिन्न अवसरों पर किये जाने वाले अभिवादन/शिष्टाचार दैनिक जीवन व विशेष अवसरों से सम्बन्धित किये जाने वाले कार्यों का अभ्यास कराया जायेगा।

सांध्यकालीन सभा तथा उसकी कार्ययोजना–

विद्यालय की शुरूआत जिस प्रकार प्रार्थना स्थल से होती है उसी प्रकार व्यवस्थित ढंग से विद्यालयीय कार्यक्रमों का समापन भी सभा स्थल से ही होना चाहिए। इसे दृष्टिगत रखकर सांध्यकालीन कार्यक्रमों को भी 30 मिनट के लिए नियोजित कर एक व्यवस्थित स्वरूप दिवसवार दिया जा रहा है–

सोमवार	मंगलवार	बुधवार	बृहस्पतिवार	शुक्रवार	शनिवार
• समूहगान *हिन्द देश के निवासी...*	• समूहगान *हमारा तुम्हारा वतन एक एक ही है......*	• समूहगान *हे जगत्राता विश्व....*	• समूहगान *न हो साथ कोई अकेले बढ़ो तुम*	• समूहगान *सारे जहाँ से अच्छा*	• समूह गान इन्साफ की डगर पर बच्चों दिखाओ... • कार्यानुभव सम्बन्धी कार्य • बाल सभा • चित्रकला • टी.एल.एम. निर्माण • सुलेख प्रतियोगिता/ श्रुतलेख • रंगोली • मुखौटा निर्माण
• सामूहिक व्यायाम/ योगासन	• सामूहिक व्यायाम योगासन	• सामूहिक व्यायाम योगासन	• सामूहिक व्यायाम योगासन	• सामूहिक व्यायाम योगासन	
• क्विज/ प्रतियोगिता (साप्ताहिक)	• कविता/कहानी/ बालगीत	• कविता/कहानी/बालगीत	कविता/कहानी / बालगीत	• कविता/ कहानी/ बालगीत	
• गतिविधि/खेल– हिन्दी	• गतिविधि/खेल– अंग्रेजी	• गतिविधि/खेल– गणित	गतिविधि/खेल – विज्ञान	• गतिविधि/खेल – पर्यावरण	
• शाम की कहानी	• शाम की कहानी	• शाम की कहानी	• शाम की कहानी	• शाम की कहानी	

नोट :– प्रत्येक दिवस 30 मिनट का यह सत्र/सभा आयोजित होगी जिसमें उल्लिखित सभी प्रकार की गतिविधियाँ/क्रियाकलाप आयोजित किये जायेंगे।

यह सब हो जाने के बाद जरूरी होगा–

- इस सामग्री के आधार पर क्रियाकलापों/गतिविधियों का वार्षिक, मासिक व साप्ताहिक विभाजन।
- शिक्षकों व बच्चों की भूमिकाओं का रोस्टर तथा आवंटित कार्य का निर्धारण ।
- इस योजना के आधार पर क्रियान्वयन तथा यथावश्यक संशोधन परिवर्धन।

संग्रह, संकलन में मददगार कौन – ऊपर दी गई सामग्री के संग्रह और संकलन में मददगार होंगे–

- परिवेशीय संसाधन, पुस्तकालय, आई.सी.टी. सामग्री, अन्य विद्यालयों के सराहनीय प्रयास और अंततः हमारी स्वयं की रचनात्मकता।

तो आइए! अपने विद्यालय में प्रभावी प्रार्थना सत्रों को संचालित करने की शुरूआत करें।

सह शैक्षिक गतिविधियाँ

छात्र–छात्राओं के व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास में पाठ्यक्रमीय क्रियाकलापों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इनके माध्यम से संज्ञानात्मक पक्ष का संवर्द्धन तो होता ही है, बच्चों के व्यक्तित्व के भावात्मक तथा क्रियात्मक (कौशलात्मक) पक्षों का भी विकास होता है। कक्षा में कुछ बच्चे अन्तर्मुखी तथा संकोची प्रकृति के होते हैं, इस प्रकार की गतिविधियों से उनकी झिझक धीरे–धीरे दूर हो जाती है। छात्रों की रुचियों, क्षमताओं, अभिवृत्तियों, आत्मविश्वास की परख एवं प्रभावी नेतृत्व आदि के विकास के लिए विद्यालय एवं अन्य स्तरों पर विविधतापूर्ण सह शैक्षिक गतिविधियों का आयोजन जरूरी है। बच्चों में कक्षा और कक्षा के बाहर स्वस्थ प्रतिस्पर्धा के विकास के लिए विद्यालय में पाठ्य सहगामी क्रियाओं, जिन्हें हम सह शैक्षिक गतिविधियों के रूप में जानते हैं, का नियोजन, प्रबन्धन एवं क्रियान्वयन किये जाने की विशेष आवश्यकता है।

हम यह जानते हैं कि सह शैक्षिक गतिविधियों को पहले पाठ्येत्तर क्रियाकलाप कहा जाता था। कालान्तर में इनकी उपयोगिता एवं प्रासंगिकता को देखते हुए पाठ्य सहगामी क्रियाकलाप अथवा संज्ञान सहगामी क्रियाकलाप कहा जाने लगा। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में इन्हें पाठ्यक्रमीय क्रियाकलाप के अन्तर्गत माना गया है।

सह शैक्षिक गतिविधियों को हम मुख्य तौर पर निम्नांकित श्रेणियों (प्रकार) में रखते हैं–

- **प्रतियोगिताएँ**––कहानी, निबंध, कविता, वाद–विवाद, अन्त्याक्षरी, पोस्टर, रंगोली, खेलकूद, रोलप्ले, लोककथा, लोकगीत, चित्राँकन आदि।

- **संगोष्ठी सेमिनार**––सामाजिक सरोकार के मुद्दे जैसे–स्वच्छता, पर्यावरण एवं सड़क सुरक्षा।
- **कार्यशालाएँ**––विज्ञान, गणित, भाषा एवं अन्य विषय पर आधारित।
- **विज्ञान एवं गणित क्लब की स्थापना एवं पठन मंचों की स्थापना**–– विज्ञान क्लब के सहयोग से विज्ञान एवं गणित से संबंधित निम्नलिखित कार्यक्रमों का आयोजन–
  - विज्ञान एवं गणित मॉडलों का प्रदर्शन।
  - विज्ञान विषय संबंधी लघु नाटिकाओं का मंचन।
  - वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करने सम्बन्धी भाषण, निबंध लेखन एवं चित्रकला प्रतियोगिता।
  - विज्ञान एवं गणित क्विज का आयोजन।
- **दिवस/राष्ट्रीय पर्व/जयन्ती**–– विभिन्न दिवसों यथा विज्ञान दिवस /पर्यावरण दिवस/हिन्दी दिवस, महापुरुषों की जयन्तियों तथा राष्ट्रीय पर्वों पर विविध प्रकार के कार्यक्रमों का आयोजन।
- **कार्यानुभव/शिल्प आधारित कार्य**––चित्रकला, पोस्टर, हस्तशिल्प, मिट्टी के कार्य, स्थानीय विशिष्टता आधारित क्रियाकलाप।
- **बाल संसद/बाल समिति**––गठन एवं प्रभावी क्रियात्मक स्वरूप
- **परिवेशीय संग्रहालय का विकास**––परिवेश से सामग्री का संकलन कर विद्यालय स्तर पर म्यूजियम बनाना।
- **पुस्तकालय संचालन**––पुस्तकों का वितरण एवं वापसी।
- **विज्ञान संग्रहालयों, नवाचार हब, विज्ञान और गणित मेलों का भ्रमण एवं आयोजन**––

(क) परंपरागत एवं आधुनिक विज्ञान और प्रौद्योगिकी संबंधी गतिविधियों वाले स्थलों, जैसे साइकिल/ट्रक/कार/रेल/पोत–कारखाना, डेयरी, परंपरागत और मार्डन कृषि परंपरा, फील्ड सिंचाई व्यवस्था, बेकरी, सामुदायिक रेडियो और टी0वी0 स्टेशन, चिड़ियाघर, बिजलीघरों, टेलीफोन एक्सचेंज, विज्ञान संग्रहालय, विज्ञान पार्क, शोध प्रयोगशालाओं, उच्चतर शिक्षण संस्थाओं, उद्योग आदि के भ्रमण में छात्रों का मार्ग दर्शन।

(ख) उच्चतर शिक्षा संस्थाओं की देख–रेख में विज्ञान संग्रहालय और नवाचार हब के भ्रमण की योजना : इंजीनियरिंग, विज्ञान अथवा गणित स्नातकों और स्नातकोत्तर छात्रों से वार्तालाप।

(ग) स्थानीय विज्ञान और गणित मेलों का भ्रमण तथा अपने स्तर से आयोजन।

ये गतिविधियाँ केवल एक संकेत मात्र हैं। आप अपने स्तर पर इन्हें और आगे बढ़ा सकते हैं। इन सभी सह शैक्षिक क्रियाकलापों/गतिविधियों को बच्चों एवं शिक्षकों दोनों के मध्य आयोजित कराया जा सकता है। इन कार्यक्रमों को विद्यालय में आयोजित कर एक तरफ जहां हम बच्चों की प्रतिभा एवं नैसर्गिक क्षमता के विकास में मदद कर रहे होंगे वहीं दूसरी तरफ शिक्षक साथियों के मध य इन्हें आयोजित कराकर उनकी जानकारी को अद्यतन कराने के साथ–साथ उनकी व्यावसायिक दक्षता में वृद्धि भी कराने में सहयोगी हो सकते है।

सह शैक्षिक गतिविधियों के आयोजन से बच्चों के अन्दर निम्नांकित गुणों का विकास होगा––

- कहानी कथन, कविता, अन्त्याक्षरी, निबन्ध लेखन आदि से बच्चों का मानसिक, भावात्मक एवं सृजनात्मक विकास।
- वाद–विवाद, वाक्य निर्माण प्रतियोगिता, कहानी, कविता, घटनाओं पर विचार प्रकट करना, चित्रकला एवं पोस्टर निर्माण, अभिनय, रोलप्ले, विषयवार प्रोजेक्ट निर्माण से बच्चों के अन्दर से झिझक समाप्त होगी तथा रचनात्मकता/कल्पना शक्ति के विकास के साथ–साथ निर्णय लेने की क्षमता का विकास होगा।
- इसी प्रकार हस्तशिल्प एवं कार्यानुभव के कार्यों से सृजनशीलता का विकास होने में मदद मिलेगी।
- खेलकूद के माध्यम से स्वतंत्र चिन्तन, रणनीतियों का निर्धारण, समय सापेक्ष निर्णय लेने की क्षमता तथा रचनात्मकता का विकास होगा।

सह शैक्षिक गतिविधियों के सुचारु रूप से संचालन के दृष्टिगत इसके मूल आधारों नियोजन, प्रबन्धन एवं क्रियान्वयन को समझ लेना आवश्यक है क्योंकि किसी भी कार्यक्रम के आयोजन के पूर्व उसकी रणनीति व नियोजन आवश्यक होता है। कहा भी गया है कि किसी भी कार्यक्रम की योजना या नियोजन में ही उसकी सफलता और असफलता छुपी होती है।

नियोजन––

इसका सीधा अर्थ कार्ययोजना बनाना है। किसी कार्य के सम्पादन का यह प्रथम तथा महत्वपूर्ण सोपान है। इसके अन्तर्गत किये जाने वाले कार्य (प्रतियोगिता, गोष्ठी, सेमिनार, प्रदर्शनी, मेला, कार्यशाला आदि) के उद्देश्य, लक्ष्य समूह, प्रभाव क्षेत्र, फैलाव, अवधि, लागत, स्वरूप, स्थान, क्रियाविधि आदि का ढाँचा तैयार किया जाता है। कार्यक्रम का भली प्रकार सम्पन्न होना इसी बात पर निर्भर होता है कि उसके लिए नियोजन कितनी कुशलता से किया गया है।

नियोजन के प्रमुख आधार बिन्दु

- कार्यक्रम की रूपरेखा, स्थल और अवधि का उचित चयन।
- आवास, बैठक व्यवस्था, उपकरण, फर्नीचर, प्रकाश, पानी, शौचालय आदि की आवश्यकता का सही आकलन।
- कार्यक्रम संचालन के लिए कुशल संदर्भदाताओं की पहचान तथा उनकी उपलब्धता सुनिश्चित करना।
- कार्यक्रम के विभिन्न दिवसों/सत्रों में प्रयोग में आने वाली प्रत्येक सामग्री की व्यवस्था।
- कार्यक्रम के सफल संचालन के लिए संतुलित तथा उपयुक्त समय सारिणी का निर्माण।
- कार्यक्रम आयोजन में आने वाली सम्भावित कठिनाइयों/बाधाओं का पूर्वानुमान और निराकरण उपायों पर चिन्तन करना।
- कार्यक्रम हेतु बुलाये जाने वाले व्यक्तियों की सूची बनाना तथा उन्हें समय पर आने के लिए आमंत्रण पत्र भेजना।
- कार्य के बजट/धन आपूर्ति सम्बन्धी व्यवस्था सुनिश्चित करना।

आयोजन (कार्यक्रम क्रियान्वयन)

आयोजन ही किसी कार्यक्रम का मुख्य क्रियात्मक अंश है। नियोजन के पश्चात उस कार्य का निश्चित अवधि में पूर्व निर्धारित समय–सारिणी का पालन करते हुए क्रियान्वित किया जाना ही आयोजन है। अच्छे नियोजन के बिना अच्छा आयोजन किया जाना सम्भव नहीं है। इस चरण में नियोजन द्वारा पूर्व विचारित और जुटाये गये मानवीय, भौतिक एवं वित्तीय संसाधनों का अधिकतम सदुपयोग करते हुए कार्यक्रम के कुशल सम्पादन को सुनिश्चित किया जाता है।

आयोजन के मुख्य बिन्दु–

- कार्यक्रम के प्रत्येक अंश/सत्र का कुशल संचालन।
- आकस्मिक बाधायें कम से कम उभरें और ऐसी बाधाओं/आकस्मिकताओं के निराकरण के सशक्त और प्रभावी विकल्प मौजूद हो।
- आयोजन के दौरान वातावरण सौहार्दपूर्ण रहे और उद्‌देश्यपूर्ण प्राप्ति में सहायक हो।
- कार्यक्रम के कार्यकर्ताओं, पदाधिकारियों, लक्ष्य समूहों, संदर्भ व्यक्तियों तथा अन्य सम्बन्धित इकाईयों में पारस्परिक कार्य विभाजन करते हुए आवश्यक तालमेल निरन्तर बना रहे।

- बैठक व्यवस्था, योजना तथा आवास व्यवस्था और समय सारिणी का पालन आवश्यकता के अनुकूल हो।
- उद्घाटन, समापन आदि के अवसर पर अनावश्यक औपचारिकताओं से यथासम्भव बचा जाय जिससे मुख्य कार्यक्रम के लिए समय का अधिकाधिक उपयोग हो सके।

प्रबन्धन

आयोजन एवं प्रबन्धन को एक दूसरे से अलग करके नहीं देखा जा सकता है। कार्यक्रम के आयोजन के दौरान ही प्रबन्धन सम्बन्धी कार्य निरन्तर चलते रहते हैं। यदि आयोजन कार्यक्रम के भौतिक पक्ष से जुड़ा प्रतीत होता है तो प्रबन्धन कार्यक्रम के उद्देश्यों की पूर्ति के पक्ष से जुड़ा हुआ होता है।

प्रबन्धन के प्रमुख बिन्दु

- आयोजन के साथ प्रबन्धन लगातार क्रमिक रूप से जुड़ी क्रिया है।
- कार्यक्रम की अवधि में प्रत्येक स्तर पर तत्काल तथा उचित निर्णय लिया जाना चाहिए।
- चर्चा/बहस/क्रियाकलाप की दिशा सदैव उद्देश्य की ओर ही रहे।
- कार्यक्रम के दौरान वातावरण भय, तनाव व अनिश्चितता से सर्वथा मुक्त रहे।
- प्रशिक्षण/गोष्ठी/प्रतियोगिता/प्रदर्शनी आदि कार्यक्रम में प्रत्येक प्रतिभागी में समान सहभागिता एवं समान महत्व का व्यक्ति होने का आभास बना रहे।
- आयोजन स्थल का वातावरण उत्साहजनक बना रहे और इसमें समय–समय पर बदलाव भी होता रहे जिससे एकरसता/नीरसता न आने पाये। इसके लिये कार्यक्रम में आवश्यकतानुसार संशोधन/परिवर्तन करते रहें।
- किसी भी प्रतिभागी को हतोत्साहित करने वाली बातें न हों।
- कार्यक्रम संचालन के सामान्य नियम निर्धारित कर उनका पालन करने हेतु सभी को प्रेरित किया जाय।

सह शैक्षिक गतिविधियों के आयोजन में ध्यान देने योग्य मुख्य बातें

विद्यालय स्तर पर सह शैक्षिक गतिविधियों को आयोजित कराते समय ध्यान दें कि क्या इनमें निम्नांकित बिन्दु समाहित हैं––

- सह शैक्षिक क्रियाकलापों/गतिविधियों में बालिकाओं की भागीदारी है या नहीं ?

- सह शैक्षिक गतिविधियों का निर्धारण कक्षा में हर बच्चे की शारीरिक स्थिति को ध्यान में रखते हुए किया गया है अथवा नहीं ?
- सह शैक्षिक गतिविधियां विद्यार्थियों के स्तर एवं उनकी आयु के अनुसार चयनित हैं अथवा नहीं।
- विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चे प्रतिभाग कर रहे हैं या नहीं ?
- क्या बच्चे स्वतंत्र रूप से सह शैक्षिक गतिविधियों/क्रियाओं का संचालन करते हैं तथा इसके लिए समितियां बनी हैं ?
- चित्रकला/पोस्टर/कला/क्राफ्ट/मिट्टी के कार्य सम्बन्धी कार्यशाला व मेलों का आयोजन हुआ या नहीं ?
- ड्राइंग/क्राफ्ट को सप्ताह में कितने दिन तथा कितने घण्टे समय दिया गया?
- खेलकूद/पीटी को कितना समय दिया जा रहा है?
- स्कूल में समूहवार कितनी बार तथा किस प्रकार की प्रतियोगिताएं हुई हैं ?
- पुस्तकालय की पुस्तकों को पढ़ने के लिए क्या तरीके अपनाये गये और कितना समय माह/सप्ताह में दिया गया?
- कृषि/ बागवानी को सप्ताह में कितना समय दिया गया?
- साप्ताहिक बाल सभा का आयोजन हो रहा है या नहीं?
- समितियों का गठन और प्रभावी उपयोग हो रहा है कि नहीं?
- बच्चों को शैक्षिक भ्रमण के मौके मिल पा रहे हैं या नहीं?
- स्वतंत्र भाव प्रकाशन के कौन–कौन से अवसर बच्चों को उपलब्ध कराये गये?
- सह शैक्षिक गतिविधियों से सम्बन्धित क्रियाकलापों को आयोजित कराने हेतु विद्यालय पर आवश्यक सामग्री/किट/उपकरण/टूल हैं या नहीं?

प्रधानाध्यापक एवं अध्यापक की भूमिका

प्रारम्भिक विद्यालयों में सह शैक्षिक गतिविधियों के आयोजन में प्रधान अध्यापक एवं अध्यापकों की भूमिका को निम्नवत् देखा जा सकता है–

- विद्यालयों में सहशैक्षिक गतिविधियों को कैसे क्रियान्वित करें, इसके बारे में परस्पर चर्चा करना तथा आवश्यक सहयोग प्रदान करते हुए निरंतर संवाद बनाये रखना।

- क्रियाकलापों का अनुश्रवण करना तथा आयी हुई समस्याओं का निराकरण सभी की सहभागिता द्वारा करना।
- इन क्रियाकलापों में बालिकाओं की सहभागिता अधिक से अधिक हो साथ ही साथ सभी छात्रों की प्रतिभागिता सुनिश्चित हो, इस हेतु सामूहिक जिम्मेदारी लेना।
- समय सारिणी में खेलकूद/पीटी,ड्राइंग, क्राफ्ट,संगीत, सिलाई/बुनाई व विज्ञान के कार्यों हेतु स्थान व वादन को सुनिश्चित करना।
- स्कूलों में माहवार/त्रैमासिक कितनी बार किस प्रकार की प्रतियोगिताएं करायी गयी इसकी जानकारी प्राप्त करना एवं रिकार्ड करना।
- बच्चों के स्तर एवं रुचि के अनुसार कहानियां, चुटकुले, कविता आदि का संकलन स्वयं करना तथा बच्चों से कराना।
- विज्ञान/गणित सम्बन्धी प्रतियोगिताओं हेतु विषय से सम्बन्धित प्रश्न बैंक रखना, आवश्यक वस्तुओं का संग्रह रखना।
- जन सहभागिता एवं सहयोग हेतु जनसंपर्क मेले, बाल मेले, प्रदर्शनी का आयोजन, शिक्षाप्रद फिल्मों को दिखाने की व्यवस्था करना।
- विद्यालय स्तर पर विभिन्न प्रकार की कार्यशाला, सेमीनार, गोष्ठियों, एवं प्रतियोगिताओं का आयोजन शिक्षकों एवं बच्चों दोनों ही स्तरों के लिए किया जाना।

खेल गतिविधियां एवं प्रतियोगिताएं

बच्चों के बहुमुखी विकास और विद्यालय से लगाव के लिए खेल गतिविधियों एवं प्रतियोगिताओं का आयोजन आवश्यक है। इनसे जहाँ एक ओर उनका शारीरिक–मानसिक विकास होता है, वहीं उनमें चुस्ती–फुर्ती भी बनी रहती है। कुछ बच्चे जिनका रुझान खेल के प्रति अधिक होता है, वे खेलों के सहारे जीवन में बहुत आगे तक बढ़ जाते हैं।

खेल गतिविधियों में शामिल है–योग, व्यायाम, पी. टी. , आत्मरक्षा के तरीकों (जूडो/ताईक्वान्डो) के साथ इंनडोर–आउटडोर खेल। हमारे विद्यालयों में खेल के लिये पीरियड भी निर्धारित हैं। प्रार्थना स्थल और अतिरिक्त समय पर भी इन गतिविधियों के लिये अवसर हैं। हमारे विद्यालयों के बच्चे विभिन्न स्तर की खेल प्रतियोगताओं में भी भाग लेते है। निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा अधिकार अधिनियम के अनुसार हर विद्यालय में खेल सामग्री होना अनिवार्य किया गया है फलस्वरूप आजकल प्रायः सभी विद्यालयों में खेल सामग्री उपलब्ध है। अतः बच्चों के शारीरिक एवं मानसिक विकास हेतु हमें नियमित रूप से विद्यालय में खेल गतिविधियों का आयोजन करना चाहिए।

खेलों का विवरण और संभावित समय सारिणी

क.	विवरण	समयावधि	कब करें?
1.	योग / व्यायाम	10 मिनट	नित्य प्रार्थना स्थल पर
2.	पी.टी.	5 मिनट	नित्य प्रार्थना स्थल पर
3.	एथलेटिक्स (दौड़, कूद, फेंक)	40 मिनट	नित्य अंतिम वादन में या सप्ताह के अंतिम 3 दिनों के अंतिम वादन में (शनिवार को छोड़कर)
4.	खेल (खो–खो, कबड्डी, वालीबाल, फुटबाल, बैडमिन्टन आदि)	120 मिनट	प्रत्येक शनिवार को लंच के बाद (प्रारंभ में 30 मिनट तक बाल सभा)

सामग्री–

- ड्रम (पी.टी. के अभ्यास हेतु)
- ड्रेस किट–10 – बालिकाओं के लिए
- ड्रेस किट–10 – बालकों के लिए
- नी कैप, एल्बो कैप– 20–20
- वॉलीबाल, फुटबाल, बैडमिंटन– 4 सेट, नेट (वॉलीबाल, बैडमिंटन)
- लूडो, चेस, कैरम
- गोला, भाला, डिस्क
- बैट–बाल, पम्प, स्टाप वाच, सीटी

सोचें!

- आपके विद्यालय में कौन–कौन से उपकरण/सामग्री उपलब्ध है?
- इनको लगातार उपयोग और समृद्ध करने की क्या योजना है?
- क्या आपके विद्यालय में बच्चों के लिए खेल प्रतियोगिताएँ होती हैं? यदि हाँ, तो कौन–कौन सी? यदि नहीं, तो हो पाएं, इसकी क्या कार्य योजना है?
- क्या आपके विद्यालय के सभी शिक्षक/बच्चे/एस. एम. सी. के सदस्य तथा अभिभावक इस व्यवस्था में शामिल हैं?

जीवन कौशल विकास

पाठ्यपुस्तक कलरव '3' में एक कहानी है –**'मुर्गा और लोमड़ी'**। इसे आपने अवश्य पढ़ा होगा।

अगले पृष्ठ पर बॉक्स में कुछ गुण दिए गए हैं। सोचें और लिखें कि इस कहानी के एक पात्र के रूप में मुर्गे में इनमें से कौन–कौन से गुण मौजूद हैं–

....

वस्तुतः ये गुण 'जीवन कौशल' हैं जिनके कारण मुर्गा अपने आप को लोमड़ी का शिकार बनने से बचा लेता है।

हम सभी भली–भांति अवगत हैं कि शिक्षा व्यक्तित्व विकास का सशक्त माध्यम है जिसके द्वारा बच्चा जीवन की विभिन्न परिस्थितियों में सटीक निर्णय लेने, अपने प्रति जागरूक रहने जैसे तमाम कौशलों से परिचित होता है। ये कौशल उसके जीवन को सुगम बनाते हैं इसलिए इन्हें **'जीवन कौशल'** कहा जाता है।

जीवन कौशल का विकास कैसे : हर विषय अपनी प्रकृतिगत विभिन्नता रखता है लेकिन अलग–अलग तरीकों से बच्चों में यह जीवन कौशलो के विकास में भी सहायक होता है।

अतः किसी भी विषय के शिक्षण के दौरान बच्चों में इन जरूरी कौशलों के विकास हेतु आवश्यक होगा कि–

- हम विषयवार शिक्षण योजना बनाते समय उन जीवन कौशलों का चिह्नांकन अवश्य करें जो संबंधित प्रकरण में समाहित हैं।
- शिक्षण के दौरान प्रकरण में समाहित जीवन कौशलों को बच्चों से चर्चा, उदाहरण, प्रसंग आदि के द्वारा प्रमुखता से उभारना।
- बच्चों को ऐसे प्रसंग सुनाना जो किसी खास जीवन कौशल पर केन्द्रित हों। इसके उपरान्त बातचीत द्वारा उस जीवन कौशल को उभारना।
- बच्चों से ऐसे अनुभव सुनना जिनमें उनके द्वारा इन जीवन कौशलों में से किसी का परिचय दिया गया हो।
- बच्चों को पाठ्य सामग्री देकर उनमें जीवन कौशल ढुँढ़वाना।
- ऑडियो सुनाकर अथवा वीडियो दिखाकर उस पर बातचीत करना और जीवन कौशल ढुँढ़वाना।
- रोल–प्ले कराकर उनमें निहित जीवन कौशलों पर चर्चा कराना।
- दैनिक समाचार पत्र से उन महत्वपूर्ण समाचारों को चुनना जिनमें इन जीवन कौशलों को स्पष्टतः रेखांकित किया गया हो। इन खबरों को बच्चों के छोटे समूह बनाकर देना और जीवन कौशल ढुँढ़वाना।

जीवन कौशल

1- Critical Thinking (समालोचनात्क सोच)
2- Creative Thinking (सृजनात्मक सोच)
3- DecisionMaking (निर्णय लेना)
4- Problem Solving (समस्या समाधान)
5- Effective Communication (प्रभावी सम्प्रेषण)
6- Interpersonal Relationship (पारस्परिक अन्तरसम्बन्ध)
7- Self Awareness (स्व जागरूकता)
8- Empathy (समभाव)
9- Stress Control Cooping with Stress (तनाव पर नियंत्रण)
10- Emotional Control Cooping with Emotions (भावनाओं पर नियंत्रण)

बड़ी कक्षाओं के बच्चों को समूहवार एक–एक जीवन कौशल देकर उससे संबंधित कहानी/कविता बनवाना।

व्यक्तिगत स्वच्छता

घर हो, स्कूल हो या खेल का मैदान, सभी जगह बच्चे तरह–तरह के रोगाणुओं के सम्पर्क में आते रहते हैं। जब यह रोगाणु बच्चों के शरीर में पनपते हैं, तो उन का शरीर बीमारियों का घर बन जाता है। इसलिए बच्चों को स्वस्थ रहने के लिए व्यक्तिगत स्वच्छता के बारे में जानकारी देना तथा व्यक्तिगत स्वच्छता को विद्यालयीय कार्यक्रम का एक प्रमुख हिस्सा बनाना अत्यन्त आवश्यक है।

प्रतिदिन विद्यालय में, विशेष रूप से प्रातःकालीन सभा में सुनिश्चित करें कि :–

- बच्चों को भोजन करने से पहले और खाने के बाद, शौचालय जाने के बाद, जानवरों के साथ खेलने या छूने तथा गंदी चीजों को हाथ लगाने के बाद अच्छी तरह से साबुन और पानी से उनके हाथ धोना सिखाएं।
- बच्चे सुबह और रात को सोने से पहले ब्रश/नीम की दातुन अवश्य करें।
- बच्चे प्रतिदिन साबुन एवं साफ पानी से नहायें ताकि त्वचा साफ रहे।
- बालों को गंदगी और रूसी से मुक्त रखने के लिए बच्चे कम से कम सप्ताह में दो बार बाल धोकर अच्छे से सुखाएं।
- बच्चों के आँख, नाक, कान की सफाई नियमित रूप से हो, यह सुनिश्चित करने के लिए नियमित जाँच करें।
- बच्चे नाखून नियमित रूप से काटें। नाखून को दाँत से न काटें तथा नाक में अपनी उंगली न डालें।
- नंगे पाँव न घूमें। सदैव जूते–चप्पलों का प्रयोग करें।
- बच्चे जब भी खाँसें एवं छींकें अपने मुँह को रुमाल या हाथ से ढकें।
- बच्चे साफ एवं धुले हुए कपड़े पहनें।
- बच्चे शरीर पर पहने हुए कपड़ों से ही नाक, हाथ और खाने पीने की चीजें न पोछें। रुमाल/साफ स्वच्छ कपड़े का प्रयोग करें।
- बच्चे यहाँ–वहाँ थूकना, मलमूत्र त्यागना तथा कूड़ा फेंकने से बचें।
- मलमूत्र त्यागने के बाद अपने अंगों को साफ पानी से धोयें तथा हाथों को साबुन से धोयें।
- बच्चे शौचालय में जाने पर पानी अवश्य डालें।
- स्वच्छता विषय पर जागरूकता हेतु प्रातः एवं सांध्यकालीन सभा में नारे लगवायें/चर्चा करें।

ध्यान देने योग्य बातें – बच्चों की व्यक्तिगत स्वच्छता सुनिश्चित करने हेतु विद्यालय में सभी साधन उपलब्ध होने चाहिए, जैसे–

- डिटॉल/हाथ धोने का साबुन समाप्त होने पर तुरंत उपलब्ध करायें।
- शौचालय में हार्पिक, फिनायल, टॉयलेट ब्रश, बाल्टी आदि।
- शौचालय में पानी की पर्याप्त व्यवस्था।
- स्वच्छ पेयजल व्यवस्था एवं स्थान।
- भोजन हेतु स्वच्छ स्थान।

ताकि सपने सच हों

आपने कक्षा में काम के दौरान बच्चों से कभी न कभी यह जरूर पूछा होगा कि वे क्या बनना चाहते हैं या उनका सपना (Dream) क्या है ?

बच्चों ने अपनी समझ और जानकारी के आधार पर कुछ जवाब भी दिए होंगे जैसे–टीचर, डाक्टर, इंजीनियर या अन्य कुछ और।

आपने इस बातचीत के दौरान अनुभव किया होगा कि बच्चों में अपने सपनों को लेकर स्पष्टता नहीं है या बहुत सीमित समझ है। यह भी, कि किसी सपने को पूरा करने के लिए कब से और किस प्रकार की तैयारी करनी होती है, क्या–क्या चुनौतियाँ आती हैं, किस प्रकार की बाधाएं आती हैं और कैसे उन बाधाओं का समाधान खोजते हुए सपने को वास्तविकता का रूप दिया जाता है इस बात की भी समझ अधिकाँश बच्चों को नहीं होती है।

शिक्षक के रूप में हम बच्चों के मार्गदर्शक भी हैं। अतः हमारे लिए यह जानना भी जरूरी है कि बच्चों के सपने क्या हैं तथा यह जानने के बाद हमें क्या करना होगा। इसके लिए जरूरी होगा–

- बच्चों के सपनों पर बातचीत करना।
- उन सपनों को श्रेणीबद्ध (कैटेगरी करना)
- हर श्रेणी के आधार पर तय करना कि इस सपने को हासिल करने के लिए क्या तैयारियाँ करनी होंगीं।
- संभावित चुनौतियाँ/बाधाएँ जो इस तैयारी के दौरान आ सकती है।
- इन चुनौतियों/बाधाओं के समुचित समाधान
- सपने को हासिल करने में मददगार स्रोत और संसाधन

यदि आप ऐसा कर लेते हैं तो निश्चित ही आपकी कक्षा से बहुत सी लता मंगेशकर, बिरजू महाराज, उस्ताद बिस्मिल्लाह खाँ, प्रेमचंद, सचिन तेंदुलकर, सायना नेहवाल जैसी प्रतिभाएँ निकलेंगीं।

एक तरीका यह भी

एक जूनियर हाई स्कूल की प्रधानाध्यापिका ने बाल सभा में बच्चियों से उनके सपनों के बारे में बात की। बच्चियों ने जो भी सपने बनाए उनको श्रेणीबद्ध किया। इसके बाद उन्होंने सभी बच्चियों की एक डायरी बनवाई जिस पर बच्चियों ने लिखा **'मेरा सपना।'** उन सपनों की कैटेगरी के आधार पर हर महीने के पहले और आखिरी शनिवार को बाल सभा में सपनों को पूरा करने की दिशा में तैयारियों पर चर्चा करना प्रारंभ की। इसके लिए उन्होंने स्थानीय स्तर पर बच्चियों द्वारा चयनित क्षेत्रों से संबंधित प्रमुख से सम्पर्क कर निर्धारित तिथि पर विद्यालय आने का अनुरोध किया। सम्बन्धित गणमान्य व्यक्ति निर्धारित समय पर विद्यालय आते हैं। उन्होंने अपने सपने को कैसे–कैसे पूरा किया बच्चों से साझा करते हैं। बच्चियाँ अपने–अपने सपने से संबंधित सवाल करती हैं और वे बच्चियों के सवालों का उत्तर देते हैं। बच्चियाँ इस बातचीत को अपनी शिक्षिकाओं की मदद से इन श्रेणियों में दर्ज करती हैं–

- मेरा सपना
- क्या तैयारी करनी होगी
- क्या चुनौतियाँ आएंगी
- चुनौतियों का सामना कैसे करेंगी – योजना क्या होगी?

बच्चियाँ सपने को पूरा करने की कार्य योजना तैयार करती हैं जिसमें दैनिक, मासिक व वार्षिक आधार पर अपने लिए गोल सेट करती हैं और उसे हासिल करने के तरीके निर्धारित करते हुए अपने सपने को सच करने की ओर कदम बढ़ाती जाती हैं।

व्यावसायिक परामर्श (Career Guidance)

व्यावसायिक परामर्श व्यवसाय को चुनने, उसके लिए तैयारी करने, उसमें प्रवेश करने तथा उसमें विकास करने हेतु सूचना देने, अनुभव देने तथा सुझाव देने की प्रक्रिया है।

व्यावसायिक परामर्श की विशेषताएँ

1. व्यावसायिक परामर्श के आधार पर बच्चों को यह ज्ञात हो जाता है कि उनकी वास्तविक स्थिति क्या है?
2. व्यावसायिक परामर्श के आधार पर कार्य के स्वरूप एवं कार्य से सम्बन्धित व्यक्तियों के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त होती है।

व्यावसायिक परामर्श की आवश्यकता

किसी व्यवसाय में विशिष्ट कार्य के संचालन में विशेष दक्षताओं, योग्यताओं वाले व्यक्तियों के लगाने से कार्य की गुणवत्ता और कर्मचारियों को संतुष्टि प्राप्त होती है।

1. व्यक्तिगत भिन्नता के सिद्धान्त के अनुसार प्रत्येक बच्चे में निहित योग्यताएं, क्षमताएं, रुचि, अभिरुचि, आदि भिन्न–भिन्न होती है। परामर्श के द्वारा इस सन्दर्भ में विभिन्न माध्यमों से पर्याप्त सूचनाएँ एकत्र की जा सकती है।
2. व्यावसायिक परामर्श द्वारा बच्चों को उनकी रुचियों, कौशलों, योग्यताओं, अभिरुचियों आदि के सम्बन्ध में जानकारी प्रदान की जा सकती है। इस जानकारी के आधार पर ही प्रगति की दौड़ में शामिल हुआ जा सकता है। आज जितने भी राष्ट्र अग्रणी है, उनकी सफलता का एक प्रमुख रहस्य यह भी है कि उन देशों में व्यक्ति की क्षमताओं का समुचित उपयोग किया जाता है। इस दृष्टि से बच्चों एवं शिक्षा प्राप्त कर चुके युवकों के लिए व्यावसायिक परामर्श, विशेष रूप से सहायक हो सकता है।
3. किसी व्यवसाय में प्रविष्टि की दृष्टि से नहीं, बल्कि व्यवसाय में निरन्तर प्रगति करने की दृष्टि से भी व्यावसायिक परामर्श उपयोगी है। किसी व्यवसाय में सम्बन्धित जानकारी एवं कौशलों के विकास में सहायक व्यावसायिक प्रशिक्षण केन्द्रों आदि से सम्बन्धित सूचनाएँ प्राप्त की जा सकती है।
3. प्रायः यह देखने में आता है कि जो बच्चे अपने पारिवारिक जीवन में सुख एवं सन्तोष की अनुभूति करते हैं, वह व्यावसायिक जीवन को भी शान्त, सौम्य एवं संतुलित रूप से व्यतीत करते हैं।

इसी प्रकार व्यावसायिक जीवन में, सतत् रूप से प्रगति करने वाले व्यक्ति अपनी पारिवारिक समस्याओं का समाधान भी सहज रूप से ही कर लेते हैं। परामर्श के माध्यम से इन समस्याओं का समन्वित रूप से समाधान करने में व्यक्ति को सहायता प्रदान की जा सकती है।

इस प्रकार, शैक्षिक परामर्श के उपरान्त व्यावसायिक परामर्श का व्यक्ति के जीवन में विशेष महत्व होता है।

व्यावसायिक परामर्श के प्रमुख उद्देश्य हैं–

1. विद्यालयों में व्यवसाय से सम्बन्धित सूचनाओं का विश्लेषण करने की योग्यता एवं क्षमता विकसित करना।
2. सत्यनिष्ठा से किया गया कार्य सदैव सर्वोत्तम होता है, इस भावना का छात्रों में विकास करना।

3. व्यक्ति के व्यवसाय चयन के पश्चात उसकी अनुकूल परिस्थितियाँ उत्पन्न करने में सहायता प्रदान करना।
4. छात्रों को विभिन्न व्यावसायिक प्रशिक्षण संस्थानों से अवगत कराना।
5. गरीब विद्यार्थियों को अर्थ के अतिरिक्त अन्य प्रकार की सहायता प्रदान कर, उनकी व्यवसाय से सम्बन्धित योजना को सफल बनाना।
6. छात्रों को भिन्न–भिन्न व्यवसायों का निरीक्षण करने हेतु सुविधाओं को उपलब्ध कराना।
7. किसी व्यवसाय हेतु कौन–कौन से गुण, योग्यता एवं कुशलता अपेक्षित है, की जानकारी प्रदान कराना।
8. छात्रों को विभिन्न व्यवसायों के सम्बन्ध में ऐसी सूचनाओं को एकत्रित करने में सहायता करना जिनका वह चयन कर सकें।
9. छात्रों को विभिन्न व्यवसायों से अवगत कराकर, उन व्यवसायों के सामाजिक एवं व्यक्तिगत महत्व के सम्बन्ध में जानकारी प्रदान करना।
10. छात्रों में कार्य के प्रति एक आदर्श भावना का विकास करना।
11. कार्य की परिस्थितियों के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करने हेतु विद्यालयों के अन्दर एवं बाहर अवसरों का सृजन करना।

विद्यार्थियों की रुचियों को व्यापक बनाने हेतु उन्हें विभिन्न अवसर प्रदान करना भी व्यावसायिक परामर्श का एक प्रमुख उद्देश्य है।

अध्यापक छात्रों को निम्नलिखित रूप से व्यावसायिक परामर्श देकर प्रोत्साहित कर सकते हैं:–

1. सफल कहानियों (Success stories) को बच्चों के समक्ष दिखाकर।
2. बच्चों को उनकी क्षमताओं एवं व्यक्तिगत विभिन्नताओं का आभास कराते हुए व्यावसायिक परामर्श देना।
3. बच्चों को उनकी रुचि के अनुसार व्यवसाय चुनने के लिए प्रोत्साहित करना।
4. रुचि के अनुसार चुने गए व्यवसाय के बारे में उचित जानकारी देकर जैसेकि – चुने गए व्यवसाय से सम्बन्धित शिक्षण/प्रशिक्षण संस्थाएं, चयनित व्यवसाय का स्कोप, भविष्य में संभावनाएं, कार्यक्षेत्र, संबंधित क्षेत्र में आगे बढ़ने के अवसर आदि।

बाल संसद

क्या है?	बालक–बालिकाओं का एक मंच प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों में गठन किया जाता है।
उद्देश्य	जीवन मूल्यों का विकास, व्यक्तित्व विकास, नेतृत्व क्षमता, निर्णय लेने की क्षमता, सही/गलत स्पर्श की समझ, समय प्रबन्ध इत्यादि पर स्पष्ट समझ
शिक्षक की भूमिका	बाल संसद के संयोजक के रूप में सहयोग करना।
मंत्रिमण्डल/स्वरूप /गठन समितियां	1. प्रधानमंत्री } एक छात्रा का चयन अवश्य हो 2. उप–प्रधानमंत्री 3. शिक्षा मंत्री 4. उपशिक्षा मंत्री सह मीना मंच मंत्री (अनिवार्य रूप से छात्रा हो) 5. स्वास्थ्य एवं स्वच्छता मंत्री 6. उप स्वास्थ्य एवं स्वच्छता मंत्री 7. जल एवं कृषि मंत्री 8. उप जल एवं कृषि मंत्री 9. पुस्तकालय एवं विज्ञान मंत्री 10. उप पुस्तकालय एवं विज्ञान मंत्री 11. साँस्कृतिक एवं खेल मंत्री 12. उप साँस्कृतिक एवं खेल मंत्री
समितियों के प्रमुख कार्य	
मंत्रिमण्डल	**कार्य**
प्रधानमंत्री	विशेष अवसरों पर विद्यालय में समारोह आयोजित करना एवं महत्वपूर्ण निर्णय लेना
शिक्षा मंत्री	सभी बच्चों को पढ़ने के लिए प्रेरित करना
स्वास्थ्य एवं स्वच्छता मंत्री	व्यक्तिगत स्वच्छता, परिसर, शौचालय की सफाई पर ध्यान देना
जल एवं कृषि मंत्री	विद्यालय में पेड़–पौधे, क्यारियां, परिसर के सौन्दर्यीकरण पर ध्यान देना, पीने के पानी की स्वच्छता का ध्यान रखना
पुस्तकालय एवं विज्ञान मंत्री	पुस्तकालय की किताबें पढ़ने की आदत डलवाना, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, नवाचारों में सहयोग करना
सांस्कृतिक मंत्री	सांस्कृतिक गोष्ठी, वार्षिक खेलकूद, राष्ट्रीय पर्वों पर समारोह आयोजन

भाग – 4

सीखने के लिए आकलन

☞ आकलन क्यों किया जाना चाहिए?

☞ आकलन बच्चों के किन पक्षों का किया जाना चाहिए?

☞ आकलन कैसे किया जाना चाहिए?

☞ आकलन से प्राप्त फीडबैक का उपयोग कैसे किया जाना चाहिए?

सीखने के लिए आकलन (Assessment for Learning)

वर्तमान समय में आप बच्चों की प्रगति का आकलन कैसे करते हैं? सामान्यतः उत्तर होगा– सत्र परीक्षा, अर्द्धवार्षिक परीक्षा या वार्षिक परीक्षा के माध्यम से। यदि किसी परीक्षा में एक बच्चा किसी विषय में 50 में से 40 अंक प्राप्त करता है, तो क्या आप बता सकते हैं कि उसे क्या नहीं आ रहा है? क्या प्राप्ताँक को देखकर आप बता सकते हैं कि बच्चे ने क्या–क्या सीख लिया है? क्या बच्चे ने उस विषय में कक्षानुरूप मूलभूत दक्षताओं को प्राप्त कर लिया है?

अंक आधारित आकलन (Summative Assessment) हमें बच्चों की वास्तविक सीख के स्तर को नहीं बता पाता है। यह सिर्फ इतना बताता है कि बच्चे ने 70 प्रतिशत या 80 प्रतिशत अंक प्राप्त किए और इससे माना जा सकता है कि बच्चे ने लगभग इतने प्रतिशत पाठ्यक्रम को समझा भी है। कोई शिक्षक यदि जिज्ञासु है तो उत्तरपुस्तिका को देखकर वह यह जान सकता है कि बच्चे ने किन–किन बिन्दुओं को समझ लिया है। इससे आगे इस प्रकार के मूल्याँकन का और कोई उपयोग नहीं होता है। इस चर्चा से यह स्पष्ट है कि इस प्रकार का मूल्याँकन बच्चों के अधिगम स्तर के अंतर को समझने तथा इसे कम करने में मददगार नहीं है।

एक अच्छा शिक्षक अपनी कक्षा में बच्चों की प्रगति का सतत आकलन करता है ताकि वह समय रहते आवश्यक कदम उठा सके। आकलन के इस तरीके को **रचनात्मक आकलन** (Formative Assessment) कहते हैं। इस प्रकार का आकलन शिक्षक को यह पता करने में मदद करता है कि बच्चे क्या कर सकते हैं, क्या नहीं कर पा रहे है, या फिर किन चीजों के साथ जूझ रहे हैं। इससे उन्हें अपने शिक्षण के तरीकों में सुधार या फेरबदल करने में मदद मिलती है। इसे **'सीखने के लिए आकलन'** (Assessment for Learning) भी कहते हैं।

इस प्रकार शिक्षक सामान्य शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के दौरान ही बच्चों के कठिनाई के बिन्दुओं का पता लगा लेते हैं तथा उनका समय रहते ही निराकरण कर देते हैं। इस प्रकार बच्चों के अधिगम स्तर में आने वाले अंतर या गैप की संभावना को ही समाप्त कर देते हैं। साथ ही वे बच्चों के व्यक्तित्व संबंधी अन्य आयामों जैसे नेतृत्व क्षमता, समूह के समक्ष बोलने की कला, आत्मविश्वास, खेल व अन्य गतिविधियों में प्रतिभाग करना आदि पर भी दृष्टि रखते हैं ताकि उसमें भी निरंतर सुधार करते रहें। यह प्रक्रिया सतत रूप से चलती रहती है। इसलिए इसे **सतत एवं व्यापक आकलन** (Continuous and Comprehensive Assessment) या **रचनात्मक आकलन** (Formative Assessment) भी कहते हैं।

सीखने के लिए आकलन या रचनात्मक आकलन का मुख्य जोर विद्यार्थियों का बौद्धिक, भावनात्मक, शारीरिक, सांस्कृतिक और सामाजिक विकास सुनिश्चित करने पर होता है इसीलिए यह

केवल शैक्षिक उपलब्धियों को आँकने तक सीमित नहीं होता। इस प्रकार का आकलन विद्यार्थियों को अभिप्रेरित करने, सूचना प्रदान करने, फीडबैक की व्यवस्था करने और कक्षा शिक्षण में सुधार करने के लिए अनुवर्ती कार्रवाई करने और विद्यार्थी की निरंतर प्रगति के विवरणों की व्यापक तस्वीर प्रस्तुत करने के एक साधन के रूप में कार्य करता है।

रचनात्मक आकलन बच्चों की मात्र उपलब्धि स्तर (Achievement level) जानने का उपकरण नहीं है, बल्कि मुख्यतः यह सभी बच्चों के सीखने (Learning) को सुनिश्चित करने का उपकरण है। बच्चों के साथ लगातार बातचीत करते हुए विभिन्न क्षेत्रों में बच्चों की क्षमता और सामर्थ्य को जानकर उनके लिए सीखने की प्रक्रिया को सुगम बनाना, उनकी कठिनाइयों को पहचान कर उसके आधार पर सीखने–सिखाने की पिछली प्रक्रिया से बच्चों ने क्या सीखा और आगे की सीखने–सिखाने की प्रक्रिया कैसी होनी चाहिए, यह तय किया जाता है।

प्रत्येक बच्चे की सीखने की गति एवं समझ विकसित करने का समय एक सा नहीं होता है। अतः प्रत्येक बच्चे को उसके संदर्भ, अनुभव व सीखने की गति व ढंग के आधार पर ही आकलित किया जाना चाहिए। सीखने–सिखाने की प्रक्रिया का उद्देश्य जल्दी सीखने वाले बच्चों को ही सिखाना नहीं होता है बल्कि हर बच्चे की विभिन्नताओं को ध्यान में रखते हुए सभी को सीखने के अवसर देना होता है। अतः सतत व व्यापक मूल्यांकन की प्रक्रिया में प्रत्येक बच्चे की प्रगति की तुलना उसकी अपनी ही पिछली स्थिति से की जाती है, दूसरे बच्चों की प्रगति से नहीं।

आकलन क्यों किया जाना चाहिए ?

आकलन का लक्ष्य सीखने–सिखाने की प्रक्रिया को सुव्यवस्थित दिशा एवं गति प्रदान करने के लिए बच्चे की आवश्यकताओं, अभिरुचियों और कौशलों के बारे में जानकारी प्राप्त करना है ताकि शिक्षण अधिगम की योजना को नियमित और उपयुक्त तरीके से परिवर्तित किया जा सके। इस प्रकार के आकलन से बच्चों में मूल्यांकन/परीक्षा के प्रति व्याप्त भय दूर होता है और प्रत्येक बच्चे के सीखने और विकास में सुधार की संभावनाएँ ज्ञात हो पाती हैं। ऐसी स्थिति में आकलन करने के निम्नलिखित कारण हैं:–

- सीखने–सिखाने की योजनाओं को नियमित और उपयुक्त तरीके से परिवर्द्धित कर लागू करने के लिए।
- पाठयक्रम द्वारा निर्धारित समयावधि में विविध विषयों में बच्चे की प्रगति/परिवर्तनों को ज्ञात करने के लिए।
- बच्चों में आत्मविश्वास उत्पन्न करने और स्व–मूल्यांकन हेतु प्रोत्साहित करने के लिए।
- बच्चों के सीखने और विकास में मदद करने और सुधार की संभावनाएँ ढूँढ़ने के लिए।

बच्चों के किन पक्षों का आकलन किया जाना चाहिए ?

एक बच्चे के सीखने और विकास को कक्षायी संरचना अथवा आकलन और कक्षोन्नति के वार्षिक चक्र के रूप में पारिभाषित नहीं किया जा सकता है। समग्र परिप्रेक्ष्य में देखने पर वह केवल स्कूल के अलग–अलग विषयों का विद्यार्थी मात्र नहीं होता है। अतः आकलन करते समय बच्चे के भिन्न–भिन्न विषयों/क्षेत्रों में सीखने और प्रदर्शन, कौशल, रुचियाँ, रुझान और अभिप्रेरणा, एक निश्चित अवधि में सीखने और व्यवहार में होने वाले परिवर्तन तथा विद्यालय के भीतर और बाहर मौजूद भिन्न–भिन्न स्थितियों और अवसरों के प्रति प्रतिक्रिया का ध्यान रखना चाहिए।

आकलन को ऐसी प्रक्रिया के रूप में देखा जाना चाहिए, जहाँ शिक्षक बेहतर शिक्षण अधिगम के परिप्रेक्ष्य में बच्चों के बारे में समझ रखते हैं और रचनात्मक आकलन को रणनीति के रूप में शिक्षण का मूल अंग बनाते हैं।

आकलन कैसे किया जाना चाहिए ?

इसके लिए सर्वप्रथम आवश्यक है कि भिन्न–भिन्न स्रोतों यथा–शिक्षक, माता–पिता/अभिभावक, बच्चों के मित्र/सहपाठी, दूसरे अध्यापक और समुदाय के माध्यम से बच्चे के सीखने की गति, रुचि और शैली के संबंध में जानकारियाँ प्राप्त की जाएँ। इसके पश्चात औपचारिक तरीकों जैसे– कक्षा में विचार–विमर्श में छात्र के जवाब और नियोजित तरीके जैसे– टेस्ट या अवलोकन के माध्यम से यह सूचना प्राप्त की जाए कि तरह–तरह की गतिविधियों, प्रयोगों, अनुभवों और अधिगम क्रियाकलापों से बच्चे क्या सीख रहे हैं। अंततः बच्चे के सीखने और प्रगति को समझने के लिए प्राप्त जानकारियों का विश्लेषण करने के पश्चात गुणात्मक तरीके से अभिलेखों में दर्ज करते हुए इस विश्लेषण से प्राप्त नतीजों के आधार पर बच्चों की प्रगति पर काम किया जाए।

बच्चों के साथ काम करते समय यह अनुभव होता है कि हर बच्चा अलग अलग तरह से सीखता है और विभिन्न क्षेत्रों में उसकी प्रगति का स्वरूप अलग–अलग होता है। अतः बच्चों के साथ **मौखिक तरीकों– व्यक्तिगत या समूह चर्चा/वार्तालाप/ प्रश्नोत्तरी के साथ–साथ लिखित तरीकों यथा बच्चों की कॉपियों, स्लेट, हरी पट्टी आदि पर लिखित कार्य कराकर नियमित आकलन कर सकते हैं।** यह कार्य कक्षा कार्य/प्रदत्त कार्य, समूह कार्य, परियोजना/मॉडल निर्माण/खोज/प्रयोग और प्रस्तुतिकरण के दौरान कराना चाहिए।

आकलन से प्राप्त फीडबैक का उपयोग कैसे किया जाना चाहिए ?

बच्चे के साथ

- प्रत्येक बच्चे से यह बातचीत करें कि उसने कौन–कौन सा काम अच्छी तरह से किया है, कौन सा नहीं और कहाँ–कहाँ कठिनाईयों के कारण सुधार की आवश्यकता है।

- बच्चे/शिक्षक आपस में मिलकर तय करें कि बच्चे को किस प्रकार की सहायता की आवश्यकता है।
- बच्चे को अपना प्रोफाइल देखने तथा हाल ही में किए गए कामों की तुलना पुराने काम से करने के लिए प्रोत्साहित किया जाय।
- काम के दौरान या बाद में भी सकारात्मक रचनात्मक टिप्पणियाँ दी जायें जिससे बच्चों को प्रोत्साहन मिले।
- बच्चे की तुलना उसके पिछले कार्यों की प्रगति से करें न कि दूसरे बच्चे के कार्यों से।

स्वयं शिक्षक के साथ

- हम स्वयं अपनी समीक्षा करें कि क्या हमने सभी तरीकों का उपयुक्त प्रयोग किया?
- कहीं ऐसा तो नहीं है कि हमने सीखने–सिखाने की उपयुक्त प्रक्रियाओं का पालन नहीं किया?
- बच्चों के सीखने में हम और किस प्रकार/किन तरीकों से योगदान दे सकते हैं।

अभिभावकों के साथ

- अभिभावक बच्चों की किस तरह से मदद कर सकते हैं?
- बच्चे की रुचि, अभिवृत्ति, कौशल आदि के संबंध में उनके अवलोकन क्या हैं ।
- बच्चे की प्रगति में अपेक्षित सुधार हेतु उन्हें क्या और किस प्रकार से सहयोग देना है।

भाग – 5

विद्यालय नेतृत्व

- संकल्पना
- शैक्षिक नेतृत्व के गुण
- शैक्षिक नेतृत्व के प्रकार
- विद्यालय का विज़न
- व्यावसायिक दक्षता का विकास
- सामुदायिक सहभागिता
- समावेशी शिक्षा
- रिपोर्टिंग/डाक्युमेंटेशन

विद्यालय नेतृत्व (School Leadership)

संकल्पना

किसी भी संस्था का निर्माण या विकास कुछ मूलभूत उद्देश्यों की प्राप्ति के दृष्टिगत किया जाता है। इन उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए कुछ विशेष रणनीतियाँ अपनायी जाती है। उसी के अनुरूप कुछ कार्य किये जाते हैं।

इस प्रकार किसी संस्था के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए आवश्यक कार्यों को सही दिशा देने तथा उसमें कार्य कर रहे व्यक्तियों को साथ लेकर चलने को नेतृत्व (लीडरशिप) कहते है। नेतृत्व एक ऐसी कला है जिसके माध्यम से आप अपने साथ काम कर रहे लोगों में सकारात्मक उर्जा का संचार करते हुए साझे लक्ष्य को प्राप्ति की ओर अग्रसर होते हैं। अलग–अलग लोगों की विभिन्न भूमिकाएँ हो सकती हैं, लेकिन लक्ष्य समान होते हैं।

जब हम इस पर और गहनता से विचार करते हैं तो पाते हैं कि नेतृत्व (लीडरशिप) कई गुणों का एक समन्वित रूप है, एक प्रक्रिया है, मार्गदर्शन है तथा जिम्मेदारी भी है। यह किसी एक समय में होने वाली घटना नहीं है, बल्कि सतत रूप से चलने वाली प्रक्रिया है।

जब हम विद्यालयीय तंत्र की बात करते हैं, तो यह पाते हैं कि नेतृत्व विभिन्न स्तरों पर विभिन्न अलग–अलग लोगों द्वारा प्रदान किया जा रहा है। विद्यालय स्तर पर यह प्रधानाध्यापक द्वारा, तो ब्लॉक स्तर पर खंड शिक्षा अधिकारी द्वारा, वहीं जनपद स्तर पर बेसिक शिक्षा अधिकारी द्वारा नेतृत्व प्रदान किया जाता है। विभिन्न शैक्षिक संस्थानों के संस्थाध्यक्ष द्वारा यही कार्य अपने संस्थान स्तर पर किया जाता है ताकि संस्थान समन्वित रूप से अपने निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त कर सके।

शैक्षिक नेतृत्व शिक्षकों के कार्य प्रदर्शन तथा बच्चों की शैक्षिक सम्प्राप्ति को सीधे प्रभावित करता है। जिस प्रकार कक्षा शिक्षण की गुणवत्ता छात्रों की शैक्षिक सम्प्राप्ति को प्रभावित करती है, उसी प्रकार प्रधानाध्यापक द्वारा प्रदान किया जाने वाला नेतृत्व शिक्षकों के प्रदर्शन पर सीधा प्रभाव डालता है।

उपर्युक्त चर्चा से यह स्पष्ट है कि किसी विद्यालय का प्रदर्शन तथा शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया की गुणवत्ता काफी हद तक प्रधानाध्यापक के नेतृत्व कौशल पर भी निर्भर करती है। आगे हम प्रधानाध्यापक द्वारा विद्यालय तथा शिक्षकों को प्रदान किए जाने वाले अकादमिक नेतृत्व की चर्चा करेंगे जो सीधे तौर पर विद्यालय की शैक्षिक उपलब्धि पर केन्द्रित है।

शैक्षिक नेतृत्व के गुण

विभिन्न शोध अध्ययनों से पता चलता है कि सफल नेतृत्व प्रदान करने वाले अधिकाँश व्यक्ति खुले दिमाग के साथ दूसरों से सीखने को सदैव तत्पर रहते हैं, लचीला दृष्टिकोण रखते हैं, भावात्मक रूप से मजबूत होते हैं, जीवन के प्रति आशावादी दृष्टिकोण रखते हैं और अपने प्रति दूसरों की तीव्र अपेक्षाओं के प्रति संवेदनशील होते हैं।

अतः सफल अकादमिक नेतृत्व प्रदान करने के लिए एक प्रधानाध्यापक में निम्नाँकित गुणों का होना आवश्यक है :

- प्रधानाध्यापक के रूप में अपने दायित्वों को समझना व उनके प्रति नैतिक जिम्मेदारी की गहरी भावना होना।
- विद्यालय विकास का स्पष्ट विज़न व कार्ययोजना पर समझ होना।
- स्वयं के विचारों को दूसरों तक पहुँचाने हेतु प्रभावी संप्रेषण कौशल का होना।
- लक्ष्यों के अनुरूप योजना बनाना, उनके क्रियान्वयन की रणनीति को समझना व उन्हें लागू करने की दृढ़ क्षमता होना।
- अपने साथ कार्य कर रहे लोगों को लक्ष्यों तथा इनके प्राप्ति के तरीकों के प्रति स्पष्ट विज़न तथा दिशा देना।
- भविष्य की संभावित चुनौतियों का पूर्वानुमान लगाना तथा उनके प्रति अपने साथ कार्य कर रहे लोगों को समय रहते आगाह करना।
- साथ कार्य कर रहे शिक्षकों में टीम भावना विकसित करना तथा इसे अपने आचरण व व्यवहार से स्वयं करके दिखाना।
- सभी के विचारों को सुनना, उन्हें सम्मान देना तथा फिर निर्णय लेना।
- अन्य लोगों को स्वयं निर्णय तथा जिम्मेदारी लेने के लिए प्रेरित करना।
- स्वयं करके दूसरों के समक्ष उदाहरण प्रस्तुत करना।
- अपने साथ कार्य रहे शिक्षकों की सहायता करने के लिए तत्पर रहना।
- दूसरे के वैयक्तिक प्रयासों की सराहना करना व उनका सम्मान करना।
- स्वयं तथा टीम के सदस्यों के सतत प्रोफेशनल विकास के लिए सदैव तत्पर रहना।

शैक्षिक नेतृत्व के प्रकार

प्रधानाध्यापक को अपने विद्यालय के शैक्षिक उन्नयन के लिए एक प्रभावी योजना बनाकर

तथा उसके क्रियान्वयन के लिए अपनी टीम के सभी सदस्यों (शिक्षकों व समुदाय के सदस्य) को साथ लेकर कार्य करना है। प्रश्न यह उठता है कि वह शिक्षकों तथा समुदाय को किस प्रकार का नेतृत्व प्रदान करे ताकि लक्ष्यों को समय सीमा के अंतर्गत सही तरीके से प्राप्त किया जा सके।

इसके लिए आइए, कुछ विशेष प्रकार की नेतृत्व शैलियों को समझते हैं। नेतृत्व शैलियों से तात्पर्य नेतृत्वकर्ता द्वारा अपनाये जाने वाले उन तरीकों से है जिसके माध्यम से वह अपनी टीम के साथ तय लक्ष्यों को प्राप्त करने की कोशिश करता है।

विभिन्न विद्वानों ने नेतृत्व की विभिन्न शैलियों के बारे में लिखा है जो उनके संदर्भ पर आधारित हैं। प्रधानाध्यापक के संदर्भ में निर्णय लेने और कार्य करने के आधार पर कुछ मुख्य नेतृत्व शैलियाँ निम्नवत हैं:

1. **सत्ताधारी या निरंकुश नेतृत्व (Authoritarian Leadership)** : इस शैली में नेता स्वयं निर्णय लेता है और अपनी इच्छानुसार कार्य का संचालन करता है। इसमें अन्य सभी सदस्य नेता के आदेशों के अनुसार कार्य करते है। इस शैली की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि समूह में व्यवस्था एवं अनुशासन रहता है। लेकिन इसकी सबसे बड़ी कमी यह है कि इसमें समूह के सदस्य अधीनता का अनुभव करते है और उनका मनोबल गिर जाता है। साथ ही इसमें नेतृत्वकर्ता की अनुपस्थिति से शिथिलता आ जाती है।
2. **लोकतन्त्रीय या जनतंत्रीय या सहभागी शैली (Democratic Style)**: इस शैली में विश्वास करने वाला नेतृत्व टीम की राय से निर्णय व योजना बनाता है। इसमें टीम भावना को महत्त्व दिया जाता है तथा सभी सदस्यों के सहयोग से उदेश्यों की प्राप्ति की जाती है। इसकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि टीम के सभी सदस्य किसी भी प्रकार के दबाव से मुक्त होते है, उनका मनोबल ऊँचा होता है। वे अपनी जिम्मेदारी को समझते हैं तथा उदेश्य की प्राप्ति के लिए स्वेच्छा से प्रयास करते हैं। इस शैली की एक कमी यह है कि विचारों में भिन्नता के कारण कभी–कभी सभी सदस्य एकमत नहीं हो पाते है जिससे उद्देश्य की प्राप्ति में बाधा पड़ती है।
3. **अनहस्तक्षेपी या स्वतंत्र शैली (Laissez-fair Style)** : इस प्रकार का नेतृत्व टीम के सदस्यों के कार्यों में हस्तक्षेप नही करता है। टीम के सभी सदस्य उदेश्यों को समझते हुए आवश्यकतानुसार कार्य करते हैं। नेतृत्व का टीम के सदस्यों पर न्यूनतम नियन्त्रण होता है। इस प्रकार की शैली विश्वसनीय व योग्य लोगों की छोटी टीम में कारगर होती है। इसकी सबसे बड़ी कमी यह है कि नेता का हस्तक्षेप ना होने अथवा न्यूनतम हस्तक्षेप होने से टीम में व्यवस्था व अनुशासन की कमी होती है जिससे उदेश्य की प्राप्ति में बाधा आती है।

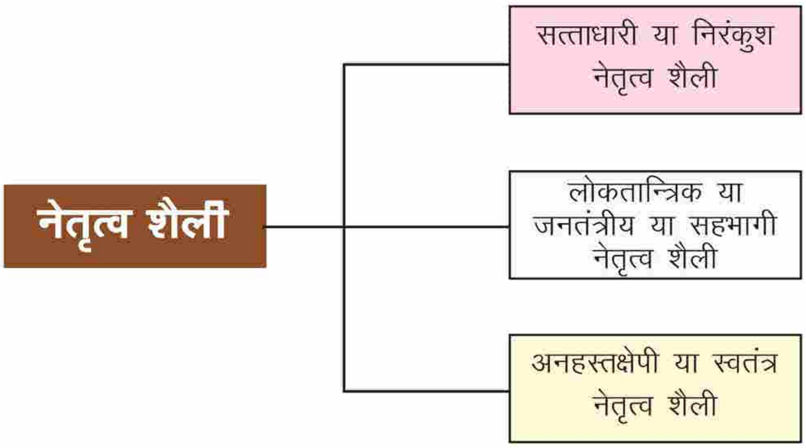

यहाँ यह कहना उचित होगा कि उपर्युक्त सभी तीनों प्रकार की नेतृत्व शैलियों के अपने गुण व दोष हैं। इसलिए प्रधानाध्यापक को कौन सा तरीका कब अपनाना है, यह बात उस विशेष उद्देश्य, शिक्षकों के गुणों, समय, कार्य परिस्थितियों तथा उपलब्ध समय सीमा पर निर्भर करेगी।

सामान्य तौर पर सामाजिक क्षेत्रों में कार्य करने के लिए लोकतन्त्रीय शैली अधिक उपयुक्त मानी जाती है। लेकिन कई बार प्रधानाध्यापक को समय व परिस्थिति के अनुसार तीनों का समय–समय पर उपयोग करना पड़ सकता है।

विद्यालय का विज़न

प्रधानाध्यापक के पास अपने विद्यालय के शैक्षिक उन्नयन की स्पष्ट सोच (Vision) होनी चाहिए। उन्हें यह पता होना चाहिए कि विद्यालय में कितने शिक्षक व बच्चे हैं तथा विभिन्न मानकों पर विद्यालय की वर्तमान स्थिति क्या है? साथ ही आगे किस तरह वर्तमान स्थिति से अपेक्षित स्थिति की ओर बढ़ें। इसकी एक कार्ययोजना भी उनके पास होनी चाहिए। इसके साथ ही इन सबके प्रति वह अपने शिक्षक साथियों को उन्मुख भी करें तथा उन्हें तय कार्ययोजना के अनुरूप कार्य करने के लिए प्रेरित भी करें।

प्रधानाध्यापक को अपने विद्यालय का विज़न निर्माण शिक्षकों, समुदाय व बच्चों के सहयोग से करना चाहिए। इसके लिए उन्हें पता होना चाहिए कि एक आदर्श विद्यालय किस प्रकार का होता है।

आइए, **'एक आदर्श विद्यालय के विज़न'** निर्माण के लिए निम्नांकित बिन्दुओं पर विचार करें–

विद्यालय कोई जड़ चीज नहीं है। 'वहाँ अपार संभावनाओं से भरे बच्चे होते हैं, और

विविध प्रकारों से सीखने के अवसर उपलब्ध कराने में समर्थ शिक्षक होते हैं। जब हम शिक्षण–अधिगम के दृष्टिकोण से जीवन्त एवं समृद्ध विद्यालय की संकल्पना करते हैं तो दृश्य कुछ इस प्रकार से उभरता है–

- विद्यालय में बच्चों को अभिव्यक्ति के लिये सुरक्षित स्थान व अवसर हों तथा निश्चित प्रकार की अन्तःक्रिया के माध्यम से बच्चों का अधिगम (learning) सुनिश्चित किया जा रहा हो।
- अधिगम भय/तनाव/भेदभाव मुक्त तथा रुचिपूर्ण वातावरण में हो रहा हो।
- विद्यालय में बच्चों की उम्र, लिंग, सामाजिक व साँस्कृतिक पृष्ठभूमि, भाषा, सीखने की गति, उपस्थिति आदि विविधताओं का सम्मान होता हो।
- अधिगम के लिये बाल–केन्द्रित गतिविधि आधारित शिक्षण विधाओं का प्रयोग होता हो।
- बच्चों की अधिगम समस्याओं का निराकरण करने के लिये सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन प्रणाली की व्यवस्था हो।
- बच्चे विद्यालय के अन्य घटकों – शिक्षक, समुदाय, समिति, शैक्षिक एवं सहपाठ्यगामी गतिविधियों /पर्यावरण तथा अन्य उपलब्ध संसाधन से तालमेल बिठा पाने में सक्षम हों।
- शिक्षक एवं बच्चों में सहज एवं आत्मीय संबंध हों तथा बच्चे–शिक्षक आपस में मिलकर जानने–समझने की सक्रिय कोशिश कर रहे हों।
- शिक्षकों/शिक्षिकाओं को बच्चों की क्षमता पर विश्वास हो।
- बच्चे शिक्षक समय–समय पर कक्षा के बाहर भ्रमण कर प्रोजेक्ट कार्य करते हों।
- विद्यालय में स्वच्छता का वातावरण हो, ऐसी प्रक्रिया निर्धारित हो (स्वच्छता समिति)
- विद्यालय बच्चों को रचनात्मक कार्यों के प्रदर्शन का मंच उपलब्ध कराता हो।
- पेयजल, शौचालय एवं खेल के मैदान जैसी सुविधाएँ हो जिनका बच्चे बेहिचक सहज भाव से उपयोग कर रहे हो।
- बच्चों के आगमन पर परस्पर आत्मीय स्वागत की परंपरा हो।
- बच्चे पुस्तकालय तथा कम्प्यूटर में खोजबीन करते नजर आयें।
- कक्षा में बच्चे छोटे/बड़े समूह में कार्य करते नजर आये।
- बच्चों के बीच बाँटे गये काम भेदभावपूर्ण व पारंपरिक न हों या अपमानजनक स्थिति पैदा न करते हों। सभी बच्चों को समान रूप से सीखने के अवसर दिये जा रहे हों।
- विद्यालय में समुदाय के ज्ञान का उपयोग करने के अवसर हों।

- अभ्यास कार्य/गृह कार्य का संबंध कक्षा के अंदर एवं कक्षा के बाहर के क्रिया–कलापों पर आधारित हो।
- ऐसी परिस्थितियों/अवसर हों जिनमें सभी बच्चों को एक साथ कार्य करने का मौका मिल रहा हो।
- विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को ध्यान में रखकर शैक्षिक गतिविधियाँ कराई जा रही हों।
- विविधताओं को ध्यान में रखते हुये बच्चों के साथ सम्मानजनक व्यवहार होता हो।
- विद्यालय प्रबन्धन में सभी बच्चों को भागीदारी के अवसर उपलब्ध हों।
- बच्चों के लिये शौचालय, पेयजल आदि व्यवस्थायें सुव्यवस्थित एवं स्वच्छ हो।

उपरोक्त बिन्दुओं के आधार पर अपने विद्यालय का विज़न तैयार कर प्रधानाध्यापक को समीक्षा करनी चाहिए कि अपेक्षित स्थिति तथा वर्तमान स्थिति में कहाँ–कहाँ तथा कितना गैप/अंतर है। इसके लिए निम्नलिखित प्रक्रिया को अपनाया जा सकता है :

1. **आवश्यकताओं का आकलन या गैप पता करना:** इसके लिए विद्यालय स्तर पर शिक्षकों, समुदाय के कुछ सदस्यों तथा विद्यार्थियों के साथ एक कार्यशाला का आयोजन करें तथा यह पता लगायें कि वर्तमान में विद्यालय की क्या स्थिति है, जैसे– कौन–कौन सी भौतिक सुविधाएँ नहीं हैं, शिक्षण अधिगम प्रक्रियाओं की स्थिति, पुस्तकालय व प्रयोगशालाओं की स्थिति, कितने बच्चों का अधिगम स्तर कक्षानुरूप नहीं है, आदि।

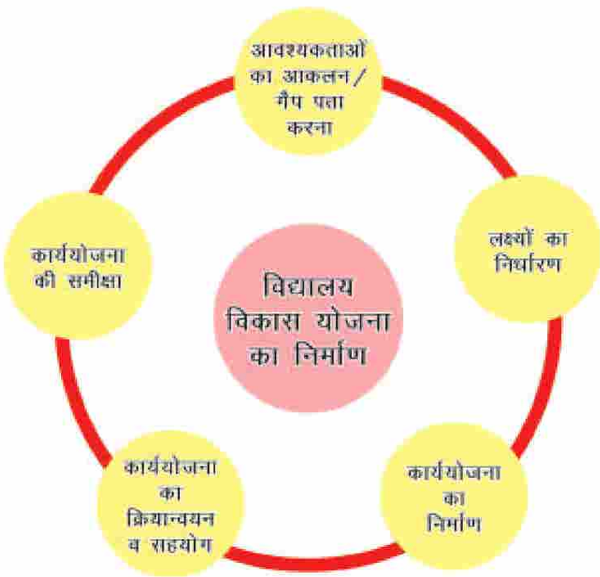

SMART लक्ष्य निर्धारण करने हेतु प्रधानाध्यापक निम्नलिखित प्रश्नों पर ध्यान दें :

- मैं किस विशिष्ट (specific) परिणाम की अपेक्षा रखता हूँ?
- क्या मेरा लक्ष्य मापने योग्य (measurable) है?

- क्या मेरा लक्ष्य प्राप्त किया जा सकता (achievable) है?
- क्या मेरा लक्ष्य वास्तविक (realistic) है?
- लक्ष्य को पाने में कितना समय (timebound) लगेगा?

1. **कार्ययोजना का निर्माणः** स्मार्ट लक्ष्य निर्धारण के पश्चात एक वास्तविक कार्ययोजना का निर्माण किया जाए।
2. **कार्ययोजना का क्रियान्वयन व सहयोगः** विद्यालय के विकास के लिए बनाई गई कार्य योजना के समुचित क्रियान्वयन के लिए आवश्यक है कि शिक्षकों को विभिन्न कार्यों की स्पष्ट जिम्मेदारी दी जाए। साथ ही प्रधानाध्यापक सतत रूप से इसके सभी पहलुओं एवं समस्याओं को समझते हुए इसके क्रियान्वयन में सहयोग प्रदान करें।
3. **कार्य योजना की समीक्षाः** यह आवश्यक है कि एक निश्चित समय में प्रधानाध्यापक अपनी विद्यालयीय टीम (शिक्षक, समुदाय एवं बच्चे) के साथ मिलकर कार्य योजना की समीक्षा करें तथा भविष्य के लिए आवश्यक सुझाव प्राप्त करें।

नियमित उपस्थिति

शिक्षक/हेडमास्टर/अनुश्रवणकर्ता के सन्दर्भ में

नियमित उपस्थित बच्चे में अपेक्षित शैक्षिक स्तर की प्राप्ति अनिवार्य शर्त है। यदि बच्चे विद्यालय में नियमित आते हैं और उनका ठहराव होता है, तो शिक्षक भी बच्चों में रुचि लेते हैं। सीखने–सिखाने की गतिविधियाँ आनन्ददायक होती हैं। हमारे परिषदीय विद्यालय वर्तमान समय में बच्चों की अनियमित उपस्थिति से प्रभावित होते दिख रहे हैं। परिणाम यह होता है कि बच्चे लर्निंग आउटकम प्राप्त करने में पीछे हो जाते हैं। विद्यालयों में बच्चों की अनियमित उपस्थिति के कुछ प्रमुख कारण निम्नांकित रूप में सामने आते हैं–

1. अभिभावकों में बच्चों की शिक्षा के प्रति जागरूकता का अभाव।
2. बच्चों का घर गृहस्थी, खेती–बाड़ी आदि कार्यों में अत्यधिक संलिप्त होना।
3. अपने छोटे भाई बहनों की देखभाल।
4. बीमारी/अस्वस्थता।
5. रिश्तेदारों के घर चले जाना।
6. पारिवारिक/आपसी विवाद के कारण दूसरी जगहों पर थोड़े–थोड़े अन्तरालों पर जाते रहना।

7. गांवों के आस–पास का माहौल जिसके कारण बच्चे स्कूल न जाकर गांवों में खेलते या घूमते हैं।
8. बाल मजदूरी
9. त्यौहार/शादी विवाह/संस्कारों/मेलों आदि के स्थानीय स्तर पर विशेष जोर या संलग्नता।
10. शिक्षकों का उपेक्षापूर्ण व्यवहार/उदासीनता/अरुचिपूर्ण शिक्षण तकनीक।

इनके अतिरिक्त अनियमित उपस्थिति के और भी कारण हो सकते हैं।

आइये, विचार करें कि हमारा अर्थात विद्यालय का प्रयास क्या हो? इस समस्या के समाधान में एक बात तो स्पष्ट है कि बच्चों की नियमित उपस्थिति सुनिश्चित करना किसी एक शिक्षक अथवा प्रधानाध्यापक की ही जिम्मेदारी नहीं है अपितु बच्चों को नियमित उपस्थितकरने हेतु पूरा विद्यालय को प्रयास करना होगा। बहुत सारे विद्यालयों ने सामूहिक टीम के प्रयास से बच्चों की उपस्थिति में स्वर्णिम सफलता प्राप्त की है। अब समय आ गया है कि हम समस्याओं को गिनाने के बजाए बच्चों की नियमित उपस्थिति हेतु पूरे मनोयोग से प्रयास करें। हम सोशल मीडिया के माध्यमों से जानते हैं कि अमुक विद्यालय ने इतने महीने में 10 प्रतिशत उपस्थिति दर्ज की, अमुक विद्यालय के अनुश्रवण में उपस्थिति 98 प्रतिशत रही। ये विद्यालय भी हमारे विद्यालयों की तरह कभी बच्चों की नियमित उपस्थिति हेतु जूझ रहे थे, किन्तु आज ये अपनी इस समस्या से निजात पाकर सीखने के स्तर को समृद्ध कर रहे हैं। साथ ही सामाजिक रूप से भी ख्याति प्राप्त कर रहे हैं। इन विद्यालयों में बच्चों के नामांकन हेतु अभिभावक भी उत्सुक दिख रहे हैं। अभिभावक निजी विद्यालयों में अपने बच्चों का नामांकन न कराकर इन परिषदीय विद्यालयों में करा रहे हैं।

बच्चों की नियमित उपस्थिति में वृद्धि के कुछ तरीके निम्नाँकित रूप में हो सकते हैं–

- नियमित अभिभावक सम्पर्क द्वारा।
- एस.एम.सी. एवं पी.टी.ए./एम.टी.ए. के गठन तथा उसे सक्रिय बनाकर।
- स्थानीय जनप्रतिनिधियों को विद्यालय से जोड़कर।
- समुदाय की सक्रिय सहभागिता द्वारा।
- स्वतन्त्रता दिवस, शिक्षक दिवस, बाल दिवस जैसी महत्वपूर्ण तिथियों पर बच्चों की शत प्रतिशत सहभागिता सुनिश्चित कराकर।
- शिक्षण विधाओं को बच्चों/कक्षा स्तर के अनुरूप बनाकर।
- नियमित आने वाले बच्चों के माता पिता को एस.एम.सी./पी टी ए/एम टी ए/ की बैठक या सार्वजनिक तौर से सम्मानित करके।

- प्रत्येक बच्चे व अभिभावक से व्यक्तिगत रूप से सम्पर्क स्थापित कर।
- बच्चा यह समझे कि वह महत्वपूर्ण है और विद्यालय नियमित आने पर उसका भला होने वाला है।
- बच्चों के मन पसन्द खेलों/गतिविधियों के आयोजन द्वारा।
- बच्चों के साथ किसी भी प्रकार के यथा– जाति, धर्म, ऊँच–नीच, अमीर–गरीब, आदि भेदभाव से रहित व्यवहार अपनाकर।

उपरोक्त के अलावा अन्य तरीकों/विधियो का प्रयोग कर नियमित उपस्थिति में अपेक्षित सुधार कर सकते हैं।

नियमित उपस्थिति के लिए विद्यालय के प्रयासों का अनुश्रवण

बच्चों की नियमित उपस्थिति के लिए क्या प्रयास हो रहे हैं इसका अनुश्रवण होना भी आवश्यक है। एक विद्यालय बच्चों की नियमित उपस्थिति हेतु कितना तत्पर है यह महत्वपूर्ण है। विद्यालयों द्वारा नियमित उपस्थिति को उच्च स्तर पर बनाये रखने के लिए उनका अभिलेखीकरण/दस्तावेजीकरण भी जरूरी है। यह इसलिए भी जरूरी है कि विद्यालय भ्रमण करने वाला अधिकारी यह जान सके कि यहाँ के प्रधानाध्यापक/शिक्षक/एस.एम.सी. का प्रयास कैसा है? विद्यालय द्वारा किये जा रहे प्रयास यदि आशातीत सफलता दिला रहे हैं तो इस प्रक्रिया/नवाचार को अन्य स्कूलों में भी कैसे लागू किया जाए?

यदि कोई पर्यवेक्षक विद्यालय में अनुश्रवण हेतु आते हैं तो उन्हें निम्नलिखित सूचनाएँ प्राप्त होनी चाहिए–

1. क्या बच्चों की अद्यतन उपस्थिति पंजिका है?
2. क्या माह/वर्षवार बच्चों की औसत उपस्थिति दर्ज है?
3. क्या प्रत्येक कक्षा में सर्वाधिक उपस्थिति वाले बच्चों की सूची है?
4. क्या लगातार अनुपस्थित रहने वाले बच्चों का ब्यौरा अभिलिखित है?
5. क्या शिक्षक द्वारा अनुपस्थिति का कारण पता लगाया गया है?
6. क्या शिक्षक/प्रधानाध्यापक द्वारा अभिभावक सम्पर्क की पिछली तारीख एवं विवरण अभिभावक सम्पर्क रजिस्टर पर दर्ज है एवं उसपर अभिभावक के हस्ताक्षर हैं अथवा नहीं।
7. एस.एम.सी/पी टी ए/एम टी ए सक्रिय है या नहीं? यदि सक्रिय है तो पिछली मीटिंग कब हुई एवं उसके मुख्य बिन्दु क्या रहे?
8. बच्चों की नियमित उपस्थित हेतु कितने नवाचार किए गए हैं और उनका अवलोकन।

9. क्या आनन्दमयी शिक्षण प्रक्रिया अपनायी जा रही है?
10. क्या बच्चों की नियिमत उपस्थिति से उनके अधिगम स्तर पर सकारात्मक परिणाम मिल रहे हैं?
11. अनियमित रहने वाले बच्चे यदि नियमित आना शुरू कर देते हैं तो क्या शिक्षक/प्रधानाध्यापक द्वारा उनके लिए अतिरिक्त समय देकर विशेष ध्यान दिया जा रहा है?
12. क्या कक्षा शिक्षण के दौरान पीछे छूट रहे बच्चों पर अतिरिक्त समय देकर ध्यान देने की प्रक्रिया अपनायी जा रही है?
13. क्या विद्यालय में नियमित रूप से रोचक गतिविधियों जैसे– खेल–कूद, नाटक, बाल सभा, कला/क्राफ्ट, योग, गीत संगीत नृत्य आदि का यथासमय आयोजन किया जा रहा है?
14. क्या किसी विशेष कारण जैसे– शादी विवाह, त्यौहार, स्थानीय घटनाएँ, संक्रामक रोग आदि से उपस्थिति अनियमित हो रही है, यदि हाँ तो उसकी सूचना है या नहीं?

- शिक्षक और छात्रों के बीच ऐसा निकट सम्बन्ध स्थापित हो जिससे छात्र अनुपस्थित न होकर पूरी बात बता कर छुट्टी लें।
- अध्यापक को यह ध्यान देना चाहिए कि प्रत्येक बच्चे को यह महसूस हो कि यह उसका अपना स्कूल है।
- कक्षा के सभी बच्चों के बारे में अध्यापक जानें कि कोई बच्चा किसी दूसरे बच्चे के भय से तो अनुपस्थित नहीं है।
- कुछ बच्चे विद्यालय की समस्त गतिविधियों में प्रतिभाग करते हैं जबकि कुछ बच्चों को शिक्षक गतिविधियों से दूर रखते हैं। गतिविधियों में समान रूप से प्रतिभाग करवाने से उपस्थिति बढती है।
- बच्चों के पास कॉपी/पुस्तक न होने से भी उपस्थिति प्रभावित होती है। शिक्षक बच्चे की कॉपी व अन्य पठन पाठन सहायक सामग्री को सार्वजनिक रूप से न जांचें।
- होमवर्क को सार्वजनिक रूप से जाँचने के भय से भी बच्चों की नियमित उपस्थिति घटती है।
- घर के कार्य– खाना बनाने आदि के कारण देर होने से बच्चे स्कूल नहीं आते हैं, अध्यापक को बच्चों की व्यक्तिगत समस्या का संज्ञान लेना चाहिए।
- सामान्यतः बच्चों के अभिभावक बच्चों को नानी के घर या शादी में लम्बे समय के लिए ले जाते हैं। शिक्षक को समझना होगा और अभिभावकों के सम्पर्क में रहना होगा कि परीक्षा कार्यक्रम या पढ़ाई के समय नानी के घर या शादी जैसे कार्यक्रमों का प्रभाव न पड़े।

- धार्मिक त्यौहारों के बाद या दौरान उपस्थिति के सम्बन्ध में अभिभावक विशेष ध्यान रखें।

सामान्यतः यह माना जाता है कि बच्चों की अनियमित उपस्थिति निर्धारित लर्निंग आउटकम को प्राप्त करने में बाधा का कार्य करती है। बच्चों की अनियमित उपस्थिति में सुधार के लिए प्रदेश के अनेक विद्यालयों के अध्यापकों ने प्रशंसनीय कार्य कर शत्–प्रतिशत उपस्थिति पायी है।

नियमित उपस्थिति –

- स्कूल खुलने से पूर्व मोबाइल फोन द्वारा अभिभावकों से बच्चों को स्कूल भेजने के लिए प्रयास करना।
- शादी–विवाह, तीज त्यौहारों के बाद उपस्थिति को बढ़ाने का प्रयास।
- अध्यापक बच्चों की रुचि के अनुरूप कक्षा शिक्षण करें।

आइये जानें ऐसे कुछ प्रयास – अध्यापकों ने एक सूचना पत्रक बच्चों के घरों में भेजकर सूचित किया और बच्चों की नियमित उपस्थिति होने लगी।

नियमित उपस्थिति हेतु नवाचार :

प्राथमिक विद्यालय विश्वनाथपुर ब्रह्मपुर, गोरखपुर के एक शिक्षक द्वारा विद्यालय में बच्चों की नियमित उपस्थिति हेतु एक नवाचार ''चिठ्ठी उनके घर'' किया जा रहा है। इसके अन्तर्गत विद्यालय से शिक्षक द्वारा एक चिठ्ठी लिखी जाती है। इस चिठ्ठी में स्कूल नियमित न आने वाले बच्चों की सूचना होती है। इसमें विशेष टोले/गाँव के उन सभी बच्चों की सूचना दी जाती है जो प्रायः अनुपस्थित रहते हैं। चिठ्ठी अनुपस्थित रहने वाले बच्चों के टोले/गाँव वाले उसी बच्चे को दी जाती है जो नियमित आता है। नियमित आने वाला बच्चा उस चिठ्ठी को अनुपस्थित रहने वाले अभिभावक को पढ़ कर सुनाता है। उस चिठ्ठी में यह लिखा होता है कि ''आपका बच्चा इतने दिन से लगातार अनुपस्थित चल रहा है जिससे उसकी पढ़ाई प्रभावित हो रही है। अतः आप अपने पाल्य को नियमित विद्यालय भेजकर उसके भविष्य का निर्माण करने में सहयोग करें।'' बच्चों के अभिभावक इस पत्र पर हस्ताक्षर करते हैं। बच्चा पत्र. पुनः विद्यालय में जमा करता है।

लाभ :–

- अभिभावक बच्चे को विद्यालय भेजने के लिए उत्सुक होते हैं।

- अभिभावक यह महसूस करते हैं कि जो बच्चा चिठ्ठी पढ़ रहा है वह नियमित जाने के कारण ही पढ़ने में सक्षम है।
- अभिभावक को अपने बच्चे के स्कूल न जानेकी स्थिति का पता चलता है।
- अभिभावक को यह भी पता चलता है कि शिक्षक उनके बच्चे के प्रति जागरूक है तो उनकी भी जिम्मेदारी बनती है कि बच्चे को नियमित स्कूल भेजा करें।

व्यावसायिक दक्षता का विकास

'कोई भी पूर्ण (परफेक्ट) नहीं होता' जब किसी क्षेत्र विशेष के संदर्भ में यह बात कही जाती है तो इसके पीछे कहीं न कही यह सिद्धान्त कार्य कर रहा होता है कि **'शिक्षा अनवरत चलने वाली प्रक्रिया है।'** यही कारण है कि अपने कार्य में स्वयं को बेहतर से बेहतरीन बनने की प्रक्रिया निरन्तरता के साथ चलती रहती है। इस प्रक्रिया में हम लगातार स्वयं को माँजते, तराशते रहते हैं। प्रधानाध्यापकों/शिक्षकों को भी स्वयं के व्यावसायिक विकास (Professional development) हेतु सदैव प्रयत्नशील रहना चाहिए।

स्वविकास के महत्त्व को समझने के लिए एक शिक्षक साथी के अनुभव को जानना महत्त्वपूर्ण होगा :

किसी प्रशिक्षण के दौरान एक शिक्षक साथी ने कहा कि 'मुझे शिक्षण करते चालीस वर्ष हो गए हैं और अब ऐसी कोई बात नहीं है जो मुझे सीखना शेष है।' प्रशिक्षक ने विनम्रता से कहा कि कोई बात नही सभी को आपसे बहुत कुछ सीखना है। इसलिए अपना रचनात्मक योगदान देते रहिए।

अगले दिन प्रशिक्षण स्थल के समीपवर्ती विद्यालय में सभी को प्रशिक्षण में बताए गये तरीको से कक्षा शिक्षण अभ्यास करना था। उपर्युक्त शिक्षक साथी को कक्षा–1 में चित्राधारित पाठ का शिक्षण करना था।कक्षा शिक्षण को कुछ ही मिनट हुए थे कि बच्चों ने उनको घेर लिया और शोर मचाने लगे। वे उनको बार–बार चुप कराने की कोशिश करते लेकिन बच्चे चुप होने को ही तैयार न थे।

ऐसी स्थिति में प्रशिक्षक (जोकि अवलोकनकर्ता की भूमिका में थे) मुख्य सुगमकर्ता स्वयं बच्चों के बीच में आए और बच्चों के साथ उनके परिवेश आधारित गतिविधि करानी प्रारम्भ कर दी। कुछ समय बाद एक छोटी सी कविता हाव–भाव के साथ कराई और जब बच्चे उनसे पूरी तरह जुड़ गए तो उन्होंने चित्र पर बच्चों से सहज व रोचक बातचीत प्रारंभ कर दी। बच्चे पूरी तल्लीनता और रुचि से बातचीत में हिस्सा लेने लगे।

सदन (प्रशिक्षण कक्ष) में पहुंचकर प्रशिक्षक से शिक्षक बोले–कल मैं गलत था कि मुझे कुछ नहीं सीखना शेष है। मुझे लगता है कि अभी बहुत कुछ सीखना बाकी है।

यह उदाहरण इस बात को समझने समझाने के लिए पर्याप्त है कि अपने काम को उत्कृष्ट बनाने के लिए हमें निरन्तर सीखते रहना होता है क्योंकि सीखना एक अनवरत प्रक्रिया है जो आजीवन चलती रहती है।

एक व्यक्ति के रूप में हमें अपनी खूबियाँ/खामियाँ भली प्रकार से ज्ञात होती है। स्व विकास की प्रक्रिया में यह जानना बहुत जरुरी है कि हमारे काम के हिसाब से हमें किन–किन चीजों की जानकारियाँ और हुनर हासिल हैं या कि हमारी खूबियाँ/ताकतें क्या–क्या है? तथा किस प्रकार की जानकारियाँ, अर्जित करना और कौशल विकसित करना जरूरी है ताकि हम अपने आपको और बेहतर बना सकें।

सूचीबद्ध करें–

मेरी ताकतें	मेरी कमजोरियाँ
1.	1.
2.	2.
3.	3.

तय करें–

अपनी ताकतों/खूबियों को और बढ़ाने के लिए मैं करूँगी/करूगाँ	अपनी कमजोरियों को दूर करने के लिए मैं करूँगी/करूँगा
1.	1.
2.	2.
3.	3.

छोटे–छोटे समयबद्ध लक्ष्य तय करें–स्वविकास की प्रक्रिया में यह आवश्यक है कि हम एक निश्चित समयावधि (टाइमलाइन) के साथ छोटे–छोटे लक्ष्य निर्धारित करें–

क्या हासिल करना (लक्ष्य)	कैसे हासिल करना (तरीके)	कब तक हासिल करना (समय)

जैसे–जैसे लक्ष्य प्राप्त करते रहें उसके स्थान पर नये लक्ष्य निर्धारण (गोल सेट) कर स्वयं को निरन्तर विकास के पथ पर अग्रसर करते चलें। स्वविकास की प्रक्रिया में निरन्तर स्वाध्याय, तकनीक से जुड़ाव, नवीनतम जानकारियों से परिचित रहना, अभिव्यक्ति कौशल को निखारते रहना जैसे कुछ सुपरिचित नुस्खे हैं जो आपको निरन्तर समृद्ध करेंगे और कार्यक्षेत्र के बीच लगातार लोकप्रिय बनाएँगे।

आंकड़ों का प्रबंधन

दैनिक जीवन में आप विभिन्न प्रकार की सूचनाओं को देखते व समझते हैं तथा उनका उपयोग भी करते हैं। टेलीविजन में समाचारों के माध्यम से आप यह सुनते हैं कि पिछले दिनों किस स्थान पर कितनी वर्षा हुई, किस स्थान का तापमान कितना रहा, आगामी एक सप्ताह का मौसम कैसा रह सकता है। उसी प्रकार आप यह भी पढ़ते व सुनते हैं कि फलाँ जिले में 12 बच्चे दसवीं की परीक्षा में राज्य स्तर पर प्रथम 50 बच्चों में आए, या फिर फलाँ विद्यालय के 4 बच्चों ने आई0आई0टी0 परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है।

उपरोक्त सारी जानकारियाँ हमें विभिन्न माध्यमों से प्राप्त होती हैं। इन जानकारियों के आध ाार पर कई लोग अपनी आगामी दिनों की या भविष्य की कार्ययोजना बनाते हैं।

आंकड़ें क्या हैं

कुछ जानकारियाँ संख्याओं के माध्यम से व्यक्त की जाती हैं। जानकारियों के संख्यात्मक वर्णन को 'आंकड़े' कहते हैं।

आंकड़े संख्याओं का एक संग्रह है जिसे कुछ लाभप्रद जानकारी के लिए प्राप्त किया जाता है।

सामान्य तौर पर दो प्रकार की जानकारियाँ एकत्र की जाती हैं– संख्यात्मक व गुणात्मक। संख्यात्मक जानकारियों को आंकड़े कहते हैं। वहीं कुछ जानकारियाँ संख्याओं में नहीं, बल्कि भाषा में ही एकत्र की जाती हैं।

आगे बढ़ने से पूर्व हम एक क्रिकेट मैच के कुछ आंकड़े देखते हैं। आप ध्यान से इन आंकड़ों को देखें।

बल्लेबाजों का प्रदर्शन		
बल्लेबाज	बनाए गए रन	खेली गई गेंदें
बल्लेबाज–1	13	45
बल्लेबाज–2	45	51
बल्लेबाज–3	73	60
बल्लेबाज–4	12	32
बल्लेबाज–5	34	23
बल्लेबाज–6	10	4

गेंदबाजों का प्रदर्शन			
गेंदबाज	ओवर	रन	विकेट
गेंदबाज–1	8	25	3
गेंदबाज–2	7	43	1
गेंदबाज–3	7	29	1
गेंदबाज–4	8	34	0
गेंदबाज–5	3	26	0

1. किसने सबसे ज्यादा रन बनाये?
2. किसने सबसे कम रन बनाये?
3. किसने प्रति बॉल सबसे ज्यादा रन बनाये?
4. इस मैच में सबसे प्रभावी बल्लेबाज कौन रहा?
5. इस मैच में सबसे प्रभावी बॉलर कौन रहा?
6. कोच कौन से गेंदबाज पर सबसे अधिक ध्यान देगा?

स्कोर के आधार पर क्या आप बता सकते हैं कि बल्लेबाजी टीम के कोच का आगामी एक्शन प्लान (कार्ययोजना) क्या होगा?

आंकड़ों का महत्त्व व उपयोग

महत्त्वपूर्ण निर्णय लेने के लिए आंकड़ों की आवश्यकता पड़ती है। इसलिए सही व प्रामाणिक आंकड़ों को संकलित करना बहुत आवश्यक है।

जिस प्रकार मौसम संबंधी जानकारियों व आंकड़ों के आधार पर किसान अपने फसलों के बारे में महत्त्वपूर्ण निर्णय लेते हैं तथा विमानन प्राधिकरण विमानों के उड़ानों के बारे में निर्णय लेते हैं, उसी प्रकार आप अपनी आगामी कार्ययोजना बना सकते हैं जो आपके विद्यालय को बेहतर प्रदर्शन करने में सहायक होगे।

इसको बेहतर ढंग से समझने के लिए नीचे दिए गए कुछ शैक्षिक आंकड़ों को देखते हैं। ये आंकड़े सारणी के रूप में दिए गए हैं। आपको प्रत्येक सारणी में दिए गए आंकड़ों का विश्लेषण कर अपने विद्यालय के संदर्भ में कार्ययोजना बनानी है।

सारणी–1 : आकलन/परीक्षा परिणाम संबंधी आंकड़ें

एक उ0प्रा0 विद्यालय की कक्षा 6 के आंकड़ें: **नामांकन– 96**

विषय	परीक्षा में सम्मिलित बच्चों की संख्या	बच्चों की संख्या			
		50 प्रतिशत से कम प्राप्तांक	51–70 प्रतिशत प्राप्तांक	71–90 प्रतिशत प्राप्तांक	91–100 प्रतिशत प्राप्तांक
हिन्दी	83	28	34	19	2
गणित	83	48	17	13	5
अंग्रेजी	78	59	15	4	0
विज्ञान	83	53	18	12	0
सामाजिक अध्ययन	83	23	41	19	0

सारणी–2 : कक्षा में बच्चों के प्रदर्शन/व्यवहार संबंधी आंकड़ें

एक उ0प्रा0 विद्यालय की कक्षा 6 के आंकड़ें: **नामांकन– 96, उपस्थिति– 62**

क्र0सं0	प्रदर्शन के सूचक	बालकों की संख्या	बालिका की संख्या
1.	कक्षा की गतिविधियों में सक्रिय प्रतिभाग लेना	8	5
2.	शिक्षकों से अपनी शंकाओं या प्रश्नों को पूछना	4	3
3.	कक्षा में अपनी बात बेझिझक कहना	4	3
4.	समूह कार्य में सक्रिय प्रतिभाग करना, समूह के अन्य साथियों से बात करना व मदद करना	14	9
5.	शिक्षक द्वारा पूछे गए प्रश्नों का उत्तर देना	8	5
6.	खेल–कूद गतिविधियों में प्रतिभाग करना	24	14

सारणी–3 : शिक्षक के प्रदर्शन संबंधी आंकड़ें

विद्यालय में शिक्षकों की संख्या: 5

क्र0सं0	प्रदर्शन के सूचक	शिक्षकों की संख्या
1.	पूर्व में निर्धारित प्रारूप में शिक्षण योजना बनाना व उसके अनुसार शिक्षण कार्य करना	0
2.	शिक्षण कार्य में आवश्यकतानुसार संसाधनों/टी0एल0एम0 की उपलब्धता सुनिश्चित करना व उसका उपयोग करना	1
3.	परिवेशीय ज्ञान, संदर्भ व संसाधनों का शिक्षण में उपयोग करना	1
4.	कक्षा में सभी बच्चों को प्रश्न पूछने व गतिविधि में प्रतिभाग करने को प्रोत्साहित करना	2
5.	बच्चों द्वारा पूछे गए प्रश्नों का उत्तर देना	2
6.	बच्चों की कॉपियों क ो जाँचना, गलतियों में सुधार करना व बच्चों के साथ उनपर चर्चा कर प्रतिपुष्टि देना	1
7.	बच्चों के साथ गतिविधियों में स्वयं शामिल होना	1

ध्यान रखने वाली बातें

- आप एक अच्छे विद्यालय व अच्छी कक्षा के सूचकों को अवश्य ध्यान में रखें तथा उनसे अपने विद्यालय की वर्तमान स्थिति की हमेशा तुलना करते रहे।
- उन सूचकों पर आवश्यक आंकड़ों को अपनी डायरी या निर्धारित प्रारूप पर अवश्य दर्ज करें।
- संकलित आंकड़ों के आधार पर ही आप अपने विद्यालय संबंधी कार्ययोजना को प्रभावी रूप से बना सकते हैं।

गुणात्मक सूचनाएँ

कुछ सूचनाएँ आंकड़ों में नहीं, बल्कि शब्दों में ही लिखी जाती हैं, जैसे किसी विद्यार्थी,, शिक्षक, एस0एम0सी0 आदि के बेहतर प्रयास को अभिलिखित करना।

यहाँ यह समझना आवश्यक है कि क्या इस प्रकार बेहतर शैक्षणिक प्रयासों का अभिलेखीकरण करना आवश्यक है?

निश्चित रूप से ऐसे प्रयासों को अभिलिखित किया जाना आवश्यक है ताकि

- ऐसे बेहतर प्रयासों का एक संकलन तैयार किया जा सके व इनका प्रचार–प्रसार किया जा सके।
- अच्छे कार्यों को करने वाले को प्रोत्साहन मिले।
- अन्य विद्यार्थी, शिक्षक, एस0एम0सी0 आदि को बेहतर कार्य करने के लिए प्रोत्साहन मिले।

यहाँ यह भी ध्यान रखने की बात है कि ऐसे प्रयासों के प्रचार–प्रसार के लिए पारंपरिक तरीके जैसे मैगजीन या समाचार पत्रों में छपाने के साथ–साथ उपलब्ध तकनीकी पोर्टलों को भी प्रयोग किया जाना चाहिए। वास्तव में आज के तकनीकी युग में इन तकनीकी पोर्टलों का उपयोग कई संस्थाओं तथा व्यक्तियों द्वारा अत्यंत कुशलता के साथ किया जा रहा है।

सामुदायिक सहभागिता

सामुदायिक सहयोग हेतु कार्य–योजना निर्माण

विद्यालय प्रबंध समिति (SMC) के सदस्य विद्यालय और समुदाय के बीच प्रमुख सेतु की भूमिका निभा सकते हैं। इसके लिए व्यक्तिगत स्तर पर प्रत्येक विद्यालय को एस0एम0सी0 के सहयोग से सामुदायिक सहयोग की कार्य योजना विकसित करनी होगी। कार्य योजना के संभावित क्षेत्र निम्नवत हो सकते हैं–

(अ) **भौतिक संसाधन**––चहारदिवारी, पंखा, फर्नीचर, स्टेशनरी, पेयजल, स्मार्ट बोर्ड, शैक्षिक तकनीकी से संबंधित उपकरण आदि।

(ब) **मानवीय संसाधन**–सामुदायिक संसाधनों का कक्षा–कक्षीय एवं अन्य सहशैक्षिक क्रियाकलापों में उपयोग।

उक्त बिन्दुओं के परिप्रेक्ष्य में हमें अपनी संस्था उपलब्ध भौतिक/मानवीय संसाधनों की उपलब्धता की समीक्षा करने के बाद विद्यालय की आवश्यकताओं का चिह्नांकन करना होगा। तदुपरान्त उन आवश्यकताओं का वर्गीकरण करते हुए सामुदायिक सहभागिता के प्रकार को स्पष्ट रूप से रेखांकित करते हुए समुदाय से संपर्क स्थापित करना होगा। इस प्रकार आवश्यकताओं के अनुसार संदर्भों/स्रोतों की मदद लेते हुए कार्य योजना विकसित कर हम अपने कार्य को और बेहतर बना सकते हैं तथा समुदाय से बेहतर जुड़ाव स्थापित कर सकते हैं।

सामुदायिक सहयोग की कार्य योजना

क्रम	आवश्यकता बिन्दु		सामुदायिक सहयोग का प्रकार व अवधि			
	भौतिक	मानवीय	भौतिक	अवधि	मानवीय	अवधि

इस कार्य योजना का सुनियोजित क्रियान्वयन न केवल आपके विद्यालय को आदर्श बनाने में मदद करेगा बल्कि आपको अपने कार्य क्षेत्र में लोकप्रिय भी बनाएगा।

सामुदायिक सहभागिता की गतिविधियाँ

- अध्यापकों द्वारा अभिभावकों से बैठक में प्रतिभाग करने हेतु व्यक्तिगत तौर पर संपर्क किया जाय।

- समस्त अध्यापकों द्वारा विद्यालय प्रबन्धन समिति की मासिक बैठक में प्रतिभाग किया जाय।
- लेखपाल, ए.एन.एम. और ग्राम पंचायत के प्रतिनिधि से संपर्क कर एस0एम0सी0 की बैठक में प्रतिभाग करने हेतु अनुरोध किया जाय।
- बैठक में छात्र–छात्राओं की उपस्थिति पर चर्चा की जाय। यदि छात्र–छात्राओं की उपस्थिति 60 प्रतिशत से कम है तो अभिभावकों के साथ विचार–विमर्श किया जाय कि बच्चों की उपस्थिति को कैसे बढ़ाया जाय।
- एस.एम.सी. की मासिक बैठक में विद्यालय न आने वाले बच्चों का विवरण तैयार कर उनके परिवारों से सम्पर्क करके यथा सम्भव सहायता प्रदान कर उन्हें अपने बच्चों को विद्यालय भेजने के लिए प्रेरित किया जाये।
- बैठक में अभिभावकों के साथ निःशुल्क पाठ्य–पुस्तकों, यूनिफॉर्म, जूता–मोजा, स्कूल बैग एवं स्वेटर वितरण पर चर्चा एवं छात्र–छात्राओं को प्रत्येक दिन यूनिफॉर्म में आने के लिये प्रेरित किया जाये।
- एम.डी.एम. योजना के अन्तर्गत मीनू के अनुसार नियमित रूप से भोजन वितरण एवं व्यवस्था में सहयोग लिया जाय।
- विद्यालय भवन के रख–रखाव एवम् साफ सफाई की व्यवस्था पर चर्चा की जाए।
- स्थानीय स्तर पर उपलब्ध कारीगरों, संगीत, कहानी सुनाने में निपुण अभिभावकों को विद्यालय में आमंत्रित कर बच्चों को जानकारी दी जाए।
- एस0एम0सी0 की बैठक में लिये गये निर्णयों व कार्यवृत्ति के अभिलेखीकरण को एस0एम0सी0 बैठक रजिस्टर में दर्ज करते हुए **प्रेरणा ऐप** (PRERNA App) पर अपलोड किया जाए।
- विद्यालय प्रबन्धन समिति (एस0एम0सी0) के सदस्यों द्वारा बैठकों में लिये गये उनके निर्णयों को समुदाय में सार्वजनिक किया जाय जिससे समुदाय के लोग भी विद्यालय के प्रति संवेदनशील व अपने सभी बच्चों के शत–प्रतिशत नामांकन, उपस्थिति, ठहराव एवं गुणवत्तायुक्त शिक्षा में एक जिम्मेदार नागरिक होने के नाते सहयोग प्रदान करें।
- एस0एम0सी0 के कार्यों एवं उनके उत्तरदायित्वों के बोध एवं सभी समुदाय के लोगों को जागरूक करने के लिए जनपहल रेडियो कार्यक्रम की शुरुआत की गयी है। यह कार्यक्रम समुदाय को इस बात के लिए प्रेरित करता है कि एस0एम0सी0 के सदस्य एवं अभिभावक कैसे अपने कार्यों और उत्तरदायित्वों का निर्वहन करेंगे।

प्रत्येक एस0एम0सी0 के सदस्य को "जन पहल हस्त पुस्तिका" उपलब्ध करायी गयी है, जिसमें बाल अधिकार, शिक्षा का अधिकार अधिनियम, विद्यालय प्रबन्धन समिति की संरचना एवं गठन, विद्यालय विकास योजना, विद्यालय प्रबन्ध समिति एवं स्थानीय प्राधिकारी के सदस्यों के कर्तव्यों और उत्तरदायित्वों, को स्पष्ट किया गया है। इसमें बच्चों की शिक्षा एवं विद्यालय के संचालन एवं प्रबंधन में विद्यालय प्रबन्ध समितियों द्वारा मासिक बैठक, एस0एम0सी0 बैठक रजिस्टर, दिव्यांग बच्चे, हाउस होल्ड सर्वे, विशेष प्रशिक्षण, गुणवत्ता शिक्षा एवं बालिका शिक्षा के अन्तर्गत किये जा रहे कार्यक्रमों, यथा कायाकल्प/स्वच्छ भारत अभियान, जन पहल रेडियो कार्यक्रम, मध्याह्न भोजन योजना एवं स्कूल में बच्चों की सुरक्षा हेतु गाईडलाइन की जानकारी, के साथ सामान्य अभिलेखों, वित्तीय अभिलेखों का रखरखाव, एस0एम0सी0 का ग्राम शिक्षा समिति/स्थानीय प्राधिकारी एवं अन्य विभागों से समन्वय के बारे में जानकारी दी गयी है।

समावेशी शिक्षा

कक्षा में बच्चों के साथ कार्य करते हुए आपने अनुभव किया होगा कि हर बच्चा स्वयं में कोई न कोई विशिष्टता एवं विविधता लिए होता है। उनके रुचि और रुझानों में भी यह विविधता पाई जाती है। यह विविधता काफी हद तक उनके परिवेश एवं परिस्थितियों के कारण या शारीरिक आकार प्रकार से प्रभावित होती है। बच्चों में इस विविधता के कारण कुछ खास श्रेणियाँ उभरकर आती हैं जैसे– तेज/धीमी गति से सीखने वाले, शारीरिक कारणों से सीखने में बाधा अनुभव करने वाले बच्चे, परिवेशीय व लैंगिक विविधता वाले बच्चे। इनमें कुछ और श्रेणियाँ भी जुड़ सकती हैं। शिक्षक के रूप में इतनी विविधता से भरे बच्चों को हमें कक्षा के भीतर सीखने का समावेशी वातावरण देना होता है।

समावेशी शिक्षा अर्थात् ऐसी शिक्षा जो सबके लिए हो। विद्यालय में विविधताओं से भरे सभी प्रकार के बच्चों को एक साथ एक कक्षा में शिक्षा देना ही समावेशी शिक्षा है।

समावेशी शिक्षा से तात्पर्य है वह शिक्षा जिसमें किसी एक विशेष व्यक्ति श्रेणी पर निर्भर न होकर सभी को शामिल किया जाता है।

समावेशी शिक्षा की विशेषताएं

- यह विद्यालय में नामांकित सभी बच्चों के लिए है।
- बच्चों के शारीरिक मानसिक एवं बौद्धिक स्तर का खासतौर से ध्यान रखा जाता है।
- ऐसी शिक्षण विधियों का प्रयोग किया जाता है जिनमें सभी बच्चे अपने स्तर और क्षमता के अनुसार शामिल होते हैं।
- बच्चों में आत्मविश्वास की भावना का विकास होता है।

- समावेशी, शिक्षा, कमजोर, प्रतिभाशाली, अमीर–गरीब, ऊँच–नीच तथा दिव्यांगता में कोई भेद–भाव नहीं करती।
- सभी बच्चों को सम्मान और अपनेपन की संस्कृति के साथ व्यक्तिगत मतभेदों को स्वीकार करने के लिए भी अवसर प्रदान करती है।

समावेशी शिक्षा **"एकीकरण के सिद्धान्त"** पर आधारित है। इसमें दिव्याँग बच्चों को भी सामान्य बच्चों की तरह ही शैक्षिक गतिविधियों में भाग लेने का अधिकार है। शिक्षकों को अपनी कक्षा में सहयोग की भावना के विकास हेतु निम्नलिखित तरीकों का उपयोग करना चाहिए जिससे समावेशी माहौल का सृजन हो सके––

- खेलों का आयोजन
- समस्या समाधान की प्रक्रिया में सभी बच्चों को शामिल करना।
- किताबों व गीतों का आदान–प्रदान।
- बच्चों का दल (Team) बनाना।

"समावेशन शब्द का अपने–आप में कुछ खास अर्थ नहीं होता है। समावेशन के चारों ओर जो वैचारिक, दार्शनिक, सामाजिक और शैक्षिक ढाँचा होता है वही समावेशन को परिभाषित करता है। समावेशन की प्रक्रिया में बच्चे को न केवल लोकतंत्र की भागीदारी के लिए सक्षम बनाया जा सकता है बल्कि लोकतंत्र को बनाये रखने के लिए दूसरों के साथ रिश्ते बनाना, अन्तर्क्रिया करना भी समान रूप से महत्वपूर्ण है।"

(एन0सी0एफ0 2005, पृ0सं0 96)

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि समावेशी शिक्षा कक्षा में विविधताओं को स्वीकार करने की एक मनोवृत्ति है जिसके अन्तर्गत विविध क्षमताओं वाले बच्चे सामान्य शिक्षा प्रणाली में एक साथ सीखते हैं। जिस प्रकार हमारा संविधान किसी भी आधार पर किये जाने वाले भेदभाव का निषेध करता है, उसी प्रकार समावेशी शिक्षा बच्चों को विभिन्न ज्ञानेन्द्रिय, शारीरिक, बौद्धिक, सामाजिक, आर्थिक आदि कारणों से उत्पन्न किसी भी प्रकार की विविधता के बावजूद स्वतंत्र अधिगमकर्ता के रूप में देखती है। समावेशी शिक्षा समाज के सभी बच्चों को शिक्षा की मुख्य धारा से जोड़ने का समर्थन करती है।

समावेशी शिक्षा व्यवस्था के अन्तर्गत शिक्षकों की जिम्मेदारी और भी बढ़ जाती है क्योंकि इसमें शिक्षक केवल अपने शिक्षण कार्य को ही नहीं करते हैं बल्कि बच्चों को कक्षा में उचित ढंग से समायोजन करते हुए और उनके लिए विविधतापूर्ण गतिविधियों का निर्माण भी करते हैं। संक्षेप में यह

कहा जा सकता है कि समावेशन की नीति को प्रत्येक विद्यालय और सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था में लागू किये जाने की जरूरत है।

रिपोर्टिंग/डाक्युमेन्टेशन

विद्यालय स्तर पर वर्ष भर शैक्षिक/सह शैक्षिक कार्यक्रमों का आयोजन होता रहता है। इन आयोजनों की आख्याओं के क्रमवार संकलन को दस्तावेजीकरण कहा जाता है। कार्यक्रमों के दस्तावेजीकरण में निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना अत्यंत आवश्यक है–

- क्यों किया गया अर्थात इसके आयोजन का उद्देश्य क्या था?
- कार्यक्रम में क्या–क्या हुआ?
- कार्यक्रम की प्रमुख बातें क्या थीं?
- कब किया गया?
- किस क्रम में किया गया?
- कैसे हुआ अर्थात कौन सी प्रक्रिया अपनाई गई?
- भविष्य में बेहतर आयोजन के लिए किस प्रकार की कार्ययोजना बनानी होगी?

रिपोटिंग– उपयुक्त रिपोंटिंग किसी भी कार्यक्रम के आयोजन का बहुत ही महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह न केवल विभागीय सूचना मात्र होती है बल्कि हमारे द्वारा किए गए क्रियाकलापों का क्रमबद्व एवं वैध दस्तावेज होती है जो किसी भी स्तर पर किए गए कार्य की स्पष्ट झलक और महत्वपूर्ण निष्कर्षों को पाठक तक पहुचाती है।

रिपोंटिंग के सम्बंध में ध्यान देने हेतु मुख्य बिन्दु इस प्रकार हैं–

- कार्यक्रम के उद्देश्य व निष्कर्ष को स्पष्ट रूप से रेखाँकित किया जाए।
- भाषा सरल, सहज व सुस्पष्ट हो।
- कम से कम शब्दों में पूरे कार्यक्रम की रूपरेखा स्पष्ट करता हो।
- प्रमुख बिन्दुओं तथा उल्लेखनीय प्रसंगों को प्रमुखता से उभारा जाए।
- अनावश्यक प्रसंगों का उल्लेख करने से बचा जाए।
- रिपोर्ट में वैध प्रमाणों जैसे फोटो/वीडियो/समाचार पत्रों की कटिंग को भी आवश्यक स्थान दिया जाए।

भाग – 6

परिशिष्ट

- प्रमुख शिक्षण अधिगम परिणाम
- शिक्षण योजनाएं
- शैक्षिक गतिविधियाँ
- समय सारिणी
- सफलतामूलक कहानियाँ (केस स्टडीज)
- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 –संक्षिप्त परिचय
- निःशुल्क और अनिवार्य बाल शिक्षा अधिकार अधिनियम 2009–संक्षिप्त परिचय
- उपयोगी शैक्षिक वेबसाइट
- प्रार्थनाएँ, समूहगान संग्रह एवं प्रातःकालीन/सांध्यकालीन सत्र की रूपरेखा
- प्रमुख महापुरुषों एवं दिवसों की जानकारी
- शिक्षा संबंधी साहित्य की सूची
- बेसिक शिक्षा विभाग की प्रशासनिक व्यवस्था
- अन्य विभागों से सहयोग एवं समन्वयन
- उपयोगी शब्दावलियाँ
- महत्वपूर्ण सम्पर्क सूत्र

विषय– भाषा (हिन्दी)

कक्षा–1

क्र.सं.	प्रमुख शिक्षण अधिगम परिणाम
1.	बच्चे कक्षा में उपलब्ध चित्र/फ्लैश कार्ड/पोस्टर्स/चार्ट को देखकर बातचीत करते हैं।
2.	बच्चे परिवेशीय ध्वनियों जैसे जंतुओं या पक्षियों की बोलियाँ, वाहन, घण्टी आदि को पहचानते हैं एवं उनमें अन्तर कर सकते हैं।
3.	बच्चे परिवेशीय भाषा के सामान्य शब्दों को पहचानते व समझते हैं।
4.	बच्चे प्रथम एवं अंतिम ध्वनि वाले शब्दों को पहचानते हैं। (जैसे– पग, पर, पल) (जग, पग/हल, चल) आदि।
6.	बच्चे वर्णों एवं अमात्रिक शब्दों को उनकी सही बनावट में लिखते हैं।
	कक्षा – 2
1.	बच्चे दो या तीन अक्षरों के मात्रिक शब्द पढ़ते हैं। जैसे–केला, पानी, आम, किताब, गिलास, चटाई, जहाज आदि।
2.	बच्चे दो या तीन अक्षरों के मात्रिक शब्द लिखते हैं।
3.	बच्चे समान लय व तुक वाले शब्दों को सुनकर अन्य शब्द बनाते हैं। जैसे– रेल–खेल, चटाई–खटाई, कुआँ–धुआँ आदि।
4.	बच्चे सामान्य शब्दों के विलोम व समानार्थी शब्द बताते हैं। **विलोम शब्द**– दिन–रात, छोटा–बड़ा, आदमी–औरत **समानार्थी शब्द**–पानी– जल, नीर, सूरज– रवि, भानु
5.	बच्चे कविता व कहानी को पढ़कर उनमें आए शब्दों से रिक्त स्थान की पूर्ति करते हैं एवं प्रश्नों के उत्तर देते हैं।
	कक्षा – 3
1.	बच्चे चार या अधिक अक्षरों के अमात्रिक व मात्रिक शब्द पढ़ते हैं। जैसे–खटमल, नटखट, परिवार, होनहार, परिवेश, पगडंडी आदि।
2.	बच्चे चार या अधिक अक्षरों के अमात्रिक व मात्रिक शब्द लिखते हैं।
3.	बच्चे पठित कविता/कहानी को समझ कर हाव–भाव से सुनाते हैं एवं सुनकर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं।

क्र.सं.	प्रमुख शिक्षण अधिगम परिणाम
4.	बच्चे बोलचाल एवं उच्चारण में अनुस्वार/अनुनासिक एवं लिंग–वचन आदि के नियमों का पालन करते हैं।
5.	बच्चे विभिन्न त्योहार, वेशभूषा, रहन, सहन, पर्यावरण संरक्षण, पौराणिक प्रसंग आदि को समझते हैं और उनके बारे में बता पाते हैं।
6.	बच्चे लेखन में विराम चिह्नों जैसे पूर्ण विराम, अल्प विराम आदि का सही प्रयोग करते हैं।
7.	बच्चे पाठ्यपुस्तक में दिए गए पाठों को देखकर स्वतंत्र रूप से लेखन व अभ्यास कार्य करते हैं।
	कक्षा – 4
1.	बच्चे उपलब्ध पठन–सामग्री (बाल–साहित्य, समाचार–पत्र, होर्डिंग्स आदि) को समझ के साथ पढ़ते हैं। उनमें प्रयुक्त शब्दावली का प्रयोग करते हैं।
2.	बच्चे चित्रात्मक मुहावरों को समझते हैं।
3.	बच्चे संज्ञा व सर्वनाम को चिह्नित/वर्गीकृत करते हैं।
4.	बच्चे क्रिया व विशेषण को चिह्नित/वर्गीकृत करते हैं।
5.	बच्चे उपसर्ग तथा प्रत्यय को चिह्नित/वर्गीकृत करते हैं।
6.	बच्चे अपनी भावनाओं तथा विचारों को मौखिक रूप से भाव–भंगिमाओं के साथ व्यक्त करते हैं।
7.	चित्रों को देखकर कहानी लिखते हैं। अधूरी कहानी को पूर्ण करते हैं।
	कक्षा – 5
1.	बच्चे गद्य, पद्य में निहित भावों को समझकर अपनी भाषा में व्यक्त करते हैं।
2.	बच्चे अपने स्तर के अनुसार सामाजिक, स्थानीय एवं अन्य मुद्दों पर विचार व्यक्त करते हैं। (बाढ़, भूकम्प, सूखा, पर्यावरण प्रदूषण, जीव–जन्तु आदि)
3.	बच्चे मौन–वाचन करते हैं और पाठ्य सामग्री के मुख्य बिन्दुओं पर चर्चा करते हैं।
4.	बच्चे व्याकरण की इकाईयों जैसे कारक–चिह्न, क्रिया, काल, विलोम, पर्यायवाची शब्दों की पहचान कर लेते हैं तथा उनका लेखन व दैनिक जीवन में प्रयोग करते हैं।
5.	बच्चे पत्र व निबन्ध लेखन करते हैं।

क्र.सं.	प्रमुख शिक्षण अधिगम परिणाम
	कक्षा – 6
1.	बच्चे परिवेशीय लोक कथाओं, लोकगीतों, लोकोक्तियों को बताते, सुनाते व उन पर चर्चा करते हैं तथा उनमें निहित मुख्य बातों को बता पाते हैं।
2.	बच्चे पाठ्य–वस्तु को सूक्ष्मता से पढ़कर विशेष बिन्दु खोजते हैं व निष्कर्ष निकालते हैं।
3.	बच्चे भाषा की विविध रचनाओं को उचित गति, उतार–चढ़ाव, भाव व विराम–चिह्नों का प्रयोग करते हुए पढ़ते व सुनाते हैं।
4.	बच्चे पर्यावरण, सामाजिक मुद्दे, राष्ट्र चेतना आदि विषयों पर अपने विचारों को क्रमबद्ध रूप से प्रस्तुत करते व लिखते हैं।
5.	बच्चे वाक्य–संरचना में उचित शब्दों व मुहावरों आदि का प्रयोग करते हैं।
	कक्षा – 7
1.	बच्चे गद्य एवं पद्य की विधाओं / विशेषताओं के अन्तर को समझते हैं और बताते हैं।
2.	विशिष्ट शब्दों, मुहावरों, लोकोक्तियों का प्रयोग लेखन एवं बोल–चाल में करते हैं।
3.	बच्चे सरल, मिश्रित व संयुक्त वाक्य में अन्तर करते हैं। वाक्य रचना में शुद्ध वर्तनी व सही व्याकरण चिह्नों का प्रयोग करते हैं।
4.	बच्चे अपठित गद्यॉंश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों का उत्तर देते हैं तथा उनका शीर्षक बना लेते हैं।
	कक्षा – 8
1.	बच्चे समसामयिक मुद्दों जैसे–जाति, धर्म, लिंग, अंधविश्वास रूढ़ियों आदि पर बात करते हैं एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण के आधार पर अपना मत खुलकर रखते हैं।
2.	बच्चे संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, विशेषण, अव्यय, तत्सम, तद्भव, देशज, विदेशी शब्द, समास, रस, अलंकार आदि का लेखन में सही प्रयोग करते हैं, व पाठ्य सामग्री से उसे छाँट पाते हैं।
3.	बच्चे किसी कार्यक्रम जैसे– बाल–सभा, राष्ट्रीय पर्व आदि की रिपोर्ट / समाचार, नोटिस आदि बना लेते हैं।

विषय– गणित

कक्षा–1

क्र.सं.	प्रमुख शिक्षण अधिगम परिणाम
1.	बच्चे 1 से 99 तक की संख्याओं को पहचानते, बोलते और लिखते हैं।
2.	बच्चे छूटी हुई संख्याओं को भर लेते हैं। बच्चे बिना हासिल वाली दो अंकों की संख्याओं को जोड़ लेते हैं।
3.	बच्चे शून्य की अवधारणा को समझ व बता सकते हैं।
4.	बच्चे 1 से 9 तक की संख्याओं का प्रयोग करते हुए घटाने की क्रिया कर लेते हैं।
5.	बच्चे विभिन्न आकृतियों को बनाते हैं व जानते हैं।
	कक्षा–2
1.	बच्चे तीन अंकों की संख्या पढ़ व लिख लेते हैं।
2.	संख्याओं का स्थानीय मान बताते हैं तथा संख्याओं को घटते व बढ़ते क्रम के अनुसार व्यवस्थित कर लेते हैं।
3.	बच्चे तीन अंकों की संख्याओं को स्तंभ विधि से जोड़ते व घटाते हैं।
4.	बच्चे 2 से 9 तक के पहाड़ों का निर्माण करते हैं।
5.	बच्चे जोड़ एवं गुणा में सह–सम्बन्ध स्थापित कर पाते हैं।
6.	बच्चे एक अंक की संख्या से दूसरी एक अंक की संख्या में भाग करते हैं।
	कक्षा–3
1.	बच्चे चार अंकीय संख्या (9999) बनाना, पढ़ना, व लिखना जानते हैं।
2.	बच्चे गुणा व भाग की संक्रिया कर लेते हैं।
3.	बच्चे समान हर वाली भिन्नों का जोड़ व घटाना जानते हैं।
4.	बच्चे मानक इकाईयों (मीटर/किलोग्राम/सेकेण्ड) व (से.मी./ग्राम/सेकेण्ड) पद्धति का उपयोग करते हैं।
5.	बच्चे विभिन्न आकृतियों का परिमाप निकालना जानते हैं।

क्र.सं.	प्रमुख शिक्षण अधिगम परिणाम
	कक्षा–4
1.	बच्चे छः अंक की संख्याओं का प्रयोग करते हैं। उन्हें आरोही/अवरोही क्रम में लिख लेते हैं।
2.	बच्चे जोड़–घटाना, गुणा, भाग पर इबारती प्रश्नों को हल करते हैं।
3.	बच्चे ल0स0, म0स0 ज्ञात कर लेते हैं।
4.	बच्चे दशमलव की अवधारणा समझते हैं, एवं दैनिक जीवन में दशमलव आधारित संख्याओं का योग कर लेते हैं।
5.	बच्चे त्रिभुज, आयत, चतुर्भुज एवं वृत्त की आकृति का परिमाप ज्ञात कर लेते हैं।
	कक्षा–5
1.	बच्चे भिन्नों के जोड़, घटाना, गुणा एवं भाग के नियम जानते हैं और उस पर आधारित प्रश्नों को हल करते हैं।
2.	बच्चे दशमलव संख्या को प्रतिशत में और प्रतिशत को दशमलव में बदल लेते हैं।
3.	बच्चे लाभ–हानि के प्रश्नों को हल कर लेते हैं।
4.	बच्चे साधारण ब्याज व ऐकिक नियम से सम्बन्धित प्रश्न हल करते हैं।
5.	बच्चे त्रिभुज के कोण व वृत्त की त्रिज्या, परिधि, व्यास व क्षेत्रफल ज्ञात करने के सूत्र लिख लेते हैं।
	कक्षा–6
1.	बच्चे प्राकृतिक संख्या और पूर्ण संख्याओं में अंतर स्पष्ट कर लेते हैं।
2.	बच्चे BODMAS सूत्र का प्रयोग कर लेते हैं।
3.	बच्चे सजातीय एवं विजातीय पद तथा एक पद, दो पद और त्रिपदीय व्यंजकों का जोड़ घटाव कर लेते हैं।
4.	बच्चे रेखा, रेखा खण्ड एवं किरण का अंतर स्पष्ट कर लेते हैं।
5.	बच्चे रेखीय समीकरण की अवधारणा को समझ कर दायें एवं बायें पक्ष के मानों से प्रश्नों को हल कर लेते हैं।

क्र.सं.	प्रमुख शिक्षण अधिगम परिणाम
6.	बच्चे अनुपात और समानुपात का विभिन्न राशियों की तुलना कर प्रयोग कर लेते हैं।
7.	बच्चे परिवेश से त्रिआयामी (3D) वस्तुओं जैसे– घन, घनाभ, प्रिज़्म, पिरामिड आदि को बता लेते हैं।
	कक्षा–7
1.	बच्चे आधार और घातांक में अंतर करते हुए बडी संख्याओं को घातांक के रूप में व्यक्त करते हैं।
2.	बच्चे साधारण आँकड़ों की केन्द्रीय प्रवृत्ति की मापें– सामान्तर माध्य की गणना कर लेते हैं।
3.	बच्चे समकोण त्रिभुज बनाकर पाइथागोरस प्रमेय का सत्यापन कर लेते हैं।
4.	बच्चे आयकर एवं जी.एस.टी. के विषय में सामान्य जानकारी बता लेते हैं।
5	बच्चे बहुपदीय व्यंजकों का गुणनखण्ड कर लेते हैं।
6	बच्चे त्रिभुज तथा चतुर्भुज द्वारा घिरे क्षेत्र के क्षेत्रफल की गणना कर लेते हैं।
7	बच्चे घन व घनाभ के सम्पूर्ण पृष्ठ की गणना कर लेते हैं।
	कक्षा–8
1.	बच्चे संख्याओं का वर्ग, वर्गमूल, घन व घनमूल ज्ञात कर लेते हैं।
2.	बच्चे बीजीय व्यंजकों का गुणनखण्ड एवं भाग सरलता से कर लेते हैं।
3.	बच्चे वर्ग समीकरण बना लेते हैं।
4	बच्चे चक्रवृद्धि ब्याज की गणना सूत्र के आधार पर कर लेते हैं।
5	बच्चे वृत्त तथा चतुर्भुजों के अध्ययन के लिए पटरी व परकार (कम्पास) का प्रयोग कर लेते हैं।
6	बच्चे ग्राफ को पढ़कर निष्कर्ष निकाल लेते हैं।
7	समलम्ब चतुर्भुज, वृत्त, बेलनाकार वस्तुएँ तथा शंकु का क्षेत्रफल एवं आयतन निकाल लेते हैं।

विषय – विज्ञान

कक्षा–6

क्र.सं.	प्रमुख शिक्षण अधिगम परिणाम
1.	बच्चे विज्ञान का अर्थ एवं वैज्ञानिक विधि के 11 चरणों को बता एवं लिख लेते हैं।
2.	बच्चे पदार्थ का अर्थ एवं उनकी अवस्थाओं यथा ठोस, द्रव एवं गैस के अंतर एवं उदाहरणों को बता एवं लिख लेते हैं।
3.	बच्चे तत्व, यौगिक, मिश्रण की अवधारणा, अंतर एवं उदाहरणों को समझ कर बता एवं लिख लेते हैं।
4.	बच्चे समांगी एवं विषमांगी मिश्रण का अर्थ एवं इसके अंतर को बता एवं लिख लेते हैं।
5.	बच्चे मापन का अर्थ एवं लम्बाई, द्रव्यमान, क्षेत्रफल, आयतन, समय व ताप के मात्रक को बता एवं लिख लेते हैं।
6.	बच्चे पौधों की संरचना एवं इसके कार्यों के बारे में बता एवं लिख लेते हैं।
7.	बच्चे सूर्यग्रहण तथा चन्द्रग्रहण में अंतर को बता एवं लिख लेते हैं।
8.	बच्चे वायु के गुण व इसमें उपस्थित गैसों के प्रतिशत को बता एवं लिख लेते हैं।
9.	बच्चे पत्तियों में भोजन बनाने की प्रक्रिया को समझ कर बता एवं लिख लेते हैं।
	कक्षा–7
1.	बच्चे रेशम कीट के जीवन–चक्र के चरणों को बता एवं लिख लेते हैं।
2.	बच्चे अम्ल, क्षार व लवण का अर्थ, गुण और उनमें अंतर बता एवं लिख लेते हैं।
3.	बच्चे दैनिक जीवन में विज्ञान के व्यावहारिक महत्व को बता एवं लिख लेते हैं।
4.	बच्चे प्रकाश संश्लेषण की प्रक्रिया में शामिल घटकों के नामों को बता एवं लिख लेते हैं।

क्र.सं.	प्रमुख शिक्षण अधिगम परिणाम
5	बच्चे पोषण का अर्थ एवं भोजन के विभिन्न पोषक तत्वों के नामों को बता एवं लिख लेते हैं।
6	बच्चे प्रकाश परावर्तन का अर्थ एवं इनके नियमों को बता एवं लिख लेते हैं।
7	बच्चे श्वसन का अर्थ एवं इसकी प्रक्रिया को बता एवं लिख लेते हैं।
8	बच्चे वायु के संघटन एवं वायु प्रदूषण की समस्या के कारणों व उपाय को बता एवं लिख लेते हैं।
	कक्षा–8
1.	बच्चे परमाणु एवं अणु का अर्थ एवं इसके अंतर को बता एवं लिख लेते हैं।
2.	बच्चे खनिज व अयस्क में अंतर तथा इसके शोधन के विभिन्न चरणों को बता एवं लिख लेते हैं।
3.	बच्चे मिश्र धातु का अर्थ एवं इसके उदाहरणों को बता एवं लिख लेते हैं।
4	बच्चे सूक्ष्म जीवों का अर्थ एवं इसके वर्गीकरण को बता एवं लिख लेते हैं।
5	बच्चे पौधे एवं जन्तु कोशिका के प्रमुख भेदो को बता एवं चित्रों को बना लेते हैं।
6	बच्चे अंतःस्रावी ग्रंथि का अर्थ एवं ग्रंथियों के नाम व उनके कार्यों को बता एवं लिख लेते हैं।
7	बच्चे निकट व दूर दृष्टि दोष का अर्थ, अंतर एवं इसके निवारण में प्रयुक्त होने वाले लेंसों के नामों को बता एवं लिख लेते हैं।
8	बच्चे विद्युत धारा का अर्थ, सूत्र एवं मात्रक को बता एवं लिख लेते हैं।
9	बच्चे चुम्बक का अर्थ, प्रकार एवं चुम्बकीय पदार्थों के नामों को बता एवं लिख लेते हैं।
10	बच्चे कार्बन के अपररूप का अर्थ, प्रकार तथा इनके उदाहरणों को बता एवं लिख लेते हैं।
11	बच्चे ऊर्जा के सीमित व असीमित स्रोत का अर्थ एवं उदाहरणों को बता एवं लिख लेते हैं।

Subject- English
Class-I

क्र.सं.	प्रमुख शिक्षण अधिगम परिणाम
1.	Children are able to understand and respond to the given instructions.
2.	Children recognise and know the names of objects like chair, table, door, tree, bag etc.
3.	Children enjoy singing rhymes with actions.
4.	Children are able to recognize the letters (A-Z).
5.	Children are able to recognise phonetical sounds of letters.
6.	Children identify different fruits, vegetables and animals and know their names in English.
	कक्षा–2
1.	Children are able to recognize vowels, consonants and their sounds.
2.	Children are able to pronounce letters in their correct phonetical sounds.
3.	Children are able to recognize simple words, relate them with their objects or pictures and pronounce them correctly.
4.	Children are able to speak small sentences based on his/her observations.
5.	Children differentiate between small and capital letters in print/Braille.
6.	Children are able to recite rhymes with actions individually or in group.
7.	Children are able to introduce himself and his family members.
8.	Children write simple, short sentences with space between words.
	कक्षा–3
1.	Children understand the difference between singular and plural (adding's ones).
2.	Childrencan use articles (a), (an) correctly.

क्र.सं.	प्रमुख शिक्षण अधिगम परिणाम
3.	Children are able to read and write sentences using this/that, these/those and one and more.
4.	Children know the number names from one to thirty with their spellings and pronunciation.
5.	Children understand, use and practice English language structure. (He/She can answer question beginning with what, where in simple English).
6.	Children can talk about good and healthy habits in simple English.
	कक्षा–4
1.	Children have developed good vacubulary from their books and use them.
2.	Children are able to give instructions in English in assembly or in class.
3.	Children are able to recite poems/rhymes from the text book individually and in groups with proper expression.
4.	Children use new words and/or words similar to the words used in lesson.
5.	Children are able to answer the questions given at end of text and write them in simple words and short sentences.
	कक्षा–5
1.	Children are able to speak a few sentences in English on the given topics.
2.	Children are able to write short compositions/picture compositions, using structures they have learnt.
3.	Children are able to serach words in a dictionary.
4.	Children are aware of different seasons, names of the months in a year and know their order.
5.	The child is able to recall the English names and spellings of some wild animals.

क्र.सं.	प्रमुख शिक्षण अधिगम परिणाम
	कक्षा–6
1.	Children are able to write words/phrases simple sentences and short paragraphs as directed by teacher.
2.	Children are able to converse with their peers and family in simple English.
3.	Children are familiar with the parts of speech (Nouns, Verbs, Adjectives, etc.) and can identify them correctly. They are aware of their significance.
4.	Children are able to read and comprehend the text and appreciate the message in the lesson.
5.	Children are able to complete stories with the help of pictures.
	कक्षा–7
1.	Children are able to speak difficult words with correct pronunciation.
2.	Children are able to form simple and complex sentences using the words.
3.	Children are able to use punctuation marks like full stop(.), commos(,), question mark (?) etc.
4.	Children are able to express their ideas about moral values, environment, village, town, country, etc.
5	Children are able to write letters using appropriate format.
	कक्षा–8
1.	Children are able to frame questions, write answers, short paragraphs, short stories and essays.
2.	Children are able to read a loud text, prose, poetry, content words and sentences with proper stress and rhythm.
3.	Children are able to frame sentences with correct usage of grammer.
4	Children are able to compare and contrast events, ideas, themes and think critically about them.

परिशिष्ट 2: शिक्षण योजनाएं

हम सभी मानते हैं कि **'सीखने–सिखाने की प्रकिया और शिक्षण की सफलता शिक्षण योजनाओं पर निर्भर होती है।'** इसलिए कक्षा शिक्षण हेतु कुछ शिक्षण योजनाएँ नमूने के रूप में दी जा रही हैं जो विभिन्न कक्षाओं और विषयों पर आधारित हैं। इन शिक्षण योजनाओं में लर्निंग आउटकम को केन्द्र बिन्दु (Focal Point) के रूप में लिया गया है। पाठ्यक्रम की भिन्न–भिन्न दक्षताओं/कौशलों के लिये अनेक गतिविधियों और अभ्यासों को भी शामिल किया गया हैं। साथ ही इनमें पाठ्यपुस्तक से संबंधित प्रकरणों और कार्यपुस्तिका के अभ्यासों को भी शामिल किया गया है। शिक्षण योजना के विभिन्न चरणों हेतु अनुमानित समय का भी बँटवारा किया गया है।

आपसे अपेक्षा है–

- सभी शिक्षक साथी इसी पैटर्न पर शिक्षण योजना बनाकर अपनी कक्षाओं में सीखने–सिखाने की गतिविधि संचालित करेंगे।
- इन शिक्षण योजनाओं में सुझायी गयी गतिविधियों के अलावा अन्य गतिविधियों को भी आवश्यकतानुसार शामिल कर उपयोग करेंगे।
- अपनी योजना के आधार पर उपयुक्त सामग्री और गतिविधियों की तैयारी करेंगे और कक्षा में एक बेहतर वातावरण बनाएंगे।
- चयनित लर्निंग आउटकम से संबंधित पाठ को दिवस/घंटों/खण्डों में बाँटकर कार्य करेंगे। किसी भी स्थिति में एक ही वादन में पाठ को पूरा नहीं करेंगे।

शिक्षण योजना – भाषा

दिनांक	कक्षा	विषय	समय
	2	हिन्दी	35–40 मिनट

1. **लर्निंग आउटकम**–बच्चे स्थानीय व मानक भाषा का प्रयोग करते हुए अपनी जिज्ञासा की पूर्ति के लिए बातचीत करते हैं, प्रश्न पूछते हैं एवं अपने अनुभव को साझा कर लेते हैं।
2. **प्रकरण**–पास–पड़ोस
3. **सीखने–सिखाने की सामग्री**–स्थानीय और मानक भाषा के शब्द कार्ड।
4. सीखने –सिखाने की प्रक्रिया/गतिविधियाँ–

क्र.	चरण	समय	आकलन के तरीके
क	**शिक्षण की शुरुआत में–** • नीचे दी गयी सूची में से किसी एक के बारे में बच्चों से स्थानीय भाषा में बात करेंगे। बीच–बीच में बच्चों को भी मौका देंगे कि जो देखा या जानते हैं, बताएं– – खेती का काम। – कपड़े की सिलाई का काम। – कपड़े धुलाई का काम – जूता सिलने का काम – फेरी वाले/चूड़ी वाले का काम – दुकानदार का काम – चायवाले का काम (बच्चों को खुलकर अपनी बात व्यक्त करने के पूरे अवसर देगें।)	05 मिनट	प्रतिक्रिया और सहभागिता देखकर
ख	**शिक्षण के दौरान–*(समय 10 मिनट)*** • शिक्षक पुस्तक में बने चित्र को दिखाते हुये बड़े समूह में नीचे लिखे बिन्दुओं पर बच्चों से बात करेंगे– (10 मिनट) – पाठ के चित्र में क्या–क्या दिख रहा है? – ऐसा क्या–क्या दिख रहा है, जो उनके गाँव में है/नहीं है? – कौन क्या कर रहा है? – अखबार में क्या छपा होगा? – तोता क्या बोल रहा होगा? – ई–रिक्शा पर कौन कहाँ जा रहा होगा? – बस कहाँ जा रही होगी? – नल के पास फूल किसने लगाये होंगे?	20–25 मिनट	प्रतिक्रिया और सहभागिता देखकर

क्र.	चरण	समय	आकलन के तरीके
	– दूध दुहते समय माँ क्या सोच रही होगी? – नल के पास लड़की दादाजी से क्या कह रही होगी? (बच्चों को खुलकर अपनी बात व्यक्त करने के पूरे अवसर देगें।)		
	• छोटे समूहों में बच्चे पाठ्यपुस्तक (कलरव) के पृष्ठ संख्या 12–13 पर बने चित्रों को देखेंगे और आपस में अपने विचार, अनुभव, अनुमान, कल्पना के आधार पर अपनी भाषा/बोली में बातचीत करेंगे। (5 मिनट) • शिक्षक बारी–बारी से इन समूहों में मदद करेंगे। (बच्चों को खुलकर अपनी बात व्यक्त करने के पूरे अवसर देगें।)		प्रतिक्रिया और सहभागिता देखकर
	• शिक्षक बच्चों के उत्तर/बातचीत में आये स्थानीय भाषा/बोली के शब्दों को बोर्ड पर लिखकर उनके मानक रूप भी बच्चों की मदद से लिखेंगे और पुनरावृत्ति करायेगें। • बच्चों को प्रश्न पूछने का भी मौका देंगे। शिक्षक बोर्ड पर लेखन कार्य करेगें। स्थानीय शब्द– पत्तई, भाटा मानक शब्द – पत्ता एवं बैगन		अवलोकन
ग	**शिक्षण के बाद में–** ***(समय 05 मिनट)*** प्रत्येक समूह के एक–एक बच्चे को अपने छुट्टी के दिनों या किसी रिश्तेदार जैसे–मामाजी के घर में बिताए गये समय के अनुभव सुनाने को कहेंगे। या		प्रतिक्रिया और सहभागिता देखकर

क्र.	चरण	समय	आकलन के तरीके
	समूह कार्य– दो समूहों में शब्द–अंत्याक्षरी कराएंगे। एक समूह– मानक शब्द, दूसरा समूह– स्थानीय शब्द। या (5 मिनट) स्थानीय व मानक भाषा के शब्द–कार्डों का मिलान करने को कहेंगे। या शिक्षक बोर्ड पर कुछ चित्र बनाकर (जैसे अमरूद, बकरी, पत्ता, चूहा, तोता आदि) बच्चों से पूछेंगे, बच्चे उत्तर देंगे व शिक्षक उसी का मानक शब्द साथ में लिखेंगे। (शिक्षक बच्चों के बोलेगये स्थानीय शब्दों को डायरी में दर्ज करेगें जिससे अगली योजना में सहायता मिल सकें।)		

5. प्रदत्त कार्य/गृह कार्य (असाइनमेंट) – कार्यपुस्तिका की गतिविधि–''किसके पास जाओगे'' को गृहकार्य के रूप में बच्चों से घर से करके लाने को कहेगें

6. शिक्षक की आगामी योजना–

- कक्षा शिक्षण में आकलन व फीडबैक के दौरान आ रही कठिनाइयों को ध्यान में रखकर कार्ययोजना का निर्माण।
- कार्ययोजना का क्रियान्वयन

....

....

....

....

....

....

....

शिक्षण योजना – भाषा

दिनांक	कक्षा	विषय	समय
	3	हिन्दी	35–40 मिनट

1. **लर्निंग आउटकम–** बच्चे दृश्य या चित्रों को देखकर अपने विचार व्यक्त करते हैं एवं क्रमानुसार वाक्य लिखते हैं।
2. **प्रकरण–** तालाब में चाँद
3. **सीखने–सिखाने की सामग्री–** पाठ्यपुस्तक, कार्यपुस्तिका
4. **सीखने सिखाने की प्रक्रियाएँ/गतिविधियाँ–**

क्र.	चरण	समय	आकलन के तरीके
क	**शिक्षण की शुरुआत में–** बच्चों को गोलाकार में बैठाकर हाव–भाव के साथ कविता वाचन तथा बन्दर के विषय में बातचीत और अभिनय सुंदर बंदर मस्त कलंदर, छिप बैठा मंदिर के अंदर। धूप–दीप का धुआँ लगा तो, खों–खों करता भागा बंदर।	10 मिनट	अवलोकन सुनकर
ख	**शिक्षण के दौरान–** • बच्चों के दो–दो के समूह में 'तालाब में चाँद' पाठ के चित्र का अवलोकन कराते हुए आपस में बात करने को कहेंगे। बच्चे चित्र के आधार पर एक दूसरे को अपनी कल्पना से कहानी भी सुनाएंगे। (15 मिनट)	20–25 मिनट	सुनकर
ग	**शिक्षण के बाद में–** (10 मिनट) • तालाब में चाँद पाठ के चित्र को बच्चे देखेंगे,		प्रश्नोत्तर प्रस्तुतीकरण

क्र.	चरण	समय	आकलन के तरीके
	प्रश्नों का उत्तर देंगे। प्रश्न इस तरह हो सकते हैं– – चित्र में क्या–क्या दिख रहा है? – इस चित्र में 'म', 'ब', 'प' अक्षर वाली कौन सी चीजें हैं। – चित्र नं0–3 पर 5 वाक्य बनाकर लिखें। • बच्चों के कार्य की प्रस्तुति व समेकन	10 मिनट	

5. प्रदत्त कार्य/गृह कार्य (असाइनमेंट) –

कलरव के मुख पृष्ठ के चित्र पर 5 वाक्य लिखकर घर से लायें।

6. शिक्षक की आगामी योजना–

- लर्निंग आउटकम के आधार पर 'तालाब में चाँद' पाठ से संबंधित पढ़ने व लिखने की दक्षता विषयक गतिविधियों का चयन।
- चयनित गतिविधियों का क्रियान्वयन।

....

....

....

....

....

....

....

शिक्षण योजना – भाषा

दिनांक	कक्षा	विषय	समय
	4	हिन्दी	35–40 मिनट

1. **लर्निंग आउटकम**– बच्चे अपनी बात को अपने ढंग से अभिव्यक्त (लिखित व मौखिक) करते हैं। अपने परिवेश के अनुभवों, विचारों को अपने लेखन में सम्मिलित करते हैं।
2. **प्रकरण**– अनुभव लेखन (स्वतंत्र)
3. **सीखने–सिखाने की सामग्री**– गिलास, बोतल (पानी की), वस्तुओं के नाम की पर्चियाँ।
4. **सीखने सिखाने की प्रक्रियाएँ/गतिविधियाँ**–

क्र.	चरण	समय	आकलन के तरीके
क	**शिक्षण की शुरुआत में**– सूचना के साधन के रूप में मोबाईल फोन के उपयोग पर चर्चा करते हुए शिक्षक दो बच्चों को मोबाईल फोन पर अपनी बात अपने मन से करने को कहेंगे। जैसे– – आपस में संवाद करना। – घरवालों/मित्र से बातचीत करना।	05 मिनट	सुनकर
ख	**शिक्षण के दौरान**– ***(समय 5 मिनट)*** (1) **'जस्ट–अ–मिनट' गतिविधि**–शिक्षक कक्षा के कुछ बच्चों को किताब/गिलास/बोतल/डस्टर में से एक–एक वस्तु उठाकर उसके बारे में अपने मन से एक मिनट बोलने को कहेंगे। (वस्तुओं के नाम लिखी पर्ची भी दे सकते हैं) या कुछ बच्चों को डाक्टर/पुलिस/पायलेट/टीचर/ नेता/ वकील बनाकर एक–एक बच्चे को उनका साक्षात्कार लेते हुए उनका काम, काम करने का तरीका, काम में आने वाली दिक्कतें पूछने को कहेंगे। ***(समय 15 मिनट)*** (2) हाल ही में सम्पन्न किसी त्यौहार, राष्ट्रीय पर्व/मेला में से किसी एक के बारे में अपना अनुभव (जैसा देखा है)	20 मिनट	प्रतिक्रिया और सहभागिता देखकर

क्र.	चरण	समय	आकलन के तरीके
	सुनाने का मौका दो–तीन बच्चों को देंगे। इन बच्चों के बताये अनुभवों को वाक्य रूप में बोर्ड पर शिक्षक लिखते चलेंगे। बच्चों से वाक्यों का क्रम सही करवायेंगे। बोर्ड पर लिखे वाक्यों को पढ़वाकर मिटा देंगे। इसके बाद सभी बच्चे अपने विचार/अनुभव अपनी कॉपी पर लिखेंगे। या (5 मिनट) 3) **समूह कार्य–** बच्चे नीचे दिये गये काम पर अपने समूह में व्यक्तिगत रूप से लिखेंगे– 1. पौधा लगाना है, क्या–क्या करना होगा? (समूह–1) 2. चाय बनानी है, क्या–क्या करना होगा? (समूह–2) 3. घर के काम करने हैं, कौन क्या करेगा? (समूह–3) 4. प्रधानाध्यापक बनूँगा, क्या कैसे करूँगा? (समूह–4) 5. डी.एम. बनूँगी, क्या–कैसे करूँगी? (समूह–5)		प्रतिक्रिया और सहभागिता देखकर प्रतिक्रिया और सहभागिता देखकर
ग	**शिक्षण के बाद में –** ***(समय 5 मिनट)*** सभी बच्चों को अपने मित्र/रिश्तेदार/अपने बारे में पाँच बातें लिखने को कहेंगे। • **फीडबैक, पुनरावृत्ति, पुनर्बलन**	5 मिनट	अवलोकन

5. **प्रदत्त कार्य/गृह कार्य (असाइनमेंट) –** पाठ्यपुस्तक (कलरव) 'अब करने की बारी' में दिये गये काम को घर से करके लाने को कहेगें।

6. **शिक्षक की आगामी योजना–**

- कक्षा में किए जाने हेतु उच्च मानसिक कौशल आधारित मौखिक व लिखित गतिविधियाँ तैयार करना।
- गतिविधियों का क्रियान्वयन व जरूरी सहायता देना।

....

....

शिक्षण योजना – भाषा

दिनांक	कक्षा	विषय	समय
	6	हिन्दी	35–40 मिनट

1. **लर्निंग आउटकम–** बच्चे रेडियो, टी0 वी0, इण्टरनेट आदि पर सुनी गयी, देखी गयी, पढ़ी गयी सामग्री को अपने शब्दों में व्यक्त करते हैं। अपनी पसन्द/नापसन्द को लिखित रूप में व्यक्त करते हैं।
2. **प्रकरण–** साप्ताहिक धमाका
3. **सीखने–सिखाने की सामग्री–** रेडियो, मोबाइल, टेबलेट, इण्टरनेट।
4. **सीखने सिखाने की प्रक्रियाएँ/गतिविधियाँ–**

क्र.	चरण	समय	आकलन के तरीके
क	**शिक्षण की शुरुआत में–** ● बच्चों के द्वारा सुने गये, देखे गये व पसन्द किये गये कार्यक्रमों पर उनके अनुभवों की चर्चा करेंगे। 1) क्या रेडियो एवं टीवी के कार्यक्रम सुनते व देखते है? 2) कौन–कौन से कार्यक्रम रोज़ देखते हैं? 3) कौन सा कार्यक्रम सबसे ज्यादा पसन्द है और कौन सा नापसन्द है। क्यों? *और भी बनायें।*	05 मिनट	बातचीत
ख	**शिक्षण के दौरान–** (समय 15 मिनट) ● शिक्षक दस बच्चों को पाँच जोड़ों में बुलायेंगे और उन्हें पर्चियाँ (भाई–बहन, माँ–बेटी,पिता–पुत्र, चाचा–भतीजा, शिक्षक–छात्र, बहन–बहन, भाई–भाई आदि।) चुनने को कहेंगे। ● बच्चे अपनी पर्ची के अनुसार जोड़ा बनाकर मोबाइल का प्रयोग करते हुए बारी–बारी से रोल प्ले करेंगे। मुख्य बिन्दु निम्नवत होंगे–	20 मिनट	प्रतिक्रिया और सहभागिता देखकर

<table>
<tr><th>क्र.</th><th>चरण</th><th>समय</th><th>आकलन के तरीके</th></tr>
<tr><td></td><td>
– अपनी जरूरत बताना
– बाजार जाने को कहना
– किताब कॉपी माँगना
– ताजी घटना सुनाना
– टी0वी0 पर बात करना
– खेल समाचार बताना
– रेडियो कार्यक्रम पर बात करना
• इसके बाद शिक्षक बड़े समूह में प्रश्नों के माध्यम से चर्चा करेंगे– बातचीत में किस यन्त्र का प्रयोग हो रहा था?
• किस–किस के बीच में बातचीत हो रही थी?
• किसके बीच बातचीत में सबसे अधिक मजा आया?
• कैसे जाना, कि कौन किससे बात कर रहा था?
(समय 5 मिनट)
• शिक्षक कुछ बच्चों को रेडियो, टी0वी0, अखबार के समाचार को अपने शब्दों में सुनाने के लिए कहेंगे और उस समाचार पर बात करेंगे।
• 'शिक्षक बड़े समूह में साधारण मोबाइल एवं इण्टरनेट से युक्त मोबाइल में अन्तर को निम्न तालिका के माध्यम से स्पष्ट करेंगे। जैसे–
<table>
<tr><th>साधारण मोबाइल</th><th>इण्टरनेट युक्त मोबाइल</th></tr>
<tr><td></td><td></td></tr>
</table>
</td><td></td><td>सुनकर

प्रतिक्रिया और सहभागिता देखकर</td></tr>
</table>

क्र.	चरण	समय	आकलन के तरीके
ग	शिक्षक विस्तार से इस अवधारणा को स्पष्ट करेंगे। **शिक्षण के बाद में–** ***(समय 5 मिनट)*** बच्चों को तीन समूहों में विभाजित करते हुए विषय पर लिखने का अवसर दें। जैसे – – रेडियो और उसके कार्यक्रम – टी0वी0 और उसके कार्यक्रम – मोबाइल का नयी जानकारियों को जानने में उपयोग। (अभिव्यक्ति में कठिनाई महसूस कर रहे बच्चों को शिक्षक विशेष सहयोग प्रदान करेगें।) (5 मिनट)	10 मिनट	प्रतिक्रिया और सहभागिता देखकर

5. प्रदत्त कार्य/गृह कार्य (असाइनमेंट) – सभी बच्चे टी0वी0 पर आने वाले किन्हीं पाँच कार्यक्रमों की सूची घर से बनाकर लायेगें। अपने परिवार के किसी सदस्य के पसंदीदा कार्यक्रम के बारे में विस्तार से घर से लिख कर लायेगें।

6. शिक्षक की आगामी योजना–

- बच्चों के बीच व्यक्तिगत, छोटे समूह में एवं बड़े समूह में रेडियो, टेलीविजन, मोबाइल फोन आदि पर देखे, सुने गए कार्यक्रमों पर आधारित लिखित व मौखिक अभिव्यक्ति की गतिविधियाँ बनाना।
- इन गतिविधियों का कक्षा में क्रियान्वयन/मदद देना।

....

....

....

....

....

शिक्षण योजना – गणित

दिनांक	कक्षा	विषय	समय
	1	गणित	35–40 मिनट

1. **लर्निंग आउटकम–** 1.बच्चे संख्या पूर्व अवधारणाओं जैसे– मोटा–पतला, छोटा–बड़ा, ऊँचा–नीचा, दूर–पास, हल्का–भारी, कम–ज्यादा, लंबा–छोटा, आदि को पहचान लेते हैं और उनके आधार पर वर्गीकरण करते हैं।
2. **प्रकरण–** बाग
3. **सीखने–सिखाने की सामग्री–** परिवेशीय ठोस सामग्री (कंकड़/पत्थर, बीज, पत्ते....) कक्षा में लगा किसी भी दृश्य का चित्र, बाग का चित्र
4. **सीखने सिखाने की प्रक्रियाएँ/गतिविधियाँ–**

क्र.	चरण	समय	आकलन के तरीके
क	**शिक्षण की शुरुआत में–** • गाँव या आस–पास लगने वाले किसी मेले के दृश्य पर बातचीत करके पाठ की शुरूआत करेंगे। जैसे– मेले में क्या–क्या था, पूछकर विभिन्न सामानों में तुलना कराकर	05 मिनट	प्रतिक्रिया और सहभागिता देखकर
ख	**शिक्षण के दौरान–** **(समय 10 मिनट)** • कक्षा में लगे चार्ट के किसी दृश्य पर चर्चा की जायेगी जिसमें बनी वस्तुओं में तुलना के आधार पर (कम–ज्यादा, छोटा–बड़ा, हल्का भारी, मोटा–पतला) • विद्यालय परिसर में मौजूद सामग्री का संकलन करायेंगे। फिर छोटे समूह में बच्चों को विभाजित करेंगे। अलग–अलग समूहों में विभिन्न प्रकार की सामग्री यथा–बस्ते की चीजें, मिड–डे–मील (किचन) की चीजें, पेड़ की पत्तियाँ, टहनी, बीज,	20–25 मिनट	प्रतिक्रिया और सहभागिता देखकर

क्र.	चरण	समय	आकलन के तरीके
ग	कंकड़ आदि उपलब्ध कराकर तुलना करायेंगे और फिर निष्कर्ष की ओर बढ़ने में मदद करेंगे। **(समय 10 मिनट)** • बच्चों के दो–दो के समूह में ही वस्तुओं की ढेरी बनवाकर उन्हें वर्गीकृत करवायेंगे। **शिक्षण के बाद में– (समय 5 मिनट)** • विभिन्न प्रकार की वस्तुओं को दिखाकर तुलना करायें और बच्चों की प्रतिक्रिया लेंगे।	5 मिनट	कार्य का अवलोकन

5. प्रदत्त कार्य/गृह कार्य (असाइनमेंट) – घर में मौजूद दो–दो वस्तुओं के नाम पता करें जो आपकी पुस्तक से हल्की या भारी हो।

6. शिक्षक की आगामी योजना–

(शिक्षण के पश्चात् आकलन में उभरकर आयी कमजोरियों को ध्यान में रखते हुए आगे की योजना बनायेंगे।)

विशेष– विषयवस्तु को 40 मिनट की शिक्षण योजना को ध्यान में रखते हुए विभाजित कर व्यावहारिक स्वरूप देंगे।

....

....

....

....

....

....

....

शिक्षण योजना – गणित

दिनांक	कक्षा	विषय	समय
	3	गणित	35–40 मिनट

1. **लर्निंग आउटकम**– बच्चे समय का मापन घण्टा, मिनट, सेकण्ड में करते हैं।
2. **प्रकरण**– टिक–टिक चले घड़ी (पाठ–1)
3. **सीखने–सिखाने की सामग्री**– घड़ी का चित्र
4. **सीखने सिखाने की प्रक्रियाएँ/गतिविधियाँ**–

क्र.	चरण	समय	आकलन के तरीके
क	**शिक्षण की शुरुआत में**– • बड़े समूह में समय और घड़ी आधारित सामान्य प्रश्नों के माध्यम से बच्चों के साथ बातचीत करेंगे। जैसे– – घर में कौन सबसे पहले सोकर उठता है? – सबसे बाद में कौन जगता है? – समय का पता कैसे लगाते हैं? – किसके–किसके घर में घड़ी है? – कौनसी घड़ी देखी है? – किस को समय देखना/बताना आता है? इसी तरह अन्य प्रश्नों पर भी बातचीत करेंगे।	05 मिनट	बातचीत
ख	**शिक्षण के दौरान**– **(समय 10 मिनट)** • शिक्षक बड़े समूह (पूरी कक्षा) में पाठ 'टिक्–टिक् चले घड़ी' को कहानी के रूप में सुनायेंगे। इसके बाद पाठ्यपुस्तक की इसी विषयवस्तु पर चर्चा करेंगे। चर्चा बिन्दु निम्नांकित रूप में हो सकते हैं– – शीला को स्कूल पहुँचने में क्यों देर हो जाती थी? – पिताजी ने शीला को समय देखना कैसे सिखाया? • दफ्ती/गत्ते/खराब घड़ी में घण्टे और मिनट	20–25 मिनट	प्रश्नोत्तर/बातचीत एकल एवं समूह में कार्य का अवलोकन अवलोकन

क्र.	चरण	समय	आकलन के तरीके
	की सुई लगायें। फिर चार/पाँच के छोटे समूह में इसे देकर निम्नांकित प्रकार के कार्य करायें– – घण्टे, मिनट की सुइयों की पहचान। (10 मिनट) – घण्टे एवं मिनट के निशानों की पहचान। – घण्टे और मिनट के निशान गिनवाकर कापी पर लिखवाना। – घण्टे एवं मिनट की सुईयों से पुरे–पूरे घण्टे में समय दिखाकर पढ़वाना व लिखवाना। • पाठ में दिये घड़ी के चित्र में समय को अकेले –अकेले पढ़ने और समझने का मौका देंगे। तत्पश्चात् दी गयी घड़ी में सुई की स्थिति देखकर समय बताने को कहेंगे। (5 मिनट)		अवलोकन
ग.	**शिक्षण के बाद में– (समय 5 मिनट)** • शिक्षक बोर्ड पर घड़ी का मॉडल बनाकर समय (घंटा–मिनट) के कुछ अभ्यास बडे समूह में कराकर सम्प्राप्ति की जांच करेंगे। • गृहकार्य/असाइनमेन्ट को घर से करके लाने को कहेंगे।	5 मिनट	अवलोकन

5. प्रदत्त कार्य/गृह कार्य (असाइनमेंट) – निम्नांकित कार्य को घर से करके लायें :–

1. कितने बजे सोकर उठे...
2. कितने बजे स्कूल के लिये चले...
3. माँ कितने बजे सोकर उठी...
4. रात/शाम कितने बजे खाना खाया......................................
5. रात कितने बजे सोने के लिए गये......................................

6. शिक्षक की आगामी योजना– (शिक्षण के बाद सम्प्राप्ति परीक्षण में उभर कर आयी कमजोरियों के सापेक्ष अगले दिन की कार्ययोजना बनायी जायेगी)

नोट– 1. पाठ को आवश्यकतानुसार कई वादन में पढ़ाने के लिए खण्डों में विभाजित करके शिक्षण योजना बनायेंगे।

2. बच्चों को छोटे एवं बड़े (एकल) समूह में कार्य का अवसर देने हेतु गतिविधियां बनवाऐंगे।

शिक्षण योजना – गणित

दिनांक	कक्षा	विषय	समय
	4	गणित	35–40 मिनट

1. **लर्निंग आउटकम–** बच्चे त्रिभुज, वर्ग, आयत एवं चतुर्भुज तथा विभिन्न प्रकार की दी गई आकृतियों का परिमाप ज्ञात कर लेते हैं।
2. **प्रकरण–** परिमिति (परिमाप)
3. **सीखने–सिखाने की सामग्री–** पाठ्य पुस्तक, कार्यपुस्तिका, 10 पटरी छोटी, 4 पटरी बड़ी, पतली सीधी लकड़ी के 1–1 फिट के 5 टुकड़े, दफ्ती के त्रिभुजाकार 4 टुकड़े, रस्सी
4. **सीखने सिखाने की प्रक्रियाएँ/गतिविधियाँ–**

क्र.	चरण	समय	आकलन के तरीके
क	**शिक्षण की शुरुआत में–** • रस्सी को अलग–अलग तरह से बन्द और खुली आकृति के रूप में रखकर बातचीत करेंगे। • लकड़ी के 2, 3 और 4 टुकड़ों को देकर अलग–अलग प्रकार की आकृति बनाने का मौका देंकर, बच्चों से इसपर चर्चा करेंगे। • खुली आकृति व दो से अधिक भुजाओं वाली बंद आकृति पर बड़े समूह में किताब व त्रिभुजाकार टुकड़ा दिखाकर आकृतियों पर चर्चा करेंगे।	5 मिनट	बातचीत व प्रश्नोत्तर
ख	**शिक्षण के दौरान निम्नांकित प्रकार के क्रियाकलाप करायें–** **(समय 10 मिनट)** • कक्षा–कक्ष की लम्बाई–चौड़ाई को कुछ बच्चों द्वारा कदमों से नपवाकर जोड़ करायें और परिमाप निकलवायेंगे। • कुछ बच्चों को बुलाकर पटरी की सहायता से	20–25 मिनट	कार्य का अवलोकन पुस्तक के किसी पन्ने की लम्बाई व चौड़ाई नपवाकर परिमाप पूछें

क्र.	चरण	समय	आकलन के तरीके
	अपनी मेज को नपवाकर उसकी लम्बाई–चौड़ाई श्यामपट्ट पर अंकित करायें फिर चर्चा करेंगे। • लकड़ी के टुकड़ों से चौकोर आकृति बनवाकर सभी भुजाओं को नपवायेंगे। फिर सभी लकड़ियों को एक लाइन में रखकर कुल लम्बाई पता करायेंगे। बड़े समूह में चर्चा करके परिमाप को स्पष्ट करेंगे कि – "किसी बन्द आकृति के सभी भुजाओं के नाप के जोड़ (योग) को परिमाप कहते हैं।" (10 मिनट) **शिक्षण के बाद में –** **(समय 5 मिनट)** सभी बच्चे अपनी–अपनी 'गिनतारा' किताब की लम्बाई–चौड़ाई नापकर उसका परिमाप निकालेंगे। शिक्षक कक्षा में घूम–घूम कर बच्चों के कार्य में सहायता करेंगे। **(समय 5 मिनट गृहकार्य हेतु)**	10 मिनट	समूहों में एक–एक त्रिभुजाकार टुकड़ा देकर उसका परिमाप निकलवायेंगे। अवलोकन

5. प्रदत्त कार्य/गृह कार्य (असाइनमेंट) – कार्यपुस्तिका के अभ्यास को घर से करके लायें।

6. शिक्षक की आगामी योजना–

- पाठ पर खण्डवार छोटे–बड़े समूह की गतिविधियों का निर्धारण करेंगे।

....

....

....

विशेष– पाठ को पढ़ाने के लिए वादनवार खण्डों में विभाजित करके 35–40 मिनट के लिए लर्निंग आउटकम आधारित शिक्षण योजना बनायेंगे। पूरा पाठ एक दिन में ही नहीं पढ़ाया जाना है।

शिक्षण योजना – गणित

दिनांक	कक्षा	विषय	समय
	5	गणित	35–40 मिनट

1. **लर्निंग आउटकम**– ऐकिक नियम को दैनिक जीवन से जोड़कर उदाहरण सहित स्पष्ट करते हैं। उस पर आधारित इबारती प्रश्नों को हल कर लेते हैं, ऐकिक नियम पर प्रश्नों का निर्माण कर अपने साथियों से उनके उत्तर पूछते हैं।
2. **प्रकरण**– ऐकिक नियम
3. **सीखने–सिखाने की सामग्री**– पाठ्य पुस्तक, चॉक कार्यपुस्तिका
4. **सीखने सिखाने की प्रक्रियाएँ/गतिविधियाँ**–

क्र.	चरण	समय	आकलन के तरीके
क	**शिक्षण की शुरुआत में**– शिक्षक बच्चों से खरीद–फरोख्त पर बातचीत से शुरुआत करेंगे– • आपने स्टेशनरी की दुकान से 60 पृष्ठ वाली 3 कापियाँ 45 रुपये में खरीदीं। प्रत्येक कापी का मूल्या कितना देना पड़ा? – एक कापी का मूल्य पता करायें। – कैसे मूल्य पता किया इसपर चर्चा करें। – अब 2 कापी का मूल्य पता करने को कहें। • बड़े समूह में चर्चा करते हुए बोर्ड पर पूरी प्रक्रिया के साथ उत्तर लिखेगें।	5 मिनट	बातचीत व प्रश्नोत्तर
ख	**शिक्षण के दौरान**– **(20 मिनट)** • बड़े समूह में–"3 कापियों का मूल्य 45 रूपये है तो 5 कॉपी का मूल्य बताइए"। • पूर्व प्रश्न के आधार पर चर्चा को आगे बढ़ाते हुए बच्चों की सहायता से बोर्ड पर हल करेंगे। स्पष्ट करेंगे कि–ऐकिक का अर्थ है– इकाई	20–25 मिनट	प्रश्नोत्तर

क्र.	चरण	समय	आकलन के तरीके
ग	अर्थात् एक पर आधारित। इस प्रक्रिया में एक वस्तु के सापेक्ष मान ज्ञात करते हैं, फिर उस आधार पर समस्या हल करते हैं। यहाँ यह स्पष्ट करें कि प्रश्न के तीन भाग हैं – प्रथम भाग – दी हुई मात्रा और मूल्य द्वितीय भाग – एक वस्तु के सापेक्ष मूल्य/मान तृतीय भाग – ज्ञात किया जाने वाला मान अर्थात् एक वस्तु का मूल्य x पूछी गयी मात्रा **शिक्षण के बाद में**– (दो/तीन के समूह में) **(समय 5 मिनट)** पाठ्यपुस्तक के अभ्यास पर आधारित प्रश्नों को हल करायेंगे। आवश्यकतानुसार समूहों की मदद करेंगे और बिन्दुओं को स्पष्ट करेंगे। **(समय 5 मिनट गृहकार्य हेतु)**	10 मिनट	अवलोकन एवं कुछ प्रश्न हल कराकर

5. प्रदत्त कार्य/गृह कार्य (असाइनमेंट) – पाठ्यपुस्तक एवं कार्यपुस्तिका के अभ्यास प्रश्न घर से करके आने को कहेगें।

6. शिक्षक की आगामी योजना–

- लर्निंग आऊटकम के आधार पर पाठ को कई खण्डों में विभाजित करके दिवसवार शिक्षण योजना तैयार करेंगे।

....

....

....

शिक्षण योजना – गणित

दिनांक	कक्षा	विषय	समय
	6	गणित	35–40 मिनट

1. **लर्निंग आउटकम–** बच्चे सजातीय एवं विजातीय पद तथा एक पद, दो पद तथा त्रिपदीय व्यंजकों का जोड़–घटाव कर लेते हैं।
2. **प्रकरण–** बीजीय व्यंजकों का जोड़ एवं घटाना
3. **सीखने–सिखाने की सामग्री–** पाठ्यपुस्तक, बीजीय व्यंजक (+x), (-3x), (-y), (+7y), (+2xy) लिखे हुए फ्लैश कार्ड।
4. **सीखने सिखाने की प्रक्रियाएँ/गतिविधियाँ–**

क्र.	चरण	समय	आकलन के तरीके
क	**शिक्षण के शुरूआत में–** • शिक्षक निम्नांकित सवालों की सहायता से अवधारणा स्पष्ट करेंगे। • लता के पास 4 आम और रीता के पास 16 आम हैं। उनके पास कुल कितने आम हैं? • एक झोले में कुछ कंचे थे, उसमें पाँच और डाल दिये, अब कितने हो गये?	5 मिनट	बातचीत
ख	**शिक्षण के दौरान–** **(20 मिनट)** इसके बाद निम्नांकित प्रकार के एक संदर्भ पर चर्चा करेंगे– तुम्हारे पिता की उम्र तुम्हारी उम्र की 5 गुनी है। तुम्हारे चाचा की उम्र तुम्हारे पिता की उम्र और तुम्हारी उम्र के योग से 3 वर्ष कम है। तो तुम्हारे चाचा की उम्र क्या होगी? – इसके आधार पर बीजीय पदों एवं व्यंजकों को स्पष्ट करेंगे।	20–25 मिनट	

क्र.	चरण	समय	आकलन के तरीके
	– सजातीय एवं विजातीय पदों को स्पष्ट करेंगे। – व्यंजक में पदों की संख्या बतायेंगे। – सजातीय पदों के योग और अन्तर को स्पष्ट करेंगे। – पाठ्यपुस्तक के अभ्यास कार्य करने का मौका छोटे समूह में देंगे। – फ्लैश कार्ड पर लिखे सजातीय एवं विजातीय व्यंजकों का योग और अन्तर निकालने का अभ्यास करायेंगे।		• सजातीय पदों की पहचान कराकर। • व्यंजक देकर सजातीय व विजातीय पद पता करायें। • सजातीय एवं विजातीय पदों का योग और अन्तर निकलवाकर।
ग	**शिक्षण के बाद में–** **(समय 5 मिनट)** 4 समूहों में – प्रत्येक समूह को दो–दो फ्लैश कार्ड देकर सवाल हल कराकर उत्तर प्राप्त करेंगे। **(समय 5 मिनट गृहकार्य हेतु)**	10 मिनट	अवलोकन

5. प्रदत्त कार्य/गृह कार्य (असाइनमेंट) – व्यावहारिक जीवन पर आधारित दो स्थितियाँ लिखिये जिसमें दो बीजीय व्यंजकों को बनाने की आवश्यकता पड़े और जोड़ना घटाना भी हो।

6. शिक्षक की आगामी योजना–

- खण्डवार अगले दिवस हेतु छोटे–बड़े समूह की गतिविधियाँ तैयार करना।
- गतिविधियों की क्रियान्वयन योजना बनाना।

विशेष– पाठ को लर्निंग आऊटकम के सापेक्ष विभाजित करके 35–40 मिनट की शिक्षण योजना तैयार की जायेगी।

....

....

शिक्षण योजना – पर्यावरण अध्ययन

दिनांक	कक्षा	विषय	समय
	3	पर्यावरण अध्ययन	35–40 मिनट

1. **लर्निंग आउटकम**– बच्चे मानचित्र पर अंकित संकेतों की पहचान कर उनका अर्थ बताते हैं।
   बच्चे उत्तर प्रदेश के मानचित्र में अपने व पड़ोसी जिलों को खोज लेते हैं।
   बच्चे मुख्य उपजों (गेहूँ, चावल, गन्ना, दालें, आदि) के उत्पादक राज्यों का नाम बताते हैं, और उन्हें भारत के मानचित्र पर पहचान लेते हैं।
2. **प्रकरण**– मानचित्र
3. **सीखने–सिखाने की सामग्री**– भारत एवं उत्तर प्रदेश का मानचित्र, रंगीन कलर के स्केच, ग्लोब, एटलस आदि।
4. **सीखने सिखाने की प्रक्रियाएँ/गतिविधियाँ**–

क्र.	चरण	समय	आकलन के तरीके
क	**शिक्षण के शुरूआत में**– • सभी बच्चों को ग्लोब या नक्शा दिखाते हुए पूरे विश्व में अपने देश को खोजने का तरीका बताएंगे। • पूरी कक्षा के बच्चों से अपने गाँव का नक्शा बनाकर उसमें कुँआ, तालाब, स्कूल, स्वास्थ्य केन्द्र, पुलिस थाना, नहर आदि को प्रदर्शित कराऐंगे। • बोर्ड पर भी गाँव का नक्शा बनाकर गाँव के नक्शे में स्कूल, नहर, तालाब................................ .... बनाने के लिए बोर्ड तक बुलाकर गोला बनवाएंगे।	10 मिनट	प्रतिभाग और कार्य देखकर
ख.	**शिक्षण के दौरान**– **(समय 10 मिनट)** • सम्पूर्ण कक्षा को तीन समूहों में बाँटेगें । • एक समूह को भारत का नक्शा देगें और उसमें पूर्व, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण दिशा में स्थित	20 मिनट	कार्य अवलोकन

क्र.	चरण	समय	आकलन के तरीके
	राज्यों के नाम लिखने को कहेगें। • दूसरे समूह को उत्तर प्रदेश का मानचित्र देकर उसमें अपने जिले के आसपास के जिलों के नाम लिखने के लिए कहेंगे। • तीसरे समूह को भारत में बहने वाली प्रमुख नदियों दर्शाने के लिए कहेंगे। प्रत्येक समूह से किए गए कार्य का प्रस्तुतिकरण करने को कहेगें।		
ग.	**शिक्षण के बाद में– (समय 5 मिनट)** • सभी बच्चों से भारत का मानचित्र निकालकर उसमें भारत और पड़ोसी देशों के नाम लिखने के लिए कहेंगे। • सभी बच्चों से भारत के राज्यों के नाम लिखने के लिए कहेंगे। **(समय 5 मिनट गृहकार्य देने हेतु)**	10 मिनट	अवलोकन

5. प्रदत्त कार्य/गृह कार्य (असाइनमेंट) – सभी बच्चों से अपनी पसंद के पाँच जिलों को उत्तर प्रदेश के मानचित्र पर प्रदर्शि7त करके लाने के लिए कहेगें।

6. शिक्षक की आगामी योजना–

मानचित्र बनाने और भरवाने अभ्यास कराना।

....

....

....

....

शिक्षण योजना – पर्यावरण अध्ययन

दिनांक	कक्षा	विषय	समय
	4	पर्यावरण अध्ययन	35–40 मिनट

1. **लर्निंग आउटकम**– बच्चे पौधों को देखकर उनके नाम बता लेते हैं। बच्चे दी गयी सूची में विभिन्न पौधों को उनके निवास–स्थान के अनुसार वर्गीकृत कर लेते हैं।
2. **प्रकरण**– पेड़–पौधों की विशेषता।
3. **सीखने–सिखाने की सामग्री**– स्कूल परिसर और पड़ोस में पाये जाने वाले पेड़ पौधे, फ्लैश कार्ड।
4. **सीखने सिखाने की प्रक्रियाएँ/गतिविधियाँ–**

क्र.	चरण	समय	आकलन के तरीके
क	**शिक्षण की शुरुआत में–** बच्चों को बड़े गोल घेरे में 'अगर पेड़ भी चलते होते' को सस्वर गवाकर पेड़ों की उपयोगिता पर बातचीत करेंगे।	5 मिनट	
ख	**शिक्षण के दौरान–** **(समय 10 मिनट)** शिक्षक बच्चों को 4 समूह में विभाजित करके स्कूल परिसर में ले जाकर समूहवार अलग–अलग कार्य दिया जायेगा। प्रत्येक समूह दिए गए समय में आपस में चर्चा करके एक सहमति बनाऐंगे। **समूह 1**–छाया देने वाले पेड़ों के नाम व विशेषता । **समूह 2**–फल देने वाले पेड़ों के नाम व विशेषता । **समूह 3**–शोभा वाले पौधों के नाम व विशेषता । **समूह 4**–फूलों/लताओं वाले पौधों/पेड़ों के नाम व विशेषता (बच्चों के अवलोकन के समय शिक्षक बच्चों के साथ ही रहेगें) कक्षा में बच्चों को समूह वार अपनी जुटाई जानकारी	20–25 मिनट	अवलोकन

क्र.	चरण	समय	आकलन के तरीके
	साझा करने को कहेंगे। बच्चों से कोई बात छूट रही हो, तो उसे जोड़ने में मदद करेंगे। दूसरे समूह के बच्चों को सवाल करने के मौके देंगे। (शिक्षक बच्चों द्वारा बतायी गयी बातों को बोर्ड पर वर्गीकृत रूप में दर्ज करेंगे।) (10 मिनट)		भ्रमण अवलोकन
ग.	**शिक्षण के बाद में'–** **(समय – 5 मिनट)** बच्चों को समूह में कुछ पर्चियाँ देकर पौधों के नाम लिखकर उनके प्रकार के आधार पर अलग–अलग वर्गीकृत कराऐंगे, जैसे– फल देने वाले, केवल छाया देने वाले.... **(समय 5 मिनट गृहकार्य हेतु)**	10 मिनट	अवलोकन

5. प्रदत्त कार्य/गृह कार्य (असाइनमेंट) – बच्चे अपने घर पर माँ–दादी से पास–पड़ोस के पौधों के बारे में उनके अनुभव तथा कहानी सुनकर आयेंगे। पेड़ का चित्र बनाकर लाएंगे।

6. शिक्षक की आगामी योजना–

- वृक्षों के प्रति संवेदनशीलता के प्रसंग सुनाना।
- संवेदनशीलता से संबंधित रोल प्ले कराना।

....

....

....

....

....

शिक्षण योजना – पर्यावरण अध्ययन

दिनांक	कक्षा	विषय	समय
	5	पर्यावरण अध्ययन	35–40 मिनट

1. **लर्निंग आउटकम**– बच्चे चिकनी, बलुई, दोमट मिट्टी में अन्तर कर पाते हैं।
2. **प्रकरण**– हमारी कृषि : फसलें।
3. **सीखने–सिखाने की सामग्री**– मिट्टी के नमूने।
4. **सीखने सिखाने की प्रक्रियाएँ / गतिविधियाँ**–

क्र.	चरण	समय	आकलन के तरीके
क	**शिक्षण की शुरुआत में**– शिक्षक बच्चों के साथ एक गीत कराकर गीत पर बातचीत कराएंगे– बरसा पानी – धान उगा। बरसा पानी – फसल बढ़ी। बरसा पानी –गन्ना लगा। बरसा पानी –सब्जी लगी।	5 मिनट	अवलोकन
ख	**शिक्षण के दौरान– (20 मिनट)** • बच्चों को प्रोजेक्ट कार्य देते हुए छोटे समूहों में स्कूल के आस–पास ले जाएंगे। बच्चे मिट्टी के कई तरह के नमूने इकट्ठे करके लायेंगे। सभी नमूनों में थोड़ा–थोड़ा पानी डालेंगे। फिर देखेंगे कि कौन सा नमूना ज्यादा पानी सोखता है, कौन सा कम और कौनसा औसत पानी सोखता है। • पानी सोखने की क्षमता के आधार पर इन मिट्टी के नमूनों में अन्तर स्पष्ट करते हुए चिकनी, बलुई, दोमट मिट्टी के बारे में समझ बनवाएंगे।	20–25 मिनट	अवलोकन
ग	**शिक्षण के पश्चात्** **(समय 5 मिनट)**	10 मिनट	चर्चा / बातचीत

क्र.	चरण	समय	आकलन के तरीके
	पानी सोखने के आधार पर किस प्रकार की मिट्टी में कौन सी फसल होती है इस बारे में बच्चों की जानकारियाँ अनुभवों को जोड़ते हुए अभ्यास कराएंगे। **(समय 5 मिनट गृहकार्य हेतु)**		

5. प्रदत्त कार्य/गृह कार्य (असाइनमेंट) – बच्चों को कम पानी, ज्यादा पानी, औसत पानी में उगने वाली फसलों का नाम लिखकर घर से लाने को कहेंगे।

6. शिक्षक की आगामी योजना–

- मिट्टी के विभिन्न प्रकारों एवं उनकी विशेषता पर समझ बनाने हेतु विभिन्न क्रियाकलापों व गतिविधियों का निर्धारण करना।
- निर्धारित क्रियाकलापों का कक्षा में क्रियान्वयन।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

Lesson Plan - English

Date	Class	Subject	Time
	III	English	40 Minutes

1. **Learning Outcomes**- The child is able to understand the poem regarding traffic lights and can narrate the same in her own language.
2. **Topic** - On the road
3. **Required materials**- Coloured Chart on Traffic Signals
4. **Teaching Learning Process**-

S.N.	Steps	Expected Time	Methods of Assessment
A.	**In the beginning of teaching.** **(शिक्षण की शुरूआत में)** • Teacher will talk to children with the following questions. Teacher will use both English and Hindi words and sentences during the discussion. *(शिक्षक बच्चों से निम्न प्रश्नों से चर्चा शुरू करेंगे। आवश्यकता अनुसार शिक्षक हिन्दी और अंग्रेजी दोनों के शब्दों व वाक्यों का उपयोग अपनी बातचीत के दौरान करेंगे।)* i) Children- how do you come to school daily? *(बच्चों–तुम रोजाना विद्यालय कैसे आते हो?)* ii) What do you see on the road? *(तुम सड़क पर क्या देखते हो?)* iii) Children - will you answer the puzzle. *(बच्चों– क्या आप एक पहेली का उत्तर देंगे?)* इधर से आती, उधर को जाती, पैदल चलते, वाहन चलते सभी को मंजिल तक पहुँचाती, बोलो मैं क्या कहलाती। A Answer: Road *(सड़क)*	5 Minutes	Observation (अवलोकन)

S.N.	Steps	Expected Time	Methods of Assessment
	• On the basis of above discussion, teacher asks- do you know, there are some basic rules of walking and driving on a road? You must would have seen traffic lights (Red, Yellow and Green) on a chauraha. Why are these lights there? Students will reply based on their previous knowledge and experiences. Teacher says- We will understand it in a better way today. Now we will recite and understand the poem "On the road". This poem tells about rules of roads. We always follow the rules of road while walking on roads. (उपरोक्त चर्चा के आधार पर शिक्षक बच्चों से पूछते है – क्या आपको पता है कि सड़क पर चलने या गाड़ी चलाने के कुछ नियम होते हैं ? आपने जरूर बड़े चौराहों पर ट्रैफिक लाइट देखें होगें। आखिर वे वहाँ क्यों होते है? बच्चे जवाब देते हैं। शिक्षक कहते हैं– आज हम इसे और अच्छे ढंग से समझते हैं। हम सभी 'On the Road' कविता को पढ़ेंगे और समझेंगे। इस Poem के माध्यम से यातायात के नियमों के बारे में भी जानेंगे, जिनका हमें सड़क पर चलते समय हमेशा पालन करना चाहिए।)		Observation (अवलोकन)
B	**Mid of the period (शिक्षण के दौरान)** • Now the teacher recites the poem aloud with correct pronunciation, rhythm and accent. All students follow him and recite the poem as well. *(अब शिक्षक सही उच्चारण, सुर, लय और ऊँचे स्वर के साथ कविता का वाचन करते है उसी समय बच्चे अपनी पुस्तक में पढते हैं।)*	20 Minutes	Observation (अवलोकन)

S.N.	Steps	Expected Time	Methods of Assessment
	Teacher will recite the poem with reasonable pause between words and different lines. *(शिक्षक उचित लय–ताल के साथ कविता का वाचन करेंगे।)–* Stop, says the red light, Go says the green, Wait says the yellow, Till the light is green • The teacher will ask the students to recite the poem aloud. While the students are reciting the poem individually, the teacher goes around the class and observes how well students are reciting the poem.- He motivates students by patting their back and helps those who are not able to recite correctly. *(शिक्षक बच्चों से कहेंगे कि ऊँचे स्वर में कविता को पढ़ने को कहेंगे। बच्चें जब कविता पढ़ रहे होंगे, शिक्षक कक्षा में घूमते हुये सभी बच्चों को देखेंगे, उन्हें प्रोत्साहित करेंगे और जो नहीं पढ़ पा रहे होंगे, उनकी सहायता करेंगे।)* • In between teacher will write the following lines of poem in English on board. *(इसी बीच शिक्षक कविता की निम्न पंक्तियों को अग्रेंजी में बोर्ड पर लिखेंगे।)* Stop, says the red light, Go says the green, Wait says the yellow, Till the light is green. *("जब लाल बत्ती जलती है तो इसका मतलब है– रुक जाओ, जब हरी बत्ती जलती है तो*		

S.N.	Steps	Expected Time	Methods of Assessment
	इसका अर्थ है– जाओ और जब पीली बत्ती जलती है तो वह हमसे कहती है– अभी इन्तजार करो, जब तक हरी बत्ती न जल जाये।) • Teacher explains the above lines of poem and ensures that every child understands it. *(शिक्षक कविता की उपर्युक्त पक्तियों का अर्थ बच्चों को समझाते हैं तथा यह सुनिश्चित करते हैं कि सभी बच्चों ने इसको समझ लिया है।)* • Now teacher divided students into groups as per no. of students available (there should not be more than 5 students in one group). Each group will read and discuss rules of road given in the poem and write them in the notebook. *(अब शिक्षक बच्चों को छोटे समूहों में विभाजित करेंगे । ध्यान रहे कि एक समूह में पांच से अधिक बच्चे न हों। सभी समूह दी गयी कविता से सड़क के नियम को पढ़ेंगे और उन पर चर्चा करेंगे तथा उन्हें कॉपी में भी लिखेंगे।)* • Teacher will ask each group to present rules of roads. Teacher will motivate each group during presentation. (शिक्षक सभी समूहों को सड़क के नियम को प्रस्तुत करने को कहेंगे। प्रस्तुतिकरण दौरान शिक्षक सभी समूहों को प्रोत्साहित करेंगे।) • Teacher will consolidate the discussion by highlighting the following points as basic rules of roads. *(शिक्षक चर्चा को समेकित करने हुये निम्न बिन्दुओं को सड़क के नियम के रूप में उभारेंगे।)* Always walk on the footpath.		Observation (अवलोकन)

S.N.	Steps	Expected Time	Methods of Assessment
	(हमेशा पैदल चलने के लिए फुटपाथ का ही प्रयोग करें।) Use the Zebra-crossing while crossing the road. *(हमेशा सड़क पार करते समय ज़ेब्रा क्रासिंग (लाइन) का ही प्रयोग करें।)* Never play on or near the road. *(कभी भी सड़क पर या सड़क के पास नही खेलें।)* Before crossing the road, first look to the right, then to the left and again to the right, if it is clear, then cross the road. *(हमेशा सड़क पार करते समय पहले आप दाये देखें, फिर बाएं देखें, फिर दुबारा दाएं देखें, जब रास्ता साफ हो, तभी सड़क पार करें।)*		
C	**Consolidating the teaching-** **(शिक्षण के अन्त में) (Duration 5 minutes)** Teacher will assess the learning of students through the following which he will write the board. *(शिक्षक बच्चों की सीख को निम्नलिखित अभ्यास के द्वारा जांचेंगे। नीचे दिये वाक्यों को शिक्षक बोर्ड पर लिखेंगे)* Complete the given spaces by selecting suitable words- (Go, Stop, green, yellow, red) • Go - says the______________ light • Wait, says the __________________ • Stop says the___________________ light. (Duration 5 minutes for assingnmets/homework)	10 Minutes	To check the assigned work (प्रदत्त कार्य को जाँचकर)

5. Assigments/Home work- (प्रदत्त कार्य/गृह कार्य)

   All students will write five sentences in English on the rules of Walking and Driving on a road.

6. Teacher's Remark- (शिक्षक की टिप्पणर)

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

Lesson Plan - English

Date	Class	Subject	Time
	VI	English	60 Minutes

1. **Learning Outcomes**- Children are able to read and understand the story and answer the questions based on the text.
2. **Topic** – Gulliver in Lilliput
3. **Required materials-** Text Book Pictures
4. **Teaching Learning Process-**

S.N.	Steps	Expected Time	Methods of Assessment
A	Day I (प्रथम दिवस) In the beginning of the teaching. (शिक्षण की शुरूआत में) • Teacher says- Today, we will read a very good story. But before that tell me, have you heard of Gulliver? (Children Respond) *(शिक्षक बच्चों से बातचीत करते हुए पूछते हैं कि क्या आपने गुलीवर का नाम सुना है?)* • Teacher- OK, suppose, you are happen to be in a town where people are five times taller than you. How will you feel? What will you do? *(शिक्षक– अच्छा, मान लो कि आप किसी ऐसे शहर में पहुँच गए हो जहाँ लोग आपसे 5 गुणा लंबे है, तो आप कैसा महसूस करेंगे? ऐसे मे आप क्या करेंगे?)* • Give enough time to children to think and respond. Encourage all children to respond to this. *(बच्चों को सोचने व उत्तर देने के लिए समय*	05 Minutes	Observation (अवलोकन)

S.N.	Steps	Expected Time	Methods of Assessment
	दें। सभी बच्चों को उत्तर देने के लिए प्रोत्साहित करें।) • Teacher- So today, we will know about a traveller named Gulliver and his exciting journey stories. *(शिक्षक– आज, हम गुलीवर नाम के एक यात्री तथा उसकी रोमांचक यात्राओं के बारे में जानेंगे।)*		
B.	In the mid of the Period *10 minutes* · Teacher will tell the story of Gulliver in Liliput in Hindi with proper accent and body language. During the story, teacher will ask some questions in between to ensure interest and understanding of students. *(शिक्षक **लिलीपुट में गुलीवर** कहानी को पूरे हाव–भाव और उतार–चढ़ाव के साथ हिन्दी में बच्चों को सुनायेंगे। बीच–बीच में वे प्रश्न भी पूछेंगे ताकि बच्चों की रूचि व समझ बनी रहे।* *10 Minutes* • Teacher- this story is given in our book also. Let's read it. • Teacher will read aloud the first page of the story and explain it to the students. In between, he will write difficult words and its meaning on the board also.	20 Minutes	Observation (अवलोकन)
C	End of the teaching • Teacher will ask the children to copy the difficult words and its meaning from the board. *(शिक्षक बच्चों से कठिन शब्दों को अपनी कॉपी में लिखने को कहेंगे।)*	05 Minutes	

5. Assignments/Home work-

(प्रदत्त कार्य/गृह कार्य)

<u>Teacher gives four questions on the basis of first page of the chapter that was read today and asks all students to write their answers by taking help from the books.</u>

S.N.	Steps	Expected Time	Methods of Assessment
A	Day 2 (द्वितीय दिवस) The teacher will start by asking questions from the previous day reading. He will also enquire about the homework given last day. Later he will check it also. (शिक्षक कल के पढ़ाए गए पाठ से कुछ प्रश्न पूछेंगे। साथ ही वे यह भी जानने का प्रयास करेंगे कि कल दिया गया गृहकार्य हुआ कि नहीं। वे इसे बाद में जाँचेंगे भी।) • Teacher- Let's proceed with the chapter now. (शिक्षक – चलो अब पाठ को आगे पढ़ते हैं।)	05 Minutes	Observation (अवलोकन)
B	Mid of the Period *(Duration 15 minutes)* (शिक्षण के दौरान) • The teacher will read the remaining part of the story aloud with correct pronunciation, while the children look into their books. (शिक्षक सही उच्चारण, और ऊँचे स्वर के साथ कहानी के बचे हुए हिस्से का वाचन करेंगे तथा उसका अर्थ समझायेंगे। बच्चे अपनी पुस्तक में पढ़ेंगे।) *(Duration 10 minutes)* • Then, teacher divides students in pairs. He first asks one student from each pair to read a para-graph aloud. The other student of each pair will look into the text which is being read by his/her friend and will correct wherever pronunciation is wrong. Similarly this exercise will be repeated	20-25 Minutes	Observation (अवलोकन)

S.N.	Steps	Expected Time	Methods of Assessment
	with other member of the pair. • Then, he gives one different question to each pair and asks them to search the answer from the book and write it in their notebooks. • Teacher will ask 3-4 pairs to present their answer, as per the time available. Teacher will motivate them during presentation. Remaining pairs can present their answers next day. (शिक्षक 3–4 जोड़ों को प्रश्न के उत्तर देने को कहेंगे। प्रस्तुतिकरण दौरान शिक्षक उन्हें प्रोत्साहित करेंगे बाकी जोड़े अगले दिन अपनी प्रस्तुति देंगे।)		
C	End of teaching- *(शिक्षण के अन्त में)* Teacher will share his/her observations on today's work by students in pair. He will also ask them to write difficult words and it meaning copying from the board. He will then give homework. (अध्यापक कहानी के अन्त में दिये गये प्रश्नों के उत्तरों को बोर्ड पर लिखेगें)	5-10 Minutes	To Check Assigned Work (प्रदत्त कार्य जाँचकर को)

5. Assigments/Home work- (प्रदत्त कार्य / गृह कार्य)
   Correct the following sentences and rewrite them. Also write their Hindi translation:
   (निम्न वाक्यों को सही करें और पुनः लिखें। साथ ही इनका हिन्दी अनुवाद भी लिखें।)
   a. Gulliver was a pilot.
   b. Gulliver tied the tiny people.
6. Next teaching process-
   (शिक्षक की आगामी योजना) – यह योजना दो वादनों में पूर्ण की जायेगी।

   Teacher will continue to work on the chapter next day also and cover all questions and answers from it. He will also ask students to make their own sentences from some of the identified difficult words. Some of these activities may be done in small groups.

Lesson Plan - English

Date	Class	Subject	Time
	VIII	English	70 Minutes

1. **Learning Outcomes-** Children are able to read and understand the paragraph and answer the questions based on it.
2. **Topic** – The Missile man of India
3. **Required materials-** Photograph/Chart of APJ Abdul Kalam
4. **Teaching Learning Process-**

S.N.	Steps	Expected Time	Methods of Assessment
A.	Day 1 (प्रथम दिवस) In the beginning of the teaching. (शिक्षण की शुरूआत में) • Teacher- Who is the current President of India? …… OK, Can you tell the name of President of India who is also known as Missile man of India? ……… Yes, he is our beloved ex-President Shri APJ Abdul Kalam ji. Can anyone tell me why he is called as Missile man of India? …….. • Great, so today we will learn about him and why he is called as Missile man of India. (शिक्षक – भारत के वर्तमान राष्ट्रपति कौन हैं? ठीक है, क्या आप बता सकते हैं कि भारत के वे राष्ट्रपति जिन्हें मिसाइल मैन कहते हैं, वे कौन थे? बहुत अच्छा, आज हम उनके बारे में पढ़ेंगे कि उन्हें भारत का मिसाइल मैन क्यों कहते हैं।)	5 Minutes	Observation अवलोकन
B.	In the mid of Period *10 Minutes* • The teacher will tell the story *"The Missile man of India"* in Hindi with proper actions	25 Minutes	

S.N.	Steps	Expected Time	Methods of Assessment
	and rhythm. *(शिक्षक **"भारत के मिसाइल मैन"** की कहानी को पूरे हाव–भाव के साथ हिन्दी में बच्चों को सुनायेंगे)* • Teacher will maintain interest and understanding in the story by asking question to the children. (शिक्षक कहानी में रूचि को बनाये रखने के लिए और समझ को बनाने के लिए बच्चों से बीच–बीच में छोटे–छोटे प्रश्नों को पूछते रहेंगे।) *15 Minutes* • Then he divides students into group of 5 each and asks each group to read the first two paragraph of the chapter. Every student will get a chance to read. In the group itself, they will try to understand the meaning of the paragraphs. Teacher will observe each group's performance. After reading and discussion on the paragraphs by each group, he then tells the correct meaning of the text. He also writes difficult words and their meaning on the board simultaneously. (अब शिक्षक कक्षा के विद्यार्थियों को 5–5 के समूह में विभक्त कर पाठ के पहले दो पैराग्राफ पढ़ने का अवसर देंगे जिन्हें वे स्वयं पढ़कर समझने का प्रयास करेंगे। शिक्षक समूहों का अवलोकन करेंगे। पढ़ने व परस्पर वार्तालाप के बाद शिक्षक पैराग्राफ का सही अर्थ बतायेंगे। साथ ही कठिन शब्दों को श्यामपट्ट पर लिखकर अर्थ स्पष्ट करेंगे।)	30 Minutes 30 Minutes	Observation (अवलोकन) To check the assignedwork (प्रदत्त कार्य को जांचकर)

S.N.	Steps	Expected Time	Methods of Assessment
	• This activity will go on for 15 minutes. Remaining part of the chapter will be carried over to the next day. (यह क्रिया लगभग 15 मिनट तक चलेगी। शेष भाग पर अगले दिन कार्य किया जाएगा।)	30 Minutes	Observation (अवलोकन)
C.	End of the teaching • Teacher will share his/her observations on today's work by students in group. He will also ask them to write difficult words and it meaning copying from the board. He will then give homework. (अध्यापक कहानी के अन्त में दिये गये प्रश्नों के उत्तरों को बोर्ड पर लिखेगें)	5 Minutes	By checking the assigned work (प्रदत्त कार्य को जांच कर)

5. Assigments/Home work- (प्रदत्त कार्य/गृह कार्य)

Teacher gives three questions on the basis of today's work on the chapter that was read today in the group. He asks all students to write their answers by taking help from the books.

S.N.	Steps	Expected Time	Methods of Assessment
A	Day 2 (द्वितीय दिवस) • The teacher will start by asking questions from the previous day reading. He will also enquire about the homework given last day. Later he will check it also. *(शिक्षक कल के पढ़ाए गए पाठ से कुछ प्रश्न पूछेंगे। साथ ही वे यह भी जानने का प्रयास करेंगे कि कल दिया गया गृहकार्य हुआ कि नहीं। वे इसे बाद में जाँचेंगे भी।)* Teacher- Let's proceed with the chapter now. (शिक्षक – चलो अब पाठ को आगे पढ़ते हैं।)	10 Minutes	Observation (अवलोकन)

S.N.	Steps	Expected Time	Methods of Assessment
B	Mid of the Period (शिक्षण के दौरान) *(Duration 10 minutes)* • The teacher explains the remaining part of the chapter. In between, he asks questions also to understand whether students are attentive or not. *(Duration 15 minutes)* • Now teacher asks students to sit in the groups as was done previous day. Teacher will assign a question in each group and ask them to read and discuss within group and write the answer in the notebook. Teacher will give different questions to each group, so he must prepare the questions in advance. • Teacher will ask each group to present the answer. Teacher will motivate children of each group during presentation. (शिक्षक सभी समूहों को प्रश्न के उत्तर देने को कहेंगे। प्रस्तुतिकरण दौरान शिक्षक सभी समूहों के बच्चों को प्रोत्साहित करेंगे।) • Teacher will correct the answers wherever required.	25 Minutes	Observation (अवलोकन)
C.	End of the teaching *(शिक्षण के अन्त में)* • Teacher will write the correct answer on the board also during presentation itself. • This way he consolidates today's class. *(Duration 5 minutes for assignments/homework)* (प्रस्तुतिकरण के समय शिक्षक श्यामपट्ट पर सही उत्तर लिखेंगे। इस प्रकार आज की कक्षा का समेकन किया जाएगा।)		To check the assignedwork (प्रदत्त कार्य को जांचकर)

5. Assigments/Home work- (प्रदत्त कार्य/गृह कार्य)

Teacher gives 5 difficult words and asks students to write a sentence on it. Also all students will framelate the sentence in Hindi also.

6. Next teaching process- ***(शिक्षक की आगामी योजना)***

Teacher will continue to previous day presentation of the group and proceeds in the same way. He covers all questions given in the chapter itself and supports students to write their correct answers. He will also ask students to make their own sentences from some of the identified difficult words. He may work on the any grammar related topic also. Some of these activities may be done in small groups.

7. Teacher's Remark- (शिक्षक की टिप्पणर)

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

शिक्षण योजना – विज्ञान

दिनांक	कक्षा	विषय	समय
	7	विज्ञान	60 मिनट

1. **लर्निंग आउटकम–** बच्चे विभिन्न यंत्रों से होने वाली ध्वनि को पहचानते हैं।
2. **प्रकरण–** ध्वनि
3. **सीखने–सिखाने की सामग्री–** ध्वनियों की तालिका
4. **सीखने सिखाने की प्रक्रियाएँ / गतिविधियाँ–**

क्र.	चरण	समय	आकलन के तरीके
क	**शिक्षण की शुरुआत में** (10 मिनट) • शिक्षक कक्षा में कुछ बच्चों से अपनी आवाज में कुछ बोलने को कहेगें और शेष बच्चों से कहें कि वे आवाज को मोटी/पतली, तेज/धीमी, प्रिय/अप्रिय और कर्कश/सुरीली ध्वनि के आधार पर बतायें कि आवाज कैसी है? • इस गतिविधि से आवाज के गुणों से पहचान होती है।	10 मिनट	अवलोकन
ख	**शिक्षण के दौरान–** (समय 20 मिनट) • आरम्भिक चर्चा के उपरान्त सभी बच्चों को 5–5 के समूह में विभाजित कर उनको समूह में ध्वनियों की तालिका उपलब्ध करा देगें और समझा देगें कि तालिका को कैसे भरना है?	40 मिनट	कार्य का अवलोकन एवं सहयोग

<table>
<tr><th>क्र.</th><th>चरण</th><th>समय</th><th>आकलन के तरीके</th></tr>
<tr><td>ग</td><td>
तालिका 1 जीवो/यंत्रों से उत्पन्न ध्वनि की विशेषताएं
<table>
<tr><th>क्र. सं.</th><th>जीव/वस्तु का नाम</th><th>मोटी/ पतली</th><th>तेज/ धीमी</th><th>कर्कश/ सुरीली</th><th>प्रिय/ अप्रिय</th></tr>
<tr><td>1.</td><td>कुत्ते का भौंकना</td><td></td><td></td><td></td><td></td></tr>
<tr><td>2.</td><td>कौवे का बोलना</td><td></td><td></td><td></td><td></td></tr>
<tr><td>3.</td><td>बांसुरी की आवाज</td><td></td><td></td><td></td><td></td></tr>
<tr><td>4.</td><td>ढोलक की आवाज</td><td></td><td></td><td></td><td></td></tr>
<tr><td>5.</td><td>शेर की आवाज</td><td></td><td></td><td></td><td></td></tr>
<tr><td>6.</td><td>तोते की आवाज</td><td></td><td></td><td></td><td></td></tr>
<tr><td>7.</td><td>बर्तन की आवाज</td><td></td><td></td><td></td><td></td></tr>
<tr><td>8.</td><td>कोयल की आवाज</td><td></td><td></td><td></td><td></td></tr>
<tr><td>9.</td><td>सीटी का बजना</td><td></td><td></td><td></td><td></td></tr>
<tr><td>10.</td><td>गाड़ी का हॉर्न</td><td></td><td></td><td></td><td></td></tr>
</table>
उपर्युक्त तालिका को भरते समय बच्चों की मदद करते हुए बतायेगें कि किस प्रकार जीवों के गले से निकलने वाली ध्वनियों एवं अलग अलग वाद्य यंत्रों से निकलने वाली ध्वनियों में अंतर होता है।
(समय 20 मिनट)
तालिका के भर जाने के उपरान्त विद्यार्थियों से उनका विश्लेषण कर प्रस्तुतिकरण करवायेगें।
शिक्षण के बाद में– (समय 5 मिनट)
शिक्षक बच्चों से प्रस्तुतिकरण के उपरान्त बोर्ड पर अवधारणा को समेकित कर लिखेगें ।
कुत्ता का भौंकना तीक्ष्ण ध्वनि, कौवे का बोलना अप्रिय ध्वनि, जो ध्वनि कान को अच्छी लगती है जैसे– बाँसुरी व कोयल की आवाज कर्ण प्रिय ध्वनि, ढोलक की आवाज तीव्र, शेर की आवाज
</td><td>10 मिनट</td><td>कार्य अवलोकन</td></tr>
</table>

क्र.	चरण	समय	आकलन के तरीके
	भयावह आवाज, वाहनों से उत्पन्न ध्वनि शोर, बर्तन का जमीन पर गिरना अप्रिय आवाज, पटाखों का फटना तीव्र ध्वनि के उदाहरण हैं। • किसी भी जीव/यंत्र की ध्वनि को पहचानने के लिए आवाज को मोटा/पतला, धीमा/तेज, कर्कश/मधुर व प्रिय/अप्रिय गुणों से हमारा दिमाग पहचानता है। **(समय 5 मिनट गृहकार्य देने हेतु)**		

5. प्रदत्त कार्य/गृह कार्य (असाइनमेंट) – पाठ्य पुस्तक के अभ्यास प्रश्नों के कार्य को पूर्ण करें।

6. शिक्षक की आगामी योजना–

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

शिक्षण योजना – विज्ञान

दिनांक	कक्षा	विषय	समय
	8	विज्ञान	70 मिनट

1. **लर्निंग आउटकम–** बच्चे प्रकाश यंत्रों के कार्य व उदाहरण बता लेते है।

2. **प्रकरण–** प्रकाश एवं प्रकाश यंत्र

3. **सीखने–सिखाने की सामग्री–** सूक्ष्मदर्शी, दूरबीन, हैण्डलेन्स, लेंस वाली टार्च, चश्मे, उत्तल एवं अवतल लेंस

4. **सीखने सिखाने की प्रक्रियाएँ/गतिविधियाँ–**

क्र.	चरण	समय	आकलन के तरीके
क	**शिक्षण की शुरुआत में– (10 मिनट)** ● बच्चों से प्रश्न करें कि यदि आपको बहुत दूर की वस्तु स्पष्ट देखनी हो तो उसके लिए आप किसकी सहायता लेंगे है? ● क्या आप कुछ ऐसी वस्तुओं के नाम बता सकते हैं जिनमें किसी लेंस का उपयोग किया गया हो।	10 मिनट	प्रश्नोत्तर
ख	**शिक्षण के दौरान–** **(समय 20 मिनट)** ● आरम्भिक चर्चा के उपरान्त सभी बच्चों को 5–5 के समूह में विभाजित कर हर समूह को एक–एक वस्तु/उपकरण का अवलोकन करने को उपलब्ध करायें। ● प्रत्येक समूह को निर्देश देंगें कि वह उपकरण को देखते समय निम्न बिन्दुओं पर चर्चा करें – ♦ उपकरण किस कार्य में प्रयुक्त किया जाता है? ♦ देखने वाली वस्तु उपकरण से कितनी दूर होती है? ♦ देखने पर वस्तु बड़ी/छोटी दिखती है। ♦ उपकरण में कितने और किस प्रकार के लेंस प्रयुक्त किये गये है?	40 मिनट	

क्र.	चरण	समय	आकलन के तरीके
ग	♦ उन लेंसों के आकार कैसे है? • शिक्षक समूह में जाकर बच्चों की मदद करेगें जहाँ आवश्यक हो उपकरण खोल कर भी दिखायें जिससे वस्तु/उपकरण समझने में मदद मिलें। **(समय 20 मिनट)** • बच्चों का समूहवार प्रस्तुतिकरण करायें। **शिक्षण के बाद में–** **(समय 18 मिनट)** • शिक्षक बच्चों के प्रस्तुतिकरण के बाद बोर्ड पर लिखेगें। • हैण्डलेंस का प्रयोग वस्तु को बड़ा करके देखने में प्रयुक्त होता है। यह लेंस छूने में बीच में उभरा और किनारे पतला होता है इस लेंस को उत्तल लेंस कहते है। • सूक्ष्मदर्शी सूक्ष्म वस्तुओं को देखने में प्रयोग किया जाता है। इसमें दो उत्तल लेंस लगे होते है एक उत्तल लेंस आकार में छोटा होता है और वस्तु के निकट होता है । इस लेंस को ऑबजेक्टिव लेंस कहते है। दूसरा लेंस जिसे आई पीस लेंस कहते है आँख के नजदीक होता है आई पीस लेंस वस्तु का प्रतिबिम्ब बड़ा कर देता है जिससे आंख देख सके। • दूरबीन दूर की वस्तुओं को देखने में प्रयोग किया जाता है । इसमें दो उत्तल लेंस लगे होते है दोनो लेंस बीच में उभरे और किनारे पर पतले होते है • जो लेंस वस्तु की ओर होता है उसका आकार बड़ा होता है दूसरा लेंस जो आँख के नजदीक होता है आकार में छोटा होता है । दूर की वस्तु को प्रतिबिम्ब बड़ा कर देता है जिससे आँख आसानी से देख सके। **(समय 2 मिनट गृहकार्य देने हेतु)**	20 मिनट	अवलोकन कार्य अवलोकन

5. प्रदत्त कार्य/गृह कार्य (असाइनमेंट) – विभिन्न उपकरणों का चित्र बनायें

6. शिक्षक की आगामी योजना– यह योजना दो वादनों में पूर्ण की जायेगी।

....

....

शिक्षण योजना – विज्ञान

दिनांक	कक्षा	विषय	समय
	8	विज्ञान	60 मिनट

1. **लर्निंग आउटकम–** बच्चे मृतिका की अवधारणा को स्पष्ट कर लेते हैं।
2. **प्रकरण–** मानव निर्मित वस्तुएँ (शैक्षिक भ्रमण)
3. **सीखने–सिखाने की सामग्री–** शैक्षिक भ्रमण कॉपी
4. **सीखने सिखाने की प्रक्रियाएँ / गतिविधियाँ–**

क्र.	चरण	समय	आकलन के तरीके
क	**शिक्षण की शुरुआत में – (20 मिनट)** • शिक्षक अपने विद्यालय के पास स्थित कुम्हार से बातचीत करेगें। कि विद्यालय के बच्चों को उनके कार्य से परिचित कराना है अतः ऐसे समय के लिए बात करते है जिस दिन वह मिट्टी से बर्तन का निर्माण करना हो। • समय का निर्धारण होने के उपरान्त कक्षा 8 के बच्चों निर्देश देगें कि आज कुम्हार के घर बर्तन निर्माण की विधि को देखने चलेंगें। इसके लिए बच्चें अपनी शैक्षिक भ्रमण की कॉपी लेकर चलें।	20 मिनट	
ख	**शिक्षण के दौरान– (20 मिनट)** • शिक्षक निर्धारित दिनांक............ व समय........... कक्षा के सभी बच्चों को भ्रमण के लिए ले जायेगें। कुम्हार के घर जाकर के उनके कार्य करने की प्रक्रिया का अवलोकन करेगें।	20 मिनट	

<table>
<tr><th>क्र.</th><th>चरण</th><th>समय</th><th>आकलन के तरीके</th></tr>
<tr><td>ग</td><td>
• उनसे प्रश्न पूछकर सभी बच्चे अपनी प्रोजेक्ट कॉपी में प्राप्त अनुभवों एवं अनुक्रियाओं को लिखेंगे।

शिक्षण के बाद में–
(समय 15 मिनट)
शिक्षक बच्चों को भ्रमण कार्य से संबंधित फॉर्मेट को बताएंगे तथा लिखने में सहयोग करेंगे।
<table>
<tr><th>क्र.</th><th>नाम</th><th>शैक्षिक भ्रमण का विवरण</th></tr>
<tr><td>1</td><td>प्रोजेक्ट का नाम</td><td>बर्तन निर्माण प्रक्रिया समझना</td></tr>
<tr><td>2</td><td>भ्रमणकर्ता का नाम</td><td></td></tr>
<tr><td>3</td><td>कक्षा</td><td></td></tr>
<tr><td>4</td><td>मिट्टी का प्रकार</td><td></td></tr>
<tr><td>5</td><td>कुम्हार का नाम</td><td></td></tr>
<tr><td>6</td><td>व्यवसाय से आय</td><td></td></tr>
<tr><td>7</td><td>व्यवसाय में पूंजी</td><td></td></tr>
<tr><td>8</td><td>जुडे लोगो की सं0</td><td></td></tr>
<tr><td>9</td><td>कुल उत्पादन</td><td></td></tr>
<tr><td>10</td><td>थोक मण्डी</td><td></td></tr>
<tr><td colspan="3">दिनांक ....</td></tr>
</table>
• बच्चों को शैक्षिक भ्रमण के उपरान्त तालिका को भरने का अवसर प्रदान करेंगे।
• भ्रमण से प्राप्त जानकारी और अनुभव को संक्षेप में लिखेगें।
(समय 5 मिनट गृहकार्य देने हेतु।)
</td><td>20 मिनट</td><td>अवलोकन</td></tr>
</table>

5. प्रदत्त कार्य/गृह कार्य (असाइनमेंट) – बच्चे अपने आस–पास स्थित किसी फैक्ट्री, एतिहासिक स्थान आदि का भ्रमण कर आवश्यक जानकारी को एकत्र कर एक प्रोजेक्ट बनायेगें।

6. शिक्षक की आगामी योजना–

....

....

परिशिष्ट 2 – कुछ शैक्षिक गतिविधियाँ

कोई शिक्षण–योजना मनचाही सफलता देने और लक्ष्य तक पहुँचाने में तभी सक्षम हो पाती है, जब उसमें जरूरी गतिविधियों का समुचित समावेश हो। शर्त यह है कि कक्षा–शिक्षण के दौरान उपयोग के लिए चुनी जाने वाली गतिविधियाँ कक्षा–स्तर, विषय और उद्देश्य के अनुरूप हों, लेकिन लम्बी या उबाऊ न हो और सही समय पर सही तरीके से प्रस्तुत की जाएं, जैसे– शिक्षण के शुरुआत में, पाठ के विस्तार में, समझ बनाने में, आकलन के दौरान स्फूर्तिदायक या हलचल व कौतूहल पैदा करने के लिए।

कुछ गतिविधियाँ एकल रूप में तो कुछ सामूहिक रूप से कभी शारीरिक, कभी मानसिक और कभी दोंनो स्वरूपों में पाठ्यबिन्दु के उद्देश्य के अनुरूप इस्तेमाल की जा सकती है।

लिखित और मौखिक सारी गतिविधियाँ सीखने में कारगर भूमिका निभाती हैं।

यहाँ पर भाषायी और गणितीय दक्षताओं के विकास के लिए कुछ खास किन्तु सरल गतिविधियाँ पृथक रूप से सुझायी गयी हैं। कुछ गतिविधियाँ मौखिक तो कुछ लिखित रूप से इस्तेमाल की जाने वाली हैं। कुछ कक्षा 1–2 के लिए, कुछ 3–4–5 के लिए, तो कुछ 6–7–8 के लिए उपयोगी हैं किन्तु लचीली होने के नाते ये नई शर्तों के साथ कठिनता स्तर बढ़ाकर – उच्च प्राथमिक स्तर पर, कम शर्तों के साथ कठिनता स्तर घटाकर – प्राथमिक स्तर पर थोड़ा घटा–बढ़ाकर इस्तेमाल की जा सकती हैं।

भाषा–विकास हेतु उपयोगी गतिविधियाँ

ध्वनि पहचान व सुनने की दक्षता विकास हेतु उपयोगी गतिविधियाँ

1. **निर्देश अनुपालन**– गतिविधियाँ जिनमें सुनकर कोई कार्य पूरा करना होता हो, जैसे–
   – ताली बजाओ
   – छत की ओर देखो
   – आँखे बंद करो
2. बच्चों को छोटे/बड़े समूह में शब्द के अंत में अथवा प्रथम अक्षर पर गतिविधि कराना।
3. कोई घटना, कहानी, प्रसंग सुनाकर उससे संबंधित सवाल करना
4. मैं बोलूँ, तुम बनाओ– शिक्षक के निर्देशों को सुनकर बच्चों द्वारा कागज की नाव, गेंद, मिट्टी से आकृतियाँ आदि बोर्ड पर बनाना
5. छोटी सरल कविताएं सुनना, सुनाना, समझना व उनसे सम्बन्धित उत्तर देना।
6. छोटी सरल कहानियां सुनना, सुनाना व समझकर उनसे सम्बन्धित उत्तर देना।

7. **बच्चों को समूह में बाँटना – दादा आए, बताशे लाए**

सभी बच्चों को एक गोल घेरे में खड़े करके उनके बीच में आ जाएं। बच्चे घेरे में रेलगाड़ी की तरह चक्कर लगाएंगे। शिक्षक बोलेंगे 'दादा आए, बताशे लाए' बच्चे जवाब देंगे – कितने लाए, कितने लाए ? ऐसा कई बार करें परंतु कभी आवाज़ ऊँची करके तो कभी धीमी आवाज़ में। जब आप ऊँची आवाज़ में बोलें, तब बच्चे भी ऊँची आवाज़ दें तथा जब आप धीमी आवाज़ में बोलें तो बच्चे भी धीमी आवाज में बोलें । कई बार ऐसा करने के बाद, फिर शिक्षक कोई भी एक अंक बोलें– जैसे दो, या तीन, या चार, आदि। शिक्षक ने जो अंक बोला है, उतने बच्चे झट से एक–दूसरे के पास आ जाएं और हाथ पकड़ कर समूह बना लें। यह बच्चों का नया समूह हो जाएगा।

8. **सभी बच्चों की सहभागिता हेतु** – जो गतिविधियां बड़े समूह में हों, उनमें यह सुनिश्चित करने के लिए कि हर बच्चे को बोलने का मौका मिले, आप कई तरीके अपना सकते हैं। जैसे–

- किसी वर्ण/अक्षर को ले लें, जैसे– म, और कहें "अब वे बच्चे बोलेंगे जिनका नाम 'म' से शुरू होता है।" इसी प्रकार एक–एक करके कुछ वर्ण/अक्षर बोलते रहें और सभी बच्चों को बोलने का मौका दें।
- एक अखबारी कागज की गेंद बना लें। विभिन्न क्रियाकलापों के समय अलग–अलग बच्चों की ओर गेंद फेंके। जिस बच्चे के पास गेंद जाएँ, उसे बोलने का मौका दें।
- बच्चों को चार–पाँच श्रेणियों में बाँट लें। जैसे– बरफी, जलेबी, लडडू , रसगुल्ला। अब बच्चों के नाम इन श्रेणियों में लिख कर दीवार पर लगा दें। अब किसी भी क्रियाकलाप के समय आप कह सकते हैं, "अब वो बच्चे बोलेंगे, जो 'बरफी' श्रेणी में है"। इसी प्रकार अलग–अलग समय पर अलग–अलग श्रेणियों के नाम लेकर बच्चों को बोलने का मौका दें।
- बच्चों के जन्म के महीने अथवा दिन के आधार पर भी बच्चों को बोलने का मौका दे सकते हैं। जैसे – आप कह सकते हैं, "जिन बच्चों का जन्मदिन जून माह में आता है, या जिन बच्चों का जन्म सोमवार को हुआ हो अब वो बोलेंगे" आदि।

9. **सुनो, बताओ–**

बच्चों को गोलाकार में बैठाकर मोबाइल फोन या अन्य किसी माध्यम से विभिन्न परिचित ध्वनियाँ सुनाएं यथा– किसी पशु–पक्षी की आवाज़, बस का हार्न, रेल की आवाज़,

बाँसुरी की आवाज़, सीटी की आवाज़, ढोल की आवाज़ घुंघरु की आवाज़...... आदि। अब बच्चों से पूछें कि ध्वनि किस की थी। जो बच्चा सुनकर सबसे पहले बताए प्रोत्साहन दें।

10. एक बोले, दूसरा बताए

गोलाकार में बैठे बच्चे जोड़े में एक दूसरे की ओर मुँह करके बैठ जाएँ और एक दूसरे से कुछ जानवरों, पक्षियों आदि की आवाज करके पूछें।

11. आँखें खुली हों या हों बंद

सभी बच्चों को आँखें बंद करके बैठा दें और विभिन्न प्रकार की ध्वनियां सुनाएं। सुनाकर बच्चों से उस ध्वनि के बारे में बताने को कहें कि वह ध्वनि किस वस्तु से की गई है और किस दिशा से की गई है।

12. गिनो, बताओ

बच्चों को कोई परिचित परिवेशीय चित्र दिखाकर पूछें कि चित्र में क्या क्या दिखाई दे रहा है? बच्चे पूरे वाक्य में उत्तर देंगे, जैसे कि– चित्र में लड़की आम खा रही है। इसके बाद शिक्षक वाक्य में आए हुए शब्दों को आराम से बोलेंगे और एक बच्चे से कहेंगे कि प्रत्येक शब्द पर एक ताली बजाए। इस दौरान बाकी बच्चे तालियों की संख्या गिनेंगे। अब शिक्षक बच्चों से पूछेंगे कि इस वाक्य में कितने शब्द आए । इस अभ्यास के बाद बच्चे समूह में बैठें और उन्हें दो मिनट का समय दें। बच्चों को चित्र पर आधारित अन्य 4–5 शब्दों वाला वाक्य बनाने को कहें, फिर हर समूह बारी–बारी से अपने वाक्य बताए और पहले जैसे ही ताली बजाते हुए शब्दों की संख्या को गिनें। इस दौरान शब्दों की संख्या बदलते रहें।

13 कौन–सा शब्द अलग?

बच्चों को गोल घेरे में बैठाकर 4 शब्द बोलें, जिनमें से 3 शब्द समान लय के हों लेकिन एक अन्य शब्द उस लय से भिन्न हो। बच्चों को इन शब्दों में से अलग ध्वनि वाला शब्द बताने को कहें। जैसे कि यदि शिक्षक बोलें – रीता, गीता, मीता, मधु तो बोले गए शब्द – रीता, गीता, मीता, मधु में अलग लय का शब्द है – मधु। इसी प्रकार अन्य शब्दों को लेकर गतिविधि को आगे बढ़ाएँ। बच्चों से भी संचालन कराएं।

14 कुछ मजे़दार लय वाले वाक्य बना लें। जैसे–

हरा समन्दर गोपी चन्दर,

बोल मेरी मछली , कित्ता पानी।

बच्चे इस वाक्य में से समान लय वाले शब्द खोजकर बताएंगे। जैसे – समन्दर,

चंदर। इसी प्रकार कुछ अन्य वाक्यों के साथ आगे बढ़ाएँ। बच्चों से भी इस प्रकार के वाक्य अथवा शब्द बनवा कर उनके द्वारा गतिविधि का संचालन कराएं।

15 हम भी जोडें, तुम भी जोडो

किसी कविता से मजेदार लय वाले अधूरे वाक्य लें। जैसे–

भालू आया छम–छम

ढोल बजाया ढम–ढम

अब बच्चों के साथ गोल घेरे में घूमते हुए लय में बोलें –

भालू आया छम–छम

ढोल बजाया ढम–ढम

घूमते–घूमते किसी भी बच्चे के सिर पर हाथ रखकर उसे कविता में आगे पंक्ति जोडने को कहें – जैसे कि बच्चा जोड़े – भालू आया छम–छम

ढोल बजाया ढम–ढम

घर से निकले हम हम

इसी प्रकार अन्य कविता की पंक्ति के साथ गतिविधि को आगे बढाएँ।

16. मेरे आस–पास

सभी बच्चों को एक बड़े गोल घेरे में बैठा दें। निर्देश दें कि सभी बच्चे अपने आसपास की वस्तुओं को ध्यानपूर्वक देखेंगे और किन्हीं दो वस्तुओं के नाम याद रखेंगे। बच्चों द्वारा आसपास देख लेने पर शिक्षक ताली बजाएंगे और किसी एक बच्चे को कागज की गेंद देकर उसे आगे बढाने को कहेंगे। बच्चे काग़ज़ की गेंद को एक–दूसरे को देते हुए आगे बढाते जाएंगे। शिक्षक जैसे ही ताली बजाना बंद करेंगे तो गेंद जिस बच्चे के पास हो, शिक्षक उससे किसी भी एक वस्तु का नाम बताने को कहेंगे जिसे उसने अपने आस–पास देखा। उदाहरण के लिए, बच्चे ने कहा– बोतल। अब वही बच्चा इस शब्द की प्रत्येक ध्वनि को अलग–अलग कर ताली बजाते हुए बोलेगा– बो/त/ल। बच्चे को यह भी बताना होगा कि इस शब्द में कितनी ध्वनियाँ आईं। इसी तरह फिर गेंद को आगे बढाते हुए अन्य बच्चों के साथ जारी रखें।

17. श्रीमान जी उपस्थित

बच्चों से कहें कि आज उनकी उपस्थिति अलग तरीके से ली जाएगी। हर बच्चे को ध्यान से सुनते हुए अपना नाम आने पर श्रीमान जी उपस्थित बोलना होगा। उपस्थिति लेते

समय बच्चों के नाम की ध्वनियों को अलग–अलग तोड़ कर स्पष्ट तरीके से बोलें जैसे– किसी का नाम गोपाल है तो आप बोलेंगे /गो/पा/ल। यदि गोपाल कक्षा में उपस्थित है, तो वह खड़े होकर अपना पूरा नाम बोलेगा – श्रीमान जी गोपाल उपस्थित तथा अपने नाम के अलग – अलग अक्षरों को ताली से स्पष्ट करेगा। इसी तरह से शेष बच्चों की उपस्थिति लें, जैसे–

/सा/य/रा/
/ह/र/भ/ज/न/
/डे/जी/

18. नाम क्या है?

सभी बच्चों को गोल घेरे में बैठाएं। आप अपने पास कुछ चित्र कार्ड उलट कर रख लें। अब एक चित्र कार्ड जैसे–मोर का चित्रकार्ड उठाएं। कार्ड उठाते समय ध्यान रखें कि बच्चे इस चित्र को देख न पाएं। चित्र उठाकर बच्चों से कहें कि मेरे पास एक चित्र है जिसका नाम 'म' से शुरू होता है। बच्चे कोई भी संभावित उत्तर दे सकते हैं, जैसे– मोमबत्ती, मोबाइल, मोर इत्यादि। सही उत्तर आने तक 'ना जी ना' कहते रहें। जब सही उत्तर आ जाए तो सभी बच्चों को चित्र दिखाएं। यदि कुछ शब्दों के बाद भी सही उत्तर न आए तो चित्र दिखाएं और नाम बताने को कहें। इसी तरह से अन्य चित्रों के साथ गतिविधि को आगे बढ़ाएं। बच्चे स्वयं भी संचालन करें।

19. देखो–बोलो

बच्चों को गोले में बैठाएं तथा आस–पास की वस्तुओं को देखने को कहें। इसके बाद किसी बच्चे से पूछें कि उसने क्या–क्या देखा? इसके बाद आप कोई एक वर्ण/अक्षर बोलकर बच्चों से उनके आस पास की उस वस्तु का नाम बोलने के लिए कहें जो बोले गए वर्ण से शुरू होती हो। जैसे– आप ने कहा 'प'। अब बच्चे अपने आस–पास देखते हुए उन वस्तुओं के नाम बताएँगे जिनके नाम का पहला अक्षर 'प' होगा जैसे– पंखा, पेन, पेंसिल... आदि। यदि दिए गए वर्ण/अक्षर से किसी वस्तु का नाम न मिले तो बच्चों को कोई दूसरा वर्ण/अक्षर दें। इसी प्रकार बच्चों द्वारा भी गतिविधि को आगे बढ़वाएं।

20. सुनो, कूदो

सभी बच्चों को एक गोल घेरे में खड़ा कर दें तथा बताएं कि किसी अक्षर के साथ एक खेल–खेलेंगे। जैसे कि अगर यह खेल 'र' अक्षर के साथ खेलना है तो आप कुछ शब्द बोलेंगे जिन्हें बच्चों को ध्यान से सुनना है। अगर शब्द की पहली ध्वनि 'र' हो, तो सभी को आगे कूदना है और यदि शब्द की पहली ध्वनि 'र' नहीं है तो सभी को पीछे कूदना है। अब

आप एक के बाद एक तेज़ी से शब्द बोलें– कुछ जो 'र' से शुरू होते हों और कुछ जो 'र' से प्रारंभ नहीं होते हों। बच्चों को शब्द की शुरुआती ध्वनि को पहचान कर आगे या पीछे कूदना है। इस

गतिविधि के प्रारंभ में ऐसे शब्द लें जिनके शुरुआती वर्ण के साथ मात्रा न हो। उदाहरण के लिए 'र' अक्षर की पहचान के लिए आप रसगुल्ला, रसमलाई, रबड़ी, रस, रस्सी। इसी प्रकार अन्य वर्ण चुनकर आगे बढ़ाएं तथा बच्चों से भी करावाएं।

21. सुनो, बनाओ

सभी बच्चों को दो–दो के समूह में आमने–सामने बैठा दें। अब हर समूह को एक–एक ध्वनि दें। जैसे– 'गा' 'या'। अब हर समूह से एक बच्चा 'गा' और दूसरा बच्चा 'या' पर खत्म होने वाला शब्द बोलेगा जैसे – आएगा, बुलाया। इस खेल में बच्चे सार्थक व निरर्थक दोनों प्रकार के शब्द बना सकते हैं।

22. नाम बताओ

सभी बच्चों को गोल घेरे में बैठा दें तथा कुछ वर्णों की पर्चियाँ बनाकर रख लें। अब एक–एक कर किसी एक वर्ण की पर्ची रूमाल में बाँधें तथा ताली बजाते हुए रूमाल को आगे बढ़वाएं। जिस बच्चे के पास ताली रुके उससे रूमाल लेकर पर्ची निकालें तथा वर्ण पढ़ें। मान लीजिए लिखा गया अक्षर 'म' है। अब बच्चा उस अक्षर से कक्षा के कम से कम दो बच्चों के नाम बताएं, जैसे– मदन, ममता। इसी के दूसरे चरण में जिस बच्चे के पास पर्ची पहुँचे वह बताए गए वर्ण को लगाकर कक्षा के दो बच्चों के नाम के पहले अक्षर को उस वर्ण से बदलकर बताए , जैसे– यदि पर्ची पर 'ब' निकलता है तो – मदन – बदन, ममता–बमता हो जाएगा।

23. अदल बदल

सभी बच्चों को चार–चार के समूह में बैठा दें। हर समूह को उनके बस्ते की वस्तुएं बाहर निकालकर रखने के लिए कहें । बच्चों को स्पष्ट कर दें कि हर समूह के सामने जो वस्तुएँ रखी हैं उनके नाम के पहले अक्षर को शिक्षक द्वारा समूह को दिए गए अक्षर से बदलकर बोलना है जैसे कि यदि शिक्षक ने किसी समूह को वर्ण दिया – 'क' तो उस समूह को अपने सामने रखी हर वस्तु के नाम में पहला अक्षर 'क' जोडकर ही बोलना है। अब प्रत्येक समूह को एक–एक अक्षर दें जैसे– ब, ह, न, ट। अब प्रत्येक समूह को अपने पास उपलब्ध सामान की पहली ध्वनि को दी गयी ध्वनि से बदलना है। जैसे– बस्ता–नस्ता, किताब–निताब, पेन–नेन इत्यादि।

24. अद्‌भुत अक्षर

बच्चों को गोलाकार में बैठा दें और कविता की एक पंक्ति सुनाएं। लाठी लेकर भालू आया छम, छम, छम। बच्चों को तीन–चार बार इस पंक्ति को सुनाने के बाद उन्हें एक वर्ण दें– 'म' तथा कहें कि हर शब्द के पहले वर्ण के स्थान पर 'म' को रखकर कविता बोलें– जैसे– माठी मेकर मालू माया, मम, मम, मम। इसी प्रकार अन्य कुछ वर्ण देकर इस पंक्ति को बोलवाएं।

बोलने की दक्षता विकास में सहायक गतिविधियाँ

1. बोलो–बोलो, क्या–क्या होता?

बच्चों को गोल घेरे में खड़ा करके रेलगाड़ी की तरह चलने को कहें। आप घेरे के अंदर "बोलो बोलो, क्या–क्या होता" कहते हुए ताली बजाते हुए चलें। बच्चे दोहराएं – "बोलो बोलो, क्या–क्या होता"। चलते चलते किसी बच्चे के सामने जाकर कहें– 'मीठा' वह बच्चा मीठी चीज का नाम बताएगा। बच्चों के द्वारा गतिविधि को आगे बढाएं।

2. कार्ड उठाओ, भाव बताओ

बच्चों को गोल घेरे में बैठा दें। उनके बीच में पहले से तैयार किए हुए कुछ भावों पर आधारित चित्र कार्ड रख दें जैसे हँसता हुआ बच्चे का चेहरा, रोते हुए बच्चे का चेहरा, गुस्से में बच्चे का चेहरा, चिन्ता में चेहरा, शरमाते हुए चेहरा...... बच्चों को उनकी शर्ट के रंग अथवा नाम के पहले वर्ण से बुलाएं जैसे कि वे बच्चे आएं जिनकी शर्ट में सफेद रंग है, या जिनके

नाम का पहला अक्षर 'स' है। बच्चे आकर कोई एक कार्ड उठाएंगे और बताएंगे कि उस कार्ड में प्रदर्शित चेहरे का भाव कैसा है और उस जैसा चेहरा उनका कब हुआ था – अर्थात् वह किस बात पर बहुत हँसे थे, रोये थे, या गुस्सा हुए थे आदि।

3. पसंद : नापसंद

कुछ पशु–पक्षियों , फल–सब्जियों के चित्र कार्ड अथवा चित्र चार्ट लें। इन्हें बच्चों के बीच रख दें अथवा दीवार पर टाँग दें। कागज की गेंद की मदद से बारी–बारी सभी बच्चों को मौका दें। बच्चे चित्र में अपनी पसन्द अथवा नापसन्द के बारे में बताएं तथा पसन्द – नापसन्द का कारण भी प्रस्तुत करें।

4. अगर कहीं मैं तोता होता

बच्चों को 'अगर कहीं मैं तोता होता' कविता कराएं। बच्चे कविता में पशु–पक्षियों के नाम बदल कर वाक्यों में बताएंगे जैसे – कि कोई बच्चा कहे कि ***–अगर कहीं मैं हाथी होता*** तो वह बताएगा कि हाथी होने पर वह क्या–क्या करता। शिक्षक बच्चों को मजेदार वाक्य बनाने के लिए प्रेरित करेंगे जैसे– अगर कहीं मैं हाथी होता, तो बच्चों का साथी होता, अपनी पीठ पर बैठाकर सबको विद्यालय पहुँचाता।

5. सुनो और बनाओ

बच्चों को 'यू शेप' में बैठाएँ। किताब से कोई चित्र लें। बच्चों को उस चित्र के बारे में बोलकर बताएं। बच्चे सुनकर चित्र बनाने का प्रयास करेंगे। जैसे कि–

– चित्र में सबसे नीचे एक तालाब है

– तालाब में एक कमल का फूल है

– तालाब में दो बत्तखें तैर रहीं हैं

– तालाब के किनारे एक आम का पेड़ है

– पेड़ पर आम लगे हैं

– एक बंदर आम खा रहा है

बच्चों द्वारा चित्र बना लेने के बाद उन्हें अपने बनाए चित्र को वास्तविक चित्र से मिलाने को कहें। इसके बाद कोई दूसरा चित्र लेकर किसी बच्चे से उसके निर्देश बोलवाएं। बाकी बच्चे चित्र बनाएंगे।

6. कैसे बनायाः ऐसे बनाया

बच्चों को किसी भी छुट्टी के दिन घर से कागज, दफ्ती, मिट्टी, कपड़ा, टूटी–फूटी वस्तुओं, ढक्कन, बोतल, छिलके , तीली आदि से कोई भी चीज बनाकर लाने को कहें। अगले दिन कक्षा में बच्चों से पूरी कक्षा के सामने उसका प्रदर्शन कराएं। प्रदर्शन करते समय बच्चे बताएंगे कि उन्होंने क्या बनाया है , और कैसे बनाया है।

7. बोलो, बोलो कौन है वो

बच्चों को गोलाकर अथवा यू शेप में बैठा दें। फिर बच्चों से कहें कि मेरी मुट्ठी में एक 'फल' है, बताओ वह क्या है ? बच्चे कहेंगे– उसके बारे में कुछ हिंट दें। बच्चों को हिंट दें

- यह फल पीले रंग का है
- लंबा है, बेलनाकार है
- दर्जन में बिकता है
- छिलका उतार कर खाया जाता है

बच्चों द्वारा ***'केला'*** पहचान लेने पर अन्य बच्चों द्वारा गतिविधि को आगे बढ़ाएं।

8. आप बोलें : मै बनाऊँ

श्यामपट्ट के पास जाकर बच्चों से कहें कि मुझे कोई चित्र बनाना है। आप बोलकर बताएं कि कैसे–कैसे बनाया जाए। जैसे कि 'आम' का चित्र बनाना है। तो बच्चे निर्देश देंगे–

- पहले गोला बनाएं
- फिर नीचे की तरफ गोले में चोंच (घुंडी बनाएं)

....

बच्चों के निर्देशों के अनुसार चित्र बनाते रहें। फिर पूछें क्या यह आम बन गया?

बच्चों के द्वारा **हाँ** या **ना** रहने पर इसी गतिविधि को बच्चों की मदद से आगे बढ़ाएं।

9. देखो भालो, बोलो जी

बच्चों को गोल घेरे में बैठा दें। सभी से कक्षा की चीजों को ध्यानपूर्वक देखने को कहें। इसके बाद घूमते हुए किसी बच्चे के सिर पर हाथ रखें। वह बच्चा हाथ रखते ही आँखें बंद कर लेगा। अब बच्चे से कक्षा के बारे में कोई प्रश्न पूछें 'जैसे–

- कक्षा में कौन सी चीजें सफेद रंग की हैं।

- कुल कितनी खिड़कियाँ हैं।
- गोल चीजें कौन–कौन सी हैं।
- पानी में डूब जाएं ऐसी चीजें कौन सी हैं।

बच्चा आँखें बंद करके ही उत्तर देगा। इसके बाद अगले बच्चों से इसी प्रकार सवाल करें।

10. दाम क्या है?

बच्चों को चार समूहों में बैठा दें। हर समूह को किसी एक चीज का विक्रेता बना दें। जैसे– समूह 1– सब्जी, समूह 2–फल, समूह 3– मिठाई, समूह 4– राशन की दुकान।

इसके बाद हर दुकान पर जाकर बच्चों से बातचीत करें–

- क्या – क्या बेच रहे ?
- क्या – क्या दाम है......आदि
- बच्चे अपनी अपनी दुकान पर बिक्री से संबंधित आवाजें भी लगाते रहेंगे, जैसे– ले लो ताजी हरी सब्जी।

11. कौन क्या है?

बच्चों को गोलाकार में बैठा दें। किन्हीं 6 बच्चों को अपने पास बुलाकर 2–2 के तीन समूह बना दें। एक समूह को सब्जी वाले व खरीददार का रोल प्ले करना है, दूसरे को डाक्टर व मरीज का तथा तीसरे को टीचर व बच्चे का। तीनों समूहों को कुछ डायलॉग तैयार करा दें। अब प्रत्येक समूह एक–एक कर आपस में बातचीत करेंगे। बच्चे सुनकर पता लगाएंगे कि बातचीत किस किस के बीच हो रही है।

12. कौन निकल सकता नीचे से

बच्चों से उनके द्वारा देखे गए किसी जानवर के बारे में पूछे। अगर बच्चे जानवर का नाम बताते हैं– बकरी , तो बच्चों से पूछें कि कक्षा की कौन–कौन सी चीजें हैं जो बकरी के पैरों के नीचे से निकाली जा सकती हैं। बच्चों से बीच बीच में कुछ संवाद भी करते रहें जैसे– *ये तो नही निकल पांएगी* । इसी तरह अन्य जानवरों का नाम बताकर बच्चों से गतिविधि आगे बढ़वाएं।

13. कैसे बनेगा कौआ मोर

बच्चों से कौआ और मोर के बारे में अलग–अलग बातचीत करें– आकार, रंग, शारीरिक बनावट आदि। अब उनसे कहें कि अगर कौआ को मोर बनाना हो तो उसमें–

- क्या हटाना पड़ेगा
- क्या जोड़ना पड़ेगा
- क्या वही रहेगा

इसी तरह अन्य पशु–पक्षियों के बारे में बता करें।

14. नहीं, ये हो नहीं सकता

बच्चों से कुछ ऐसी बातें करें जो कि संभव नहीं हो सकती जैसे कि–

- चींटी के ऊपर हाथी को नहीं बैठाया जा सकता
- भैंस साइकिल नहीं चला सकती......

इसी प्रकार कुछ असंभव कल्पनाएं बच्चे करें और कक्षा में बताएं।

15. मेरा घर : मेरा स्कूल

बच्चों को गोल घेरे में बैठाएं और अपने घर से स्कूल आने तक का एक नक्शा जैसा बोलकर प्रस्तुत करें जैसे कि – मेरे घर के ठीक सामने कुआं है। जिसके बाएं से होकर सड़क गुजरती है। सड़क कुछ दूर जाकर दायीं ओर को मुड़ जाती है जहां पर नीम का एक पेड़ है जिसके पास मेरा स्कूल है। इसके बाद बच्चों से कहें कि वे भी अपने घर से स्कूल तक आने का नक्शा व रास्ते में पड़ने वाली जगहों, चीजों के बारे में बोलकर बताएं।

16. अंतर खोजो, बताओ

(क) कक्षा में दो चित्र टाँग दें। दूसरा चित्र पहले जैसा ही हो लेकिन उसमें 8–10 बारीक अंतर हों। बच्चे उन अंतरों को खोजें और बताएं।

(ख) बच्चों को दो परिचित वस्तुएं दिखाएं या उनका नाम बताएं जैसे कि–

- पेन और बोतल
- पत्थर और फूल

बच्चे इनमें अंतर बताएं।

17. बताओ तो जानूँ

किसी एक बच्चे को कक्षा के बाहर भेजें। बच्चा बाहर से कोई चीज देखकर आए। कक्षा के बाकी बच्चे उस चीज का अनुमान लगायें। बाहर गए बच्चे को केवल 'हाँ' या 'ना' कहते हुए उत्तर देना है। शेष बच्चे सवालों के द्वारा उस चीज को पता करने की कोशिश करेंगे।

18. चित्र पर बातचीत

नीचे दिए गए चित्र (अथवा बच्चों की पुस्तक से कोई अन्य चित्र) बच्चों को दिखाएं। बच्चों से पूछें कि चित्र में क्या हो रहा है। फिर बच्चों से इस पर आपस में बातचीत करने को कहें।

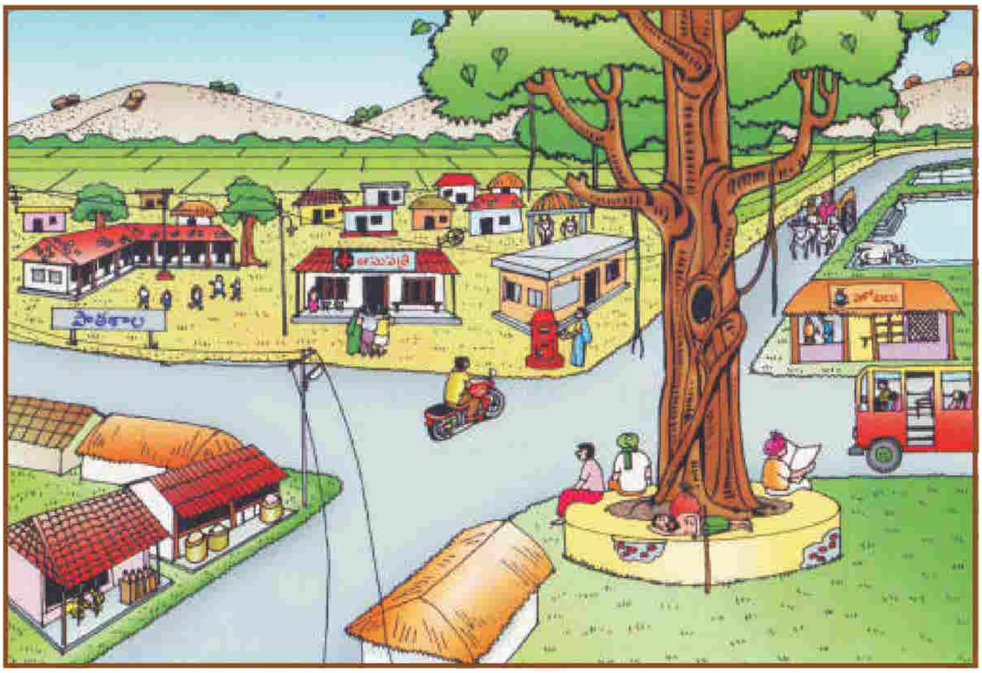

पठन दक्षता विकास में सहायक गतिविधियाँ

- किसी सरल अंश को बार–बार मौखिक रूप से बोल बोलकर पढ़ना
- मौन पाठन (चुपचाप स्वतंत्र रूप से)
- किसी अखबार पत्रिका, पोस्टर, कैलेंडर, कहानी की किताब पर नियमित रूप से चर्चा
- विशेष टॉक टाइम– पढ़े गए अंश पर चर्चा/बातचीत के लिए
- पढ़ने की जोड़ी बनाना (जोड़ी में पढ़ना – सवाल जवाब करना)
- अनुमान लगवाने संबंधी गतिविधियाँ (पाठ पर)
- प्रश्न निर्माण गतिविधियाँ

- पठित अंश (विशेषकर कहानी) का नक्शा बनाना (समस्या – घटना – परिणाम)
- पठित अंश पर मानसिक छवियाँ बनाना
- पठित अंश पर विवरण मैप/अवधारणात्मक मानचित्र (Concept Map) बनाना।
- पठित अंश पर अनुक्रम चार्ट बनवाना

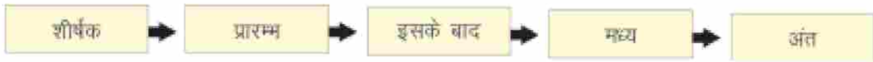

- पठित अंश के कार्य कारण एवं प्रभाव पर विचार व्यक्त करवाना
- पठित अंश में तुलना और समानता कराना
- बच्चों में दृश्य शब्दावली विकसित करने की गतिविधियाँ करना

वर्ण पहचान में सहायक गतिविधियां

1. तेरा अक्षर, मेरा अक्षर

- बच्चों को कक्षा से बाहर खुले मैदान में लाएं।
- जमीन पर वर्गाकार सारणी बनाएं और प्रत्येक खाने में एक वर्ण लिख दें या वर्ण कार्ड रख दें।
- अब बच्चों को बारी–बारी से किसी वर्ण खाने में कूदने को कहें। बच्चा उच्चारण करते हुए बोले जा रहे वर्ण खाने में कूदेगा। यदि वह गलत खाने में कूदता है तो बच्चों से सही खाने का पता कराएं। यह काम सभी बच्चों से कराएं।

गतिविधि का विस्तार–

गतिविधि के अगले चरण में वर्ण के स्थान पर शब्द कार्ड रख दें तथा शब्द बोलते हुए बच्चों को संबंधित खानों में कूदने को कहें। क्रमशः इस गतिविधि का संचालन बच्चों से कराएं।

2 साथी खोजें

- बच्चों की संख्या से आधे वर्ण कार्ड बना लें तथा आधे उन वर्णों से बनने वाले शब्द कार्ड जैसे – क, कलम
- बच्चों को गोल घेरे में बैठा दे।
- आधे बच्चों को वर्ण कार्ड तथा आधे बच्चों को शब्द कार्ड दे दें।
- अब बच्चे अपने वर्ण से बनने वाले शब्द और शब्द से बनने वाले वर्ण कार्ड वाले साथी को खोजें और बताएं।

- इसके बाद दोनों बच्चे मिलकर उस वर्ण से संबंधित पुस्तक में दिए गए व कक्षा में लिखे अन्य शब्दों को खोजें।

3. हवा हवाई

(क) बच्चों को यू शेप में बैठाएं।

- किसी एक बच्चे को अपने पास बुलाकर उसके कान में कोई वर्ण बोले।
- बच्चा हवा में उंगली के इशारे से उस वर्ण को बनाएगा।
- बाकी बच्चे उस वर्ण को पहचान कर उच्चारण करेंगे।
- सभी को अवसर देते हुए गतिविधि को आगे बढ़ाएं।

(ख) गतिविधि के दूसरे चरण में बच्चों को दो–दो के समूह में बाँट दें।

- निर्देश दें कि जोड़े में से एक बच्चा दूसरे बच्चे की पीठ पर उंगली से कोई वर्ण लिखे।
- दूसरा बच्चा उस वर्ण को बोलकर बताए।
- फिर यही काम दूसरे बच्चे द्वारा किया जाए।
- गतिविधि का विस्तार करते हुए वर्ण के स्थान पर शब्द लिखवाएं।

4. चुनो / बनाओ

- बच्चों से बाहर मैदान से कुछ छोटे कंकड़, पत्थर, तीलियां , पत्तियां ,मनके, छोटे ढक्कन जैसी चीजें एकत्रित कर मंगवाएं।
- बच्चों को बड़े अथवा छोटे समूह में बैठाएं।
- अब कोई वर्ण बोलें ।
- बच्चे चुन कर लाई गई सामग्री से उस वर्ण को बनाएंगे।
- गतिविधि को विस्तार देते हुए यह कार्य सरल शब्दों के लिए भी कराया जा सकता है।

5. हां जी, ना जी

- बच्चों को तीन चार छोटे समूहों में बैठाएं।
- हर समूह को वर्ण तंबोला दें। ध्यान दें हर तंबोला में वर्ण अलग–अलग लिखे हों ।
- अब कोई शब्द बोलें जैसे – टहल
- जिस बच्चे के तंबोला में इस शब्द का प्रथम अक्षर यानी ट हो वे बच्चे हैं जी, है

जी कहते हुए उस वर्ण पर पत्ती ,फूल ,कंकड़ या तीली रखेंगे।

- जिस समूह में वह वर्ण नहीं है वह कहेंगे ना जी, ना जी ।
- इसी प्रकार नया शब्द लेकर खेल को आगे बढ़ाएं।

6. शब्द बनाओ और बताओ

- बच्चों को चार समूहों में बाँट दें।
- हर समूह को वर्ण कार्ड दे दें।अपनी ओर से कुछ शब्द बोले जैसे धन, घर , घट, नहर। बच्चे उन वर्णों को छाँट कर मिलाएंगे तथा उस शब्द को बनाएंगे ।
- गतिविधि के अगले चरण में बच्चे आपस में इस गतिविधि को आगे बढ़ाएंगे तथा स्वयं भी कुछ नए शब्द भले ही वह निरर्थक हो बनाएंगे। इसी प्रकार से निम्नांकित तरीकों से भी बच्चों से शब्दों को बनवाएंगे–
- वर्ण चकरी से शब्द बनवाना।
- फिसल पट्टी से शब्द बनवाना
- पाकेट बोर्ड से शब्द बनवाना।
- बारहखडी से शब्द बनवाना
- पाँसे से शब्द बनवाना

1. तंबोला से शब्द बनवाना

बच्चों से कहें कि इस तंबोला में कम से कम 10 शब्द छिपे हैं उन्हें ढूंढ कर बताओ।

2. जय हो

बच्चों को चार समूह में बैठाए। हर समूह को एक जैसे 6 कार्ड दे जिन पर क्रमशः क ,म, र, न, ब, ल लिखा हो। हर समूह से इन वर्णों को मिलाकर ज्यादा से ज्यादा शब्द बनवाएं। जो समूह सबसे ज्यादा शब्द बनाएं उसे प्रोत्साहित करें।

3. मौखिक अंत्याक्षरी

बच्चों को गोल घेरे में बैठाकर कोई शब्द दें और उससे संबंधित मौखिक **अंत्याक्षरी** कराएं।

4. लिखित अंत्याक्षरी (लेखन क्षमता विकास हेतु)

बच्चों को कोई शब्द देकर उनकी कॉपी पर लिखित **अंत्याक्षरी** कराएं।

5. जोड़े में अंत्याक्षरी

बच्चे को दो दो के जोड़े में बैठाकर एक दूसरे के साथ **अंत्याक्षरी** कराएं।

6. मेरा अक्षर, मेरा शब्द

कक्षा में कुछ वर्ण चार्ट और शब्द चार्ट टाँग दे। एक डब्बे अथवा गोले में वर्ण तथा दूसरे में शब्द कार्ड (शब्द जो चार्ट पर लिखे हो , वही) टाँग दें। बच्चे एक – एक कर आएं और अपने गोले अथवा डिब्बे से वर्ण अथवा शब्द उठाएं। अब बच्चे उठाए गए शब्द को चार्ट में ढूंढकर बताएंगे। बच्चों द्वारा वर्ण अथवा शब्द खोज लेने पर पुनः कार्ड वापस रखवा कर फिर से उठवाएं और नए वर्ण/ अक्षर को ढुंढवाएं।

7. जब हम मिले

बच्चों को गोल घेरे में खड़ा करके उनके गले में एक वर्ण कार्ड पहना दे। अब कुछ अमात्रिक शब्द बोलें जैसे – घर, चल ,नल, हल, पल, कर, मत। जिन बच्चों के गले में यह वर्ण कार्ड होंगे वे गोले के बीच में आकर मिल कर बोला गया शब्द बनाएंगे। गतिविधि का विस्तार करते हुए मात्राएं गले में टाँग कर मात्रिक शब्द बनवाएं।

8. देखो, बताओ

बच्चों को यू शेप में बैठाएँ। उन्हें कुछ परिचित चित्र दिखाएं जैसे – कुत्ता, बिल्ली, बंदर, तोता, कबूतर, छिपकली ,कौवा, मोर, हाथी, शेर, सांप, कैची, गिलास आदि। बच्चे जो चित्र देखेंगे तुरंत उसका नाम बताएंगे तथा उसके पहले वर्ण को भी बोलेंगे जैसे – मोर का चित्र देखकर ***मोर, म*** ।

9. घर मे घ

बच्चों को यू शेप में बैठाएँ। उनसे कुछ देर तक उनके घर की वस्तुओं के बारे में बातचीत करें कि उनके घर में क्या–क्या है। जैसे कि – नल, भैंस, पंखा, बर्तन, पेड़। अब बच्चों को निर्देश दें कि उन्हें अपने घर की किन्ही दो चीजों के नाम बताने हैं और उनके नाम में आया पहला अक्षर भी जैसे कि –***गाय*** में ***ग*** । क्रम को रोचक बनाने के लिए कागज की गेंद से बच्चों को बताने के लिए चुनें।

लेखन दक्षता विकास में सहायक गतिविधियाँ

- दृश्य चित्र दिखाकर बच्चों से उसमें मौजूद चित्रों/चीजों के नाम व हो रही क्रियाओं के बारे में लिखवाना

- कक्षा में मौजूद व बाहर की अन्य वस्तुएं दिखाकर उनके नाम लिखवाना
- किसी घटना का वर्णन कर उसमें मौजूद प्रमुख पात्रों के नाम लिखवाना
- कहानी/कविता सुनाकर उसमें आए पात्रों के नाम लिखवाना
- पुस्तक में संबंधित पाठ में आए चित्रों के नाम लिखवाना, वर्कबुक में लेखन अभ्यास कराना
- कोई परिस्थिति देकर उसमें मौजूद चीजों के नाम लिखवाना जैसे–मेला, बाजार, तालाब, बाग, मिठाई की दुकान
- बच्चों के दो–दो के जोड़े बनाकर एक दूसरे के बस्ते में मौजूद चीजों के नाम लिखवाना
- पूछकर एक दूसरे के आस पड़ोस की चीजों के नाम लिखवाना
- बच्चों से एक दूसरे का नाम पूछकर लिखवाना (प्रत्येक बच्चा कम से कम दस बच्चों के नाम लिखे)
- घर पर मनाए गए किसी त्योहार के बारे में लिखवाना
- बच्चों की पसन्द की किसी वस्तु पर लिखवाना।
- अधूरी कहानी/कविता को पूरा कराना।
- शब्द से वाक्य बनाना
- **नामों का संग्रह करना**

  आप जहाँ कहीं भी रहते हैं वहाँ तरह–तरह के नाम आपको दुकानों, बसों या मील के पत्थरों और दीवारों पर मिल जाएंगे। गाँवों में दीवारों पर लिखें नारे या पोस्टर और विज्ञापनों में लिखी जानकारी भी काम आ सकती है। बच्चों से कहिए कि वे घर से स्कूल के रास्ते में दिखने वाले नामों या संदेशों की सूची बनाएँ। सभी नामों को ब्लैकबोर्ड पर लिख कर, एक–एक कर बच्चों से उनकी व्याख्या (यानी वह कहाँ लिखा है, उसका अर्थ क्या है) करने के लिए कहें।
- **सिर्फ एक शब्द–**

  पाँच–पाँच बच्चों के समूह बना दीजिए। हर समूह के पास एक कागज या कॉपी और पेंसिल होगी। हर समूह में एक बच्चे को "नेता, नियुक्त कर दीजिए। नेता बना बच्चा कोई वाक्य सोचेगा पर कागज पर वह सिर्फ एक शब्द लिख कर कागज और पेंसिल अगले बच्चे को थमा देगा। यह बच्चा भी सिर्फ एक शब्द जोड़ेगा। शब्द ऐसा होना चाहिए जो पिछले शब्द से शुरू हुए वाक्य को आगे बढ़ाता हो। वाक्य पूरा होने तक कागज समूह में घूमता

रहेगा। समूह का कोई भी सदस्य यह दावा कर सकता है कि वाक्य बीमार पड़ गया है, अतः उसे छोड़ दिया जाए। यदि बाकी बच्चे इस दावे से सहमत हों तो कागज नेता को वापस दे दिया जाएगा और वह एक नए वाक्य का पहला शब्द लिखेगा।

- बच्चे किसी भी विषय में हाल ही पढ़े किसी पाठ का सारांश बताता एक पैराग्राफ लिखें और उस पर एक चित्र बनाएं।
- पुस्तक/कहानी के लेखक को पत्र लिखें। पत्र में इस बात की जानकारी लिखें कि उस किताब या कहानी में क्या अच्छा लगा या क्या बदला जा सकता है।
- छात्रों को कहानी सुनाएं, लेकिन उन्हें इसका अंत न बताएं। उनसे कहें कि वे अनुमान लगाएं और लिखें कि आगे क्या हुआ होगा। याद रखें कि कहानी के मामले में कोई भी अंत सही या गलत नहीं होता।
- विभिन्न परिस्थितियाँ देकर पत्र लिखवाना।
- भरो तो जानें गतिविधि

    1. लगभग 10 वाक्यों की कोई परिचित कहानी चुनिए। अनुच्छेद/पाठ/कहानी में बहुत सारे संकेत और सहायक जानकारी होनी चाहिए ताकि बच्चे गायब शब्द पहचान सकें। यह सुनिश्चित कर लें कि दिया जा रहा पाठ/कहानी बच्चों के पठन स्तर की हो।
    2. पहले दो–तीन वाक्यों में से कोई भी शब्द गायब नहीं करना चाहिए ताकि बच्चों को यह अच्छी तरह से समझ में आ जाए कि कहानी किस बारे में है।
    3. रैंडम तरीके से शब्द हटाना। शब्द नियमित अन्तराल से हटाए जाएँ, जैसे प्रत्येक पाँचवें अथवा सातवें शब्द को हटाना, बिना यह देखे हुए कि वह शब्द किस प्रकार का है।

प्यासा कौआ

चोंच, आराम से, घड़ा, उपाय, पानी, पत्थर, थोड़ा, प्यासा, सोचने, धीरे–धीरे

ऊपर दिये गए शब्दों का प्रयोग करते हुए कहानी पूरा करें–

एक बार एक कौआ बहुत ....था। उसको कहीं ....नहीं मिल रहा था। बहुत ढूँढ़ने पर उसको एक............दिखाई दिया। घड़े में बहुत ....सा पानी था। कौए की ....पानी तक पहुँच नहीं पा रही थी। वह बड़े ध्यान से ....लगा और उसे एक ....सूझा। पास ही ....के कुछ टुकड़े पड़े थे। कौए ने एक एक पत्थर उठाया और घड़े में डालता गया। ....पानी ऊपर आने लगा। कौआ लगातार पत्थर डालता

गया। जल्दी ही पानी इतना ऊपर आ गया कि कौए की चोंच वहाँ तक..............पहुँच गई।

- कहानी की घटनाओं को सही क्रम में व्यवस्थित करके लिखवाना।

  जैसे, कछुआ और खरगोश की कहानीः

  (क) खरगोश पेड़ के नीचे सो गया।

  (ख) कछुआ काफी पीछे रह गया।

  (ग) खरगोश ने मन ही मन सोचा कि ये सुस्त और धीमी चाल चलने वाला कछुआ क्या दौड़ेगा।

  (घ) कछुए और खरगोश में एक दिन दौड़ की प्रतियोगिता हुई।

  (ङ.) कछुआ धीरे–धीरे चलकर जीत गया। खरगोश तेज़ी से भागा और आगे निकल गया।

- चित्र में दिए गए पात्रों को देखकर लिखना, उनके मध्य हो रहे संवादों को लिखना।

- दी गई जानकारी के आधार पर एक अनुच्छेद लिखना।

- किसी की विषेशताएँ बताने वाले ढाँचे का उपयोग करते हुए अनुच्छेद लिखना।

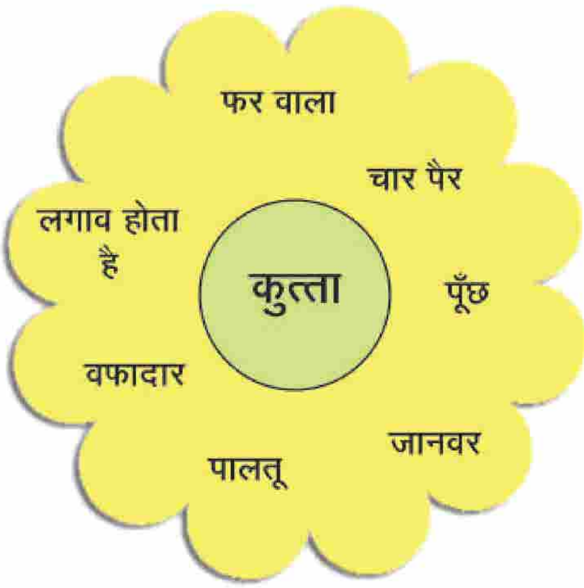

- दी गई जानकारी का उपयोग करते हुए एक अनुच्छेद लिखना। अनुच्छेद को शीर्षक देना।

  शीर्षक:.......................

- किसी कहानी में घटनाओं को बदलना– बच्चों को एक कहानी सुनाएँ। उनसे यह लिखने को कहें कि वे कहानी में क्या बदलना चाहते हैं। उन्हें कोई परिस्थिति दें और बाकी दो कॉलमों को पूरा करने के लिए कहें। (नीचे दिए गए उदाहरण के अनुसार)

  उदाहरण : शेर और चूहा की दोस्ती

परिस्थिति	कहानी में क्या हुआ	आप क्या चाहते हो कि अंत में क्या होना चाहिए

- प्रक्रियाओं पर लिखना जैसे रोटी बनाने की विधि–

चरण 1: सबसे पहले............................ (थोड़ा, आटा)
चरण 2: .... (आटे, पानी, गूँथें)
चरण 3: इसके बाद.............................. (गुँथे, छोटे–छोटे, गोले)
चरण 4: अब .... (एक, गोले, चकले, बेलन, मदद, बेल)
चरण 5: .... (तवे, बेली, रोटी, सेंकें)

आपकी रोटी तैयार है।

शिक्षण संग्रह

- दिए गए प्रश्नों के उत्तर पूरे करते हुए सम्बन्धित शीर्षक पर एक अनुच्छेद/निबन्ध लिखना जैसे – 'मेरा स्कूल'

  (क) तुम्हारे स्कूल का क्या नाम है?

  ....

  (ख) यह कहाँ स्थित है?

  ....

  (ग) तुम्हारे स्कूल में कुल कितनी कक्षाएँ हैं?

  ....

  (घ) क्या तुम्हारे स्कूल में पुस्तकालय और खेल का मैदान है?

  ....

- दी गई जानकारी का उपयोग करते हुए दिए गए संकेतों की सहायता से एक अनुच्छेद लिखना–

  जैसे – मेरे पसंदीदा फल

मेरा पसंदीदा फल

1. आम	2	3
वजह – बहुत मीठा होता है।	वजह	वजह
वजह – फलों का राजा आम है।	वजह	वजह

मुझे तीन फल बहुत पसंद है, आम, ... और ....।

पहला फल जो मुझे बहुत अच्छा लगता है वह है आम। आम मुझे इसलिए पसंद है क्योंकि यह बहुत मीठा होता है और यह फलों का राजा भी है।

दूसरा फल...

तीसरा फल...

- कोष्ठक में दिए गए शब्दों का उपयोग करते हुए कहानी को आगे बढ़ाना।

  (भालू, भागे, पेड़, चढ़ गए, बिस्कुट, फेंका, हॉर्न, पुलिस वैन, घर, वापस)

  एक दिन अशोक और गणेश अपनी अपनी साइकिल लेकर घूमने निकले। घूमते–घूमते वे रास्ता भटक गए और एक घने जंगल में पहुँच गए। ....

  ....

  ....

मैं कौन हूँ?

कक्षा में सभी बच्चों को बड़े गोल घेरे में बैठायें और किसी एक बच्चे की पीठ पर शिक्षक किसी पशु, पक्षी, वस्तु जैसे पंखा, मोबाइल, मेज, कुर्सी आदि का रंगीन चित्र पिन से लगा दें। बीचो–बीच खड़ा बच्चा अब घूम–घूम कर प्रश्न पूछकर अनुमान लगाता है कि वह कौन है? जैसे – क्या मैं जीवित हूँ? क्या मैं अजीवित हूँ? क्या मैं उड़ सकता हूँ? क्या मैं पानी में पाया जाता हूँ। गोल घेरे में बैठे बच्चे केवल हाँ या न में उत्तर देंगे। सभी बच्चे एक साथ ऐसा कहेंगे "ना भाई ना", हाँ भाई हाँ" जब तक वह बच्चा जो गोल घेरे में घूम रहा है अपने नाम को अनुमान लगाकर बता नहीं देता गतिविधि चलती रहती है।

नोट :– इस गतिविधि को सामाजिक विषय, विज्ञान, गणित विषय में किस प्रकार कराया जा सकता है इस पर चिन्तन कीजिए।

गणितीय दक्षता विकास संबंधी गतिविधियाँ

1. बोल भाई कितने

- बच्चों को गोल घेरे में खड़ा करें।
- बच्चों से गोल–गोल दायें–बायें घूमने को कहें।
- जब बच्चे घेरे में घूम रहे हों तब अचानक से बोल भाई कितने बोलते–बोलते शिक्षक कोई संख्या बोलें।

- बोली हुई संख्या के बराबर संख्या का बच्चे समूह बनायेंगे।
- यह प्रक्रिया कई बार दोहराकर अलग–अलग संख्याओं का बोध करायेंगे जैसे–

  3 बच्चे घूमते–घूमते अचानक से 3–3 के समूह में खड़े हों।

  बच्चों से 3 अथवा अन्य जो भी संख्यायें गतिविधि के दौरान बोली गई हैं उन संख्याओं की कितने समूह बने। इस पर चर्चा करके फिर उसके माध्यम से जोड़ करायें फिर कुल संख्या पता करायें।

2. मिलाओ बताओ

- दो–दो बच्चो के समूह बनायें।
- 5 से अधिक वस्तुएं किसी भी बच्चे के पास न हों।
- दोनों बच्चों को वस्तुएं मिलाने को कहें।
- अब वस्तुओं को गिनवाकर संख्या पता करें।

स्पष्ट करें–

- वस्तुओं को मिलाने से बनने वाला वस्तुओं का नया समूह **'बड़ा'** होता है
- दस वस्तुएं होने पर जो समूह बनता है उसे **'दहाई'** कहते हैं।
- इकाई के स्थान पर '**कुछ नहीं बचेगा**' अर्थात **इकाई शून्य** (0) हो जायेगी।

3. इकाई–दहाई

- 9 बच्चों को साथ खड़ा करें और एक बच्चे को अलग खड़ा करके दहाई की संकल्पना को स्पष्ट करें।
- 9 बच्चों के साथ अलग खड़े एक बच्चे के 9 बच्चों के साथ मिल जाने से दस बच्चों का एक समूह बन जायेगा।
- दस बच्चों का एक समूह बन जाने से अलग खड़े बच्चों की संख्या 'कुछ नहीं' अर्थात शून्य (0) हो जाती है।
- इस प्रकार दस बच्चों का जो समूह बनता है उसे एक दहाई (10) से व्यक्त करते हैं।

  इस प्रकार कई बार इस गतिविधि को कराकर 1 दहाई और इकाई की अवधारणा स्पष्ट करते हुए जोड़ की समझ विकसित की जाय।

- दहाई की संकल्पना स्पष्ट होने के पश्चात एक तरफ दस बच्चे और दूसरी तरफ दो बच्चे खड़ा करके गिनवाये एवं इकाई, दहाई की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए उसे पुष्ट करें।

4. जोड़ की गतिविधियाँ ''गिनो, मिलाओ और बताओ''

वस्तुओं के माध्यम से–

- परिवेश में उपलब्ध वस्तुओ को बच्चों से गिनवाकर, शरीर के अंगों तथा हाथ–पैर की उंगलियां आदि गिनवाकर संख्या पूछे।
- एक समान वस्तुओं को लेकर पहले एक–एक वस्तु का जोड़, फिर दो–दो वस्तुओं का जोड़ फिर तीन–तीन, इसी प्रकार करते हुए बिना हासिल के जोड़ को वस्तुओं के माध्यम से करवायें।

चित्रों के माध्यम से –

संकेतों (संख्याओं/अंकों) के माध्यम से–

अंक लिखकर उसी अंक के बराबर में चित्र बनाकर कर सकते हैं– जैसे

$$\begin{array}{r} 3 \\ +\,2 \\ \hline 5 \\ \hline \end{array} \quad 3 + 2 = 5 \qquad\qquad \begin{array}{r} 4 \\ +\,1 \\ \hline 5 \\ \hline \end{array} \quad 4 + 1 = 5$$

संख्याओं/अंकों की पहचान होने पर केवल अंक लिखकर बिना हासिल वाले जोड़ की अवधारणा स्पष्ट करे।

5. घटाने की गतिविधियाँ

चित्रों के माध्यम से–

- कई वस्तुओं के चित्रों के माध्यम से चित्र से चित्र घटाने की प्रक्रिया करें।
- चित्रों का चार्ट बनायें कुछ चित्र रंगे हुए कुछ बिना रंगे हुए हों।

- बच्चों को चार्ट के पास बुलाकर पहले पूरे चित्र गिनवायें, फिर रंगे हुए और बिना रंगे हुए चित्र अलग–अलग गिनवायें।
- पहले एक चित्र से एक चित्र और फिर चित्रों की संख्या बढ़ाते जायें और जो बच्चा सबसे पहले इस क्रियाकलाप को पूरा कर ले उसके लिये पूरे बच्चों से ताली बजवायें।

चित्र के बगल में संख्या भी लिखें फिर घटाने को कहें।

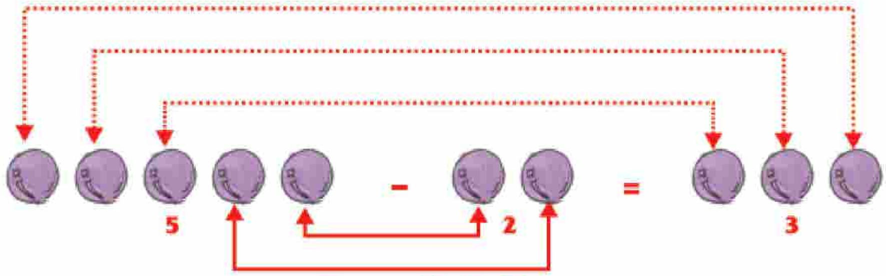

एक से एक की संगति

इसी प्रकार अन्य चित्रों में रंग भरकर भी एक से एक की संगति कराकर अभ्यास कार्य करा सकते हैं।

ठोस वस्तु के माध्यम से

- बतायें कि दाशमिक पद्धति में 10 इकाइयों की एक दहाई बनती है। इसे तीलियों के बंडल एवं खुली तीलियों से समझा जा सकता है।

$$\begin{array}{r} 42 \\ -\ 35 \\ \hline \end{array}$$

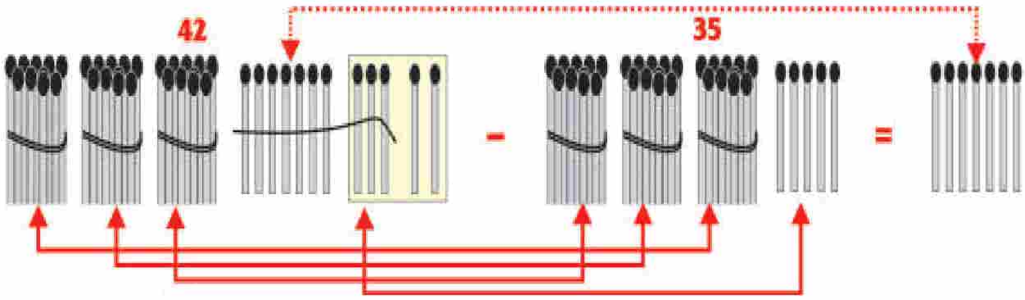

- एक बण्डल 10 तीलियों से मिलकर बना है।
- संख्या 42 को 4 बण्डल और 2 तीलियों से प्रदर्शित किया गया है।
- संख्या 35 को 3 बण्डल और 5 तीलियों से प्रदर्शित किया गया है।
- 4 बण्डलों में से 1 बण्डल को खोलने पर 10 तीलियां और पहले से मौजूद 2 तीलियों में जुड़कर 12 हो गयीं।
- अब 12 में से 5 तीलियां 'एक से एक की संगति' से निकल जाने पर 7 तीलियां बचेंगी।
- शेष बचे 3 बण्डलों में से 35 संख्या के तीनों बण्डल निकल जाने पर कोई भी बण्डल शेष नहीं बच रहा है। इस प्रकार 42 में से 35 घटाने पर 7 बचेगा।

चित्रों व संकेतों (अंकों/संख्या) के माध्यम से

- अंक कार्ड के माध्यम से करायें।
- दो समूह बनाकर प्रत्येक समूह के प्रत्येक बच्चे को एक अंक कार्ड दें फिर दोनों समूहों से एक–एक बच्चे को बुलाकर दोनों के कार्डों के अंकों का मिलान करायें––जैसे एक कार्ड पर 2 तथा दूसरे पर 5 हैं तो मिलाने पर संख्या बनी – 25 और 52।

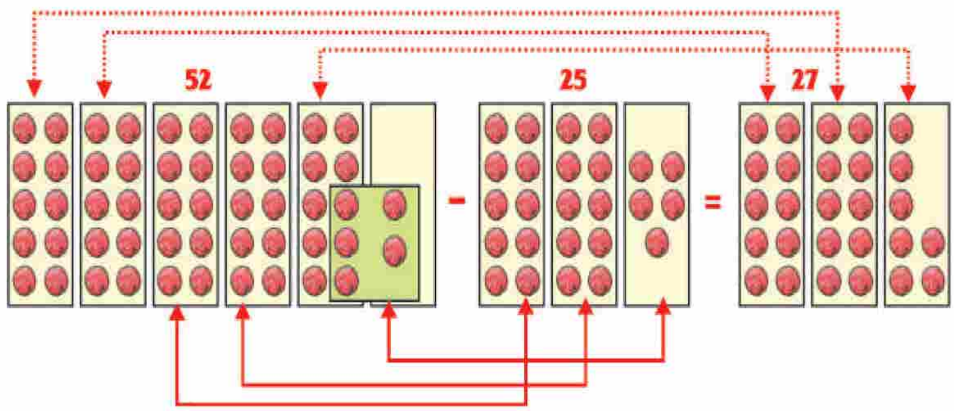

यहां स्पष्ट करें कि 52 वस्तुओं में से 25 वस्तुऐं कम होने या घटने पर 27 बचेंगी। जिन्हें चित्र में दिखाया गया है। इसका कई बार अभ्यास कराकर समझ स्पष्ट करें।

6. गुणा की गतिविधियाँ

बोल भाई कितने –

- इसके लिये बच्चो को गोले में खड़ा करें।
- गोल घेरे में बच्चों के घूमने के दौरान शिक्षक अचानक कोई संख्या बोले जैसे—–3
- बच्चे रुक जायेंगे और 3–3 के समूह में खड़े हो जायेंगे।
- अब जितने बच्चे 3–3 के समूह में खड़े हैं उन्हें अन्य बच्चों से एक–एक कर सारे समूह गिनवायें।
- पता करें 3–3 के कितने समूह बने। जैसे –10
- फिर जितने समूह बने हैं, उन सारे समूहों के पूरे बच्चे गिनवाये जाये, फिर पूछें कुल कितने बच्चे हैं? बच्चे बतायेंगे = 30
- अब बच्चों से चर्चा की जाये कि 3 –3 को 10 बार जोड़ने से 30 आया है क्योंकि कुल समूह 10 बने थे। इसलिए 3 को 10 बार जोड़ा गया।
- अब उन्हें समझने मे मदद करें कि 3–3 बच्चों के 10 समूह थे। इसलिए 10 से गुणा करें उत्तर वही मिल रहा है।

बच

- सभी बच्चे एक घेरा बनाकर बैठ जायें। बीच में उनका नेता बैठेगा।
- किसी पहाड़े का अभ्यास कराने के लिए घेरे में बैठे बच्चे गिनती बोलते हैं।
- यदि 4 का पहाड़ा बनाना है तो गिनती बोलते समय 4, 8, 12, 16, .. जब आयेगा तो बच्चे ''बच'' बोलेंगे। अगला बच्चा उस संख्या के आगे वाला अंक बोलेगा।
- यदि 4, 8, 12, 16, . वाला अंक कोई बच्चा बोलता है तो वह समूह से अलग होता जायेगा।
- ऐसे बच्चे एक चक्र पूरा होने तक घेरे के बाहर रहेंगे।
- चक्र पूरा होने पर क्रमशः अलग–अलग अंक लेकर यह गतिविधि करायी जायेगी।
- इससे पहाड़े का अभ्यास करने में मदद मिलेगी।

ठोस वस्तु के माध्यम से–जोड़ कर गुणा

- चार–चार गेंदों को 5 समूहों में रखें।

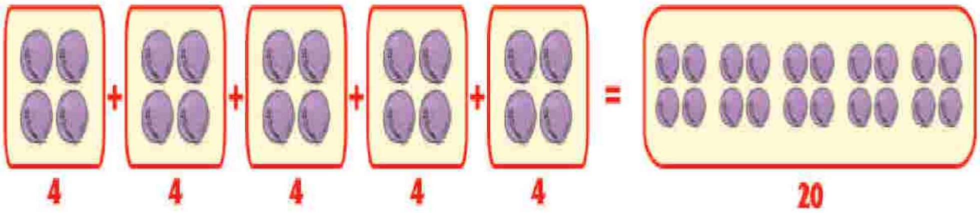

  - बच्चों से पूछें कितने समूह हैं?
  - हर एक समूह में कितनी गेंदे हैं?
  - कुल कितनी गेंदें हैं ?
  - हम इस गतिविधि के माध्यम से यह स्पष्ट करेंगे कि प्रत्येक समूह की 4 – 4 गेंदों को मिलाकर हमें कुल 20 गेंदे प्राप्त हुई।
  - सरलतम ढंग से हम जितनी बार समूह में गेंदे रखी गयी हैं उससे यदि एक समूह में रखी गयी गेंदो से गुणा करें तो वही परिणाम मिलेगा जो कि सभी समूह की गेंदों को एक साथ जोड़कर मिला। अतः **4+4+4+4+4 = 20**

    यहां 4 आया है 5 बार

    अतः **4 X 5 = 20**

    गुणा को हम X निशान से व्यक्त करते हैं।

ठोस वस्तु के माध्यम से– आओ पहाड़ा बनाएं

- जिस संख्या का गुणा /पहाड़ा बनाना हो उतनी उतनी संख्याओं में तीलियों का गुच्छा बनाकर उस पर रबरबैण्ड लगा दें।
- जैसे 2 का गुणा सिखाना है तो बच्चों को दो–दो के समूह में बांट दें। प्रत्येक समूह को तीलियों के दस–दस गुच्छे दें प्रत्येक गुच्छे में दो तीली होना चाहिए।
- एक बच्चा तीलियों का गुच्छा खोले दूसरा खोलकर उसकी तीलियां गिने। तीलियां मिली 2 अर्थात 2 गुने 1 हुआ। इसे बच्चे को इस प्रकार समझायें––

  2 x I = 2

- अब दो गुच्छे लें वही प्रक्रिया दुहरायें। इसी प्रकार सारी तीलियों के गुच्छों से 2 के पहाड़े/गुणा का अभ्यास कराये।
- इसी प्रकार 3, 4, 5, 6, 7, 8......... 9......... 10 तक के गट्ठर बनाकर अभ्यास करायें।
- इसे तीलियों के अतिरिक्त अन्य वस्तुओं से भी कराया जा सकता है। जैसे– गोली, कंचे, फूल–पत्तियां, लकड़ी के गुटके आदि।

चित्रों के माध्यम से

- सभी बच्चों को लाइन में बिठायें।
- अलग–अलग तरीकों के कुछ चित्र कार्डों को बच्चों के सामने रखें।
- चित्र कार्डों को 4–4, 5–5, 6–6 ढेर में क्रम से रखवायें। फिर पहाड़े की समझ पर चर्चा करें।
- चित्रों को बच्चों से गिनवाकर जोड़ने को कहें, फिर प्राप्त उत्तर को संख्या में लिखें।
- यही प्रक्रिया समूह में भी करायी जा सकती है।

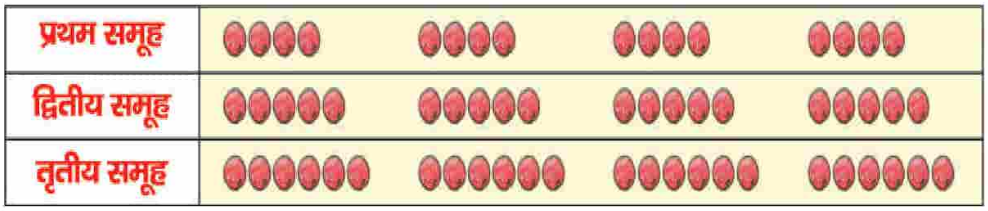

संकेतों (अंकों/संख्याओं) के माध्यम से

गुणा क्या है

- सभी बच्चों को दो समूहों में बांट दें।
- बरामदे/कमरे के फर्श पर 1 से 50 तक की संख्याएं दो पंक्तियों में लिखें।
- प्रत्येक समूह से हर चरण के लिए बच्चों को नामित करा लें। शेष बच्चे अवलोकन करते रहेंगे।
- 3–3 के अन्तर पर गोलियों/पत्ती/फूल/बीज रखवायें।
- जो पहले और सही अंकों पर रखेगा वह विजयी होगा और निर्धारित अंक पायेगा।
- चार या पांच चरणों में कराने के बाद जिस टीम का अंक अधिक होगा वह विजयी होगा।
- इसके आधार पर पहाड़े बनाने का अभ्यास वस्तु/चित्र एवं संख्या द्वारा करायें।

- इसी प्रकार से और भी क्रियाकलाप करायें और लगातार **जोड़ने की क्रिया को ही गुणा कहते हैं** इस अवधारणा को स्पष्ट करें।

आओ गुणा करें–1

1. अंक कार्ड के माध्यम से 1– 9 तक के 6 – 6 कार्ड बना लें।
2. सभी बच्चों को एक–एक कार्ड देकर अपने–अपने कार्ड की संख्या बताने को कहें।
3. एक समान अंक कार्ड वाले बच्चो के अलग–अलग समूह बना दें फिर समूह के बच्चों से अपने समूह के कार्डों की संख्या जोड़ कर बताने की कहें।
4. जो समूह सबसे पहले सही जोड़ करेगा वह विजेता घोषित होगा।
5. बच्चों से कहें कि 1 का पहाड़ा तो आपका आता ही होगा ऐसे ही आगे पहाड़े बनाये जा सकते हैं।
6. इस प्रकार बच्चों को समझाया जाये कि किसी एक संख्या में दूसरी संख्या का पहाड़ा ही गुणा की संक्रिया है।

   जैसे–– $3 \times 5 = 15$

   इसमें 3 को गुण्य (जिसमें गुणा किया जाये) और 5 को गुणक जिससे गुणा किया जाये तथा 15 (पंद्रह) को गुणनफल (गुणा का प्रतिफल) कहा जाता है।

गुणा करें–2

- बच्चों को दो समूहों में बांट लेंगे तथा समूह का नाम 'अ' एवं 'ब' या किसी बच्चे के नाम पर भी रख सकते हैं।
- शिक्षक ब्लैक बोर्ड/व्हाइट बोर्ड पर 1 से 80 तक गिनती लिखेंगे।
- अपने पास 1 से 10 तक के कार्ड रखेंगे।
- एक कार्ड खुद शिक्षक निकालें तथा उसी गड्डी से 1–1 कार्ड दोनों समूहों से बुलाये गये बच्चों द्वारा निकलवाये, बच्चों का जो अंक निकले उससे शिक्षक वाले अंक में गुणा के पश्चात् जो गुणनफल आये बच्चे बोर्ड पर लिखी संख्या पर अंगुली या प्वाइंटर रखनी है। जो पहले रखे उसका एक अंक।
- इसी प्रकार इसे कई चरणों में करायें फिर अधिक अंक वाली टीम विजेता होगी।

7. भाग की गतिविधियाँ

(क) ठोस वस्तु के माध्यम से

गतिविधि–1

- बच्चों को 20 टॉफिया दें और उन्हें अपने 4 साथियों को देने को कहें।
- यह भी बतायें कि सभी को बराबर–बराबर टॉफियां देनी हैं।
- पहले चारों साथियों को एक–एक टॉफियां बांटने को कहें।
- फिर यही प्रक्रिया तब तक दोहराने को कहें जब तक उसके पास टाफियां खत्म न हो जायें।
- यहां पता करें कि प्रत्येक को कितनी–कितनी टॉफियां मिलीं।
- गिनने पर यह पता चलेगा कि सभी को 5–5 टॉफियां मिलीं।
- यहां स्पष्ट करें कि अगर हम 20 में 4 से भाग दे देते तो हमें यह बात आसानी से पता चल जाती और सभी को 5–5 टॉफियां दे देते।

यहां स्पष्ट करें कि

- **बार–बार घटाने की संक्षिप्त प्रक्रिया ही भाग है।**
- भाग की क्रिया को वस्तुओं द्वारा समझने से समझ स्थायी बनेगी।

गतिविधि–2

- एक बॉक्स लेकर उसमें कई वस्तुएं जैसे– रंगीन गोलियां, चाकलेट, फूल, कलम आदि रखें।
- बच्चों को एक–एक करके बुलाये। 5–5 वस्तुएं निकालकर अलग खड़ा करें।
- इस गतिविधि को वस्तुएं समाप्त होने तक आगे बढ़ाया जाये।
- बॉक्स में वस्तुएं समाप्त होने पर चर्चा करें कि– 5–5 वस्तुयें कितने बच्चों को मिलीं। अर्थात् कितनी बार निकालने पर समाप्त हुई?
- यह खेल वस्तुओं की संख्या बदल–बदल कर कई बार कराया जाये।
- बच्चों को बताया जाये कि किसी संख्या में से एक ही संख्या में चीजें निकालने पर जितनी बार में पूरी चीजें/वस्तुएं निकल जाती हैं और कोई वस्तु शेष नहीं रहती वह भागफल कहलाती है।
- गतिविधि प्रारंभ करते समय ध्यान रखें कि वस्तुएं सम संख्या में हो और जिस संख्या में एक बार वस्तुएं निकाली जानी है उस संख्या से वस्तुओं की संख्या पूरी–पूरी बंट जाये।

(ख) चित्रों के माध्यम से–

बच्चों से पूछें कि अनुपम के पास 24 पेंसिल थीं। उसने 4–4 पेंसिल अपने दोस्तों में बराबर–बराबर बाँट दी। उसके कितने दोस्तों को पेंसिल मिली?

इसे समझने के लिए 24 में से 4 को शून्य प्राप्त होने तक बार–बार घटायें।

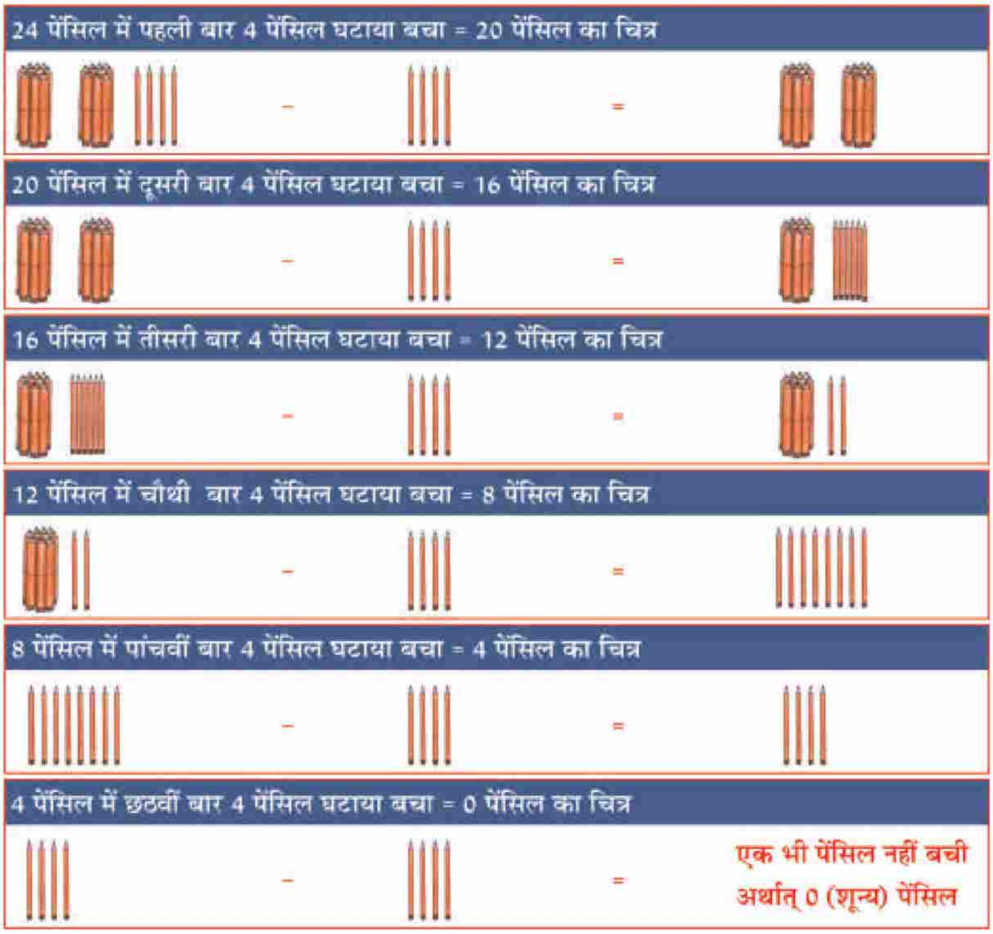

- इसी प्रकार 15 आइसक्रीम का चित्र लें और बच्चों से कहें कि इनको 5–5 की संख्या में प्रत्येक बच्चे को देना है तो इसको कैसे बांटेंगे ?

  चर्चा करें कि– 15 में से 5 कितनी बार घटाया कि शेष 0 (शून्य) आया। बच्चे बतायेंगे कि 3 बार घटाया। इस प्रकार इसका भागफल 3 हुआ।
- इसी प्रकार पाठ्यपुस्तक/कार्य पुस्तिका की सहायता से अन्य गतिविधियां करायें।
- वस्तुओं एवं चित्रों के माध्यम से इसी प्रकार की गतिविधियां बार–बार करायें।

(ग) संकेतों (संख्याओं) के माध्यम से

- बोर्ड पर यह सवाल लिखें और वस्तुओं तथा चित्रों से तुलना कराते हुए हल करायें

  6÷ 2 =

  यहाँ 2 को बार–बार घटाने से भाग की संक्रिया इस प्रकार होगी–

  6 – 2 = 4 (एक बार)

  4 – 2 = 2 (दो बार)

  2 – 2 = 0 (तीन बार)

  घटाया–(2 एक बार + 2 एक बार और + 2 एक बार और) = तीन बार

  अतः संख्या 6 में से 2 को 3 बार घटाया गया तो अंत में शून्य (0) बचा। इस प्रकार भागफल 3 हुआ।

आप स्वयं अनुभव करें और सोचें

आइये,

आपके साथ एक मज़ेदार क्रिया करते हैं। हम आपको एक बेलनाकार पेंसिलनुमा दो फुट लम्बा बेंत देकर इमला लिखने को कहते हैं और बिना देर किये इमला बोलने लगते हैं। आपको इमला लिखने में क्या कठिनाई हो रही है? आप ठीक से लिख पा रहे हैं या नहीं? जल्दी–जल्दी लिखने का आदेश देते हैं। क्या हुआ? आप इमला लिख पाए या नहीं? यदि नहीं तो क्यों? जरा सोचिए, प्राथमिक स्तर पर कक्षा 1–2 में कुछ शिक्षक बच्चों के कोमल हाथों में पेंसिल पकड़ाकर उन्हें तेजी से लिखने के लिये बाध्य करते है, कल्पना कीजिए, बच्चों की कोमल अंगुलियों में कितना कष्ट होता होगा जब हमारे कुछ शिक्षक साथी बच्चों की कठिनाइयों का अनुभव किये बिना लिखने पर जोर देते हैं।

यथासम्भव बच्चों को कक्षा 1–2 स्तर पर बहुत ज्यादा लिखने पर जोर न दें। इससे पहले सूक्ष्म माँसपेशियों के विकास तथा कलम पर बेहतर पकड़ बनाने के क्रियाकलाप कराएं।

प्रातःकालीन सभा (प्रार्थना सत्र) का दैनिक स्वरूप

दिन	शारीरिक सक्रियता की गति (4 मि.)	प्रार्थना (3 मि.)	उद्घोष/ प्रतिज्ञा (2 मि.)	प्रेरक प्रसंग (3 मि.)	समाचार वाचन (3 मि.)	सामान्य ज्ञान वाचन (2 मि.)	स्वास्थ्य व अन्य जागरूकता चर्चा (3 मि.)	संवाद/ कम्युनिकेशन (5 मि.)	प्रोत्साहन की गति (5 मि)	आवश्यक निर्देश व सूचनाएं (2 मि.)	राष्ट्रगान (52 सै0)
सोमवार	" "	वह शक्ति हमें....	" "	स्थानीय/ राष्ट्रीय स्तर के महापुरुषों, साहित्यकारों वैज्ञानिकों आदि से जुड़े प्रसंग तथा लघुकथाएं तथा त्योहार पर्व एवं जागरूकता विषयक जानकारियां	" "	" "	" "	" "	" "	" "	" "
मंगलवार	" "	हर देश में तू....	" "		" "	" "	" "	" "	" "	" "	" "
बुधवार	" "	तू ही राम है..	" "		" "	" "	" "	" "	" "	" "	" "
बृहस्पतिवार	" "	आये है। हम दूर–दूर से सबको	" "		" "	" "	" "	" "	" "	" "	" "
शुक्रवार	" "	देश हमें देता...	" "		" "	" "	" "	" "	" "	" "	" "
शनिवार	" "	सुबह सवेरे लेके.....	" "		" "	" "	" "	" "	" "	" "	" "

नोट :– दैनिक प्रार्थना, उद्घोष, प्रेरक प्रसंगों का विवरण परिशिष्ट–7 से लिया जा सकता है।

- प्रोत्साहन गतिविधि के अंतर्गत बच्चों के जन्मदिन, अच्छे कार्य आदि के संदर्भ में प्रोत्साहन दिया जायेगा।
- संवाद/कम्युनिकेशन के अन्तर्गत विभिन्न अवसरों पर किये जाने वाले अभिवादन/शिष्टाचार दैनिक जीवन व विशेष अवसरों से सम्बन्धित किये जाने वाले कार्यों का अभ्यास कराया जायेगा।

सांध्यकालीन सभा तथा उसकी कार्ययोजना–

विद्यालय की शुरूआत जिस प्रकार प्रार्थना स्थल से होती है उसी प्रकार व्यवस्थित ढंग से विद्यालयीय कार्यक्रमों का समापन भी सभा स्थल से ही होना चाहिए। इसे दृष्टिगत रखकर सांध्यकालीन कार्यक्रमों को भी 30 मिनट के लिए नियोजित कर एक व्यवस्थित स्वरूप दिवसवार दिया जा रहा है–

सोमवार	मंगलवार	बुधवार	बृहस्पतिवार	शुक्रवार	शनिवार
• समूहगान *हिन्द देश के निवासी...*	• समूहगान *हमारा तुम्हारा वतन एक एक ही है.......*	• समूहगान *हे जगत्राता विश्व....*	• समूहगान *न हो साथ कोई अकेले बढ़ो तुम*	• समूहगान *सारे जहाँ से अच्छा*	• समूह गान इन्साफ की डगर पर बच्चों दिखाओ... • कार्यानुभव सम्बन्धी कार्य • बाल सभा • चित्रकला • टी.एल.एम. निर्माण • सुलेख प्रतियोगिता / श्रुतलेख • रंगोली • मुखौटा निर्माण
• सामूहिक व्यायाम / योगासन	• सामूहिक व्यायाम योगासन	• सामूहिक व्यायाम योगासन	• सामूहिक व्यायाम योगासन	• सामूहिक व्यायाम योगासन	
• क्विज / प्रतियोगिता (साप्ताहिक)	• कविता / कहानी / बालगीत	• कविता / कहानी / बालगीत	कविता / कहानी / बालगीत	• कविता / कहानी / बालगीत	
• गतिविधि / खेल– हिन्दी	• गतिविधि / खेल– अंग्रेजी	• गतिविधि / खेल– गणित	गतिविधि / खेल – विज्ञान	• गतिविधि / खेल – पर्यावरण	
• शाम की कहानी	• शाम की कहानी	• शाम की कहानी	• शाम की कहानी	• शाम की कहानी	

नोट :– प्रत्येक दिवस 30 मिनट का यह सत्र / सभा आयोजित होगी जिसमें उल्लिखित सभी प्रकार की गतिविधियाँ / क्रियाकलाप आयोजित किये जायेंगे।

परिशिष्ट 3 – समय सारणी

उच्च प्राथमिक स्तर (दो शिक्षक आधारित)

सत्र	शून्य कालांश	कालांश 1	कालांश 2	कालांश 3	कालांश 4		कालांश 5	कालांश 6	कालांश 7	कालांश 8
ग्रीष्मकाल	7.30-8.00	8.00-8.40	8.40-9.20	9.20-10.00	10.00-10.30	भोजनावकाश 10.30-11.00	11.00-11.30	11.30-12.00	12.00-12.30	12.30-1.00
शीतकाल	8.30-9.00	9.00-9.45	9.45-10.30	10.30-11.15	11.15-12.00	भोजनावकाश 12.00-12.30	12.30-1.05	1.05-1.40	1.40-2.15	2.15-3.00
कक्षा 6	प्रार्थना, राष्ट्रगान, सामान्य ज्ञान, प्रेरक प्रसंग, व्यक्तिगत स्वच्छता अवलोकन, पर्यावरण पर चर्चा, पी0टी0 व योग	हिन्दी	गणित	विज्ञान	सा0विषय की सम्मिलित कक्षा		कृषि / गृह शिल्प / कला	संस्कृत	अंग्रेजी की सम्मिलित कक्षा	शारीरिक शिक्षा
शिक्षक		T2	T1	T1			T2	T2		
कक्षा 7		गणित सम्मिलित कक्षा	हिन्दी की सम्मिलित कक्षा	संस्कृत की सम्मिलित कक्षा			विज्ञान की सम्मिलित कक्षा	कृषि / गृह शिल्प / कला की सम्मिलित कक्षा		
शिक्षक					T2				T2	
कक्षा 8					अंग्रेजी				सा0विषय	
शिक्षक		T1	T2	T2	T1		T1	T1	T1	T2

T1 : **प्रथम शिक्षक** **T2** : **द्वितीय शिक्षक**

निर्देशः

- पर्यावरण अध्ययन की कक्षायें प्रधानाध्यापक द्वारा आवश्यकतानुसार ली जायेगी।
- गृह शिल्प एवं कृषि की कक्षा सोमवार, मंगलवार तथा बुधवार को संचालित होगी
- कला की कक्षा गुरूवार व शुक्रवार को संचालित होगी
- मीना मंच व बाल संसद का आयोजन प्रत्येक शनिवार को होगा। कक्षा शिक्षण में शिक्षामित्रों एवं अनुदेशकों को सम्मिलित किया जाएगा।

समय सारिणी

उच्च प्राथमिक स्तर (तीन शिक्षक आधारित)

सत्र	शून्य कालांश	कालांश 1	कालांश 2	कालांश 3	कालांश 4		कालांश 5	कालांश 6	कालांश 7	कालांश 8
ग्रीष्मकाल	7.30-8.00	8.00-8.40	8.40-9.20	9.20-10.00	10.00-10.30	भोजनावकाश 10.30-11.00	11.00-11.30	11.30-12.00	12.00-12.30	12.30-1.00
शीतकाल	8.30-9.00	9.00-9.45	9.45-10.30	10.30-11.15	11.15-12.00	भोजनावकाश 12.00-12.30	12.30-1.05	1.05-1.40	1.40-2.15	2.15-3.00
कक्षा 6	प्रार्थना राष्ट्रगान, सामान्य ज्ञान, प्रेरक प्रसंग, व्यक्तिगत स्वच्छता अवलोकन, पर्यावरण पर चर्चा, पी0टी0 व योग	गणित	हिन्दी	विज्ञान	सा0विषय		कृषि / गृह शिल्प / कला	संस्कृत	अंग्रेजी	शारीरिक शिक्षा
शिक्षक		T1	T2	T1	T3		T2	T2	T3	
कक्षा 7		संस्कृत	अंग्रेजी	सा0विषय	गणित		विज्ञान	कृषि / गृह शिल्प / कला	हिन्दी	
शिक्षक		T2	T3	T3	T1		T1	T3	T2	
कक्षा 8		अंग्रेजी	विज्ञान	संस्कृत	हिन्दी		सा0विषय	गणित	कृषि / गृह शिल्प / कला	
शिक्षक		T3	T1	T2	T2		T3	T1	T1	T2

निर्देश:

- पर्यावरण अध्ययन की कक्षायें प्रधानाध्यापक द्वारा आवश्यकतानुसार ली जायेगी।
- गृह शिल्प एवं कृषि की कक्षा सोमवार, मंगलवार तथा बुधवार को संचालित होगी।
- कला की कक्षा गुरूवार व शुक्रवार को संचालित होंगी।
- मीना मंच व बाल संसद का आयोजन प्रत्येक शनिवार को होगा।

T1 प्रथम शिक्षक	गणित	कृषि	विज्ञान	पर्यावरण
T2 द्वितीय शिक्षक	हिन्दी	शा0शि0	संस्कृत	गृह शिल्प
T3 तृतीय शिक्षक	सा0विषय	अंग्रेजी	कला	

समय सारिणी

उच्च प्राथमिक स्तर (चार शिक्षक आधारित)

सत्र	शून्य कालांश	कालांश 1	कालांश 2	कालांश 3	कालांश 4		कालांश 5	कालांश 6	कालांश 7	कालांश 8
ग्रीष्मकाल	7.30-8.00	8.00-8.40	8.40-9.20	9.20-10.00	10.00-10.30	भोजनावकाश 10.30-11.00 भोजनावकाश 12.00-12.30	11.00-11.30	11.30-12.00	12.00-12.30	12.30-1.00
शीतकाल	8.30-9.00	9.00-9.45	9.45-10.30	10.30-11.15	11.15-12.00		12.30-1.05	1.05-1.40	1.40-2.15	2.15-3.00
कक्षा 6	प्रार्थना, राष्ट्रगान, सामान्य ज्ञान, प्रेरक प्रसंग व्यक्तिगत स्वच्छता अवलोकन, पर्यावरण पर चर्चा, पी0टी0 व योग	गणित	हिन्दी	विज्ञान	सा0विषय		कृषि/गृह शिल्प/कला	संस्कृत	अंग्रेजी	शारीरिक शिक्षा
शिक्षक		T1	T2	T3	T3		T4	T2	T4	
कक्षा 7		सा0विषय	अंग्रेजी	गणित	संस्कृत		विज्ञान	कृषि/गृह शिल्प/कला	हिन्दी	
शिक्षक		T3	T4	T1	T2		T3	T4	T2	
कक्षा 8		अंग्रेजी	सा0विषय	संस्कृत	हिन्दी		गणित	विज्ञान	कृषि/गृह शिल्प/कला	
शिक्षक		T4	T3	T2	T4		T1	T3	T4	
ध्यानाकर्षण सत्र		T2	T1	T4	T1		T2	T3	T3	T4

निर्देशः

- पर्यावरण अध्ययन की कक्षायें प्रधानाध्यापक द्वारा आवश्यकतानुसार ली जायेगी।
- गृह शिल्प एवं कृषि की कक्षा सोमवार, मंगलवार तथा बुधवार को संचालित होगी
- कला की कक्षा गुरूवार व शुक्रवार को संचालित होगी
- मीना मंच व बाल संसद का आयोजन प्रत्येक शनिवार को होगा।
- कक्षा शिक्षण में शिक्षामित्रों एवं अनुदेशकों को सम्मिलित किया जाएगा।

T1 प्रथम शिक्षक	गणित	कृषि	
T2 द्वितीय शिक्षक	हिन्दी	शा0शि0	संस्कृत
T3 तृतीय शिक्षक	विज्ञान	सा0विषय	
T4 चतुर्थ शिक्षक	अंग्रेजी	गृह शिल्प	कला

समय सारिणी

उच्च प्राथमिक स्तर (पाँच शिक्षक आधारित)

सत्र	शून्य कालांश	कालांश 1	कालांश 2	कालांश 3	कालांश 4		कालांश 5	कालांश 6	कालांश 7	कालांश 8
ग्रीष्मकाल	7.30-8.00	8.00-8.40	8.40-9.20	9.20-10.00	10.00-10.30	भोजनावकाश 10.30-11.00	11.00-11.30	11.30-12.00	12.00-12.30	12.30-1.00
शीतकाल	8.30-9.00	9.00-9.45	9.45-10.30	10.30-11.15	11.15-12.00	भोजनावकाश12.00-12.30	12.30-1.05	1.05-1.40	1.40-2.15	2.15-3.00
कक्षा 6	प्रार्थना, राष्ट्रगान, सामान्य ज्ञान, प्रेरक प्रसंग, व्यक्तिगत स्वच्छता अवलोकन, पर्यावरण पर चर्चा, पी0टी0 व योग	गणित	हिन्दी	विज्ञान	सा0विषय		कृषि/गृह शिल्प/कला	संस्कृत	अंग्रेजी	शारीरिक शिक्षा
शिक्षक		T1	T2	T3	T3		T1/T4/T5	T5	T4	
कक्षा 7		सा0विषय	अंग्रेजी	गणित	संस्कृत		विज्ञान	कृषि/गृह शिल्प/कला	हिन्दी	
शिक्षक		T3	T4	T1	T5		T3	T1/T4	T2	
कक्षा 8		अंग्रेजी	सा0विषय	संस्कृत	हिन्दी		गणित	विज्ञान	कृषि/गृह शिल्प/कला	
शिक्षक		T4	T3	T5	T2		T1	T3	T1/T4/T5	
ध्यानाकर्षण सत्र		T2 &T5	T1&T5	T4&T2	T1&T4		T2	T2	T3	T3

निर्देश:

- पर्यावरण अध्ययन की कक्षायें प्रधानाध्यापक द्वारा आवश्यकतानुसार ली जायेगी।
- गृह शिल्प एवं कृषि की कक्षा सोमवार, मंगलवार तथा बुधवार को संचालित होगी।
- कला की कक्षा गुरूवार एवं शुक्रवार को संचालित होगी।
- मीना मंच व बाल संसद का आयोजन प्रत्येक शनिवार को होगा।

T1 प्रथम शिक्षक	गणित	कृषि
T2 द्वितीय शिक्षक	हिन्दी	.शा0शि0
T3 तृतीय शिक्षक	विज्ञान	सा0विषय
T4 चतुर्थ शिक्षक	अंग्रेजी	गृह शिल्प
T5पंचम शिक्षक	संस्कृत	कला

समय सारिणी

प्राथमिक स्तर (दो शिक्षक आधारित)

सत्र	शून्य कालांश	कालांश	कालांश	कालांश	कालांश		कालांश	कालांश	कालांश	कालांश
		1	2	3	4		5	6	7	8
ग्रीष्मकाल	7.30-8.00	8.00-8.40	8.40-9.20	9.20-10.00	10.00-10.30	भोजनावकाश 10.30-11.00	11.00-11.30	11.30-12.00	12.00-12.30	12.30-1.00
शीतकाल	8.30-9.00	9.00-9.45	9.45-10.30	10.30-11.15	11.15-12.00	भोजनावकाश 12.00-12.30	12.30-1.05	1.05-1.40	1.40-2.15	2.15-3.00
कक्षा1 & कक्षा 2	प्रार्थना, राष्ट्रगान, सामान्य ज्ञान, प्रेरक प्रसंग, व्यक्तिगत स्वच्छता अवलोकन, पर्यावरण पर चर्चा, पी0टी0 व योग	हिन्दी की सम्मिलित कक्षा	हिन्दी कार्यपुस्तिका का प्रयोग	गणित की सम्मिलित कक्षा	गणित कार्यपुस्तिका का प्रयोग		अंग्रेजी की सम्मिलित कक्षा	अंग्रेजी पाठ्यपुस्तक का प्रयोग	सृजनात्मक कार्य।	शारीरिक शिक्षा
शिक्षक		T1	T1	T2	T2		T1	T1	T2	
कक्षा 3, 4 and 5		गणित की सम्मिलित कक्षा	हिन्दी की सम्मिलित कक्षा	पर्यावरण अध्ययन की सम्मिलित कक्षा	अंग्रेजी की सम्मिलित कक्षा		संस्कृत की सम्मिलित कक्षा	ध्यानाकर्षण कक्षायें	सृजनात्मक कार्य।	
शिक्षक		T2	T2	T1	T1		T2	T2	T1	T2/T1

T1 प्रथम शिक्षक **T2** द्वितीय शिक्षक

निर्देशः

- मीना मंच व बाल संसद का आयोजन प्रत्येक शनिवार को होगा।
- सृजनात्मक कक्षा में कला, संगीत, कार्यानुभव, पुस्तकालय, आडियो–वीडियो से सम्बन्धित गतिविधियाँ कराई जाएंगी।

समय सारिणी

प्राथमिक स्तर (तीन शिक्षक आधारित)

सत्र	शून्य कालांश	कालांश	कालांश	कालांश	कालांश		कालांश	कालांश	कालांश	कालांश
		1	2	3	4		5	6	7	8
ग्रीष्मकाल	7.30-8.00	8.00-8.40	8.40-9.20	9.20-10.00	10.00-10.30	भोजनावकाश 10.30-11.00/ 12.00-12.30	11.00-11.30	11.30-12.00	12.00-12.30	12.30-1.00
शीतकाल	8.30-9.00	9.00-9.45	9.45-10.30	10.30-11.15	11.15-12.00		12.30-1.05	1.05-1.40	1.40-2.15	2.15-3.00
कक्षा1 & कक्षा 2	प्रार्थना, राष्ट्रगान, सामान्य ज्ञान, प्रेरक प्रसंग, व्यक्तिगत स्वच्छता अवलोकन, पर्यावरण पर चर्चा, पी0टी0 व योग	हिन्दी की सम्मिलित कक्षा	हिन्दी कार्यपुस्तिका का प्रयोग	गणित की सम्मिलित कक्षा	गणित कार्यपुस्तिका का प्रयोग		अंग्रेजी की सम्मिलित कक्षा	अंग्रेजी पाठ्यपुस्तक का प्रयोग	सृजनात्मक कार्य	शारीरिक शिक्षा
शिक्षक		T1	T1	T2	T2		T3	T3	T2	
कक्षा 3 & कक्षा 4		पर्यावरण अध्ययन	गणित की सम्मिलित कक्षा	हिन्दी की सम्मिलित कक्षा	अंग्रेजी की सम्मिलित कक्षा		संस्कृत की सम्मिलित कक्षा	ध्यानाकर्षण सत्र	सृजनात्मक कार्य	
शिक्षक		T3	T2	T1	T3		T1	T2	T1	
CLASS 5		गणित	अंग्रेजी	पर्यावरण अध्ययन	हिन्दी		ध्यानाकर्षण सत्र	संस्कृत	सृजनात्मक कार्य	
शिक्षक		T2	T3	T3	T1		T2	T1	T3	T2/T3

T1 प्रथम शिक्षक **T2** द्वितीय शिक्षक **T3** तृतीय शिक्षक

- मीना मंच व बाल संसद का आयोजन प्रत्येक शनिवार को होगा।
- सृजनात्मक कक्षा में कला, संगीत, कार्यानुभव, पुस्तकालय, आडियो–वीडियो से सम्बन्धित गतिविधियाँ कराई जाएंगी।

समय सारिणी

प्राथमिक स्तर (चार शिक्षक आधारित)

प्राथमिक स्तर (चार शिक्षक पर आधारित)										
सत्र	शून्य कालांश	कालांश	कालांश	कालांश	कालांश		कालांश	कालांश	कालांश	कालांश
		1	2	3	4		5	6	7	8
ग्रीष्मकाल	7.30-8.00	8.00-8.40	8.40-9.20	9.20-10.00	10.00-10.30	भोजनावकाश 10.30-11.00/ 12.00-12.30	11.00-11.30	11.30-12.00	12.00-12.30	12.30-1.00
शीतकाल	8.30-9.00	9.00-9.45	9.45-10.30	10.30-11.15	11.15-12.00		12.30-1.05	1.05-1.40	1.40-2.15	2.15-3.00
कक्षा 1 व कक्षा 2	प्रार्थना, राष्ट्रगान, सामान्य ज्ञान, प्रेरक प्रसंग, व्यक्तिगत स्वच्छता अवलोकन, पर्यावरण पर चर्चा, पी0टी0 व योग	हिन्दी की सम्मिलित कक्षा	हिन्दी कार्यपुस्तिका का प्रयोग	गणित की सम्मिलित कक्षा	गणित कार्यपुस्तिका का प्रयोग		अंग्रेजी की सम्मिलित कक्षा	अंग्रेजी पाठ्यपुस्तक का प्रयोग	सृजनात्म क कार्य	
शिक्षक		T1	T1	T2	T2		T3	T3	T2	
कक्षा 3		अंग्रेजी सम्मिलित कक्षा	संस्कृत	हिन्दी सम्मिलित कक्षा	पर्यावरण अध्ययन की सम्मिलित कक्षा		गणित	ध्यानाकर्षण सत्र	सृजनात्म क कार्य।	शारीरिक शिक्षा
शिक्षक		T3	T4	T1	T4		T2	T2	T1	
कक्षा 4		पर्यावरण अध्ययन	गणित	संस्कृत	अंग्रेजी सम्मिलित कक्षा		हिन्दी	ध्यानाकर्षण सत्र	सृजनात्मक कार्य	
शिक्षक		T4	T2	T3	T3		T1	T4	T4	
कक्षा 5		गणित	अंग्रेजी	पर्यावरण अध्ययन	हिन्दी		संस्कृत	ध्यानाकर्षण सत्र	सृजनात्मक कार्य	
शिक्षक		T2	T3	T4	T1		T4	T1	T3	T2/T3

T1 प्रथम शिक्षक **T2** द्वितीय शिक्षक **T3** तृतीय शिक्षक **T4** चतुर्थ शिक्षक

निर्देशः

- मीना मंच एवं बाल संसद का आयोजन प्रत्येक शनिवार को होगा।
- सृजनात्मक कक्षा में कला, संगीत, कार्यानुभव, पुस्तकालय, आडियो–वीडियो से सम्बन्धित गतिविधियाँ कराई जाएंगी।

समय सरिणी

प्राथमिक स्तर (पाँच शिक्षक आधारित)

सत्र	शून्य कालांश	कालांश	कालांश	कालांश	कालांश		कालांश	कालांश	कालांश	कालांश
		1	2	3	4	भोजनावकाश 10.30-11.00/ 12.00-12.30	5	6	7	8
ग्रीष्मकाल	7.30-8.00	8.00-8.40	8.40-9.20	9.20-10.00	10.00-10.30		11.00-11.30	11.30-12.00	12.00-12.30	12.30-1.00
शीतकाल	8.30-9.00	9.00-9.45	9.45-10.30	10.30-11.15	11.15-12.00		12.30-1.05	1.05-1.40	1.40-2.15	2.15-3.00
कक्षा 1	प्रार्थना, राष्ट्रगान, सामान्य ज्ञान, प्रेरक प्रसंग व्यक्तिगत स्वच्छता अवलोकन, पर्यावरण पर चर्चा, पी0टी0 व योग	हिन्दी	हिन्दी कार्यपुस्तिका का प्रयोग	गणित	गणित कार्यपुस्तिका का प्रयोग		अंग्रेजी	अंग्रेजी भाषा अभ्यास	सृजनात्मक कार्य।	शारीरिक शिक्षा
शिक्षक		T5	T5	T4	T4		T5	T5	T4	
कक्षा 2		गणित	गणित कार्यपुस्तिका का उपयोग	हिन्दी	हिन्दी कार्यपुस्तिका का उपयोग		अंग्रेजी	अंग्रेजी भाषा अभ्यास	सृजनात्मक कार्य।	
शिक्षक		T4	T4	T5	T5		T4	T4	T5	
कक्षा 3		हिन्दी	गणित	पर्यावरण अध्ययन	अंग्रेजी		संस्कृत	ध्यानाकर्षण सत्र	सृजनात्मक कार्य	
शिक्षक		T2	T1	T3	T1		T2	T3	T3	
कक्षा 4		हिन्दी	पर्यावरण अध्ययन	गणित	अंग्रेजी		ध्यानाकर्षण सत्र	संस्कृत	सृजनात्मक कार्य।	
शिक्षक		T3	T3	T1	T2		T4	T2	T1	
कक्षा 5		गणित	हिन्दी	अंग्रेजी	पर्यावरण अध्ययन		सृजनात्मक कार्य	ध्यानाकर्षण सत्र	संस्कृत	
शिक्षक		T1	T2	T2	T3		T3	T1	T2	T2/T3

T1 प्रथम शिक्षक **T2 द्वितीय शिक्षक** **T3 तृतीय शिक्षक** **T4 चतुर्थ शिक्षक** **T5 पंचम शिक्षक**

निर्देश:

- मीना मंच एवं बाल संसद का आयोजन प्रत्येक शनिवार को होगा।
- सृजनात्मक कक्षा में कला, संगीत, कार्यानुभव, पुस्तकालय, आडियो–वीडियो से सम्बन्धित गतिविधियाँ कराई जाएंगी।

परिशिष्ट–4 : राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005– संक्षिप्त परिचय

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद की कार्यकारिणी ने जुलाई, 2004 में राष्ट्रीय पाठ्यचर्या को संशोधित करने का निर्णय लिया। इसके लिए प्रो0 यशपाल की अध्यक्षता में राष्ट्रीय संचालन समिति और 21 राष्ट्रीय फोकस समूहों का गठन किया गया। इन समूहों के माध्यम से देश के हर हिस्से में संगोष्ठियों, विचार–विमर्श एवं बड़ी तादात में प्राप्त लोगों की प्रतिक्रियाओं पर चिन्तन करते हुए राष्ट्रीय संचालन समिति ने राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005 नामक दस्तावेज प्रस्तुत किया।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005 का आरम्भ रवीन्द्रनाथ टैगोर के निबन्ध ''सभ्यता और प्रगति'' के अंश से होता है, जिसमें साथ खेलने वाले बच्चों में से एक बच्चे को मंहगा खिलौना मिल जाता है, उस खिलौने को पाकर वह बच्चा सबसे दूर चला जाता है और एकाकी हो जाता है। टैगोर के शब्दों में– ''अपनी उत्तेजना में वह एक चीज भूल गया–वह तथ्य जो उस वक्त उसे बहुत मामूली लगा था– कि इस प्रलोभन में एक ऐसी चीज खो गयी जो उसके खिलौने से कहीं श्रेष्ठ थी, **एक श्रेष्ठ और पूर्ण बच्चा।** उस खिलौने से महज उसका धन व्यक्त होता था, बच्चे की रचनात्मक ऊर्जा नहीं, न ही उसके खेल में बच्चे का आनन्द था, और न ही उसके खेल की दुनियाँ में साथियों को खुला निमन्त्रण।''

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005 शिक्षा के उन प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष आयामों की वॉछनीयता पर विस्तृत चर्चा एवं तार्किक दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है, जो बच्चे के सर्वांगीण विकास के लिये आवश्यक है। इसी परिप्रेक्ष्य में इस दस्तावेज में सामाजिक न्याय और समानता के संवैधानिक मूल्यों पर आधारित एक लोकतांत्रिक, धर्म निरपेक्ष, समता मूलक और बहुलतावादी समाज की कल्पना को साकार करने के लिए शिक्षा के व्यापक उद्देश्य चिह्नित किये हैंः–

- विचार और कर्म की स्वतंत्रता।
- दूसरों के प्रति संवेदनशीलता।
- नई परिस्थितियों का सामना करना।
- लोकतांत्रिक प्रक्रिया में भागीदारी।
- आर्थिक प्रक्रियाओं तथा सामाजिक बदलाव में योगदान की क्षमता विकसित करना।

गुणवत्तापरक शिक्षा और शैक्षिक उद्देश्यों को सुनिश्चित करने के लिये राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005 के विविध अध्यायों में विस्तृत चर्चा की गयी है, जिनका संक्षिप्त विवरण निम्नवत् है :–

प्रथम अध्याय **''परिप्रेक्ष्य''** में शिक्षा की गुणवत्ता, शिक्षा के सामाजिक सन्दर्भ एवं शिक्षा के लक्ष्य को ''बच्चों को क्या पढ़ाया जाय और कैसे पढ़ाया जाय'' की कसौटी पर व्यापक रूप से विचार करते हुए पाठ्यचर्या निर्माण के निम्न पांच निर्देशक सिद्धान्तों का प्रस्ताव रखा गया है:—

1. ज्ञान को स्कूल के बाहरी जीवन से जोड़ना।
2. पढाई रटन्त प्रणाली से मुक्त हो यह सुनिश्चित करना।
3. पाठ्यचर्या का इस प्रकार संवर्द्धन कि वह बच्चों को सर्वांगीण विकास के अवसर मुहैया करवाये, बजाय इसके कि पाठ्यपुस्तक केन्द्रित बनकर रह जाय।
4. परीक्षा को अपेक्षाकृत अधिक लचीला बनाना और कक्षा की गतिविधियों से जोड़ना ।
5. एक ऐसी पहचान का विकास, जिसमें प्रजातान्त्रिक राज्य व्यवस्था के अन्तर्गत राष्ट्रीय चिन्ताएं समाहित हों।

अध्याय—2 **''सीखना और ज्ञान''** में ज्ञान की प्रकृति और बच्चों की सीखने की कार्यनीतियों पर चर्चा की गयी है।

अध्याय—3 **''पाठ्यचर्या के क्षेत्र, स्कूल की अवस्थाएं और आकलन''** में उन सुझावों के सैद्धान्तिक आधारों का निरूपण किया गया है, जो पाठ्यचर्या के विभिन्न क्षेत्रों के लिए दिये गये हैं।

अध्याय—4 **''विद्यालय एवं कक्षा का वातावरण''** में वातावरण के भौतिक एवं मनोवैज्ञानिक आयामों का परीक्षण करते हुए यह प्रस्तुत किया गया है कि बच्चों के अधिगम को विद्यालय एवं कक्षा का वातावरण किस प्रकार महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करते हैं।

अध्याय—5 **''व्यवस्थागत सुधार''** में चर्चा की गयी है कि सक्रिय गतिविधियों के जरिये बच्चे को स्वयं को अभिव्यक्त करने में, वस्तुओं का इस्तेमाल करने में, अपने प्राकृतिक और सामाजिक परिवेश की खोजबीन करने में सक्षम बनाने के लिए वर्तमान स्कूली व्यवस्था में किस प्रकार के व्यापक व्यवस्थागत सुधारों की जरूरत होगी, ताकि बच्चा कक्षा के अनुभवों से ज्ञान का सृजन कर सके तथा शिक्षण बच्चे में सीखने की सहज इच्छा को समृद्ध करे, न कि ज्ञान की सूचना प्रदान करे।

''राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूप रेखा—2005'' तथा ''निःशुल्क और अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम—2009'' के अन्तर्गतविद्यालय में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के विभिन्न घटकों — बच्चा, शिक्षक, समुचित संसाधन, सामुदायिक सहभागिता, भय, डर, तनाव और चिन्तामुक्त वातावरण, सतत अकादमिक अनुसमर्थन/प्रशिक्षण, समुचित भौतिक सुविधायें, शिक्षण सामग्री एवं शिक्षण/आकलन की उपयुक्त विधाओं पर विस्तृत चर्चा की गयी है। इन घटकों के प्रति परिवर्तित दृष्टिकोण से हमारे विद्यालय **''जीवंत और समृद्व विद्यालय''** और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा से हमारे बच्चे **एक श्रेष्ठ और पूर्ण बच्चे** के रूप में विकसित होंगे।

परिशिष्ट–5 :

निःशुल्क और अनिवार्य बाल शिक्षा अधिकार अधिनियम–2009 – संक्षिप्त परिचय

''निःशुल्क और अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम–2009'' देश के अन्य सभी राज्यों में 1 अप्रैल 2010 से 6–14 वयवर्ग के बच्चों के लिये लागू है। विश्व में ऐसे बहुत कम देश हैं, जहाँ बच्चों को निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा देने की राष्ट्रीय व्यवस्था लागू है। इस दृष्टि से यह अधिनियम भारत को प्रारम्भिक शिक्षा के क्षेत्र में सहस्त्राब्दि विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने की आधार भूमि उपलब्ध करा रहा है। अधिनियम में **6 से 14 वर्ष की आयु के हर एक बच्चे** को निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा प्रदान करने के लिए विभिन्न प्रावधान एवं उन प्रावधानों को पूर्ण करने के लिये कर्तव्य एवं दायित्व निर्धारित हैं।

ऐतिहासिक दृष्टि से 1870 में ब्रिटेन में अनिवार्य शिक्षा अधिनियम पारित होने के उपरान्त सर्वप्रथम **हर एक बच्चे** को निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा प्रदान करने की मॉग ज्योतिबाफुले द्वारा 1882 में हंटर कमीशन से की गयी थी। 1906 में इम्पीरियल लेजिसलेटिव असेम्बली से श्री गोपाल कृष्ण गोखले द्वारा भारतीय बच्चों को निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा का अधिकार प्रदान करने की माँग की गयी, किन्तु उन्हें भी सफलता प्राप्त नहीं हुयी। 1937 में महात्मा गॉधी ने वर्धा में राष्ट्रीय शिक्षा परिषद् की बैठक में सभी बच्चों के लिये सार्वभौमिक शिक्षा का प्रस्ताव रखा गया किन्तु वित्तीय संसाधनों के अभाव का कारण बताकर बच्चों को यह अधिकार प्रदान नहीं किया गया।

1948–49 में संविधान सभा के समक्ष भी यह प्रश्न उत्पन्न हुआ किन्तु संविधान सभा की सलाहकार समिति ने इसे मौलिक अधिकार न मानते हुये नीति निर्देशक सिद्धान्त की सूची में स्वीकार किया गया। नीति निर्देशक सिद्धान्त के अनुच्छेद–45 के अनुसार ''राज्य इस संविधान के लागू होने के 10 साल की अवधि में सभी बच्चों के लिये जब तक कि वे 14 साल की आयु को प्राप्त नहीं कर लेते, निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा उपलब्ध कराने का प्रयास करेगा।''

सभी बच्चों के लिये शिक्षा की व्यवस्था के संबंध में उच्चतम न्यायालय द्वारा 1993 में प्रदत्त निर्णय में यह कहा गया कि शिक्षा के बिना जीवन का अधिकार अपूर्ण है तथा 14 वर्ष तक के समस्त बच्चों को निःशुल्क प्रारम्भिक शिक्षा प्रदान करना राज्य का दायित्व है। इस निर्णय के उपरान्त **86 वाँ संवैधानिक संशोधन, 2002** के अन्तर्गत **मूल अधिकारों में अनुच्छेद 21 ए** सम्मिलित किया गया जिसके अनुसार ''राज्य 6–14 वर्ष के आयु वर्ग वाले सभी बच्चों के लिये निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा उपलब्ध कराने का ऐसी रीति में जो राज्य विधि द्वारा अवधारित करें, उपबंध करेगा। ''इसके साथ ही संविधान के **अनुच्छेद–45 के लिये निम्नलिखित अनुच्छेद स्थानापन्न** किया ''राज्य सभी बच्चों को जब तक वे अपनी 06 वर्ष की उम्र पूरी नहीं कर लेते, बचपन पूर्व सुरक्षा उपलब्ध

कराने का प्रयास करेगा। ''संविधान के **अनुच्छेद 51–ए में धारा (जे0) के बाद** निम्नलिखित **धारा जोड़ी गयी–धारा (के)** ''यदि माता–पिता या संरक्षक हैं, 06 वर्ष से 14 वर्ष तक की आयु वाले अपने, यथास्थिति बालक/बालिका या प्रतिपाल्य के लिये शिक्षा के अवसर प्रदान करें।''

इसके फलस्वरूप प्रारम्भिक शिक्षा को एक मौलिक अधिकार का दर्जा प्राप्त हुआ और सभी बच्चों को यह अधिकार उपलब्ध कराने के लिये प्रयत्न प्रारम्भ हुये। इसी क्रम में वर्ष 2006 में शिक्षा का अधिकार अधिनियम का एक मॉडल विधेयक विकसित हुआ जो 04 अगस्त 2009 को निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम–2009 के रूप में पारित तथा 27 अगस्त 2009 को भारत के राजपत्र में प्रकाशित हुआ। अन्ततः भारत के सभी बच्चों को निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा प्राप्त कराने की यात्रा लगभग एक शताब्दी के बाद 2010 में मंजिल प्राप्त कर सकी और 01 अप्रैल, 2010 से शिक्षा का अधिकार अधिनियम लागू हो गया है। शिक्षा का अधिकार अब 6 से 14 वर्ष तक के सभी बच्चों के लिये एक मौलिक अधिकार है तथा राज्य प्रत्येक बच्चे को कक्षा–8 तक निःशुल्क शिक्षा उपलब्ध कराने के लिये उत्तरदायी है। यह अधिनियम निम्नलिखित कारणों से अन्य देशो के शिक्षा अधिनियमों से विशिष्ट है –

- निःशुल्क की परिभाषा शुल्क न देने से काफी आगे जाती है।
- अनिवार्यता सरकारों पर है न कि पालकों पर।
- इसका बल प्रत्येक प्रकार के भेदभाव को खत्म करते हुये समावेशी शिक्षा पर हैं।
- पठन–पाठन प्रक्रिया में गुणवत्ता सुनिश्चित करने पर ।
- अधिनियम के क्रियान्वयन की देखरेख एक अलग संवैधानिक आयोग द्वारा।
- विद्यालय के लिये मान एवं मानक का निर्धारण।
- बाल अधिकारों को कानून के दायरे में लाना।

विद्यालयों और अध्यापकों के उत्तरदायित्व/जिम्मेदारी

- विद्यालय अपने यहाँ दाखिला लिए हुए सब बच्चों को निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा प्रदान करेगा।
- कोई भी विद्यालय या व्यक्ति बच्चे का दाखिला देते समय कोई कैपिटेशन शुल्क नहीं लेगा और न ही बच्चे या उसके माता–पिता या अभिभावक को चयन की प्रक्रिया हेतु बाध्य करेगा।
- यदि बच्चे को किसी तरह की चयन की प्रक्रिया हेतु बाध्य किया जाता है तो पहली गलती पर पच्चीस हजार रुपये तक की सीमा तक जुर्माना भरना होगा। यदि बाद में भी गलती की जाती है तो पचास हजार रुपये तक जुर्माना देना होगा।

- प्रारम्भिक शिक्षा के लिए बच्चों की उम्र का निर्धारण बच्चे के जन्म–प्रमाण पत्र के आधार पर होगा जो जन्म मृत्यु और विवाह पंजीकरण अधिनियम 1886 के प्रावधानों के अनुसार या ऐसे निर्धारित दस्तावेज के अनुरूप होगा। किन्तु आयु के सबूत के अभाव में दाखिला देने से मना नहीं किया जाएगा।
- बच्चे का दाखिला विद्यालय में शैक्षणिक वर्ष के आरम्भ में या निर्धारित बढ़ी हुई समय सीमा के भीतर होगा। बढ़ी हुई सीमा के बाद भी यदि दाखिले की माँग की जाती है तो उसे मना नहीं किया जाएगा।
- दाखिला प्राप्त किसी बच्चे को किसी कक्षा में रोका नहीं जाएगा और न ही प्रारम्भिक शिक्षा पूरी होने से पहले उसे विद्यालय से बाहर निकाला जाएगा।
- किसी बच्चे को शारीरिक रूप से दंडित या मानसिक उत्पीड़न नहीं किया जाएगा।

उल्लेखनीय है कि बाल अधिकारों के संबंध में कर्तव्यों एवं दायित्वों को जानने के साथ–साथ ऐसी शिक्षण एवं आकलन की विधाओं को जानने की महती आवश्यकता है, जो बच्चों के अधिगम संवर्द्धन के साथ–साथ रूचिपूर्ण विद्यालयीय वातावरण सृजन में भी सहायक होती हैं। "राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005" में कक्षाओं को जीवंत और समृद्व बनाने पर खासा जोर दिया गया है, जिसमें बच्चे तथ्यों को रटने के स्थान पर अपने अनुभवों को ज्ञान में रूपान्तरित कर सकें। इसमें प्रत्येक विषय के अध्ययन–अध्यापन के संदर्भ में ऐसी बाल–केन्द्रित गतिविधि आधारित शिक्षण विधा प्रस्तावित की गयी हैं, जो बच्चों को 'करके सीखने' के अवसर प्रदान करने की वकालत करती हैं। इसी के साथ–साथ बच्चे के अधिगम के आकलन के लिये ऐसी व्यवस्था विकसित करने की अपेक्षा की गयी है, जो बच्चों में भय,निराशा एवं कुण्ठा उत्पन्न करने के स्थान पर आत्मविश्वास उत्पन्न करती हो।

परिशिष्ट 6–उपयोगी केस स्टडीज (वृत्तांत)

क) प्रधानाध्यापक द्वारा किये गए बेहतर व सफल प्रयास/नवाचार

1. सामुदायिक सहयोग से विद्यालय का कायाकल्प

क्या चुनौतियां थीं?– एक शिक्षक ने पदोन्नति प्राप्त कर प्राथमिक विद्यालय मूड़घाट बस्ती में प्रधानाध्यापक के रूप में कार्यभार ग्रहण किया। विद्यालय में मात्र 38 बच्चे नामांकित थे। नामांकन के सापेक्ष मात्र 19 बच्चे उपस्थिति रहते थे। विद्यालय में भौतिक संसाधनों का पूर्णतः अभाव था। प्रधानाध्यापक ने अपने विद्यालय को सुविधा सम्पन्न आदर्श विद्यालय के रूप में स्थापित करने का विजन तय किया।

विद्यालय विकास की क्या प्रक्रिया अपनाई गई – प्रधानाध्यापक ने अपने सहयोगी शिक्षकों के साथ विद्यालय को सुविधा सम्पन्न आदर्श विद्यालय बनाने की योजना बनायी। सर्वप्रथम प्रधानाध्यापक ने अपने सहयोगी शिक्षकों को साथ लेकर 250 से अधिक घरों में डोर–टु–डोर जनसम्पर्क किया। इसका प्रभाव यह हुआ कि विद्यालय में एक वर्ष के अन्दर ही नामांकन 211 हो गया जो वर्तमान में बढ़कर 255 है। विद्यालय में भौतिक संसाधनों को जुटाने में प्रधानाध्यापक ने पर्याप्त सामुदायिक सहयोग प्राप्त किया। वर्तमान समय में विद्यालय में व्यक्तिगत एवं सामुदायिक सहयोग सहित **स्मार्ट क्लास रूम, प्रोजेक्टर, टी0वी0, इंटरनेट सुविधाएं, सी0सी0टी0वी0 कैमरे, साउण्ड सिस्टम, लाउडस्पीकर, सोलर सिस्टम** आदि की व्यवस्था की जा चुकी है। यह कहना सर्वथा उचित होगा कि विद्यालय का कायाकल्प किया जा चुका है जहाँ बच्चे गुणवत्तापूर्ण शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। विद्यालय में पाठ्य सहभागी क्रियाओं/प्रतियोगिताओं, प्रातःकालीन सभाओं के माध्यम से सहज एवं आनंददायी शिक्षा दी जा रही है।

क्या परिणाम प्राप्त हुए?

प्रधानाध्यापक एवं शिक्षकों के कठिन परिश्रम, लगन और दूरदर्शी सोच के परिणाम स्वरूप आदर्श प्राथमिक विद्यालय मूड़घाट न केवल जनपद बस्ती का सर्वश्रेष्ठ विद्यालय है अपितु प्रदेश के अच्छे सुविधा सम्पन्न विद्यालयों में भी गिना जाता है। प्रधानाध्यापक को इसके लिए राष्ट्रीय पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया है।

2. सामुदायिक सहयोग से विद्यालय का कायाकल्प

क्या चुनौतियाँ थीं?

प्रधानाध्यापक महोदय का स्थानान्तरण एक ऐसे विद्यालय में हुआ जहाँ समस्याओं का अंबार लगा था। नामांकन के सापेक्ष उपस्थिति अत्यंत न्यून थी, लगभग 30 प्रतिशत। विद्यालय का भौतिक परिवेश अत्यंत गंदा था। चारों तरफ गंदगी का अंबार लगा था।

विद्यालय विकास की क्या प्रक्रिया अपनाई गई ?

पहले तो प्रधानाध्यापक ने पहले वहाँ से स्थानान्तरण कराने के बारे में सोचा, लेकिन फिर उन्होंने तय किया कि वे समस्याओं से भागेंगे नही बल्कि इस हालात में सुधार लायेंगे।

उन्होंने सबसे पहले नामांकित बच्चों के घर जाकर उनके अभिभावकों एवं माता–पिता से मुलाकात की। उन्हें समझाया कि बच्चों को विद्यालय भेजने के क्या फायदे हैं। बच्चों को विद्यालय लाने के लिए उन्होंने लगातार प्रयास किया। इस कार्य में उन्हें विद्यालय में कार्यरत एकमात्र सहायक अध्यापक का पूरा सहयोग मिला।

इसके साथ ही उन्होंने एस0एम0सी0 की बैठक आयोजित की। बैठक में उन्होंने सदस्यों को विद्यालय के महत्त्व तथा वर्तमान चुनौतियों पर उन्मुख करने का प्रयास किया। इस प्रकार की कुछ बैठकों के पश्चात वे समुदाय के सदस्यों को विद्यालय की भौतिक परिस्थिति विशेषकर गंदगी को दूर करने की जिम्मेदारी लेने को राजी करने में सफल हो गये। उन्होंने कहा कि भौतिक परिवेश को आप लोग सुधारो तथा बच्चों को नियमित विद्यालय भेजो, शैक्षिक परिणाम देने की जिम्मेदारी एवं दायित्व हमारा है।

इस पूरी प्रक्रिया में ग्राम प्रधान भी विद्यालय विकास के साथ जुड़ गए तथा पूरा सहयोग देने लगे।

क्या परिणाम प्राप्त हुए ?

- कुछ ही दिनों में बच्चों की उपस्थिति लगभग 90 प्रतिशत (नामांकन– 60, उपस्थिति–55) हो गई।
- विद्यालय का परिवेश साफ–सुथरा हो गया। बच्चों के खेलने के लिए मैदान भी तैयार हो गया।
- वर्तमान में नामांकन बढ़कर 60 से बढ़कर 120 हो गया है।
- समुदाय का विद्यालय से सकारात्मक जुड़ाव हुआ।

ख) कक्षा शिक्षण में किये गए सफल प्रयास एवं नवाचार

1. कॉन्सेप्ट मैपिंग (अवधारणा मानचित्रण)

उच्च प्राथमिक विद्यालय देहली विनायक, वि0क्षे0 सेवापुरी, जनपद–वाराणसी में कार्यरत विज्ञान शिक्षक कान्सेप्ट मैपिंग द्वारा शिक्षण कार्य करते हैं। कान्सेप्ट मैपिंग की प्रेरणा इन्हें तब मिली जब ये बच्चों को विज्ञान संबंधी अवधारणाओं को समझाते थे, और बच्चे उसे समझ नहीं पाते थे। विद्यालय में विज्ञान प्रयोगशाला का अभाव था और विज्ञान संबंधी उपकरणों का रख–रखाव भी नहीं था।

शिक्षक ने कक्षा–शिक्षण के दौरान विज्ञान विषय के सभी पाठों को कान्सेप्ट मैपिंग की सहायता से पढ़ाने की शुरुआत की। उन्होंने बच्चों की "कान्सेप्ट मैपिंग' की कापी भी बनवाई। बच्चे भी विज्ञान के पाठों में निहित विषयवस्तु को समझने के लिए विषयवस्तु के मुख्य उप सम्बोधों का फ्लोचार्ट (कॉन्सेप्ट मैप) बनाते हैं। इन्होंने कक्षा 6, 7 व 8 के विज्ञान के पाठों की **"कान्सेप्ट मैपिंग हैण्डबुक"** का निर्माण भी किया है। इसकी विशेषता यह है कि एक पन्ने पर ही एक पाठ के सभी लर्निंग आउटकम्स का प्रस्तुतीकरण किया जाता है। कान्सेप्ट मैपिंग पर आधारित शिक्षक प्रोजेक्ट प्रपोजल **'अवधारणा मानचित्रण द्वारा सीखने के परिणामों की सम्प्राप्ति'** (Attaining Learning Outcomes Through Concept Mapping) का चयन "राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद", नई दिल्ली (NCERT, New Delhi) द्वारा करते हुए इन्हें सम्मानित भी किया गया।

लाभ–

1. बच्चों में विषयवार शिक्षण अधिगम परिणामों (Learning Outcomes) की सरल तरीके से प्राप्ति होती है।
2. शिक्षक अपने शिक्षण को प्रभावी बनाने के लिए कान्सेप्ट मैपिंग को एक "शिक्षण अधिगम सामग्री" (Teaching Learning Material: TLM) की तरह प्रयोग कर सकते हैं।
3. अभिभावक भी अपने बच्चों की कान्सेप्ट मैपिंग कापी द्वारा उनकी प्रगति का सतत आकलन व उनका अभ्यास कराने में सहयोगी होंगे।
4. किसी अवधारणा को एक दृष्टि में समझने के लिए कान्सेप्ट मैपिंग सर्वोत्तम युक्ति है।
5. बच्चे अपना स्वमूल्यांकन करने में सक्षम होते हैं।
6. बच्चों को विषयवस्तु की स्पष्टता सुगमतापूर्वक होती है।
7. शिक्षक कम समय एवं कम से कम संसाधन का निवेश करते हुए, इस कान्सेप्ट मैपिंग नवाचार

के प्रयोग द्वारा अपने बच्चों के सीखने के स्तर में वृद्धि कराने में सक्षम होंगे।

2. अंग्रेजी शिक्षण में नवाचार

चुनौतियां

पूर्व माध्यमिक विद्यालय में जब एक शिक्षिका की नियुक्ति हुई, तो उन्होंने पाया कि अधिकांश बच्चे अंग्रेजी के साधारण शब्द या वाक्य भी नहीं पढ़ पाते हैं। वे परेशान हो गई कि ऐसी स्थिति में पाठ्यक्रम कैसे पूरा होगा।

अपनायी गयी प्रक्रिया

अध्यापिका ने तय किया कि वे पाठ्यक्रम पूरा करने की बजाए बच्चों में अंग्रेजी विषय की मूलभूत दक्षताओं के विकास पर कार्य करेंगी। इसके लिए उन्होंने सबसे पहले यह जानने का प्रयास किया कि उनकी कक्षा में प्रत्येक बच्चे को वर्तमान में अंग्रेजी विषय संबंधी क्या ज्ञान है। इसके लिए उन्होंने कक्षा 6, 7 व 8 में प्रत्येक बच्चों का आकलन किया जिसके लिए कक्षा 1–5 तक की मूलभूत दक्षताओं पर कुछ प्रश्न तैयार किए। इस आकलन से उन्हें प्रत्येक बच्चे की वास्तविक स्थिति पता चल गई।

अब उन्होंने आकलन से प्राप्त परिणामों के आधार पर अपनी शिक्षण योजना बनाई। सबसे पहले उन्होंने परिवेशीय वस्तुओं, जिससे बच्चे भली–भांति परिचित थे, उनका उपयोग किया तथा एक प्रिंट–रिच वातावरण बनाया। जगह–जगह ऐसी वस्तुओं के चित्र व अंग्रेजी में नाम लिखकर प्रदर्शित किए गए ताकि बच्चे उनसे लगातार परिचित होते रहें। विद्यालय में अंग्रेजी में ही ऐसी वस्तुओं के नाम लेने को प्रोत्साहित किया गया।

इसके साथ ही अध्यापिका ने बच्चों को अक्सर प्रयोग में आने वाले छोटे–छोटे वाक्यों का भी अभ्यास कराया। साथ ही उन्होंने फोनिक्स (Phonics) पर विशेष बल दिया ताकि बच्चे वर्णों व शब्दों का सही उच्चारण कर सकें। उन्होंने बच्चों के बीच समूह कार्य का भी बहुत ही अच्छे ढंग से प्रयोग किया।

क्या परिणाम प्राप्त हुएः

- बच्चों में अंग्रेजी के प्रति रुचि जागृत हुई।
- बच्चे आपसी वार्तालाप में अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग करने लगे।

3. विज्ञान शिक्षण में प्रायोगिक अभ्यास

संकल्पना एवं प्रयास– प्राथमिक विद्यालय विश्वनाथपुर, ब्रह्मपुर, गोरखपुर के एक शिक्षक ने एक दिन अपनी कक्षा में वस्तुओं के तैरने और डूबने के बारे में पढ़ाना चाहा। उन्होंने सोचा मेरी कक्षा में 43 बच्चे हैं। उपकरण केवल चार–पाँच समूहों के लायक हैं। इसलिए उन्होंने

कक्षा को पाँच समूहों में बाँटकर शिक्षण करना उचित समझा। जिससे सभी बच्चे उपकरण के साथ कार्य कर सकें और व सभी बच्चों को बराबर समय दे सकें। सर्वप्रथम शिक्षक ने शिक्षण में प्रयुक्त सामग्री जैसे पत्थर, सिक्का, कंक्रीट का टुकड़ा, लकड़ी का गुटका, प्लास्टिक स्केल, पंख, कागज, पेंसिल, धातु का टुकड़ा, स्टील चम्मच, टूथ पिक, और पेंसिल को संकलित किया तथा पांच वर्कशीट (कार्य पत्रक) तैयार किए।

कार्यपत्रक

शिक्षक ने विद्यार्थियों के सभी समूहों में कार्यपत्रक (WorkSheet) और कुछ वस्तुएं देकर स्पष्ट निर्देश दिया कि इन्हें ध्यानपूर्वक देखिये, आपस में बातें करिये, सोचिये और अपने उत्तर कार्य पत्रक में लिखिये। इसके लिये उन्होंने विद्यार्थियों को 10 मिनट का समय दिया। इस दौरान शिक्षक ने प्रत्येक समूह में जाकर बच्चों की चर्चा ध्यानपूर्वक सुनी, संदेह की स्थिति में उन्हें सहायता की। इसके पश्चात शिक्षक ने प्रत्येक समूह में पानी से भरकर बर्तन (पात्र) दिये और उन्हें निर्देश दिया कि अब आप लोग पानी भरे पात्र में वस्तुओं को डालकर परीक्षण करें तथा अपने–अपने कार्यपत्रकों में परिणामों की पुष्टि करें कि सही हैं या गलत। सही परिणाम मिलने पर (✓) सही का निशान लगायें। इसके बाद शिक्षक ने सभी समूह के विद्यार्थियों को आपस में चर्चा करने को कहा कि वस्तुएं क्यों डूबी? या क्यों तैरीं ? अब शिक्षक ने सभी समूहों को कोई एक वस्तु चुनने को कहा, जो पानी में डूब जाती है। फिर उन्होंने बच्चों से कहा कि आप इसे किस प्रकार तैरा सकते है, जरा सोचिये? सभी समूह के बच्चे सोचने लगे, आपस में बातें करने लगे। एक बच्चे ने सिक्के को लकड़ी पर रखकर तैराकर दिखा दिया। अंत में शिक्षक को यह देखकर बहुत अच्छा लगा कि जो बच्चे पूरी कक्षा में बहत कम बोलते थे वे अपने समूह में अधिक सक्रिय होकर चर्चा कर रहे थे।

क्र.सं.	वस्तुओं के नाम	तैरेगी	डूब जायेगी
1	लकड़ी का गुटका		
2	पत्थर		
3	सिक्का		
4	पेंसिल, पंख आदि		

क्या परिणाम प्राप्त हुए—

– जो बच्चे पूरी कक्षा में बहत कम बोलते थे वे अपने समूह में अधिक सक्रिय होकर चर्चा कर रहे थे।

– बच्चों की सक्रिय भागीदारी सीखने–सिखाने के दौरान बढ़ी।

4. कक्षा में बातचीत

किया गया प्रयास

कक्षा – 1 में पढ़ाने वाली एक शिक्षिका अपने बच्चों को बातचीत के लिये प्रोत्साहित करने के लिये बड़े पोस्टर पर बने गांव/कृषिकार्य एवं प्राकृतिक दृश्यों के रंगीन चित्रों का उपयोग करती हैं। सबसे पहले वे किसी एक चित्र को दीवार पर टाँग देती हैं। पहले बच्चों को अपनी ओर से कुछ नहीं बताती हैं बल्कि एक दो दिन इन्तजार करती हैं कि बच्चे स्वयं इस चित्र को ध्यान से देखें, एक दूसरे से बात करें, इस दौरान वे बच्चों को परस्पर बातें करते हुए सुनती हैं, इसके बाद उसी चित्र पर बच्चों के समूह बनाकर उनसे चर्चा करती हैं। बातचीत को बढ़ाने के लिये शिक्षिका प्रश्नों की सूची बनाकर रख लेती हैं जैसे–

- चित्र में क्या दिखाई दे रहा है?
- लोग क्या कर रहे हैं?
- चित्र में दिख रहे खेल को क्या आपने खेला है?
- इस चित्र में कौन–सा भाग सबसे अच्छा लगा और क्यों?

शिक्षिका बिना टोका–टाकी के हर बच्चे की बातों को ध्यानपूर्वक सुनती हैं। बाकी बच्चों को भी ध्यान से सुनने के लिये कहती हैं। कक्षा के सभी बच्चों को चित्रों पर बात करने को प्रोत्साहित करती हैं। साथ ही साथ बच्चे की अभिव्यक्ति क्षमता का आकलन भी करती हैं।

क्या परिणाम प्राप्त हुए–

– बच्चे चर्चा में रुचि लेते हैं।

– बेझिझक अपने विचार व्यक्त करते हैं।

– बच्चों की सहज प्रतिभागिता होती है।

5. भाषा विकास के लिये त्यौहारों पर आधारित प्रोजेक्ट कार्य

किया गया प्रयास –

प्राथमिक विद्यालय राजापुर, लोधा, अलीगढ़ में कार्यरत अध्यापिका को त्योहारों के बारे में कक्षा–5 की पाठ्यपुस्तक के एक पाठ से प्रेरणा मिली। छात्रों ने हाल ही में ईद और होली जैसे मुख्य त्यौहारों का वर्णन करने वाला एक पाठ पाठ्यपुस्तक में पढ़ा था। हमारे विविधतापूर्ण समाज में कई त्यौहार हैं, इसलिये स्थानीय त्यौहारों पर ध्यान केन्द्रित करने का फैसला लिया गया जिनमें से कई त्यौहार जल्द ही आने वाले थे। शिक्षिका ने सबसे पहले अपने छात्रों से पूछा कि वे कौन–कौन से त्यौहार मनाते हैं। बच्चों के उत्तर श्यामपट्ट पर लिख दिये गये। इसके बाद उन्होंने बच्चों को छः समूहों में बांटकर उनके समूह के नाम त्यौहारों के नाम पर रख दिये। प्रत्येक समूह को एक कागज का बड़ा टुकड़ा देकर समझाया कि कागज पर अपने समूह के त्यौहार के बारे में जितनी ज्यादा बातें लिख सकते हों लिखें। इसे लिखने के लिए निम्नांकित बिन्दुओं को आधार बना सकते हैं जैसे – यह त्यौहार क्यों मनाया जाता है? इस त्यौहार को कब मनाते हैं? इस त्यौहार को किस समुदाय के लोग मनाते हैं?। इस त्यौहार में कौन–कौन से पकवान बनाये जाते हैं? इस त्यौहार में कौन–कौन से कार्य किये जाते हैं? क्या इस त्यौहार में कोई खास कपड़े पहने जाते हैं?

शिक्षिका ने बच्चों को अपनी भाषा में भी लिखने की अनुमति दे दी। प्रत्येक समूह को एक पोस्टर पर अपनी बाते अगले दिन लिख कर लाने को कहा गया। शिक्षिका ने बच्चे को अपने माता–पिता, दादा–दादी आदि से भी जानकारी करके लिखकर लाने को कहा। अगले दिन बच्चों ने अपना काम खत्म कर लिया और प्रत्येक समूह ने अपना–अपना पोस्टर कक्षा के सामने प्रस्तुत किया। शिक्षिका ने बच्चों से अनेक सवाल किये जिनका उत्तर बच्चों ने दिया। इसके बाद उन्होंने चार्ट कक्षा की दीवार पर टाँग दिये ताकि बच्चे उन्हें देखकर आनंदित हो सकें।

क्या परिणाम प्राप्त हुए–

– बच्चों ने रुचिपूर्वक अपने अनुभवों पर आधारित लेखन कार्य करना सीखा।

– बच्चों में अपने लिखे गए को प्रस्तुत करने का कौशल विकसित हुआ।

6. शिक्षण में पूर्वानुमान का उपयोग

किया गया प्रयास– एक शिक्षक ने कक्षा शिक्षण के दौरान अनुभव किया कि बच्चे प्रायोगिक कार्यों में पूर्वानुमान करने में निपुण नहीं है। शिक्षक द्वारा ऐसी स्थिति में परिवेश में आसानी से उपलब्ध वस्तुओं को वैज्ञानिक प्रयोगों में पुर्वानुमान लगाने के अनुभवों से जोड़ा गया। विद्यार्थियों के

पूर्वानुमान लगाने से उनके वर्तमान चिन्तन को समझने में शिक्षक को मदद मिली।

क्या परिणाम प्राप्त हुए – बच्चों ने अनुमान लगाना प्रारंभ किया और उनमें अनुमान की पुष्टि प्रयोगों के द्वारा करने की प्रवृत्ति विकसित हुईं। साथ ही उनमें तार्किक चिंतन का भी विकास हुआ।

ग) सामुदायिक सहभागिता हेतु किये गए बेहतर व सफल प्रयास/नवाचार

1. छात्र उपस्थिति बढ़ाने हेतु मोबाइल सेवा का प्रयोग

उच्च प्राथमिक विद्यालय हर्रायपुर वि0क्षे0 बिसौली, बदायूं में स0अ0 के पद पर कार्यरत एक शिक्षक की पदोन्नति उसी विद्यालय में प्र0अ0 पद पर हुई। जब उन्होंने विद्यालय में कार्यभार ग्रहण किया तो विद्यालय उपस्थिति की दृष्टि से काफी पिछड़ा था। उन्होंने इस समस्या से छुटकारा पाने के लिए घर–घर संपर्क किया। सम्पर्क के समय उन्होंने प्रत्येक अभिभावक के मोबाइल नम्बरों को संकलित किया तथा विद्यालय में एक मोबाइल सेल का गठन किया। इस सेल में कक्षा 6, 7 व 8 के दो–दो छात्रों को रखा गया। विद्यालय अपने निर्धारित समय से एक घण्टा पूर्व खुलता है और प्रार्थना के समय यह मोबाइल सेवा प्रारम्भ हो जाती है। सोमवार व मंगलवार को कक्षा 6 के छात्र इस सेवा को संचालित करते हैं और अनुपस्थित आठ से दस बच्चों के यहां मोबाइल द्वारा फोन करते हैं। मोबाइल पर अनुपस्थित बच्चे के बारे में जो भी सूचना मिलती है उसे रजिस्टर पर अंकित करते हैं। कई बच्चे फोन करने पर विद्यालय उपस्थित हो जाते हैं। इस सेवा के बाद विद्यालय की उपस्थिति 80 से 90 प्रतिशत के बीच रहने लगी है। विगत तीन वर्षों से प्रायः शत प्रतिशत उपस्थिति रहती है।

क्या परिणाम प्राप्त हुए–

1. मोबाइल सेल गठन के बाद अभिभावकों में जागरूकता आयी है। उन्हें यह लगने लगा कि बच्चे को विद्यालय न भेजने पर विद्यालय द्वारा फोन आ जायेगा। अतः बच्चे को विद्यालय भेजना चाहिए।
2. मोबाइल सेल पर बैठने वाले बच्चों में होड़ सी लगी रहती है, जिससे उन्हें मोबाइल पर शिष्टता से बात करनी आ जाती है।
3. अनुपस्थित रहने वाले छात्र–छात्रा भी फोन से सूचना पहुँचने के कारण सतर्क हो जाते हैं व कम अनुपस्थित रहते हैं।
4. विद्यालय और परिवार तथा समुदाय के बीच बेहतर सामंजस्य स्थापित होता है।

एक प्रयास और–

पूर्व माध्यमिक विद्यालय हरार्यपुर वि0क्षे0 बिसौली (बदायूं) के इन्हीं शिक्षक ने विद्यालय में भौतिक संसाधनों की कमी के कारण शिक्षण प्रभावित होने तथा विद्यालय संचालन में अनेक कठिनाइयों को देखते हुए एक प्रयास और किया।

किया गया प्रयास/प्रक्रिया – सर्वप्रथम सम्बन्धित शिक्षक स्वयं के पास से वर्ष 2011 में कक्षा शिक्षण हेतु प्रोजेक्टर लाकर पढ़ाने लगे। शिक्षक की पहल पर प्रधानाध्यापक सहित विद्यालय के उत्साही शिक्षकों ने तय किया कि वे निरंतर समुदाय से सम्पर्क करेंगे और उन्हें विद्यालय में भौतिक संसाधनों को जुटाने के लिए प्रोत्साहित करेंगे। सबसे पहले विद्यालय के शिक्षकों ने विद्यालय प्रबन्ध समिति के सदस्यों की बैठक बुलाई, जिसमें ग्रामवासियों को भी आमंत्रित किया। बैठक में शिक्षक ने तैयार की गई विद्यालय विकास योजना को सभी के सामने रख यथाशक्ति सहयोग देने की अपील की। समुदाय व एस.एम. सी. सदस्यों से प्राप्त सहयोग राशि का पूर्ण पारदर्शिता से विद्यालय विकास में व्यय किया गया। इसके बाद शिक्षक द्वारा क्षेत्र के माननीय विधायक, तहसीलदार, ब्लॉक प्रमुख तथा प्रमुख स्थानीय व्यवसायियों से सम्पर्क किया गया। विद्यालय में शिक्षकों के सतत् प्रयासों से धीरे–धीरे अनेक भौतिक संसाधन जुड़ते गये। परिणाम स्वरूप वर्ष 2011 से 2017 की अवधि ा में सामुदायिक सहयोग से विद्यालय में निम्नांकित भौतिक संसाधनों की उपलब्धता हो गयी–

सबरमरसिबल पम्प, सीलिंग फैन, कुर्सियाँ, साउण्ड सिस्टम, वाटर टैंक, आकर्षक चहारदीवारी, दरियाँ, ट्रांजिस्टर, बालक/बालिका हेतु पृथक शौचालय, वृक्षारोपण, कम्प्यूटर सेट, कूलर, पौधे सहित गमले, टाइल्स, विद्यालय बैण्ड आदि अन्य भौतिक संसाधन पर्याप्त संख्या में।

क्या परिणाम प्राप्त हुए ?

- विद्यालय भौतिक संसाधनों से परिपूर्ण हो गया।
- बच्चों का नामांकन बढ़ गया एवं परीक्षा परिणामों में सुधार हुआ।
- कक्षा शिक्षण में शिक्षकों को आसानी होने लगी।
- समुदाय और अभिभावकों को विद्यालय से जुड़ाव हुआ तथा विश्वास बढ़ा।

परिशिष्ट 7–उपयोगी शैक्षिक वेबसाइट

- PRERNA App
  www.prernaup.in
- Manav Sampda
  www.ehrms.upsdc.gov
- Mid Day Meal
  www.upmdm.org
- State Institute of Science Education, Uttar Pradesh
  www.siseupallahabad.org
- Basic Shiksha, Uttar Pradesh
  www.basiceducationup.com
- NCERT
  www.ncert.nic.in
- National Repository of Open Education Resources
  www.nroer.gov.in
- MHRD, New Delhi
  www.mhrd.gov.in
- SCERT, UP
  www.scertup.org.in
- SSA, UP
  www.upefa.com
- DIKSHA
  www.diksha.gov.in/explore
- TESS India
  www.tess-india.edu.in
- KHAN Academy
  www.khanacademy.org
- Maths Guru
  www.mathsguru.com
- Edunguru
  www.edunguru.com
- Merit Nation
  https://www.meritnation.com/
- BYJUS The Learning App
  www.byzus.com
- E-Pathshala
  www.epathshala.nic.in
- E-Pothi App
- The Teacher App

परिशिष्ट 8 – प्रार्थनाएं तथा समूह गान संग्रह

वह शक्ति हमें दो दयानिधे

वह शक्ति हमें दो दयानिधे,
कर्तव्य मार्ग पर डट जावें।
पर–सेवा, पर–उपकार में हम,
जग जीवन सफल बना जावें।।
वह शक्ति हमें.

हम दीन–दुखी निबलों विकलों के,
सेवक बन संताप हरें।
जो हैं अटके भूले–भटके,
उनको तारें, खुद तर जावें।।
वह शक्ति हमें.

छल, दम्भ, द्वेष, पाखंड, झूठ,
अन्याय से निशि–दिन दूर रहें।
जीवन हो शुद्ध, सरल अपना,
शुचि प्रेम सुधा रस बरसावें।।
वह शक्ति हमें....

निज आन मान मर्यादा का,
प्रभु ध्यान रहें अभिमान रहे।
जिस देश–राष्ट्र में जन्म लिया,
बलिदान उसी पर हो जावें।।
वह शक्ति हमें..

हर देश में तू, हर भेष में तू,

हर देश में तू, हर भेष में तू,
तेरे नाम अनेक तू एक ही है।
तेरी रंग भूमि यह विश्व धरा,
सब खेल में, मेल में तू ही तो है।।
हर देश में तू...

सागर से उठा बादल बनके,
बादल से फूटा जल हो करके।
फिर नहर बनी नदियाँ गहरी,
तेरे भिन्न प्रकार तू एक ही है।।
हर देश में तू...

मिट्टी से भी अणु परमाणु बना,
सब जीव जगत का रूप लिया।
कहीं पर्वत वृक्ष विशाल बना,
सौंदर्य तेरा तू एक ही है।।
हर देश में तू...

यह दिव्य दिखाया है जिसने,
वह है गुरुदेव की पूर्ण दया।
तुकड़्या कहे और न कोई दिखा,
बस मैं और तू सब एक ही हैं।।
हर देश में तू...

सुबह सवेरे लेकर तेरा नाम प्रभु

सुबह सवेरे लेकर तेरा नाम प्रभु।
करते हैं हम शुरू आज का काम प्रभु।।

शुद्ध भाव से तेरा ध्यान लगायें हम,
विद्या का वरदान तुम्हीं से पायें हम।
तुम्हीं से है आगाज़ तुम्हीं अंजाम प्रभु,
करते हैं हम शुरू आज काम प्रभु।।

सुबह सवेरे लेकर....

गुरुओं का सत्कार कभी न भूलें हम,
इतना बनें महान गगन को छू लें हम।
तुम्हीं से है हर सुबह, तुम्हीं से शाम प्रभु,
करते हैं हम शुरू आज का काम प्रभु।।

सुबह सवेरे लेकर तेरा नाम प्रभु।
रते हैं हम शुरू आज का काम प्रभु।।

दया कर दान विद्या का

दया कर दान विद्या का, हमें परमात्मा देना।
दया करना हमारी आत्मा में शुद्धता देना।।

हमारे ध्यान में आओ, प्रभु आँखों में बस जाओ,
अँधेरे दिल में आकर के परम ज्योति जगा देना।।

बहा दो प्रेम की गंगा, दिलों में प्रेम का सागर,
हमें आपस में मिल–जुलकर प्रभु रहना सिखा देना।।

हमारा कर्म हो सेवा, हमारा धर्म हो सेवा,
सदा ईमान हो सेवा व सेवक चर बना देना।।

वतन के वास्ते जीना, वतन के वास्ते मरना,
वतन पर जाँ फ़िदा करना प्रभु हमको सिखा देना।।

दया कर दान विद्या का हमें परमात्मा देना।
दया करना हमारी आत्मा में शुद्धता देना।।

'सर्वधर्म समभाव प्रार्थना'

तू ही राम है, तू रहीम है,
तू करीम कृष्ण खुदा हुआ।
तू ही वाहे गुरु, तू ईशू मसीह,
हर नाम में, तू समा रहा।।
तू ही राम है...

तेरी जात पाक कुरान में,
तेरा दर्श वेद पुराण में,
गुरू ग्रन्थ जी के बखान में,
तू प्रकाश अपना दिखा रहा।
तू ही राम है...

अरदास है कहीं कीर्तन,
कहीं रामधुन कहीं आवाहन
विधि वेद का है यह सब रचन,
तेरा भक्त तुझको बुला रहा।
तू ही राम है...

विधि, वेश जाति के भेद से
हमें मुक्त कर दो परमपिता
तुझे देख पाएं सभी में हम,
तुझे ध्या सकें हम सब जगह
तू ही राम है...

तू ही राम है, तू रहीम है,
तू करीम कृष्ण खुदा हुआ।
मू ही वाहे गुरु, तू ईशू मसीह,
हर नाम में तू समा रहा।।

देश हमें देता है सब कुछ

देश हमें देता है सब कुछ,
हम भी तो कुछ देना सीखें।।
सूरज हमें रोशनी देता,
हवा नया जीवन देती है।
भूख मिटाने को हम सब की,
धरती पर होती खेती है।
औरों का भी हित हो जिसमें
हम ऐसा कुछ करना सीखें।
देश हमें देता है सब कुछ....

तपती दोपहर में हमको,
पेड़ सदा देते हैं छाया।
सुमन सुगन्ध सदा देते हैं,
हम सबको फूलों की माला
त्यागी तरुओं के जीवन से
हम परहित कुछ करना सीखें।।
देश हमें देता है सब कुछ..

जो अनपढ़ हैं, उन्हें पढ़ाएँ,
जो चुप हैं उनको वाणी दें।
पिछड़ गये जो उन्हें बढ़ाये,
समरसता का भाव जगा दें।
हम मेहनत के दीप जलाकर
नया उजाला करना सीखें।।
देश हमें देता है, सब कुछ...

हे जग त्राता

हे जग त्राता विश्व विधाता,
हे सुख शान्ति निकेतन हे।
हे जग त्राता..

प्रेम के सिन्धु, दीन के बन्धु,
दुख दारिद्रय विनाशन हे।
हे जग त्राता...

नित्य अखण्ड अनन्त अनादि,
पूरण ब्रह्म सनातन हे
हे जग त्राता...

जग आश्रय जगपति जग वन्दन,
अनुपम अलख निरंजन हे
हे जग त्राता...

प्राण सखा त्रिभुवन प्रति पालक,
जीवन के अवलम्बन हे
हे जग त्राता विश्व विधाता,
हे सुख शान्ति निकेतन हे।

देशगीत

न हो साथ कोई अकेले चलो तुम।
सफलता तुम्हारे चरण चूम लेगी।।
सदा जो जगाए बिना ही जगा है
अँधेरा उसे देखकर ही भगा है
वही बीज पनपा, पनपना जिसे था
घुना क्या किसी के उगाए उगा है
अगर उग सको तो उगो सूर्य से तुम।
प्रखरता तुम्हारे चरण चूम लेगी।।
न हो साथ कोई..

सही राह को छोड़कर जो मुड़े हैं,
वही देखकर दूसरों को कुढ़े हैं
बिना पंख तौले उड़े जो गगन में,
न सम्बन्ध उनके गगन से जुड़े हैं
अगर उड़ सको तो पखेरू बनो तुम
प्रवरता तुम्हारे चरण चूम लेगी।।
न हो साथ कोई..

न जो बर्फ की आँधियों से लड़े हैं
कभी पग न उनके शिखर पर पड़े हैं
जिन्हें लक्ष्य से कम अधिक प्यार खुद से
वही जी चुराकर विमुख हो खड़े हैं
अगर जी सको तो जियो जूझकर तुम
अमरता तुम्हारे चरण चूम लेगी।।
न हो साथ कोई..

'हम सब भारतीय हैं'

हम सब भारतीय हैं
हम सब भारतीय हैं
अपनी मंजिल एक है
हा–हा–हा एक हैं,
हो हो हो एक हैं
हम सब भारतीय हैं।।

कश्मीर की धरती रानी है,
सरताज हिमालय है।
सदियों से हमने इसको अपने,
खून से पाला है।
देश की रक्षा की खातिर,
हम शमशीर उठा लेंगे।
बिखरे–बिखरे तारे हैं हम,
लेकिन झिलमिल एक हैं,
हा–हा–हा एक हैं, हो हो हो एक हैं
हम सब भारतीय हैं।।

मन्दिर गुरुद्वारे भी हैं यहाँ,
और मस्जिद भी हैं यहाँ।
गिरिजा का है घड़ियाल कहीं,
मुल्ला की कहीं है अजाँ।
एक ही अपने राम कृष्ण हैं,
एक ही अल्ला ताला है।
रंग बिरंगे दीपक हैं हम,
लेकिन जगमग एक हैं।।
हा–हा–हा एक हैं, हो हो हो एक हैं
हम सब भारतीय हैं।

'सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा'

सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा,
हम बुलबुले हैं इसकी, यह गुलिस्ताँ हमारा।
सारे जहाँ से अच्छा....

पर्वत वो सबसे ऊँचा, हम साया आसमां का,
वह सन्तरी हमारा, वो पासवाँ हमारा।
सारे जहाँ से अच्छा....

गोदी में खेलती हैं, इसकी हज़ारों नदियाँ,
गुलशन है जिनके दम से रश्क–ए–जिनाँ हमारा।।
सारे जहाँ से अच्छा....

मज़हब नहीं सिखाता, आपस में बैर रखना।
हिन्दी हैं हम वतन हैं, हिन्दोस्ताँ हमारा।।
सारे जहाँ से अच्छा....

सम्पूर्ण विश्व रत्नम्

सम्पूर्ण विश्व रत्नम्
खलु भारतं स्वकीयम् – स्वकीयम् – 2
सम्पूर्ण विश्व रत्नम,
पुष्पं वयं तु सर्वे खलु देश वाटकीयम्
स्वकीयम् स्वकीयम् – 2
सम्पूर्ण विश्व रत्नम्..

सर्वोच्च पर्वतोऽयमः गगनस्य भालचुम्बी – 2
सः सैनिकः सुवीरः प्रहरी
च स स्वकीयम् स्वकीयम् – 2
सम्पूर्ण विश्व रत्नम्..

क्रोडे सहस्र धारा प्रवहन्ति अस्य नद्यः – 2
उद्यान भामि पोरयं – 2
भुवि गौरवं स्वकीयम् स्वकीयम् – 2
सम्पूर्ण विश्व रत्नम्..

धर्मस्त नास्ति शिक्षा कटुता मिथे विधेयः – 2
एके वयं– 3 तू सर्वे खलु देश वाटकीयम् स्वकीयम्
सम्पूर्ण विश्व रत्नम्.

हमारा तुम्हारा वतन एक ही है

हमारा तुम्हारा वतन एक ही है।
धरा एक ही है गगन एक ही है।।

ये नदियाँ ये झरने शिखर ऊँचे–ऊँचे
ये रेती, ये खेती, ये जंगल–बगीचे
सुमन एक ही है चमन एक ही है।।

हमारा तुम्हारा वतन..

बताओ यहाँ फर्क क्या तुमने देखा
खिंची है कहाँ पर विभाजन की रेखा
लगन एक ही है, भजन एक ही है।।

हमारा तुम्हारा वतन...

हिम्मत हारे मत बैठो

जीवन में कुछ करना है, तो मन को मारे मत बैठो,
आगे–आगे बढ़ना है तो, हिम्मत हारे मत बैठो।
जीवन में कुछ करना है...

चलने वाला मंजिल पाता, बैठा पीछे रहता है,
ठहरा पानी सड़ने लगता, बहता निर्मल होता है।
पाँव मिले चलने की खातिर , पाँव पसारे मत बैठो,
आगे–आगे बढ़ना है तो, हिम्मत हारे मत बैठो।।
जीवन में कुछ करना है...

तेज दौड़ने वाला खरहा, दो पल चल कर हार गया,
धीरे धीरे चलकर कछुआ, देखो बाजी मार गया।
चलो कदम से कदम मिलाकर, दूर किनारे मत बैठो,
आगे–आगे बढ़ना है तो, हिम्मत हारे मत बैठो।।
जीवन में कुछ करना है...

धरती चलती तारे चलते, चाँद रात भर चलता है,
किरणों का उपहार बाँटने, सूरज रोज निकलता है।
हवा चले तो महक बिखेरे, तुम भी प्यारे मत बैठो,
आगे–आगे बढ़ना है तो, हिम्मत हारे मत बैठो।
जीवन में कुछ करना है...

आये हैं हम

आये हैं हम दूर–दूर से सबको यह समझाने,
भेद–भाव को मिटा प्यार का मन में दीप जलाने।
हमारा प्यार अमर है, हमारी एक डगर है ।।
आये हैं हम..

एक ही माटी एक ही गुलशन, क्यारी जुदा जुदा हैं
रंग–बिरंगे फूल खिले हैं, खुशबू जुदा–जुदा है
जीवन का है स्रोत एक ही, आये यह समझाने,
हमारा प्यार अमर............

भिन्न–भिन्न हैं बोली हमारी भिन्न भिन्न भाषाएँ,
भिन्न भिन्न हैं जाति धर्म पर, एक हैं अभिलाषाएँ।
हमारा प्यार अमर............

देश ही अपना दीन धरम है, हम तो बस ये जानें,
भाव को मिटा प्यार का मन में दीप जलाने,
हमारा प्यार अमर............

आये हैं हम दूर–दूर से सबको यह समझाने
भेद–भाव को मिटा प्यार का मन में दीप जलाने
हमारा प्यार हमर है, हमारी एक डगर है।।

इंसाफ की डगर पे

इंसाफ की डगर पे बच्चो दिखाओ चल के
यह देश है तुम्हारा, नेता तुम्हीं हो कल के
इंसाफ की डगर..

दुनिया के रंज सहना और कुछ न मुँह से कहना
सच्चाइयों के बल पर आगे को बढ़ते रहना
रख दोगे एक दिन तुम संसार को बदल के
इंसाफ की डगर..

अपने हों या पराये, सबके लिये हो न्याय
देखो कदम तुम्हारा हरगिज़ न डगमगाये
रस्ते बड़े कठिन हैं चलना सँभल सँभल के
इंसाफ की डगर..

इंसानियत के सर पे इज़्ज़त का ताज रखना
तन–मन की भेंट देकर भारत की लाज रखना
जीवन नया मिलेगा अंतिम चिता में जल के
इंसाफ की डगर पे..

हिन्द देश के निवासी

हिन्द देश के निवासी, सभी जन एक हैं,
रंग रूप, वेश भाषा, चाहे अनेक हैं।
हिन्द देश के...

बेला, गुलाब, जूही, चम्पा, चमेली
प्यारे–प्यारे फूल गूँथे, माला में एक हैं।
हिन्द देश के...

कोयल की कूक प्यारी, पपीहे की टेर न्यारी,
गा रही तराना बुलबुल, राग मगर एक है।
हिन्द देश के...

गंगा जमुना, ब्रह्मपुत्र, कृष्णा कावेरी,
जाके मिल गईं सागर में हुई सब एक हैं।
हिन्द देश के...

झण्डा गीत

विजयी विश्व तिरंगा प्यारा
झण्डा ऊँचा रहे हमारा
विजयी विश्व तिरंगा..

सदा शक्ति सरसाने वाला
प्रेम सुधा बरसाने वाला
वीरों को हरसााने वाला
मातृभूमि का तन मन सारा
झण्डा ऊँचा रहे हमारा

इसकी शान न जाने पाये
चाहे जान भले ही जाये
विश्व विजय करके दिखलाएँ
तब होवे प्रण पूर्ण हमारा
झण्डा ऊँचा रहे हमारा

आओ प्यारे वीरों आओ
देश धर्म पर बलि बलि जाओ
एक साथ सब मिलकर गाओ
प्यारा भारत देश हमारा
विजयी विश्व तिरंगा प्यारा
झण्डा ऊँचा रहे हमारा

राष्ट्रीय प्रतिज्ञा

भारत हमारा देश है,
हम सब भारत वासी भाई–बहन हैं।
हमें अपना देश प्राणों से भी प्यारा है।
इसकी समृद्ध संस्कृति और विविध संस्कृति पर हमें गर्व है।
हम इसके सुयोग्य नागरिक बनने का प्रयत्न सदा करते रहेंगे।
हम अपने माता–पिता, शिक्षकों और गुरुजनों का सदा आदर करेंगे
और सब के साथ शिष्टता का व्यवहार करेंगे।
हम अपने देश और देशवासियों के प्रति वफादार रहने की प्रतिज्ञा करते हैं।
उनके कल्याण और समृद्धि में ही हमारा सुख निहित है।
जय हिन्द

XXXXXXXXXXXX

OUR PLEDGE

India is my country.
All Indians are my brothers and sisters.
I love my country and I am proud of its
rich and varied heritage.
I shall always strive to be worthy of it.
I shall give respect to my parents, teachers
and all elders and treat everyone with
courtesy to my country and my people.
I pledge my devotion in their well being
and prosperity alone lies my happiness.
"JAI HIND"

परिशिष्ट 9–प्रमुख जयन्तियों एवं दिवसों की जानकारी

MONTH	DATE	OCCASION
January	12	National Youth day (राष्ट्रीय युवा दिवस)
	15	Army day (सेना दिवस)
	23	Neta Ji Subhash Chand Bose Jayanti (नेता जी सुभाष चन्द्र बोस जयन्ती)
	26	Republic day (गणतंत्र दिवस)
	30	Martyr's day (शहीद दिवस)
February	28	National Science day (राष्ट्रीय विज्ञान दिवस)
March	4	National Safety day (राष्ट्रीय सुरक्षा दिवस)
	8	International Women day (अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस)
	22	World Water day (विश्व जल दिवस)
April	7	Health day (स्वास्थ्य दिवस)
	14	Fire safety day (अग्नि सुरक्षा दिवस)
	22	Earth day (पृथ्वी दिवस)
May	1	Labor day (श्रमिक दिवस/मजदूर दिवस)
	2nd Sunday	Mothers day (माता दिवस)
	8	Red cross day (रेडक्रास दिवस)
	13	National Solidarity day (राष्ट्रीय एकता दिवस)
	15	World family day (विश्व परिवार दिवस)
	21	Anti terrorist day (आतंकवादी विरोध दिवस)
	24	World common wealth day (विश्व राष्ट्रमण्डल दिवस)
	31	World No tobacco day (विश्व तम्बाकू निशेध दिवस)
June	5	World environmental day (विश्व पर्यावरण दिवस)
	16	Father's day (पिता दिवस)
July	1	Doctors day (चिकित्सक दिवस)
	11	World population day (विश्व जनसंख्या दिवस)
August	6	Hiroshima day (हिरोशिमा दिवस)
	9	Nagasaki day, Quit India day (नागासाकी दिवस)
	15	Independence day (स्वतन्त्रता दिवस)

MONTH	DATE	OCCASION
	20	Sadbhawana Diwas (सद्भावना दिवस)
	23	Common wealth day
	28	Sanskrit day (संस्कृत दिवस)
	29	Sport day (खेल दिवस)
September	5	Teachers day (शिक्षक दिवस)
	8	Literacy day (साक्षरता दिवस)
	11	Education day (शिक्षा दिवस) प्रथम शिक्षा मंत्री अबुल कलाम आजाद के जन्म दिवस पर
	13	Forgiveness day (स्मृति दिवस)
	14	Hindi day (हिन्दी दिवस)
	16	Ozone day (ओजोन दिवस)
	24	Meena day(मीना दिवस)
	27	World tourism day (विश्व पर्यटन दिवस)
October	1	International day for elderly (अन्तर्राष्ट्रीय वरिश्ठ नागरिक दिवस)
	2	Internationa; non-violence day (अन्तर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस)
	4	Animal welfare day (पशु/जीव कल्याण दिवस)
	8	Air force day (वायुसेना दिवस)
	9	Post office day (डाकघर दिवस)
	16	World food day (विश्व खाद्य दिवस)
	24	UNO day (संयुक्त राष्ट्र संघ दिवस)
	31	National integration day (राष्ट्रीय एकता दिवस)
November	14	Children day (बाल दिवस)
	19	Citizen day (नागरिक दिवस)
	26	Law day (विधि/न्याय दिवस)
December	1	World AIDS day (विश्व एड्स दिवस)
	3	Disable day (विकलांग दिवस)
	4	Navy day (नेवी दिवस)
	7	Flag day (झंडा दिवस)
	10	Human Rights Day (मानव अधिकार दिवस)

परिशिष्ट 10– शिक्षा संबंधी उपयोगी साहित्य की सूची

शिक्षकों के लिए कुछ उपयोगी संदर्भ साहित्य के नामों एवं उनके लेखकों की एक सूची दी जा रही है। आप अपने विद्यालय के पुस्तकालय में जो एन.बी.टी. प्रकाशन नई दिल्ली से उपलब्ध करायी गयी है, उसमें से भी अपनी जानकारी को अपडेट करने के लिए चयनित करके उसका स्वअध ययन कर सकते हैं। साथ ही साथ अन्य प्रकाशनों से प्रकाशित पुस्तकों का स्वअध्ययन कर सकते हैं।

- *एक अध्यापक का सफरनामा,* रामजी दुबे, एन.बी.टी., नई दिल्ली।
- *कम लागत, बिना लागत शिक्षण सहायक सामग्री,* मेरी ऐन दास गुप्ता, एन.बी.टी., नई दिल्ली।
- *खेल–खेल में बच्चों का विकास,* सुधीर नाथ झा, एन.बी.टी., नई दिल्ली।
- *डोरी के खेल,* अरबिन्द गुप्ता, एन.बी.टी.,नई दिल्ली।
- *तोत्तो–चान,* तेत्सुको कुरोयानागी, एन.बी.टी., नई दिल्ली।
- *दिवा स्वप्न,* गिजुभाई बधेका, एन.बी.टी., नई दिल्ली।
- *पहला अध्यापक,* चिंगीज एटमाटोन, एन.बी.टी., नई दिल्ली।
- *प्राथमिक विद्यालय के लिए यूनेस्को की विज्ञान स्रोत पुस्तक,* एन.बी.टी., नई दिल्ली।
- *वृत्तों की दुनिया,* रावेन्द्र कुमार 'रवि', एन.बी.टी., नई दिल्ली।
- *विज्ञान सीखना भाग 1, 2, 3, 4,*सी.एन.आर. राव, एन.बी.टी., नई दिल्ली।
- *शिक्षा का वाहन : कला,* देवी प्रसाद, एन.बी.टी., नई दिल्ली।
- *समझ के लिए तैयारी,* कीथ वारेन, एन.बी.टी., नई दिल्ली।
- *सृजनात्मक गणित,* विजय प्रकाश, एन.बी.टी., नई दिल्ली।
- *सृजनशील जीवन और हिंसा,* डेल एम0 बेथेल, एन.बी.टी., नई दिल्ली।
- *भारत में नागरिकों के अधिकार,* बलराम दत्त शर्मा, एन.बी.टी., नई दिल्ली।
- *यातायात के नियम,* एल.सी. महाजन, एन.बी.टी., नई दिल्ली।
- *व्यक्तिगत स्वच्छता,* किरण परमार, एन.बी.टी., नई दिल्ली।
- *हमारे त्यौहार,* खालिद अशरफ, एन.बी.टी., नई दिल्ली।
- *ऐसा क्यों,* बालकृष्ण बोकील, एन.बी.टी., नई दिल्ली।

- *एक गांव जगतपुर,* कृष्ण कुमार, एन.बी.टी., नई दिल्ली।
- *आंखों की देखभाल – नजर का बचाव,* उदय चंद्र गुप्ता, एन.बी.टी., नई दिल्ली।
- *बच्चे की भाषा और अध्यापक,* प्रो. कृष्ण कुमार, एन.बी.टी., नई दिल्ली।
- *बालक में भाषा का विकास,* सुमन भाटिया, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा।
- *शिक्षा एवं जीवन का तात्पर्य,* जे0कृष्णमूर्ति, कृष्णमूर्ति फाउण्डेशन, राजघाट फोर्ट, वाराणसी।
- *प्रभावकारी शिक्षण (बाल केन्द्रित शिक्षण),* एन.के. जंगीरा, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।
- *मुझे ऐसे पढ़ाओ,* मुकेश कुमार, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
- *बालक की दुनिया,* इन्दु दवे, हिमांशु पब्लिकेशन, नई दिल्ली।

परिशिष्ट 11– बेसिक शिक्षा विभाग की प्रशासनिक व्यवस्था

स्तर	**प्राधिकृत अधिकारीगण**
बेसिक शिक्षा मंत्रालय	बेसिक शिक्षा मंत्री
सचिवालय	• अपर मुख्य सचिव • सचिव • विशेष सचिव
शिक्षा निदेशालय	• महानिदेशक, शिक्षा निदेशक (बेसिक/एससीईआरटी/साक्षरता/वैकल्पिक शिक्षा)
	• अपर शिक्षा निदेशक
	• संयुक्त शिक्षा निदेशक
	• उप शिक्षा निदेशक
	• सहायक उप शिक्षा निदेशक
मण्डल स्तर	• सहायक शिक्षा निदेशक (बेसिक)
जिला स्तर	जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी
ब्लाक स्तर	खण्ड शिक्षा अधिकारी
विद्यालय स्तर	प्रधानाध्यापक, अध्यापक/अध्यापिका

परिशिष्ट 12 – अन्य विभागों से सहयोग एवं समन्वयन

प्रधानाध्यापकों व शिक्षकों से अपेक्षा है कि वे स्वयं निम्नांकित जानकारी को ध्यान में रखेंगे तथा एस.एम.सी के सदस्यों को विभिन्न विभागों व उनसे प्राप्त होने वाली सुविधाओं को प्राप्त करने के तरीकों पर जानकारी देंगे तथा मार्गदर्शन करगें। विभिन्न विभागों से क्या–क्या सुविधाऐं प्राप्त हो सकती हैं इसकी संक्षिप्त जानकारी निम्नवत है :

- **स्वास्थ्य विभाग** : सभी बच्चों को निःशुल्क स्वास्थ्य परीक्षण, टीकाकरण, रोगग्रस्त बच्चों का चिकित्सक द्वारा निदान, ए0एन0एम0 के माध्यम एवं सहयोग से विद्यालय में स्वास्थ्य शिविर का आयोजन करना, आदि।
- **महिला एवं बाल विकास विभाग** : 03 से 06 वर्ष के बच्चों का चिन्हांकन में आंगनबाडी कार्यकत्री को सहयोग कर पास पड़ोस के विद्यालय में प्रवेश सुनिश्चित कराना।
- **वन विभाग** : वृक्षारोपण कराना, बच्चों को पेड़ पौधो से होने वाले लाभ की जानकारी देना, आदि।
- **विकलांग कल्याण विभाग** : विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चों का चिन्हाकन कर विभाग से जाँच कराकर प्रमाण पत्र निर्गत कराना। आवश्यकता अनुसार उपकरण एवं छात्रवृति आदि दिलवाना।
- **समाज कल्याण विभाग** : विद्यालयों में नामांकित अनुसूचित जाति /अनुसूचित जन जाति तथा पिछड़े वर्ग के बच्चों की कक्षावार सूची बनाकर समयान्तर्गत उपलब्ध कराना तथा बच्चों को छात्रवृत्ति आदि को शीघ्रातिशीघ्र वितरित कराना ।
- **पंचायती राज विभाग** : मध्यान्ह भोजन के अर्तगत, सही समय पर मीनू के अनुसार पौष्टिक मध्यान्ह भोजन की व्यवस्था सुनिश्चित करना। सम्पूर्ण स्वच्छता अभियान के अन्तर्गत बच्चों को हाथ की सफाई की जानकारी देना। मनरेगा अंर्तगत, मार्ग एवं विद्यालय की साफ सफाई में सहयोग प्राप्त करना ।
- **जल निगम** : पेय जल की व्यवस्था, नये हैण्डपम्प लगवाना तथा खराब हैण्डपम्प की मरम्मत करवाना, ओवर हेड टैंक का निर्माण करवाना।
- **राजस्व विभाग** : विद्यालय में अतिरिक्त कक्षा–कक्ष के निर्माण, बाउण्ड्रीवाल, खेल कूद के मैदान तथा नवीन विद्यालय के स्थापना हेतु भूमि उपलब्ध कराने के लिए सहयोग प्राप्त करना।
- **अल्पसंख्यक कल्याण विभाग** : अनुदानित मदरसों की जानकारी रखना, अल्पसंख्यक बच्चों का नामांकन मदरसों में कराना, अल्पसंख्यक कल्याण योजनाओं का क्रियान्वयन तथा छात्रवृत्ति वितरित करवाना।

- **विद्युत विभाग** : विद्युत कनेक्शन उपलब्ध कराना, ऊर्जा संरक्षण कार्यक्रमों हेतु सहयोग प्राप्त करना।
- **स्वयं सेवी संस्थाओं का सहयोग** : नेहरु युवा केन्द्र व अन्य स्वयं सेवी संस्थाओं से समन्वय जो कि युवा मण्डल/महिला मण्डल के माध्यम से ग्रामीणों में जागरूकता फैलाती है, और खेल कूद, अनेक प्रतियोगितायें, अन्य कार्यक्रम आयोजित कर बच्चों के सर्वांगीण विकास में सहयोग देती हैं।
- **श्रम विभाग** : 6–14 आयु वर्ग के बाल श्रमिकों की पहचान कर एन.सी.एल.पी. विद्यालय या सरकारी विद्यालय में शिक्षा की व्यवस्था कराना।
- **आपूर्ति विभाग** : विद्यालय में बच्चों को मध्यान्ह भोजन के नियमित वितरण हेतु समय से अनाज की व्यवस्था तथा गैस आदि की व्यवस्था कराना।

परिशिष्ट 13–उपयोगी शब्दावलियाँ

UNICEF-United Nations Children's Fund
NUEPA - National University of Education Planning and Administration.
NCERT-National Council of Educational Research and Training
CIET- Central Institute of Educational Technology
SCERT- State Council of Educational Research and Training
DIET - District Institute of Education and Training
SIEMAT- State Institute of Educational Management and Training
SRG -State Resource Group
DRG -District Resource Group
BRG -Blok Resource Group
SRP -State Resource Person
BRP -Blok Resource Person
ARP –Academic Resource Person
NAS-National Achievement Survey
SLAS-State level Achievement Survey
MHRD-Ministry of Human Resource Development
RTE-Right to Education
NCTE- National Council for Teacher Education
SSA- Sarva Shiksha Abhiyan
SS- Samagra Shiksha
D.el.ed -Diploma in Elementary Education

परिशिष्ट 14 – महत्वपूर्ण सम्पर्क सूत्र

हेल्पलाइन एक ऐसी सुविधा है जो परेशानी में पड़े लोगों को गैर आलोचनात्मक ढंग से सुनने की सुविधा देती है। यह सुविधा अधिकतर फोन कॉल करने पर उपलब्ध होती है। कुछ सप्ताह भर और कुछ हेल्पलाईन 24 घण्टे उपलब्ध रहती है। भावनात्मक कठिनाई में व्यक्ति इन हेल्पलाइन कॉल पर कॉल करके मदद मांग सकता है।

हेल्पलाइन नंबर

हैल्पलाइन नम्बर	विवरण
112	112 इंटीग्रेटेड नम्बर है। इस हेल्पलाइन नम्बर से पुलिस (100), फायर ब्रिगेड (101) और वुमन हेल्पलाइन (1090) तीनों से संपर्क करने के लिये एक जगह रहते हुए सहायता माँगी जा सकती है।
1098	चाइल्ड हेल्प लाइन नंबरलक्ष्य समूह– शारीरिक या भावनात्मक संकट में बच्चे वेबसाइट/ईमेल http://www.childlineindia.org.in /1098/b1b-partnership-model.htm
102	रोगी वाहन (एम्बुलेंस)
103	यातायात पुलिस
104	स्वास्थ्य के लिए राज्य स्तरीय हेल्पलाइन / अस्पताल ऑन व्हील्स
108	आपदा प्रबन्धन
139	रेलवे पूछताछ
181	घरेलू दुर्व्यवहार और यौन हिंसा महिला हेल्प लाइन
1070	प्राकृतिक आपदाओं के लिए केन्द्रीय/राज्य/संघ शासित प्रदेश के राहत आयुक्त
1071	वायु दुर्घटना
1072	ट्रेन दुर्घटना
1073	यातायात हेल्पलाइन
1077	जिला कलेक्टर/मजिस्ट्रेट का नियंत्रण कक्ष
1090	एंटी आतंक हेल्प लाइन/अलर्ट ऑल इण्डिया
1091	परेशानी में महिलाएं
1092	भूकम्प हेल्प लाइन सेवा
1096	प्राकृतिक आपदा नियंत्रण कक्ष

कक्षा शिक्षण के दौरान इन्हें ध्यान रखें Do's - Dont's

क्या करें Do's	क्या न करें Dont's
1. पढ़ाने से पूर्व शिक्षण योजना बनाकर पूरी तैयारी के साथ कक्षा में जाएं।	1. बिना शिक्षण योजना के शिक्षण कार्य न करें।
2. शिक्षण में सभी विद्यार्थियों को शामिल करने का प्रयास करें।	2. कक्षों में कभी क्रोध न करें।
3. बच्चों को आपस में चर्चा–परिचर्चा करने के ज्यादा से ज्यादा अवसर दें।	3. बच्चों को व्यक्तिगत/सामूहिक रूप से टिप्पणी कर अपमानित न करें।
4. कक्षा में गतिविधि के दौरान बच्चों के समूह/जोड़े बदलते रहें। समूह कार्य करते समय बच्चों के कार्यों का अवलोकन करें।	4. आवश्यकता से अधिक टी.एल.एम. का प्रयोग न करें।
5. बच्चों को पाठ्यपुस्तकों/कार्य पुस्तिकाओं में दिये गये अभ्यास कार्यों को अवश्य करायें।	5. किसी बच्चे को सम्पूर्ण कक्षा के सामने मजाक न बनने दें।
6. बच्चों के अपने अनुभवों/कठिनाईयों को व्यक्त करने का मौका दें।	6. बच्चों को अस्पष्ट निर्देश न दें।
7. प्रतिदिन मौखिक और लिखित दोनों कार्य करवाने का प्रयास करें।	7. पाठ्य पुस्तकों/कार्य पुस्तिकाओं के अभ्यासों को पूर्ण करते समय बच्चों की त्रुटियों पर हतोत्साहित न करें।
8. बच्चों के अच्छे कार्यों की सराहना पूरी कक्षा के सामने कर उन्हें प्रोत्साहित करें।	8. बच्चों द्वारा प्रश्न पूछने पर उन्हें हतोत्साहित न करें।
9. आकलन करने के बाद बच्चों की त्रुटियां/कमियों पर सकारात्मक फीडबैक दें।	9. आपका कोई भी कार्य एवं व्यवहार शिक्षक की गरिमा के विरुद्ध न हो।
10. बच्चों को बेझिझक प्रश्न पूछने के लिए प्रोत्साहित करें।	10. बच्चों के मध्य किसी भी प्रकार का भेदभाव न करें।
11. शिक्षण करते समय दैनिक जीवन से जुड़ी घटनाओं के उदाहरण देकर व्याख्या करें।	
12. आवश्यकतानुसार टी.एल.एम. का उपयोग करें।	

BALA
(School Building as Learning Aid)